~~बंगाल हिन्दी मंडल~~

Birla Central Library

Pilani (Jaipur State)

बिड़ला सेन्ट्रल पुस्तकालय
पिलानी

BIRLA COLLEGE LIBRARY
19740
PILANI

091-954
R142RG
V.12

19790

C/81 c/66 CR-85

BITS Pilani
Pilani Campus

Library

Readers should not mark,underline, write, or tear pages or otherwise damage The library documents.

The borrower should check the intactness of the book before getting it issued.

Any book issued may be recalled by the Librarian before the due date if it is urgently required.

If this book is found, please return or inform to:
The Librarian
Birla Institute of Technology and Science
Vidya vihar,Pilani- 333031,Rajasthan
e-mail:helpdesk.library@pilani.bits-pilani.ac.in

विषय सूची

√ १ गीत, कवित और दोहे —— आसोपा नरु रा कह्या
पृ० १ से ८४ पृ० तक

√ २. गीत (खाढा किसना जी री बणाई कविता)
(भाषा डिंगल) पृ०सं० ८५ से १५२ पृ०सं० तक

√ ३. गीत दोहे सोरठे कवित इत्यादि पृ०सं० १५३ से १६० तक

√ ४. रसालु कुंवर री बात पृ०सं० १६१ से १६७ पृ०सं० तक

√ ५. चांद कुवरी बात पृ०सं० १६८ से १८६ पृ०सं० तक

√ ६. कवित तथा छंद पृ०सं० १८७ से २२६ पृ०सं० तक

BIRLA COLLEGE LIBRARY
19740
PILANI

लिपि कर्ता – सुखदेव स्वामी

रजिस्टर मूल्य :—

लिपि मूल्य पृ. ८३ तक. $\frac{\text{पृ. ८३} \times \text{३३ पं.} \times \text{८ शब्द}}{\text{२५०}} \times \frac{\text{३}}{\text{१६}}$ रु.

= १६ रु. ७ आ.

लिपि मूल्य पृ. ८४ से २२६ तक — $\frac{\text{पृ० १४२} \times \text{३३ पंक्ति} \times \text{७ शब्द} \times \text{३}}{\text{१५}}$ रु.

= २२ रु० १२ आ० ३ पा०

गीत

गीतः— जंतो जस मही सांच अत जौयौ, दावौ लांच नखायो दीसै। सुत अभ मल सांच दरसायौ, आंच दीया कुनरा अरीसां। कीरत तरीत कहायौ रुपां, अवां दियरा नखायो लांच। राज ~~मल~~ मल हर घन देरा सबायो।। सोहै कनक तपायौ सांच, जस जांगी रोड़ौ जग जाहर। मोड़ौ दिल याठां खामीर। समपरा ओप अरौड़ौ सहजां, पीतोड़ौ तायो चामीर ।।३।। सुमा मोरग प्रजाळा सहजां, जस वाळा सोमी चरण जोरा। ऊलस हज असातो वाळा।। दर- साला पाना दुनीयांरा ।।४।।

श्री रायजी। श्री करनी जी श्रीरी जुरो साह जी।। दसगत बारट जोर जीरा है पांसोड वाळा रा।। आ पुसतक बाप नाथ सींग जी रे गीतां री है।।

दुहे:— कैंमर बरतै जठै जठै, जठै बरतै कैसुल।। जांने मध घक जठै, बपत घक ठाला बुल।। मोरां खरचै जठै, जठै चीज लख स्वारां।। रपीया खरचै जठै, जठै खरक को दारांत।। कै लीया बदन अमला कलंक, दिन कर खंचा नरवीयां।। मोक मांक मंद मोटा मीनख, ऐसा सगातै आरवीयां।।१।।
समत १९६८ रा वैसाख सुद ८ नै रावजी श्री चतुर भुज जी हीर दांन कैसु अठै आया और नामां लीखाया र. हीर दांन रा है श्री दुपे।। मर काली सीर पाग, नैरा काजळ मर कीदौ मर वाळां सर पैंच पला दुरौ मट वाळौ [illegible]

पुराचां मटका दार, काचो पनां हरीयाला, अद बैस वीये
दीसै बुरो, घर तो तैल फुलै लरै, मौके मान्ह मंद
मौटा मनख, मटकौ हैरो मैलरै ॥१॥ कवीत ॥

॥ श्रीमाता जी ॥

गीत:— आसीया बगत राम जीरो कओ:— लट पटीयो
मुकट कुलंगी लचरक ॥ धनुष बांग कर धारी, रा
कुंवार राम दसरथ रा, हुं छब पर बलिहारी ॥ सर
मकर झला मल कुंडल। हेडल मंडल हारां, नीत छब
असो कोसला नंदरा, बंदरा बारम बारां, बसन
अलोक जुप पीतंबर। रुप अलोक रमैसां, अग जल
खरा नरो छब उपर। हुं भांमरो हमेसां, मुलकरा
चवरा मंज पंकज मुख, प्रवरा अंमत चख
धारं, पन सोय अज बयेरन सुर पर, वासहु
केहे बारं ॥ ४ ॥

गीत:— खहतां खल दलां कहै जग खीची ॥ खे ......
तु प्रखे ---- री प्रं सीस वहे रीरा वेला ॥ दुजड़
तुहाला वजर दलेल ॥ सबल ह तरा जगत सराहै ॥ री
जुग जुगां क्रीत रही ॥ ईद तरा प्रोबध जु प्रसमर ॥ सन
तेरौ सीर वहे सही ॥ दल कल रा झालीआ दता ॥ हर
-- वीदरा न को तम सु वलै ॥ जुप मघवान तरा प्रीव
जु खाग तुहालो वहै खलै ॥ कवत :— बड़ा पंम धर
धड़ड़ गड़ड़ उभीयौ महाबल ॥ धड़ड़ दुभा असुर री ॥ खर
खल पड़े खल मल ॥ असुर बरड़ कंध भरड़ करर
तेरवीयौ वीतोड़े ॥ कड़ड़ संध नस चड़ड़ पड़ड़ करतौ धर
गड़े ॥ सवत १६६३ वरष संवरा वड़ १ दने धन का नाम प्रसी
नरु जी सुदर दास समुतेस उपारसी क नाम गील सा
प्रमार खेत। आवा कन जात चह धारा बास पस दत
लेहरां रुपा प्रारं — अरेहा प्रीकज मास उपाप्रा १ प्रत
करा ३ लेखे देसी कती सरे देसी लखत सा करमाड़ सदा
भालसा प्रा प्रमरा जी वा खत कन रुप खल खस
— — — — माहे प्रीसीया नरु री कह्या:
प्रांत रसा धवसै सत्रा सु आडो ॥ मांटी परा झालीयो
मतो ॥ दलां गेर दला पंम दला उत ॥ फौजां फेर प्रव

फतै " मोहरा हरा रो इग चर मडीयौ " रोध कीरत जुग
जुगां रही " प्रसमर हवौ प्रोड़ प्रवाड़ौ " सत्रां गोड़ घड़
मोड़ सही " औरंग साह तरणी चर पाडै डोडी प्रा दबौ
देख डर " नाहर पाहर रहै न गाहर " घांसा हर लीधां
घरर दुहा :— प्रथम प्रखर वीरा बालक वलौ " बीमच
प्रखर वीरा जग दु वलौ " देह प्रखर वीरा लहुप्रौ चार "
नाह न मेलै केहै कारण काजल प्रथम प्रखर वीरा जग
साधारै " वीच प्रख वीरा जग सह मारै " देह प्रखर वीरा
जग सह मीठो " रुह प्रचंभौ नप्रो दीठो " काजल दुहै
वीग तालो वाड़ी वसै जैरी कीजै जात सपत करण " सेव
जां घर बैठां वड़ गात " काठो गुल छै वीना भरीप्रो बहुत
गुणे " जांरी मांरौ चाह दै मेकल जोस प्रथाह "
गीत :— प्रह रारवै फुरणां हजारां ऊपर " कर कर फुरण
फुरण ... रौ कस " रावत मप्रण मालवो रारवै " पे करा
प्रसमर पेक प्रस " गीत :— गई बरवा रीत वहे चत्र मास
उतर गप्रा " गुणे गीते मनां वृध गाप्रौ " उमटां राव
दरीप्राव मौजां प्रपल " ईहरां सीरव दै सीत प्राप्रौ " पांच
मासां लगां सुखी रही प्रापगे " करे मोटी प्रचड़ नांम
कीजै " फौज रा रुप प्रर दल प्रपर फेरणा " दुधीप्रां
मौज दे सीख दीजै " बीज खीवती रही मेह वलीप्रा
वेरस " वडा वीत समापे प्रांक वारी " पुकवीप्रां सीख
दे घतारा सीधला " रांगा राजां करा क्रीत धारी " प्रापरां
सेवगां जतां उछाहरा " नीच खवे चाडो प्रावडै नमै " मांगलां
मोड़ खल जोड़ मोहरां मरद " पात हे वां घरे सीख पांमै "
गीत देवी जी :— प्रज बावत कहै सुणौ रेन कारा "
कर कर म... ह वाज कसै " वीर हुवै जे ... वै सधा " बीरां
री चोगरणी वसै " दुदाहरौ कहे ईन दुजां " प्रांजे करो
वैरीप्रां मुक ... कर डमरी नहीं प्राडमर " एम चर प्रसमर
तरणी प्रचुक "२" प्रायै कटक सांमहा प्राव " वैर परधारे सीत
दर " ढंगाला करै वाह खग गंठीगा " चींगा जे भुगवै

गीत :- दुलो प्रवोप्रो खग साह दो मज ॥ जगड़ लड़ीप्रै
ज सार ॥ मह क मो केहरी हम तो ॥ कुदी प्रावै कर
खुमांरो पेक दोप्र खीचो ॥ घरा पड़तां धाप्र ॥ रुद्र ह
प्रागलां रुके जंब क नाग जाप्र ॥ रावतां दल वडै रावत
वीरा कीउ वर वीर ॥ पेक जगता सरै रतिरा ॥ नमे
गम नीर ॥ हदा वत प्रागलां हीम कै ॥ मेल कल चुंम
मारा ॥ वड गुजरां मोहर वंजीप्रा खीची प्रेर खुमारा
कपड़ां री वीगत नाद रोप्दो प्रक सबी तचा सावड़ जा
दोप्र क सबो तचा सावड़ पाघ नव कस बीच कनरी सुचा
घांन दोप्र रुक पार चारो ॥ रुक सीरीसा परो देई थान
थांन रुक बास तारो रुक चक्रन रो ॥ फांरा बावीस साव
पाच क नरां सुधा थांन प्राघो मीसरु रो पाघ तै
घीट री तचा क सुबल री सुधा वागा बैरां मी चार
रुक तो क सबो रुक्रो तो कोरां काला ईक्रतारा रो दो
तो साड़ां रा मुंहगा वागा चार सु घरा रुक मी सरु
वा जातीन दौप्र चोला ॥ रुक नीलो टोपो रुक साव
बास तार का पचार पाघ सात चौली रुप प्राती नच
ईतरो लुघड़ रो लेखो राम ॥ गीत :- प्रर नखंड जा
नीबु प्रब को प्रंबै लगै ॥ नाले रै केलै नह लगै ममल
ममलग कहतां लगै लग लगं हल गल कहत नट
काका नांना सरा न मीलीप्रा ॥ ममल सम मल स करु
न मीलीप्रा ॥ गीत :- वडौ वीर वीराध गज सीघ रै
वीर वर ॥ मांज नड़ कैरै प्रर घड़ नड़ीधो ॥ करन ह
सधर जुग नांम राखरा प्रकल ॥ पीसरा पाघड़ प्रौना
पीधो ॥ खीचोप्रां राव जुग नो राखै खरो ॥ पीसरा रु
मह रीरा पघाड़ै ॥ सवाड़ै दीहाड़ै सुरज्चा सीरो ॥
गीत :- गढ जढ कीरत गवाड़ै ॥ सार प्राचार दुहरे
सीधालो ॥ सुर सीरकर रीरा वट प्रघट सीह ॥ वा
वैरी हरां दांन देवी दप्रां ॥ उप्रारै क्रीत जुग जुगां
बीह ॥ श्री श्री रामजी देवी जी कवित ॥ । राखै सुर
जन क नीगमेस जारे ॥ हुकम तु सु हीज सत हुप्र ज
मीसों फुरमारे ॥ कांम क्रोध मघ लुभ लुक पड़ीप्रो
बीजै तांम रजै जीव जैतां ही जदी जैत लीजै चां

करनै ज सु सुधरै" सुनै रवारण नै सत रै राजा रै धरा
तुरी रजा " ईस सीस सैर उपरा" गीत भादा बिहारी
दास रौ कह्यौ गीत :- गढ पतौ ग्रतौ धरणां धरणां ग्रतौ
गंम" मुहडै हाथां गाता मही "रांम पुरै मुहकम रावां रै"
नर धावां वरण कोरै नही" सुरां तरणौ ग्रखाडौ सरौ"
ग्रस सुरा पुरा ग्रसवार "चांद हरा लारा चांद रावत"
लुहां परवान दीसौ लार "२" ग्रावै भड दरगैह ग्रमरावत "
वाही सुरां ग्राप वही" सही धार ज्यां वास सही जी "
नही धार ज्यां वास नही "कुल वट वट कीधी कैल
पुरै" थाट पाट जादीचा थांभ" सांभ जीवत लारा सीसौदा
सारा हुग्रा जीवता सांभ "४" गीत :- समर वाजीग्रा सार
दन दे ग्रती सुकवाग्रां" ग्रगट हुग्रौ दह राह ग्राडौ" कहै
जा कहै दोग्र राह ग्रालम कलम "ग्रमर ग्रातम सक्रत
तरणौ ग्राडौ" वाहतां सार दन दे ग्रतां वी दुग्रां" सुकर
ग्रखो ग्रादहु वात साम्भी" साहसु ग्राटीग्रा हो ग्रता समवडी"
मांटी ग्रां भरोसो वदै माम्भी" गीत :- कीसु गाडीग्रा
मोढ तासु करै कुग्रर जी" हाडी ग्रान चालै दान हेला"
तोप रां वाडी ग्रावार नारवु तीके ग्राडी ग्रा डाडी ग्राठवेला"
सोचालां सोचाला दला मौजी समद" ईम नमा ग्रजबसी
वंस उदार" तक्र सीर परस रा कुग्रर कुल रा तिलक"
वाररौ करु ईन खट उभै वार" चीत मंठा चठर
कर कठा चा खोड़ीग्रा" ग्राडजहा करै डाडा सेता रज्जाला"
भुजाल कुग्रर तो उपरा कुग्रर सीर घोलरणौ करु केता"
गीत :- चुर साग्रौ चह मंडे चावै" मौद्द रीग्रौ मन जर
दन मावै" देस पत दीली सु दावै" राज गढ रीध ढोल
धुरावै" जे रचा सगला कर जोडै" तेग बल सबला सु
तोडै "मुगलां वाला दल मोडै" राज गढ कुरण रावत रोडै"
चुर साग्रौ खत्र वट रै चालै" पडवा खल पैजां पालै"
वाकडै भड छत्रपत वालै "दांरणवां गीली ग्रा दाढलै" साकीग्रा
साकीग्रा सोलो कीसां गर "धाक सुभागा दोडे धर"
सोर बल गाले सो नगर "मोहरण चीन माम्भो मदर

मोड़े " धुरौ गह पुरीयौ धर " सत्रां वहरण छत्र सोध
सवाई " असमर मद आई अमर " अर तर जड़ां सहत
उपाड़े " धींग गढां सीर दाव धरै " कीर मर मद आई
कुअर कर " कंजर जुध अल वला करै " धेगर नर तरां
धकावै खल खोखल कर पड़ां खहे " मोड़रण पटा
घटां हरण तरण " वीजल मद उपटां वहै " ठौड़ ठौड़ अर
तेर पर हरीआ " जाड़ी जोड़ बहै तल जोड़ " उदाहरा
खड़ग तो आचे मद आई मुगलां मरोड़ "
गीत :- लख भांजरण पाट समापरण लाखां " सुज बेवे
जांणीआ सवाद " तुझ करग अमरा मोहरण तरण " वीजल
दांन वीलाग वाद " रुकरण करबे करै अलवला " वहुत
खवरण न लावै वार " होआ होड जगत सीर हुआ " असम
तुझ मौज अरण पार " छत्र पत हरा खर बद छाजै
मोड़रण दलांस " कवत :- रावत केसरी सीघ जी रा वहुआ
आसीआ नरू रा श्री श्री कवत :- सरसती सकती पुराप
सोभंती " मह मती जैवंती वेद वंती बुधवंती " मांन वंती
गुरण वंती प्राण वंती पारबती " रगत रती सोखती अत्र
भरती पीवंती " जग जेठ जोध कीसना जीसो " वड बद
कीरत वरी " कंधाल तणौ जाउ गुणे कुल अजु मेले
केहरी " जै वंस चुडो हुओ सुर कांधल सवाई जै वंस
हुअे खंगार वार भीकवा वडाई " कांधल मुलु जीसा
काटीआ खड़ग कुहाड़ै " सुर वीर सामंत पुर पुरीआ
वाड़े " कीसनेस हुओ खंगार रै जीण दुपन आंणी घ
खग झाट पाट खेसे खलै कमधां सु भारथ क
पर कीसन काढ दुपनोआ कीआ दपन सरप धर "
वाढ धड़ धार " सुत कीधी धर सधर " कीसना रै
घर हुओ जोध जैतो जग जांणौ " साह लगां जस
खाग धग रीओ रांणौ " जै तड़ौ हुओ जांणौ जगत
असमर दन उबां वरो " घातवा घांण मुगल घ
रावत रांण रो खरो " वीखो कीओ मेवाड़ कहर
जह गीरे " वात हुई वीपरीत हुओ हठ मीर हमीरे " सा
रहै अजमेर खेड़ साही जादो आओ " अंग्रेअ कहो असु
रांण कर जंग सवाओ " उससे हसे रांणी अमर

खीज करतो लीध्रौ " जुध करतौ हीज जेरणे मुनां प्रारंगौ
चीरव बौलीध्रौ "८" कहीध्रौ रावत जैत रांरण लड़सा घर
कारणा " करौ साच सस मांध वात प्रखीप्रात उग्रारणा
उर हला प्रावीध्रौ " खड़े जौतौ दल लीधां " प्रारंभ
रोड़ प्ररोड़ कोड़ रुक पारंभ कीधां " जैतड़ौ कहै कीसन
तणौ ना प्रकसां मल जो नरां " तत खरा नरा
पड़सी तरत खाग परख खोटां खरां " जैतौ रावत जुड़ै
उर पुर रांरणा प्रागे " दहुणा दल मुगलां खलै उनांगै
खागे " तेहे तुर उड बर खर जुटां दल तुटां " चड़
फाचर उघड़ां " पुर होप्र पाचर फटां " पड़ झीकनी राट
प्रसमरां रुक प्ररोड़ां रोड़ीध्रा " जैतड़ै जोध कीसनातणौ
मुगल रा दल मोड़ीध्रा " ९ " वज सरा नीसरां खागझरां
प्रौझरां पड़ चरां घड़लरां धार धड़ उधड़ करां " सीर
तरां धट फुटां जोध जुटां रीरण वरां " मचचटां खीचरां
स्रोरण मरां घट फुटां " तत कार होरें हल कार हुक "
नारद संकर नाचीध्रा " जै तड़ै जोध कीसना तणौ कीलबां
सु भारथ कीध्रा " जैत करै भाराथ वात प्रखीप्रात उग्रारे
घात घारण धमसांरण कांम रांरण रो सुधारे " पाड़े दल
साहु राख बीरद चाड़े प्रखाड़े " क्रीत करे दध कड़ां
गीत प्रगजीत गवाड़े " प्रखीप्रात वात राखी प्रचड़ जैतै
उर हला जुड़ै " उतरे मांरण उसु रांरण रौ चीतौड़ां प्रोपम
चड़े " जैत पाट प्रोपीध्रौ मांन रावत बीरदालौ " मड़ांनाथ
भाराथ सुर सस माथ सीचालो " मांन कीध्रा बद कोड़
मोड़ मुगल दल धारे " रांरणा दलां रीखपाल प्रगट हरे
पत साहे " मांनड़ौ घड़ौ मौटौ लीध्रां " रावत धजै रांरणा
रौ " दन खाग न पुजौ दुसरा " कुड़ को पुं होडां करौ "
मांन पाट रुघनाथ भीच भाराथ भई कर " जीरण दजरण
दाब टेकीध्रा प्रथमाद सीरै कर " दोही रावल डरै
चड़क खाग देव लीध्रौ " पाड़ महल कां गुराह सत वीत
ले नांव लीध्रौ " रावत हरी सीध सारखां मारण पारा जंमल
वटे " पवीध्रौ घरे रावत रुधौ देव लीध्रौ कर दह वटे " १०

धरतीआं आडौ ढाल अगट पाखर पहाड़ां" रावतन पुगा
दुसरा खाग त्याग रीझ वट खरा" रुघनाथ हुआ मांता
तेरा चुडा जोम चुडा हरा "११" रुघा पाट रतन तीह आै
रावत हाथालो" पुर बीरद खटरो सुर समंत लीधालो"
कीसना कांधल जीसौ जैत माना सारीखौ" वड दांन मीठीआै
पात लाभां पारीखौ" रतेनस हुआै रुघनाथ रौ दांन
अदटां दटरौ" वर जाग वीर चुडा धरणी खाग वडा
ब्रद खाटरो "१२" चुडा कांधल मांन सोध सांई दास सरीखौ"
जैता कीसना जीसौ अवर कुरण मोढां ईखौ" वडा वडा
ब्रद कीआ वडा जुध जीपे चुडे" डोहो चाचर वीमर चाल
धम सारो उडे" प्रावमाद सौरे रुघनाथ रै कीर मर बल
अचड़ां करे" रतेनस गआै हर पुर कन वड रावत कीरत
वरे "१३" रतन पाट कांधाल सोध कांधाल सरीखौ" धरतीआै
गादी वडी तीजड़ कर कना वर तीखौ" कांधल चुडा जीसौ
हुआै गादी चुडा री" रीपु बोल रखरो भुजे ब्रद लीधा
भारी" कांधल तपै कर मर हथौ रीपु बोल जग रखरो"
वड़ पातनो वाजण दांन वीध देख अदेखा दखणौ "१४"
कांधल चुडा जीसा हुआै रावत वत वड नांमी "जीरण
असमर आचार प्रसध सोध मोटी पांमी" जीरण रावत
रांण नां पाट उथपीआै थपे" जीरण राव तज जस
लीआै कुरंद कवी आंचा कपे" कांधल अचड़ कीधी ईसी
वाज भेरनी फेर सरस वाजे सहनाइ" चुडा जीम चुडा
हरो" जा रते जुग जारग नहीं धरा सेस जा सीर
धर "१५" धम चाला झोकरो दला रौकरो अखाड़े"
मरद अरद भीड़ीआ बीरद मारा बो लाडे" कांधल धरा कमाड
हुआै हव रांणां आडौ" पत साहे जांणीआै जोध जंग
वेला जाडौ" ईल माह अचड़ राखी अमर धीर रांणौ
फौर थपीआै" कांधल रुक रहीआै ई डग जद मेवाड़
पलटीआै "१६" सांम धरम रखीआै लौभ लालच सह
छोडे" सांम धरम रखीआै रांण आगल दल मोड़े" सांम
धरम रखीआै जोध कांधल जग जग जांपै" पतग रीआै
पतसाह मौहत वध मेर प्रमांरो" कांधल नमो रावत
अकल ईल मझ चीन चीन अरखीआै" दुसरे नर डीग तेड़

बक रेरा रांग दल रखीश्रौ" जेरा धरम उपनो केहर
रावत कीररगालो" मेद पाट कपाट रुप रेरा रखवालो"
श्राहुंस नुर अंकर सुर कीसनेस सवाई" पुर कीरत प्रगटी
वधै वप तौल वडाई" उदोत जोत दीन दीन वधै इधकै
खत्र वट श्रा मलै" मल हलै जोत जीम भासकर "नखत
वरवत दीसै नीलै "१८" कांधल रावत तरो कुअर हुश्रो
कीररगालो" वधै घड़ी मोहरत" बाल चंमल बोहालो"
दीन दीन प्रगटै कला जोत उदोत दीरवारे "जीम जीम
वा सुर चड़ै जोध जीम दुरगो धारे" उछाह हुश्रा वाजत्र
घुरै गोवल गुडी उछले" उलसे हसे साजन संगा वदन
वीकसे वील कुले "१९। वाज थाल कसाल घुरे त्रंबाल त्रघाई"
दमक ढोल जस बोल केहक गावा के नचा "वडा वडा
वेद श्रा वेद वचां मन सचा" रीघ केल रुप राय श्रंगरो
घर घर वंटे वधाईश्रां "दीपंत हुश्रा सोभा घरणी वां
नर माल बंधाईश्रां "२०। वाजत वाज छतीस होरे उछाह
घर घर" दांन मांन दीजीरे वडा कीजीरे कवपुर "हाथ
गह मह दरबार वार दीपंत सबाई" धावी घर चीतोड़
दोड़ गवी ठकराई" चीन वारल गल मोहरत घड़ी हाथ हुत
घड़ी श्रौ हरी कल कला दीप हुश्रौ कुअर कांधल रै घर
केहरी" वरस एक लुंध वेस सरस व्रस बीरे दीरवारे
तीजै व्रस चीत चंचल रमण राय श्रंगण धारे"
चौथै व्रस चौगणौ परवे पुरो पांचमै छटै वरस भड़
वरस सकस वधीश्रौ सातमै" श्राठमै वरस उससीश्रौ "नमै
श्रनंमां नांमीश्रा दसमै वरस भाली दुजड़ दांन श्रग्यारह
मै दीश्रा "२२" बहस बहस वरस बार मै तरसीश्रौ वरसे
तेरे" चवदहमै पनरमै खाग खल माचै खरे" सोल
सतरे सरस श्रचड़ श्रांगमा श्रठारे" उगणीसे बहसीश्रौ बीर
भुज बीसे धारे" श्राचार श्रसंमर श्रागलो खत्रो वट वट
... ... धाम हुश्रौ केहर कुअर कल दीपक

बरो" कल कला दीप कुअर अकल केहर चुडौ दुसरौ"
सामीने साची रे भड़े वांकड़े मुजाले" परवराले घमकते
तलप खाते तेजाले" जर दाले भीडीरे दले मैं वासा
धारे" कुअर करै अल वला प्रचड़ अरबी आत उआई"
केहरी कुअर कांधल रौ खत्रवट ब्रद खाटै खरा" कर
मदा कुअर मा बेटड़ा दोन न पुगा दुसरा "२५" कहीअै
जेसी रांरा मतौ मत कांधल आगे" साम धोहां दया
सजा खले उनागे ~~नामे~~ खागे" कहतां पहली लीआ राव
माररा कज बीडौ" करौ नांम वरीआं म कांम उपनौ
सभीड़ौ" केहरी मार कीधौ क धर साम कांम सुधारीऔ"
खीता मररा साभ लेन कीसं कीऔ मन माहे" उस
सीऔ बहसीऔ" सुकर सम सरस वहे" मुंधा वल
वालीऔ पुगट पौरस उफेरगीऔ" नर नाहर भरम दुरवीर
वीरा रस वरणीऔ" चौगरणौ रूप धुआहरौ धरा लाज
जोरण भुज धरी" कांधल तरणी गादी अकल कुल धजु
आलौ केहरौ" २६" धुधे सासत वेद करौ मौहरत सजाई" वीध
वीध रीध सीध मेल सकल सुज करौ सवाई" करौ
उछव उछमाद हरख हद मंगल धमल" कुंकम केसर
दोब दहीअ खत्र मोता हल" सोह मेल सजाई सुभ
घड़ी" उछव ईत ओ पावीआ" केहरी तखत धुडा तरा
ईरा वीध रावत आवीआ "२७" होअ मंगल होअ धमल
उछव होअ कवीआं मेला" होरे राग सोभाग सअरा
साजरा सुमेला" होरे दांन कवीअरां होरे रावतां वधारा
होरे सोच अर हरां होरे हर चंद जीम वारा" जस
वास हुआ जग उपरा दीधा कव लखां दुआ" केहरी
पाट बरणतां तखत ईला थोक ईतरा हुआ "२९" वरणीऔ
गादी वडी तखत मोटे धुडा रै" वडा वीरद खटवा ईला
मक बोल उचारै" बाल धमल तोडीरे आप दादा
आचांरो" खाग त्याग अगलौ रांरा जाणे सुर तांरो"
चौगरणौ धाअ चड़ीऔ भररा असमर करै अल वला" जग
जेठ जौध जैता हरौ केहर कुल धाडै कला "३०" वरणीआ
गाज गाजता तलप खाता तेजाला" वरणीआ भड़ वांकड़ा
भीच रीरा वार भुजाला वरण गह मह दुरबार वरो

आचार बडाई ॥ वरो बीरद चौगरणा वरो मुल लाज सवाई
जागीआ भाग कवी प्ररण भड़ां खग मुहगा हुआ खरा ॥
केहरी पार वगीआ प्रकल चुडा जीम चुडाहुरा ॥३१॥ वरो
महल चीग गोरव चुप आलो चीत्र सालो ॥ वरजालो
मोतीआं प्रबल उदोत प्रसालो ॥ वरो पोल पागार वरो
चौहटा चोबारा ॥ वरो हाट सुधार रंगतही गुल अपारा
वरा वार सुचांनो केहरी ईम सौरौ जुग उचरौ ॥ छत्रीस
पवन राजी सदा कांम दांम बीला करै ॥३२॥ वरो वाप्र
नीवांरा ताल दीब जोरव बगीचा ॥ वरा चादर चह बचा
हौद नल छुटंत बीचां ॥ वरो अंब कदंब अंब अर अंबर
मंजर ॥ वरौ फुल वाद सवाद गुंजत तेर तर सर भमर ॥
प्रत जोरव गोरव घर घर नप्रर ॥ वर दोपै हर ईस वर ॥
राजत सलुबर केहरी ई इग राज जुग जुग अमर ॥३३॥
वरो दास खवास पास बावना चदरा ॥ वरो पुर हजुर
पुर सुख करै महा घरा ॥ खासी दासी वरो सखी चीत
लखी सरसी ॥ चीत्री हर हाव सु प्रसी खोड़ सबरसी ॥
राजस वरो ईद आरखां राग रंग जस जोगीआं ॥ गढतपै
सलुबर केहरी ॥ बेलन को पुजे बोआं ॥ अतर चंदरा
कुमकुमो तेल सुधो अरग जो ॥ फुल मै फुल फल
बाद अंग उगटरो अंजो ॥ उडै लाल गुलाल कीच
केसर ईत माचे ॥ काचे राचे नही सदा गुरा राचे
साचे ॥ सुज तपै सलुबर ईद जु आरख सारख ईदरी ॥
जलह रज बाद जोरौ जगत मोराग जोराग केहरी ॥३५॥
करै दांन सनमांन करै परवा आतरपरवाडै ॥ करै घाव कुजरां ॥
करै कीरत पवाडै ॥ करै वधारा भडां करै कीरत दस
देसै ॥ करै वला चुरवला ॥ कला लीधा लुध वेसै ॥
दुसरां नरां पुजे नही कीसु होड इही करौ ॥ केहरी कोड
प्रचड़ा करै कुल दीपग कांधल रौ ॥३६॥ लेरगे सार सत्र
मार लेरगे कीरत जस लोडे ॥ लेरगे कोट गढ पुरा सीमां
[illegible] मरोडे ॥ लेरगे राग रंग मंरगा सेफ सवाद

ध्रर दलां देरे हांमर कव पातां ॥ देरे हेत हेत ध्रां देध्र
वीत रखरा वातां ॥ देरग डाव ध्रर गढां ॥ देरग ध्रीध्रां
सीर दावा ॥ देरे सजा सात्रवां मढां द्या बोल ध्रमावा ॥
लख लाख देरे रुकरा लहुर लोभीध्रां मुख कीरत लेरे ॥
केहरी कला लीधां कमल बीजड़ दांन ग्रहीध्रां बेरे ॥ ३८ ॥
रावत चड़ीध्रौ बेरे करे कीरत अखाड़े ॥ मेवाड़ो दल मोड़
बीरद मोटा बोलाड़े ॥ उदीध्रा पुर ध्रावीध्रौ रांरा जे सीरी
सेवा ॥ लीध्रां लार घासार मार ध्रीध्रां सीर देवां ॥ उपरै
बेरे धौलते मछर ई चढ़ै खत्रवट ध्रांमले ॥ उबरा नरा
पुजै नहीं नुप केहर पुजा मले ॥ ३९ ॥ रांरो भुज पुजीध्रा
पटे गज गांमे दांमे ॥ करे कुरब चोगरणो ध्रीसीध सीध
दरगी पांमे ॥ वले तोलवा च्यार तरवत ध्रधे बैसाड़े ॥ ध्रागा
हां केहर सीह वले पाखर पहराड़े ॥ ध्रागा ही ध्राग रीत
जेठ री वल माहे धीत मेलीध्रौ ॥ केहरी ध्रकल कांधल
रो वले रांरा सुन मांनीध्रौ ईतरै कल उकलो धरा
रावल री माहे ॥ कुसलो रावत मार पधां राल पीछलारे ॥
दौड़ी धौड़ी चड़े वात वीपरीत क्ररारी ॥ कल उकल उफरा
ईसी चीरव रोस ध्रकारी ॥ सांभलो वात रांरो सही रावल
कुसलौ मारीध्रौ ॥ जेसी परांरा धर धुसवा केहर न हल
कारीध्रौ ॥ ले बीड़ौ सीर चाड़ पगा लागे उफरीध्रौ ॥ ध्र
त्रंब लीजतां वाहरु गोगो वरीध्रौ ॥ मंगल नां ध्रत मीलै
पवन लागे चाड़ हड़ीध्रौ ॥ दईतां दल वीहडवा जारा चत्र
भुज रुप चड़ीध्रा ॥ उससे हस तोले बीजड़ वल बल
मुधां वालीध्रौ ॥ बोल वा धरा राख्या तरणी केहर ना परंभ
कीध्रौ ॥ ४२ ॥ करे साध समराध करे मेला दल मेला ॥ करे
को पारंभ रुक वाहा रीरा खेला ॥ मेल धर ध्रवीध्रट ॥
गरट घट धट गहु गट ॥ वट वट उवट धघट हुवे हीस
महा धट ॥ हलकार होरए हुकल कलल चुहल वज चुजे
धरा ॥ समीलां सेन चुडा तरगा वादल जारा ध्रसाढ रो ॥ ४३ ॥
वला वल हुकला दला सालुलां ध्रलेखे ॥ दोड़ीजां चंचला
जीसा सीव रै रुप वेखै ॥ पंडव मंड पलांरा तांरा
गढा उकढा ध्रारा तारा तेज सु सांम ध्रगलां सानदा ॥
गुरड़ ही देख देख हुवो थकत तेज पवन हुता तता ॥

वीलं सजा मड़ां वाजंद वडा माकड़ ताला मंडता ॥४४॥ जीके
तेज पंज ईधक पवंन हुवपां वहंता ॥ प्रंग उतंग सुच
सुचंग मृगी मृघ हुता तता ॥ देरे लांरा दुआल मं
खोगीर पलांरो ॥ दे दुमचो प्रग बंध तेज उकढा
तीरो ॥ पलांरा प्रांरा हाजुर कीआ उपर लुरा उतारीग्रा
प्रस फरसा जोरे मृग पकत स्या हर रा वाहरा हरीग्रा
चडीआ प्रस केहरी करो रै वेग नगारो ॥ त्रह त्रंबक
वाजीग्रो गप्ररा गाजीआ प्रकारो ॥ हीले सेन है जम धाट
उवट पड़बे वल वल दल पड़ा लुबे दे धूबे ॥ कुल बाक
चाक वागड़ पड़े खल भल धर माती खरी ॥ वालवा
वेर कुसला तरो रावत प्राप्रो केहरी ॥४६॥ दे धरमां
मां लारा कीआ चाला चक्र चाला ॥ रावल वल बल
मेल हुआ धर हत नीराला ॥ चड़े तड़े श्री तड़े उडगा
बुड प्रलंगे ॥ भागो प्रजबा डरे वलो नह वागा खागे ॥
चक्र चाल धरा उधम कीआ, खाग दुरालाई खरी ॥
वालीग्रो वैर कुसला तरो वंके रावत केहरी ॥४८॥ पाड
झाड़ गढ पौल रौल पाड़े चौहटै ॥ सहर बाल परजाल
धरा चोपटे वीनंटे ॥ लुट कुट गढ धुस लोड़ मोड़
बंबोड़े ॥ जोड़े खल दल गरा रुक बल रावल रोड़े ॥
डंड मुंड हसत लख लाख ले धर रावल री दे धको ॥
प्रावी प्रो वैरल केहरी प्रंबर दीबतो प्राज को ॥४८॥ करे
रांरा पुनमांन मोहत हत पुरा वधारे ॥ दे हाथी पीड़ गन
गाम प्रस दांम प्रपार ॥ कहीप्रो पुडा जीसो जेत कीसना
सारीखो ॥ रांरो मन रीभीग्रो तेज भ्रावर जोप्र तीखो ॥
लख लाख देरे लोभा उहां ॥ खग कीरत खाटे खरी ॥
धर लाज लीग्रां चुडां धरणी ॥ कल प्रजुआलो केहरी ॥४९॥
डुगर पुर गर माहु लाप्र लागो कलजागी ॥ पीता पुत
सु दगो करसा मन चांखवी लागी ॥ धर रो हुप्रो प्रभाग
कप्रर रांरा सु कहीप्रो ॥ रा.रो दल मेलीग्रा दाव धर
उपर दीप्रो ॥ कर कोप कहर रांरो प्रमर वंको दाव

प्रारा पछाड़े ॥ केहर नाहर नीडर ॥ प्रगट पुरी प्रौ पवाड़े ॥
दह वाट करे डुंगर पुरा वीरा लख हाथा लीरे ॥ साम
रौ कांम सुधारी प्रौ केहर जुग नांमौ कीप्रौ ॥५१॥ डुंगरपुर
दाबटे रवलां पाड़े पछाड़े ॥ करे जीत रांरा री गीत प्रग
जीत गवाड़े ॥ धरा धुरा धमरौल प्रगट खाटी प्राप वाड़ा ॥
दोहौ रावल डंडे केहर वदीप्रौ मेवाड़ा ॥ कर जीत फते राण
तरा केहर प्रप्र लगे पगे ॥ चरव चौल मुद्ध वल वालतौ
भुजा डंड प्रंबर लगे ॥५२॥ ईत रै धर वधरौर हुप्रा
चाल चक्र पाला ॥ कमधज खड़ प्रावीप्रा केहर वल मेलरा
लाला ॥ प्रांतर संप प्रौ नाड़ चांख मन सीम धकावे ॥ माडा
प्राडा खड़े बीरद गाडा बोलावे ॥ दीन मांन कमधच पले
धर रा करे खुर परा ॥ वावलौ करन वुहो फौरै चुहड़
कुरा देरे धरा ॥५३॥ उसस खड़ प्रावीप्रौ केहर रावत च
गाडौ ॥ प्राड़ा वीड़ दल लीप्रां जोधजग वेला जाडो ॥ भड़
कीमाड़ प्रौछड़ धरा ढंकरा रुखवालो ॥ प्राप्रौ प्राडौ धरा
खड़े रावत बाहालो ॥ कमधज कांप्र जुडरा करौ चीग दे
धुंडा हरा ॥ कुरा लेरग करन केहर कहै मांउ नांमां हरी
धरा ॥५४॥ मे पत साहा सिरस सदा खटीप्रा पवाड़ा ॥ मा
सुनीत प्रौद कैसां क मांनै सीमाड़ा ॥ मे कमधज नव कोट
सदा खग पांरा चकाप्रा ॥ उकाव प्रंबेर गीत प्रगजीत
गवाप्रा ॥ जा करन वैस वधरौर मं हुस मेट धर री
हरा ॥ कुरा लेरग धरा कुरा लेरग योज उभा धुड़ाहरा ॥५
करे कर नवल हीरा धरा ना रुख वाल प्राप्रौ उदीप्रा पुरा
भड़े वीटीप्रौ सीवाले ॥ गीत :- तुरी लाख लाखो कनर
कसन कसत प्रागे दीपे कीधौ नहीं नांम दांनौ ॥ हुप्रौ हुत
तरा जांन मांही मर के ॥ जांनीप्रां सीरै इदु भारा जांनी
प्रवर कै दांन हाबै हुप्रौ उदै पुर ॥ जांन राना प्राप्रा
दांन जोड़ा ॥ कीप्रा पंच मी सीरै सुजस चंदु भारा कै ॥
घरा जर कसन कस दी प्राधा ॥ ही मर कै जुग सीरै
हुप्रा लख पत हरा ॥ करा बर मेख रा नांम कीधा ॥ ज
रा तुरा दे भारा राखी प्रचड़ ॥ लाख रा लख रा बीरद
लीधा ॥ रांरा रै मांड है परराता भीम रज सोच
रहीप्रा जीके हुता सांचै ॥ मौड़ बाधां मौह रगो

मौजां करे मौजां करे भड़ बाधौ भलो गोड़ माथे "रांरौ
भुज पुजीआ ईधक वड तोल वधारे " आप्रौ केहर भरा
बीरद खारे खग धारे " प्रौढाड़ पहाड़ां केहरी मह कपाट
मेवाड़ रै " जै हत कमरग भारथ करै हीसल जोप्र कीसना
हरौ "५६" ईतरै दीखरा धरा कांम उपनौ सभीड़ौ "प्रौढ़ोप्र
उबरा कोप्र कर गहै न बीड़ै " मोटा ठाकुर जीके सकल
रही बल दोड़ " खत्र वट बैठा खोप्र लेरगे नह कीरत
लोड़े पारखोप्रौ रगम रांरौ अमर केहर वेला तो जीसी "
परठीप्रौ भुजा गल पुड हर दल आगल दीखरा दीसी "५७"
ले बीड़ौ सीर धाड़ रांरा कांधौ धापडीप्रा " भीड़े मुध मुह
सु भुजा जाप्र अंबर अड़ीप्रा " वल बल मुधां वाल पोल
चरव कीप बहसे " मां उभा कुरा लेरग जोध बीड़ौ उसस
वड तोल वधारे कुरब कर रांरौ भार भलावीप्रौ " केहर
कीमाड़ मेवाड़ रौ दीखरा दीसा चलावीप्रौ "५८" उससतौ
बह सतौ मधर धरतौ बर वरतौ " कीर मर कर तोलते वाग
जीम वीरवां भरतौ " लसकर भर नर लार " मौहर मद मता
मांगल " भील भंडा बह रखां " हीले है जांम महा दल "
हलीप्रौ दीखरा धुड़ा हरौ " साहां कांम सुधारवा " अंज
सीप्रौ रांरा अमर मेन, सुरा तन देखे सवा "५९" हीले
सेन है जंम, धाले लसकर दल वदल " रज डमर उपड़े
ढंके अंब रखे हातल " हांमर गांमर हजम कठठ चलीप्रा
लसकर " उडा दल डोही वा खड़े धुडा सुरा नर " धर
धुज गाज नंबागलां " दुजरा देस धड़कीआ, केहरी पंथ
खड़तां कटक कुरम कंप कड़कीप्रा "६०" आप्र उतर नर
बदा ईप्रा साहीजादा भेला " सेस सीस टल टले मीले
वदल दल भेला " साहीजादै जुनमान देख रावत प्रत
कीधा " हांमर गांमर हसम वाज गज वहला दीधा " भड़

9he

केहर ब्रद खाटै खरा ॥ ६२ ॥ साहीजादै तेडीयौ लेप्ररण मुज रौ मुह धगल ॥ उस सतौ अवीरण ॥ बीच जग जेठ मुजा गल ॥ आवध कसे बांध तरगस गही तुजा ॥ कांधल तरण अवीयौ प्रचन्ड ईल साखरा ॥ दुजी साह हरी ध्रमा हुई पक्रत असुरां उर प्रौद कपड़े आजम पगे लागरा अभंग आसा केहर सम चडे ॥ ६३ ॥ आवे दरगह बीच अनड़ भड़ चुडौ उभौ ॥ करन भीम भड़ जीसौ के हरा मरा कायम कुभौ ॥ दाराब धमा लख राव कौ रावत केहरी ॥ कुरा दुधक तोल अधिक पर वाता कहाव ------------- आग करे मन म डर कीधौ ॥ आलम साह अभंग देख सुरा तन सीधे ॥ आप खड़ो कर हड़ा बीच भड़ खाग कांल रावत खरौ ॥ असुरां जड़ा तोड़रा अनड़ ॥ घड़ा मो कांधल रौ ॥ ६४ ॥ आजम सुरत देख पेख रावत पुचालो ॥ रहे नचीतो रांणा बीच जा ईस मुजालो ॥ देखे दौलतो बरो भुजा देखे उससत ॥ आजम बुझावीयौ मेल मीरज़ा वीगता ॥ ६५ ॥ कहे रांणा पर चीन रहे रावत चर अगल ॥ रैकै दल रौद रा बीच खल दैले भुजा गल ॥ दरा आजम कहै जोध हजुर बुलावो ॥ कड़ा जुड़ देखीयौ खोल तरगस ना आवो ॥ आखतां वचन पहलौ चीखे वंका वायक बोलीयौ ॥ ६६ ॥ मे तरगस बांधीयौ सदा पत साहां आगे ॥ मे तरगस बांधीया साह सु वागा खागे ॥ मे तरगस बांधीया खाग न नव कोटे चकाया ॥ चुडै थी जोध पुर भोग मेवाड़ां ल्याया ॥ तरगस बांध कांले खड़ग ॥ सोहां दल रोकां सदा ॥ रांणा रां दलां हरवल हो अंमां उपर चर री मदा ॥ ६७ ॥ तद मीया बौलीयौ पुरो रावतजी वातां ॥ ईहां तरगस खोलीया लद्धरा नह लगै दातां ॥ बीकारौ जोधांरा पास आंबेर नमावे ॥ ईरा दरगह आवीया जोध नह कोय पमावे ॥ केहरी मीर वायक पुरो तरगस तेज न खोलीया ॥ चख चोल कीया उसस बहस कर जम दढ उपर दीया ॥ ६८ ॥ वले मीर बौलीयौ वात सुरा रान मेरी ॥ कहो मौन आ मांन टेक जीम रखु तेरी ॥ कीसी टेक करा कहै ॥ तोज तरगस न छोडु ॥ हु रोहु आलम खाग मीरजा जोडु ॥ दरगाह बीच चुडौ खडौ आखै वातां अज री ॥ केर जो वचन मीयां कहै ॥ लाभै खबर तुरत री ॥ ६९ ॥

मीर देख रावत रोस रतौ खग मतौ ॥ उस सतौ बह सतौ
वाग वीपरीत वीरतौ ॥ वाप्रक कह कह वात मीर मन मा
पच रहीग्रौ ॥ केहर चड़ीग्रौ बरै कपन नह मानै कहीग्रौ ॥
मीरजै जाय ग्रालम मौहर ॥ कहीग्रा वाप्रक कड़ कड़ा ॥ दरगह
टांक खोले नही खाग झाल उभा खड़ा ॥ तद ग्रालम
बोलीग्रौ ॥ मीर ग्रखै फोर जारे ॥ ईरा दरगह कीरम ग्राव
टेके रखी दोय राहे ॥ ग्ररा ग्रसपत ससार पार बल
मार नमाग्रो ॥ ईरा दरगह वीच ग्राव कमरा बद लेना
ग्राग्रा ॥ मीरजै ग्ररज वध वीप करे ॥ कचन रगह वाता
कही ॥ केहरी बोल वंका वचन खाग बोल उभा सही ॥ ६१
ग्रालम ग्रागल जाय मीर वाप्रक रेख हीग्रा ॥ साहीजादो
कर रौस दाव मन वंका दीग्रा ॥ कहै मीर ग्रालम रेगह कच
पुरसौ हमारी ॥ ईरा छोड़ावै ईपक वात वीपरीत ग्रकारी ॥
चीख रोस मछर ग्रालम कह रखीजे कप ग्रखै खरी ॥
ठग ठगी लाग रही ग्रा मीग्रां कह कुरा दे केहरी ॥ ६२ ॥
साहजादा देखीग्रौ मछर केहर बांहालौ ॥ पातल रतनाजेम प्रच
राखरा ग्रड़ पालो ॥ वडा मीर पाहांरा मुगल रहीग्रा बल
छोड़ ॥ जकी ग्रार त्रत देख को ग्रस ग्रीग्रा नह छेड़ ॥ पतसा
छमा चीन चन कहे ॥ देखे रावत वंकड़ौ ॥ उथाप वचन
ग्रालम रा खाग झाल उभौ खड़ौ ॥ ६३ ॥ ग्रालम तेड़ हजुर
ग्रभंग रावत मुह ग्रागल ॥ पेख जात पहाड़ देख पुरत
भुजा गल ॥ दे हां मर सीर पाव दांम गज जहरां पुजे
साह तरणी दरगाह मीट नह हली दुजे ॥ ग्रालम देख राजे
हुवो, सुर हजुरा राखीग्रौ ॥ दीखरा दप रा मड़ रांरा रौ
केहर चीन चीन ग्रखीग्रौ ॥ ६४ ॥ केहर दल साह रै बीरद
मोटा बोलावै ॥ पुरा धुम राखवा सदा ग्रसुरा सु दावै
रेड़ फोरे जीम वा ग्रघट वल हट नत दीजै, ग्रोघो जत
ग्रग जीत ॥ क्रीत दन देपत कीजे ॥ ग्रालम दलां वीच उघर
ग्रसमर करै ग्रल वलो ॥ ग्रैनाड़ ग्रभंग पुड़ाहरौ ॥ केहर
कुचाड़ै कला ॥ ६५ ॥ केही होग्रौ दीन मांन चडै लसकर घर
पसर ॥ बुलावला दल खला लेरु ग्रन संपत सघर ॥ पा
... कहै लेग्रावे ॥ वसती करै उभा

हाथ उभा करे" लुटजां सहर बध पीड़ गना ॥ फौजां सेन फर वरे ॥६४॥ साहीजादै जाबता करे घाटा रो आप्रा ॥ ईतरै कही कतार उट खड़ माहे प्रापा " प्रापा पहल कतार उट मुगले प्रा पड़ीप्रा " चौकी दोली रही नौल जंजीरे जड़ीप्रा " रलीप्रा कारला दांतला, कसरणा काटे भार रा " प्रसपत तरणी चौकी बीचां पड़ीप्रां उट कतार रा ॥६५॥ प्राके कहीप्रो पाकरा हुई बाहर बवाहर " चुडो भड़ां हल हुई कसै प्राबध बीर मर " पुर सुरब हसीप्रा तुर त्रंबागल बागा " रावत उसस बहस भुजा जाप्र प्रंबर लागा " हल हाक कलाल हुकल होरै " उससीप्रां प्रंबर प्रड़े ॥ केहरी कहै दौड़ै करह काप्र लेप्रो झड़ा कौ लौहड़े ॥६६॥ वातां कहती पहल चंचले तातां चड़ीप्रा " गाप्रां बाहर काज जांरा प्ररजत प्रा पड़ीप्रा " तर केहरी जांरणीप्रो रग्ह खड़ हींदु प्राप्रा " प्रावा कल उकलो सुर सामंत दरसाप्रो ॥ दौड़ दयौ उट बोलो मतो मुगले मतै बीचारीप्रो ॥ केहरी मौहर दबीप्रा करक हैवै दलबल हारीप्रै ॥६७॥ लादां सहता लाद उट मुह प्रागल कीधा ॥ केहर कीधी प्रचड़ बीरद भुज माटा लीधा " दल सारे जांरणीप्रो हुई प्ररबी प्रात करारी " चड़ीप्रा बुद चीतौड़ पुजस हुप्रो घर सारी " लेप्र प्रा कही प्रागल करे बरा जोर दीलते बरे " केहरी दलां प्रालम रा कंध सुहावे जु करै ॥६८॥ खरै बरै उधरै करै कीरत वडाई " धरै बीरद चौगरणा सौरे सारी पत साही ॥ केहर भड़ा कीमाड़ बीरद खाटै चुडा रा " देरण दांन चौगरणां लेरण कीरत प्रपारा " प्रालम दलां बीच उचरौ " केहर खग प्रचड़ां करै ॥ वंकड़ा भड़ा लीध चड़ा वाद दल कीरत वरे ॥७०॥ उस सतौ बहसतौ खड़े प्रालम दल माहे " उचा डेरा दीप्रां कीप्रां कीरत दोप्र राहे " हींदु हद बीहद हुप्रो सारो पत साही " खांन नीबाबां बीचां प्रचड़ मोटी नीर वाही " तै तरणी टेक राखी परम, प्रसमर प्रचड़ा उधरी " पतसाह दलां कह उबीप्रो वंको रावत केहरी ॥७१॥ खुद दुद मांडीप्रो करै धीजांनो चारे " रेख्रा कार प्रपार करै त्रबक प्राहरे " हरो कसी ई जोर कसैगाप्रां रा टोला " पकड़े हाथे करद होरै दीन उगो दौला ॥ केहरी राख हींदु धरम " प्रचड़ां करण प्रज सिप्रो " सौद रां दलां

बीच रुके हुय बोलरा खला बहसीआ "२२" लेर कसाई
गाय आया पागल नीसरीआ "नीजरा पड़ता पहल दाव मन
वडा धरीआ "पुढो जाया कीसी कहै केहर बाहलो "पेख
कसाई गाय देख कुदे उरालो देखता पहल चीख उठीओ
हलां हलां कर केहरी "धड़ हुड़ी धाग जुने वने कप मद
उफरीओ ककरी "२३" मंगल नां गीत मीले पवन लागे
उफरीओ "जाया कज वैराट वाहरु धरजरा वरसीओ "सीस
पड़े ब्रहमंड चड़े सुरा तन मध्दर, गड़े पाव धड़ सीस गुहे
कर धुर धमर "ल्यो मार कयां ई गाय ले सेन वीसैलो
साहु री, कड़ कड़ाव वचन राक्स कहै वकौ रावत केहरी "२४"
सुणीओ आलम साह रोस कर धीखो धकारौ "खांन
नीबाबां मीर हलां कर कोप नगारौ "वल वल दल बहसीआ
मीर मुगल हकलीआ "है हीदु सीर जोर वीढरा खागे
बील कुलीआ "वाढीआ कसाई बीजले गाय खास लीधी
उरी "ईल माह धचड़ खाटी धमर वकै रावत केहरी "२५"
मार कसाई जरे दीध जुग कीधी धचड़ "राख गाय
धुम राख साख कीधा मेरवड़ "पत साहा लग हुई वात
जुग जुग लग धमर "गाल धुमर साह री "वाले ब्रद
चुडो सधर "कांधल तरो राखी धचड़ खाग पराजग
उपरे, केहर कीमाड़ मेवाड़ रै धरा भंग चुडे दुसरे "२६"
धौरंग रा दल माह कहो करा हरो कसाई "आंबेरा जोधपु
करे वीकरा सगाई "तीरो धौरंग रां दलां धाव केहर
रारा दीधा "मार कसाई ~~मार~~ मोड़ गोड़ वंश ब्रद लीधा
जस खाट पृथ्वी सीर केहरी, वड जस जुग वा पावीआ
पत साह दलां बीच धुड़ हुए धीआ उर धरा भावीआ "२७"
साही जायौ चालीओ खड़े मालव धर उपर "उतरीए नर
बहा लीआं लसकर नर सध सर "वरज धाट ले नाव
दलां न देए उतरवा "मुगल मतो ले बै खाग [illegible]
करेवा। उतरे धाट धुड़ हुवै [illegible]
देखतो रह्या आलम [illegible]
रांरो मन रीझीओ [illegible] केहर [illegible]
बीच [illegible]

प्राप लगौ पगे रांरणा तरो भड़ देख मन भावीप्रौ ॥ केहर
कीमाड़ मेवाड़ रौ ईल जीते घर प्रावीप्रौ ॥ केसर कुं
दोब प्रखत्र मोती हल उजल ॥ सुईवले सीर कलस गावंती
चंमल मंगल ॥ केहर प्रप्रा घरे हुप्रा उछह घर चूर ॥
मोते वाध वीप्रौ कर तीलक सीर केसर ॥ जालगा प्रेस
माहेस रीव मेर सेस चूजा धरा ॥ केहरी तपे चुडा तलक
कल दीपक कांधल रा ॥ एनो गीत :- बीढरा प्रोरीप्रा वीढंग
फौजां वीचां वडवडे ॥ चमज गर पड़े उड़ धुर धारे ॥
कतो वखतौ कोनै बीमुहा के रीप्रा ॥ सुद रै गेरीप्रा मार
सारे ॥ वड़ वड़े पड़े वागा वीढरा धजवड़े ॥ समर कर
साह रै जड़े पग सेस ॥ वीर रस रांम तरा कमध
दल वाढीप्रा ॥ बीमुहा काढीप्रा कतो वखतेस ॥ करे तातो
तरी प्रोरी काना हरै ॥ भड़ घनड़ पाघरै खेत भांजे
तोड़ तड़ मारु प्रां तरणी तर वारीरे ॥ गेड़ उभे खला
मोड़ गांजे ॥
गीत :- सकत सीध प्रधो सीघोत माहे कहौ प्रसीघ्रा नरु रौ
प्रधा सीध प्रमरेस मोहकम सबल पवाड़ा करे पुरै प्रना
भारा कोघा ॥ वडां सकतां तरा बीरद सकतै वडै ॥ लोह
बल दांन बल भुजे लीघा ॥ सार प्राचार वीध कीप्रा
सांसै सीरे ॥ खेस वे खाग खल सबल खुरा ॥ सक
सीता हरे भुजे वरणीप्रा सही ॥ पवाड़ा सवाड़ा बीप्रा पुरा
बीचत्र दल वाढ प्रौ गाढ मौजां वबे ॥ डोलते दुजे दां
तरो दुसरे ॥ भुजा प्रा भुजे बद ईम नमा भारा
पढोई वैरीप्रा नीवाजे सुपातां ॥ प्रभंग प्रजे वडे साक
प्रांका ॥ पीच उत प्रपीप्रा सवाड़ा पवाड़ा ॥ वडां सकते
कीप्रा जीके वांका ॥ गीत :- पीसरा सार सुघा करे नीवा
सुपातां ॥ भुजे परीप्रां तरणा भालीप्रा भार ॥ कवी प्रा
कलम कहै जग देव क्रन ॥ उडरा प्रघो मल तरो प्रवत
वाढ वैरी हरां देरेरे दनवी दुप्रां ॥ प्रो पावरा वड
बीरद भुजे रेहो ॥ हरा उत हुप्रो कव भाग माहव
हरो ॥ जोघ रा प्रमल तरा कुप्पर जेहो ॥ सत्रांजीपरा
समर नीवाजरा सुकवीप्रां ॥ वचावरा वड बीरद भुजे वाखां
कुंपर पीथल जीसो कहीजै देव क्रन ॥ प्रो हीज प्रो च

COLLEGE LIBRARY
19740
PILANI

तरवार ग्रह नारण " जागीआ भाग कव भड़ा जग जोसबीओ "
गुरो गीते वडे गदे गाओ " ग्रीयो मल सारखै कुंवर
हुओ प्रगट " सार धाचार दहु वीध सवाओ " चीतोड़
अंजस अंज सै मन चुंडा " प्रगट अंज धीआ घरा पहाड़ "
देवी सीध कुंवर तु देखे मन सु अंजस धरै मेवाड़ "
गरब चीत गढ़ चुंडा गरबे " अनड़ गरबीआ कर अंजस
दुजो मेघ दांन खग दावो " देखे गरबै दस सहस "
हुओ सुर अंकर ह रावत " असमर दान दहु वीध ओना
धरा न चीती हुई धड़ा सुध " पड़ पखरै गढ़ कुल
पाहाड़ " गीत :- दीठौ कुंवर देवी सीध हरी सिधौत रौ कहयौ
अबीआ नरु रौ :- सरसत दीजे सुमती " धीह गाढ
जीम चुंडा पती " कव मुखे कर कर कीरती " अत देख
मौज अपार " कुंवर री मौजां जोअ करा " दब गआ
कुंवर दुसरा " ही सल मल महव हरा " सीसोद वंस
सीगार " अत मद्धर लीधौ उधरै " पह समा तीजो पारखै
कंध रौ भाओ मन करै " सत्रव हरा देवी सीध " मार
का भड़ दरगह मीलै " है लास बांधां हुकलै " अर सीस मुख
आं मलै " धार बल चुंडो चीग " कव गजा धज अस
फेर जां " झील सील ह चाना फेरजां " खल सीस बीजल
खेरजां " दल रुप देवी सीध " रीन उदै साबल रो लजां "
तेग तब अर सीर तोल जां " बलवंत धाअ घड़ बोल जां "
तोड़ सत्र सी सत्र सीध " अर थांन नीत काअौ दखौ " धारव
करा धावै धखौ " चुरतो अर दल नह चुके " उदीरै वंस
अंकलर " दांन वड पाता दीजीओ " करी मरां अचड़ा
कीजीओ लाख मुख भाख लीजीओ " नाक चड़तै नुर " वेधम
कंवर वांकड़ै " धुर चीग गहीओ वड चडौ अरजड़ा तोड़ण
अनड़ौ " मह रुप दुजो मेघ " राअ गुर सै सैलां रमै "
दल थंभ खल उदम दमौ " नर अअ अर नीत अनमी
नमै " तड़ तोरण गहीआं तेग " राज धरगो ईद मेघ रा "
खग वेख बीद गहीआं खरा " कुंवर राजोरग दन करा "
दौड़ीओ जस दस देस " जागीआ भाग कवी जरणां "
[illegible] असै गरणी परणां " घड़ धाअ घड़जा घरा घरां "

गौरवां तेल मीलां ॥ मार का भड़ दरगह मीलां ॥ कीजीरे
प्रचड़ा कोड़ ॥ कीर माल प्रीराप्रां सीर कसै ॥ प्ररग भंग
कुप्रर उससै ॥ हीत वीत देप्ररा बहसै हसै ॥ मार कौ भड़
घड़ मोड़ ॥ प्ररग भंग राजड़ प्रारखां ॥ सुज मेघ गोई
सारखां ॥ कुप्रर कीरमाल कोप्र कलह न करै चड़ कड़ा
भड़ कुप्र लोपै वड भड़ां ॥ बोलवा घाप्र बगाल ॥ देवीं सीघ
राजड़ दुसरा ॥ भंभरा लु भाल मरा ॥ हे तप्रां दीजा हांमरा ॥
पुज जां मोटा पात ॥ कीरत खंड कीजीप्रै ॥ बेल न हालै ईन
बीरजे ॥ रंग राग चारस लीजीरजे ॥ उप्रार जां प्रवीप्रात ॥
देवी सीघ राजड़ दुसरा ॥ कीजीरजे प्रचमा सीर करा ॥
मोढ नह प्रावै मीढ रा ॥ दब गप्रा देखे दांन ॥ पाट पत
कुप्रर गढ तपै ॥ खल खाग मुह प्रर दल खपै ॥ कवी
प्ररां चाद लद कपै ॥ वंस वड मचाड़ै वांन ॥ दूहो देवीसीघ
प्रचीप्रै जां कु दालद नाप्र ॥ वीपात दन ला भांख पारखां
मह कुप्रर कुप्ररां मोड़ ॥ प्रारख कुप्रर ईद रा ॥ खत्र वाट
बद गह भुज खारां ॥ तत ~~साच~~ साच लीप्पा तत खरां ॥
परीप्रां खत्र वट चौड़ै ॥ लड़ रारव जां रावत भला ॥ कल
करग कज हला कीला ॥ तोड़ जां प्रजड़ देरला ॥ उससै
कुप्र प्रभंग ॥ पुरीप्रै कुप्रर पवाड़ो ॥ उससै वीरां प्ररवाड़ै ॥
नीजड़ भड़ प्रर घड़ न पाड़ै ॥ जुड़रा कज रीरा जंग ॥
हीसल मल हुरी ईद रै ॥ बल वंत ग्रही प्रर वहरा खग
उबा बरो ॥ प्रेत खग बरौ बील कुलै तार तवर ॥ धाट
वजती तीखी पड़ै ॥ पुरवा प्रर घड़ चापड़ै ॥ रघु रत
गुप्रं प्रंघ वडै ॥ जुड़ करै सात्रव जेर ॥ झाट झड़ माचै
खग झड़ा ॥ ढीग रग रै बे घड़ चज वड़ां ॥ लहुर ल्यांगड़ै
प्रीलो हड़ां ॥ ताप जोप्र प्ररग पड़ तड़ा ॥ गीत :- दोवी
गाव रै मेघ रज दुजो ॥ भेद जांरगरा भुप ॥ रावतां रो
मोड़ रावत रावतां री रूप ॥ सार तो जुध वार सरसो ॥
दुसो बधीप्रो दांन ॥ गंज बगस वव गाव वड गुमार
मघ वांन ॥ कीसो कारज सरो कपरो ॥ चीत हीरग चाव
हरा उत गाव रै हेतु ॥ दुसरै दरीप्राव ॥ लाख री उपड़ै
लहरां ई दसै उरगीहार ॥ भेटीप्रां दुरव दल भाजै ॥ देवी
जग दातार ॥

गीत:- कड़ बाधी वरौ ईम नमा कांपल प्रैपेर मद्धर
प्रकारी ॥ केवी गीलै वीलु कुलै कल हरा कुप्पर तरणी कटारी
चीखै प्रगन जीम चड़ा दोलवा ॥ व वरणी प्रण तीखो
प्रत वाद ॥ मालम पी प्रालम मेवाड़ा ॥ जालम तुक तरणी
जम दाढ ॥ लावा लेरो गज कवा लेप्रवा ॥ वहै वहर प्रर
उर वीचो वेग ॥ सेल फलो बाधी कड़ सोहे ॥ मामीप्र
माड़ ईम नमा मेघ ॥ देवी सोघ राज धर दुजा ॥ दांवा
हरी ईद तरणा दंद्धल ॥ वज रज ही प्रीप्रा उर वहै ॥
प्रण भंग कुप्पर तुक परणीप्राल ॥ देवी सोघ न जचीप्रो
जां क दालद जाप्र ॥ तार वारा तवु दांवी नानी धरान धप्र
लोटै खल पीता समा लालु रे ॥ लुकै प्रत लेरो लहर ॥
काढै देवी सोघ क सुबो ॥ वीर मर मुह करड़ो कहर ॥ जहर
कहर ईसड़ो कुरण जोरै ॥ ठीक कुरण रहै न लोपै ठौड़ ॥
प्रवी वास सास जारे उके ॥ चखीप्रो जो प्रंती प्रावै
चौड़ ॥ हरी ईद तरणै काढीप्रो हाथां ॥ माडी प्रसमर
भांग मही ॥ प्रावै वार वार उफणतो ॥ सार तार परणपर
सही ॥ पीरो जो के पड़ै पग माचै ॥ खल कोप्र करै न
पीप्रण खांत ॥ पावै कीप्रो क सुभो चुंडा ॥ भुजलग
भांग प्रनोखी भांत ॥ <u>गीत कुप्पर देवा सोघ हरी सोघोत रो:-</u>
करतां वड दांन वाहतां वीर मर ॥ जोड़ न पुजै प्रवर
जीके ॥ करै मोढ तो सु ईन करीप्रा ॥ तो उपर वारीप्रा
तीके ॥ भुज लग कदे न वाहै भरव ॥ प्राचां करै नही
प्राचार ॥ रो करमदा कुप्पर तो उपर ॥ वार वार नां खुदा
सवार ॥ मौज वरीस ईम नमा माहव ॥ राप्र गुर रुप
कारतां ॥ तो उपर देवा लख त्यागी करु गीलरौ कुप्पर
कीता ॥ गीत:- कीता देखीप्रा सार प्राचार दहु वीध कसे ॥
वैवे नह माल नव दुराव रंगां ॥ करां धारां तरणा दान
देखे कुप्पर कुप्पर पुजै नही तुक करगां ॥ तुरी करहा
बक नके स बद बता कप्पा ॥ बगल भर वरीसै प्राप
बाथां ॥ हाथ काढै नहीं कुप्पर देवो प्रा हवां ॥ होड पालै
नहीं तुक हाथां ॥ गीत:- प्राचार प्रनां तरवार प्रसां कल ॥

हीसल मल देखीओ हती" काचौ मतौ न ग्रहीओ करगे"
माभी साचौ भार मही रा आंसीघ तरौ वड रावत"
पातां करै वडा दन पेस चावै खाग त्याग चुंडावत
दावो वडौ आंत री दे" गीत :- जुजार हरा पौरस जाला
हल" पीड ग्रहीओ खत्र भार परगौ" पाट रीआ जुग तीर
पर वरीओ" ताज खांन जस तुझ तरगौ" दावां लीरै
हुओ वड दावा आद रतां असमर आचार" गढ़ गढ़ खंड
खंड गाई जै कड़ तल रान तरौ कै वार" झालीआ बीरद
बीनै वड झालै" घरा सराहै भुप घरगा" अवचल हुओ
जगत उपर वट" त्याग खाग कलीआं है भुप घरगा"
अवचल हुओ जगत उपर वट" त्याग खाग कलीआंरा तरगा"
गीत :- गह लीधां मद्धर वडै चह गाजे" सत्र लांफलेन
चांपै सीम" ईल आगल वरीओ अमरावत" भड़ा रखु
जागल भागल भीम" ओ चंद्र सेन हरौ अवला कड़"
कवी भीवाज के बीआं काल" रेवै गढ़ां तीर सतां डुकै"
मांस रौड़ गढ़ भीम भुजाल" मह ओपम आगल मह
वेचौ" माझीआं मोड़ वंस रै मौड़" अमरा रांगा मैहर
अमरावत" चवांई डग आडौ चीतौड़" मेवाड़ा आगल मह
वेचो" वलह वड वडा कांम करै" फौजां घरगी घड़ फेरै"
चरगी भलां भुज भार धारै" गीत :- परगी लड़े लोहडै
घड़े तड़ भांखीआ अलंगा" मांम तज मद्धर हुआ नमांमा"
उपड़े जड़ा वन वास सेवां प्रीत" राज रै ताप वरीआं म
रांमा" बीआ करग करग पीसरग वसरग जसरग कहे"
भोग तज जोग ले गीरै भंग रे भमां" बक्कल रे नमे
सेला सेन सबलां" अंग तजे मद्धर तज गआ अबला"
गीत :- हौ करतौ चरा चुगातौ हे कल" मोटी चर
मोलवा मझार" आडौ कोअ पार चीन आवै" ढाढल अडग
चरावे डार" मुरौ कवल वराह भई कर" गजां फाडरा
वडौ गीड़" तैखु कोअ रीगा बाल तेवड़े" चौसु कोअ
रीगा ताल तेवड़े" चौड़ो ~~नावे~~ नावे दांत चड़ो" अरीआं
कांध सांध उबेड़ै" जां तेरा कहर वजाड़ै जाड़" रात
दीह चड़कै रुखवाला" रीगा उपट नमां डैरा" थीर
खुज नेर वसै वांके थह" मन मांनी ओ चरै मह माल"

हुवो ईंद तणौ अजब सोहे कल " दला हुवौ वडौ दोढाल ॥
गीत :- मुगल आवीआ सुर ही मारेवा " कल उक्लो
करासी " मारणा नह दीधौ मेवाड़े " अजबै ~~मसम~~ जाङ
उप्रासी " दीन चौलौ धांरौ दे सुरी " जुंग सारै ही
जांस्सी " सीर आ आग मेधेन सारा बल " तां राखी
तेजांरसी " मेघ हुरा वदीओ मांटी पणा " सुर नर वीधा
सांखी " हीदु धरम रखीओ हीदु धरम राखीओ हीदु "
रसती त्रंब राखी "

कवत :- संख झागल रगड़ी अड़ै होआं आरती दे वल
वपु करै असनांन करणा काआ नी केवल " जग जाग
जीरण वार जगत जै जै उचारै " लख मावत दे दहुर
बीरद कुल रा भुज धारै " झगड़ु भांम क्रम चंद जोसौ
ईल सु राजे होम पल " परभात ~~भति~~ पात क्रन रै पौहर
मु हंतौ वाचां सीह मल " गीत :- तर तर नर नार फौरै
धारै तप " अर घर घर औद कै अचुक " वावल पांन
हुआ वैरी हुर रावल रांम तुहाले रुक " रुकां पाणवाक्रड़
रावल " अते धर हुरीआ तुर्क अंगा " अर पांनड़ा घर
खागां पाणा जतां खुमावण नह आआ " लड झडा आगे
मलगां खात " धाआ उडाआ पीस धर " वीलगा गाम
फेर नह बलीआ " नांही आ मीली नार नर " जग सह
कहे ईम बमा जसवंत जीके धांन नह फेर जमां " झड
भुज लगे उडाआ भारथ " भीम गजां जीम गाआण भमांड
गीत :- दौढौ रावत मोहणा सीध जमर माहे कहीओ आसीआ
नरु रौ कहीओ दौढौ वीधानीक :- वन राव वीज गज
समद वीस हुर " सुर ईद गीर वीहंग संक्रर " पवन
हुणामत सक्रत पंडर, समर मोहण सीध " अतक्र झल
मल वजर रेक्रल " हुर अधड़ कह हेम खेतल "
सीलल अली अल चक्र मद्ध सल " धार जमर धीग "
वाघ तड़ां अल करी दध वीख " पतंग फुल दर मेर
धख पंख " सीम अनल लगुल देख देव दख " जुड़णा
जोध स पारण " पंड जम सुर मुख पाअक पुरण " गदा

साम्रर स्रप " पतंग घरा स्रंग गुरड़ सीवजप " रथ
वाम्र नर चंडी गज रीप " उद हुर धारांरा " सुज धरम
चोम जेही वजर पुधर " रांम राहु सीत बा बरी पुर "
नै भमर सुदुसरा वनारमी नरू " करै जुध के वांरा " हरी
दाम करी दध धहू " मीत मेहु धनड़ गुरड़ सीव महू "
कल पंते पलंब सके तमी कहू " धरवाड़े धरा भंग " काल
मंगल मल गीर वहर गौड़ कर " वीसन सीन चौल
गीरं भैरव वर " जल वहरा महू धरती वहम द्रजर "
द्रता वत धर ढंग " गीत :- खीचो केसरी ~~सीप~~ सीप
लाल सीधौत रो कह्यौ धासीया नरू रो कह्यौ :-
कमरा वीज पकड़े वजर सीस झेलै कमरा " हठ करे
करै जुध करा म ईद हुत " प्रगट लंकाल जोरा लाल
खां पाड़ीयौ " काल री जाल केहर तणो कुत " संबर
व पकड़ कर करा वजर सहारै " लड़रा करा वहारे वले
लंकाल " पहल रीरा ताल बगस जोसा पाड़ीया " जोधरो
सेल प्रतक तणो जाल " वीज हुता वधै लाल रा वीर
वर " ईद राव जर हुता प्रकारै " कंगल उर फोड़ डाउर
वीहर कर कीयौ " धर कीयौ परां दड़ीया धारो " वध
गीर वर हरै लीयौ वादो वदौ " लोह रा बोह वीच घटै
लांजै " सेव रव ईद गदा वाघ हुता सरस " गाडीयौ
मीर जो मार गांजै " कवित :- वेधारणी पाड़ गत त्रवल
वांको त्रांबकड़ो " चोटी बांध मुगट गीत दौढो सावझड़ो "
एकग खरो धड़ैल " त भमाल जणीजै " सुरहंस
सारंग " गौरव त्रकुट बांध जैणीजै " सांनौर सीह चलौ
सुफ करौ मैरा चर छत्र चर नाग मह चौवीस जात
पींगल चवै " कै वता रेता गीत कहू " गीत कवत :
जेरा वार ईद धल पवर सवर सरा मन मुकै " जेरा
वार नेर नार चाव चीत सुसत चुकै " जेरा वार स
घटे धसत संपत दरसै " रांम हरां कुल रीत चीत च
लीधां सरसै " फत माल पु ग्रह धप्र चले सधी " वीज
सील सोता वरणी " कल जुग धकल ग्रहीयौ करग " सच
साच सोली करणी " गीत :- बीजा सत तौल घटै बदापर
चुर सुन रहै हेके चड़े " ईल माहे मो हकम नाच

उत " चड़ते दीहे मरण चड़े " पुपु राह रौ ईम नमौ
पातल " वाचौ जग रवट ही वरण " भलौ सुजस करव
तीहु भुअरो " भल दांने चडीओ मरण " सत दत गमे
दुआ साही के " चरमां को लोग लाय रै " मत हीरो
चोढ कर मोढ करतब मौहकम जेम करौ " जर ढपरा ओवीं
पांड न चलारो पालो " पीड मांग पत जार करु पेसत
रै चालो " तो जेहै नह कोप्र अर जे आगल अरवु "
त पातल हमीर मोट कुरा दुजो ~~सव~~ दरवु " जीरण
देरो कुरा नवल तरण मौहकम रच कीरत रै " साहमल
लरव पत दे दावत रै " गीत:- दैढो राव * रतनसी रौ कहीओ
प्रसीआ नरु रै " अर सेन उलट आवीआ " दल सबल
बल दरसावीआ " समझै नही समझावीआ " कवत:- जैत संघ
उ मट माहे प्रसीआ नरु जी रै " देरो दान पुनमांन "
कोन बंस रौ बया " बांरा लरव मालवै करग कीरत बसता
आयक तोल अपार भला भद भुजे भवाडे चीत चावे
चोगणो " रीत कुल तणी रहाडे " हठी अंद तणो हुदा
हरौ " वय उजवालै कुल वटां " मालव धरा मांजजैत
सी उजेम्प मचावै उमर " गीत:- तरवारां तूझ तेज
रा तटै " वीरत कीरत तणा वर " चीरा सीध नांम तो
लीधां " नाग डसां उगरां नर " तुटै ताप तुहालो तेगां
वडां वडा भद भुजे वहै " अह डसी आतो नांम उगरै "
कच रवे आलम कलम कहै पहड सीआ तो नांम उगरै "
कच रोआं आलम कलम कहै " रवट रवंड सुजस करै
राव रवीची " तुटै तप तुहालो तेग " लाल तणा तोना
मले पंता " वीस हर उसे सौहै वेगा क व्याव दीओं
हां मत सीध सही रांसो पुर तारो " जुग मझ कीरत
हई जीका जुग सारै जांणो " रवड़ा सहस असवार " जीआं
वीचलीओ अड़प " जारा सघ धह वीच मद कील
कीलो झड़प " परता पतरो उदल हरै नाहर नाहर दढीओ "
पाडीओ सुर वादो वदी चारां बल पंपेड़ीआं " गीत:- कोप्र
जे मीलै नह देरो न कारी " वीलगी उपर आग

घरा" सकै नही वैद री बडाई" जवन ऊपर घाई जलरा" नीख दीन दोरो सुझै न नीदां ॥मीर बलै प्रजलै उर माहू" कर को बीज तरां कल कोर मर" मव संतरो भरको प्रत भाहू" चीरत सीघ ईम नमा धारू" लडे लोहू दीजतां लगाय" प्राः पैहर प्राजलै प्रसमर "मीयां तरा बलै मन माहू" खीची राजै कोट गढ ईद चै उरा हारे" पात नीवाजै लाख मौज परवा प्रात उधारै" दन दीजै ब्रद लीजीरै कीजै जस सारै ॥गज गाजां प्रस उफलां भड मीलां प्रपारै" वाग बीचा महल गौख रज स राजा रै" सत्र चड़कै हुआ सीहृप ज वड़ धीरा रै" दुजो गीरवर दीप साहू सत्र सार सधारै" खीची खारे खुद घर खग पांरा खरा रै" समवादी दबीया स को जुध कुरा बीचारै" धारु बंग सला लखां चीबीस दुधारै" खीची खग प्रचड़ा करै जोरो जुग सारै" सुरज उगै साहू सु सीरा खेत बुहारै" पंच हजारी कघरै दुबीया सोहा रै" प्रहू उसौ प्रावै पगे नर जीता उगारै सुर को सांगर भी प्रहीर सब सेवा सारै" चीरख का खग ताप देख सब लगा लारै" खीची खंड रा पात साह दोय राह मकारै" पाप्रत खत गैगौर गढ वरा राज सवारै" नारु जस ल्यौ धीर साहू धारू ब्रद धारै" भड़ सहू दबी या मोमीया खीची खग धारै" काय वाच नीकलंक नर कीरत रा पारै" सत व्रत दत धुम साच सील कुल मा जस मारै" गरु प्रत सागर वडम मेर प्रत तोल प्रपारै" खीची खाग तप्राग सुर उची प्राधारै" लाल तरो दल साहू रा खल बीजल मारै चीरत सीघ प्रताग वाघ गढ माहूग लारै"

<u>गीत</u>:— खग वाहा नमो पराक्रम खीची" धाय गमै प्रर तरा घर" तीर तुहलै प्रजरा बारा तक, लागै ताव गैल हुर" तीरा कबारा जु प्रारा लाल तरा" वा है ज्यां दीसमी वली" लागै जीता तीता चर लोटै" कांब पडव बारा कली" <u>गीत</u>:— चज वड़ चै पांरा ईम नमा धारू" कोरा सीर चुरवला करै" भारव सीघ तरु सु नारव मांडै जे प्रर प्रव समरै" खत्र वट प्रगट झालीरै खीची

भाजे करै वेरीआं मुक" वीजल ग्रह तुम सु वीजावत"
पड़ै जीके रीरा पड़ै पचुक" खहै जीके तोसु रीरा
खीक परै पोलम कलम कहै" काप प्ररा चुक घरा
दीस कदै" काप रुक मुक होप खेत रहै "गीरवर हरा
चालतो गीरवर" मामौ मद्दर नमो मन मोट "पीसरां
कोट करै सर पाथर" प्रनो या परां भड़ांवे प्रोट"
गीरवर हरा नमो बल गाढम "चीरत सी व खत्र वार
सधीर" वाहै जीतां तीतां उर वेधै" तीर तुहालो प्रजर
तीर" गीत:- पड़ै जीआं सीर जीके रीरा बल होरे
प्रले" उकलै हुकलै खलै भा काप" खीचीआं राव बाले
भसम करै खल" लोह झल की गीरवम तरणीलाप"
चड़ हुई चीरवै चोमाजलरा धुधड़ै" चड़ै घ्यागां खलां
दलां पुरै" ताह री तेग गीरवर हरा कुल तीलक भजोले
खल रास पुरै" उरड़ नीरड़ै भड़ा गज उलाप रोगो
रहै मै मंत नीत रगत राती" वहै तातो सत्रां सीस वीजल
वीकट" मंगल झल जांरा कै जेठ माती" केहक खलबले
हुआ खलै कोपला" भमै केहक वने सास भागा "कौ
प हुआ पीसरा बले रीरा कोपला" लोह झल केहर
तरणी लागा" गीत रावत मोहरा सोप छत्र सोघोत मा
पीसोआ नरु रै कहो:- कामरा ईम कहै हो कंता दीस
काप ताकौ पवर दीसी" तेग जीआं सीर मोहरा तोलै
कहे पुड़ा री पीस कीसी" वसो जाप पर मारव गला
लसीआं जांसु कीसी लज" पार दीह जो रारवो पुड़ो
तो जाप्यो मालवो तज" कामरा कहै जीत्र कर कंता"
वंजो ग्रास तज वास प्रवास" उमट तणो धकै मत
प्रावे" जो यह वात तरणीवे पास" उदा हरो छता वईस
कमरा परची रेम कहै" ईरा यह वात तणो उमट मे
रात दीह चौद कौ रहै" गीत:- पाड़ीआ सत्र जता
मोहरा परा धरा" पीउ गुज

खरां घरणी" कांने नह सांभलै कदेई" पीउ पाल पदमणी तरणी" पाखर रोल पढ टता पमगां" धड धड दी धा दता वत धार" सुता नाह औद कै सेभ्कां" सत्र नारी तेरा तजे सीणार" गीत - खटकै नीस दीह रहै नह रैध खीरा" जवन दुखी दीन दोरा जाय" उमट मथरा तणौ धणी धालो" औरंग साह तणा उर मांह उपर अमाई सासन आवै" बहत दुखी घत रहै बंगाल" रात दीह सालै चक तारै" दत्र पत तणा तणौ छडी ढाल" धरा धुस चक धुरा धधुणो" तांजडी चकता उर ताय" रुको अपलक न सरकै आघौ" मीर तणै कर कै उर माह" कलबल कोय न लागै कारी" जोर दखी मर वारौ जोग" उदा हरा त रौद उपर लागौ कोय रोग" तणी धणी धालो" गीत - खीची अजब सीघ गरीब दासोत रौ है जो आसीया नरु रो कहीयो:

बल कोय न लागै जडी न बुटी" धर आवटै घटै धरा ताग" लागै जीके तीके धर लोटै" खीची नाग तुहालो खाग" आवै जगत रंह कच अजबा" धारु हरा न मोखत धाव" उसै जोता खल पडीया दीसै" बीजल लुक कीना यह राव" गीरवर तणा मदर जोय गारुम" जपै जरु कव कीरत जाप" बाधा जीके गया धरा खुटी" सुजड तुहालो कालो साप" खत्रवट खरी तुहालो खीची गरु करां कव राव जस" खलैं पीसणा धुरा धुरा सह खाधा बीजल अह कोरडो बीस" कवत - कल जुग पुर समंद पाप भरीओ उभलै औह वल उपडै तेरा मान वह चलै चीत लोभ चीतवे अवगजल ऐसे उडै तीरै फीरै नह वस कै कुक्रत कादम मभ बुडै कोय सरै न कारजे हरी कोट अकारथ जो करै हर नांम नाव मन धर नरु जु दुतर सागर तीरै" गीत - आसीआ नरु रो कहीयो जगत सीघ खीची माहे:- पीता अरस माग आस रगा पुर" खल कोय करै न पीवा खांत खरो कसुं पावै खीची" भुज लग मुहे अनौखी भांत" लरे गुर जे पडै लड थडै करै न पीवा कोय कस" अरीयां ना पावै अज बावत" रुका मुहडै रांम रस" आवी वास

सास जाणै उडे" जारै कहू कु पीसण जीको" तर सर
सलगावे करै ताजी" खहै लोघां नरां हांमरां तत
खरां" रहै रैण जीणां हुत राजी" दाबटे दले दुर
मले दुदा हरौ" घण पहटै चडे भडे घोडे" दीह उगा
समी सीह पसरा देरे "लेरे रस परस घर
सर सलोडे" गीत:- जरद रुले चाठां मरद वेग मीडै
जगम" चुर सहस बहस रीण रोस चावै" ताजहीं
उरड़ भीरड़ां मुरड़ प्रजब तरण" ईला महला तीणां
हाथ प्रावै" पहट पंमगां नगां चसल मसलै प्रगट"
प्रडै भीरडै ~~[illegible]~~ घडै गाप्र प्रांटी" पौह वहसबहस
कस लेरे रे रस तु परस" महल ईल वदै जे
सरस मांटी"१" सुर उगा समी चसल मसलै सही"
तरस रस लगावे करै ताजी" खहै लोघां नरां हांमरां
तत खरां" रहै रांण जीणां हुत राजी" दाबटे दले दुर
मल दुदा हरौ" घणु पहटै चडे भडे घोडे" दीह उगा
समी सीह पसरां देरे" लेखै रस परस घर सर
सलोडे" गीत:- प्रखड़ा, खड़ बांजड़ चाड़ा उधेडे "कुत
हल भुज बेल कीरे" करसे परसे सरस कमावै
हल बीजल सात्रवां हीरे" चाड़ उधेड़ भज चडदे
खेल" घणु घाह दे वाह घणी" प्रसमर भलो कमावै
उमरा तु खेती खत्र वाट तणी" हल बीजल खल
चे उर हाके" सार धार दला मार समार" रीण
भड़ बांजड़ कोप नर हीये" पहट कीणा घर हाक
पमार" प्रावै जगत नमो प्रजबा उत" नवो कीयो
करसण नर नाह" जस ची रास हुई गीर जेती" रस
खेती प्राई रीम राह" गीत:- खीची जगत सीपजी
माडे पासीया नरु रो कहीयो:
जग मालम जुगत वखांणो जगता" भुजे भालीया परी
प्रभा" वा रूप मग देरे वड पातां" प्रवंत रीये चारु
[illegible] खीची पां तणी प्रज बावत" पावो सारां

गीत :- टल वलता पीसरण पड़ां सीर तुटां " बुटी लगै न कोय बल " खीची सेल तुटलौ खारगे " काला मीरण चर तरणी कल " लागां प्ररणी समा प्रर लोटै " लालु रीख्रा लेरगे लहर " गीलीख्रा घरणा घरणा खल गीलसी " कुत नो ढंग दीसै कहर " भीड़ीख्रा जीता हुग्रा चर भेला " भड़ केग प्रनेस तज भाग " तुम्ह तरणो खीची प्रज बावत नाग फरणौ सा चेलौ नाग " जगत कहै धारै कर जगता जग जेठी मा धीखांजंग प्ररीख्रां उप्रर घड़ा उचालौ " चालौ तो वालौ मोरंग

दुहा :- माम्भी तो भुज मंड प्रसमर नाख्रां चाकी " खीची खीची खंड तु जग मालम जगत सी " जग रुली प्रारां जोड तु नीवलां वल प्रजब तरण " हलै न बीजां होड प्रघरब खग धीचार की " खीची गहीखां खाग " तोड़ै मैवा सा तुरत भड़ां न देरगे भाग " तु जुध वेला जगत सी " सीवर भोज सारीख जग ध्रुन वीक्रम जे वहै " पातल हां पारीख जग तो जोहां जगत सी " न करै मुख नाकार " सुद न देरगे सांमल हरौ " दातारा दातार च्या जग मालम जगत सी " जगता थारी जोड़ नर दुजा पैहचै नहीं " माम्भी फौजां मोड़ सु दन देखरा सांमल हरौ " जगता सु जुड़ी प्रात " वीजु जुल भालो वीदरण " मुड़ीख्रा काय पड़ी प्राह " पग माथौ दीसां पीसरण जाचौ जाचरण हार " कन कोय कंकाली हारगे " न करै मुख नाकार " सीर ही लग सांमल हरौ " तु जगतां जुध वार खीची खग वाहां सी सौरै " प्रज बा उत उदार माड़रण दलां महेस हर " गीत :- वैरीख्रां चै देस वैरीख्रां वीनता " करां चीज रगे सुहस कर " प्रज गै बरै सेल उमट सै " प्रम कंत चै पड़ जो उप्रर " हु जे जुध कहु रगे हेली " जीरणे कपट मन सार च गा माय " प्रज बावत कालौ प्ररणी प्रालौ " मो कंत चै लग जो उर माह " परची नार चीज कर प्रावे " बई जौड़ हो उल बाल " कल माती पड़ जो पर साबै " छाती माह तरणी दड़ी प्राल " परची नार कहै हर प्रागल " हुजे जुध कहु मन हुत " तौ कंत चै पड़ जो प्ररण चीतौ

कीसना हरा तुहालो कुत " गीत :- वन राव वीज गज
समद वीस हर " सुर ईद गीर वीहंग संकर " पवन
हरामत, सकत पंडर " समर मोहरा सीप " प्रेत क्रम
मल रेरे कल " प्रघे हे मख तल " सैल लख लीप्रल
चक्र जों मर. सल चार उमट चीग " वा घाड़ी
प्रल करी दध वीरव " पतंग पुल दर मेर घख पंखे "
सीम अनल लंगुर देव दख " जुड़रा जोध जुप्रारा "
पंडजम सुर मुख प्रा पालो " जदा गीड़ प्रम राह पालो "
गीरा र नैम सल चक्र माद्ध थर वरा " धाप्र धातरा
धारा " सीध संबर व ईम साप्रर सप " पतंग धरा
संग गुरु़ सीव जप " राध वाप्र वन र चंडी गज सेप "
उद हर प्रारंरा " सज. परम चोम जेही वजर सुप्रर "
राम राह सीत बाबरी पुर " नै भमंरा सुदुसरा वी
बारंगी नर " करै जुध केवंरा " हरी दामरा करी दध
प्रह " मोत मेह प्रबड़ गुरु़ सव मह " कल पंत पल
बीस कत भीम कह " उद हर धरा भंग " कील मगल
मल गीर वहर गाड़ कर " वासन सीन चौल गीर भैरव
वर " जल वहरा मह प्ररतो वहम दजर " दता उत थर दग.

गीत :- दीवांरा परस रामजी रो कहो प्रासीप्रानरु रो :-

प्रज बावत कहै सुरो ईन बारां " कर जे कोर मर
वाज करै " वीर हौरंगे सो भुगते वसुधा " वीरां री चोगरी
वसै " दुदा हरौ कहै ईन दुजां " भांजे करो वैरीप्रां भुक्र "
डाकर डमर नही नही प्राडंमर " प्री पर प्रसमर तरणी
प्रचुके " प्राप्रां कटक सांमहा प्रावे " सीर पर धारां सोत
वर " हांगला करां वाह खग होगा चीग जे भोगवां
घर " प्राठ पौहर जे भीड़ उकदा " त्यारै हाथ हौरंगे तरवार "
घर " पुरो राम कच परस
घर जांरी भोगवे जीके घर " पुरो राम कच परस
[illegible] रो कहो प्रासीप्रानरुजी रो

चुहड़ां राव बेवै बीरद धारीआं " वीर उधारीआं वडीवातां " वाह खग सगह ईरा वट वहै वैरीआं " पुरण व्रवे नीवाजै वडां पातां " श्री रामजी चत्रभुज देवीजी रूप करावत मोहरा सींघजी रो कहीओ प्रोसोआ नरू रो रूपक छंद मोतीदाम " दूहा " सरसती दे मो सुमत वाप्रक प्रवरल वीरा " छत्र पत सुत गाउ गुरो मह दाता मह सरा " पते साहां घड़ पलरौ " जवना दाखण जोर " राजै गाजै राज गढ उमर वंस उथोर " पांच हजार पाथरै पर तन मांडै पाव " गाजै उमर राज गढ रीध मोहरा वन राव " उमर मोहरा राज प्रवचल " ईल मझ जुग जुग नाम प्रवचल " ~~रीपु जग उमर~~ थापे दन की क्रीत प्रवचल " उदा हर जग माह प्रवचल " रीपु जग उमर प्रचल राज " ई लाजां सु रज संकर भाज " सही गढ राजै मोहरा सीध " चक्रावे कोटां मोटां चीग " छत्रा उत थ्यो वंस माहे छात " प्रथी वड दांन नीवाजण पात " प्रडी खंभ प्रनड़ सुर प्रबीह " सही गढ राजै मोहरा सीह " वीजु जल कीदै वांका वांक " सीही सत्र मांने जै री सांक " नवे खंड थ्यौ जग प्रचल नांम " व्रवे वड दांन वडो वरीआंम " भीड़े वा भारथ प्रजर भीम " चेड़ कुरा चांपै जै री सीम " सही चड़कै जै सु सीमाड़ " बोलै सत्र धारे घाट बराड़ " दबे गा दुजा दुजड़ दांन " वधारै मोहरा सी वंस वांन " दलै सबला खल सबल दाव " राजै गढ मोहरा सी वन राव " दाता वत रावत थ्या कुल छात " उधारण खाग खलै रवीआत " डरे दबीआ खल भुला डाव " परठै जै कुरा सामा पांव " खत्री गहीआं कर सुक्रर खाग " बीढै वाल्यौ पर उपर वाग " कीधी कमधां सीर उपर कस " लडे वा मेलीआ फौज लगस " मेले दल वदल पुर हजांम " चरा पुड़ चुंज होरये धम धम " रीपु दल मेलीआ उमर राव " परोड़ा रोड़ घड़ा पराव " कीधी सीर वागली उपर कोप " लेरै गढ जीरा कलंका लोप " करे सज सेन सजाई साथ " भीड़े वा उस सीधी भारथ " लसकर ले दल दलतार " प्रवां भंग उमर थ्यौ असवार " होरये हल हुकल सबल हके कढ होआ कोपरा सुर कटक " चुसां पड़ पोट धुर रुके

थीह" सही चढ़िग्रो ग्रस मोहरा सीह "पत्र भुज जी श्री राम राम दंद कहिया ग्रासीग्रा नरु रा दीवाराग परस राम जी रा दंद जात नाराज दुहा :- जेम कड़ झंपा न रै तौ ही जग्रग्रा न पड़ै चौ केग्र" दन परसा परमार सु होड न दुजा होग्र" दल होरेवे हुकल कलल बाजै बीसमी चार" दल ग्राडौ जड़ जां जडै "जुध जाडौ परमार" धड़ धड़ वाजां धार" घड़ भड़ वड़ होग्रां गरट" तु परसा तीरा वार" दीजै ले ग्राडौ दलां" तह कां तुर तंबार सुरह सोभड़ उससां" ग्रज बावत ग्रंबी ग्रार दीजै ले ग्राडौ दलां" ग्रावट कुट ग्रपार, कुजर नर होरेवे क चर" न परसा तीरा वार दीजै ले ग्राडौ दलां" द दल ग्राडै दुठ वहादर दाटक काटक फौज तरौ फरसौ" गज भार धार खग्धार गुड़ावरा" सार ग्रपार सदा सरसौ" ग्रज बावत उमर रुक रीरा वट घाग्र घरा घट मार घड़ै" कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस लड़ै" गज थट ग्ररट गरट गह घर, थट सुभट बीपट थड़ चट ग्रर लरां चट खट खल खट थट खहै" कीर माल बंगाल टीग्रग गाहो ग्रांकट" झलल री ग्राल कड़ाल झड़ै" कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस लड़ै" दड़क दड़क बड़क बड़ा बड़ सार सड़क कड़क सही" मरड़क मड़क दड़क पड़ा सिर, केग झड़क खड़ग वहै" कड़क कड़क खड़क वहै पत चार चौखि घड़ चु उधड़ै" कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस लड़ै" झट पट बीपट बीकट खग झट" लोह सुभट ग्रगट लड़ै" गज थट गरट हुग्रा कट गुदट" ग्रगट सार ग्रपार पड़ै" माती दल हुकल गाजीग्रा मुगल" गुदल उदल मार गुड़ै" कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल" लोह परस सरस लड़ै" चक्र ठक धमक गमक धमाधम" डफ डहक वजे डमरु" सक तक झलक वल कोग्रा सबल" चार वहै चड़ कंध चरु" माती खल खट हुग्रा थट खीचट" मार पग्रौ जोधार भीड़ै" कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल" लोह परस सरस लड़ै" वागी खग धार ग्रपार चहु वल" सार वहे मच मार सीरै" कीलकार करै सकती कल उथल" खाग वहै खल खेल खरै"

दुचट वीकट हुआ चट डीगल " उससता भड़ सार अड़ै "
कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस
लड़ै " वज रुक अचुक बी हुक होआं वीठ " हुक हुई
खल खाग होचां " डर बल कंगल दीगल हुआ ककट "
वाजीआ वीजल राड़ वीचां " दुदाहर नाहर दुठ दुबाहर " घाट
खलां खग भ्माट स्व घड़ै " कुल चारण सोह समोह वीचां
कल " लोह परस सरस लड़ै " हुबी आ दल हुकलवाजीआ
वीजल मुगल सबल सार मीलां " रीरण स्रोरण रलतल
चाल चल वल " भ्मोक पड़ै सत्र सार भ्मीलां " पड़ घट
पहट गरट गज घट " वीर खत्री वर खाग वड़ै " कुल
चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस लड़ै "
हुरलक हुलां तुरलक पड़ै रत " मार प्रपार खगे मीलीआ "
माती हलकार हौकार मुहा मुह " वाप्र घरो दल बेगु
लीआ " वागी खग भ्माट नीरट चहु वल " उ ब कड़ा ढकड़ा
उबड़ै, कुल चाड़रा सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस
लड़ै " सराररा रांक सरांक भ्मरांक वहै सर तुर त्रंबाल
कराल तहै " कीरमाल बंगाल ढीगाल होरे कट " वीजल
काल कराल वहै " चाड़ कंध वहै चराल चाड़ा सुध "
धंधट सेलड़ां सेन ढहै " कुल चाड़रा सोह समोह वीचां
कल " लोह परस सरस लड़ै " दुदा कीसनेस सरीखै
डुगर जै जुध भांमा वेरा जोसै " हुठी रीद हरो अज
बावत होसल " उद दता परताप ईसै " कीसनेस हरो
उमट अरां कल चुरत चीग सतोल चड़ै " कुल चाड़रा
सोह समोह वीचां कल लोह परस सरस लड़ै "
<u>कवत</u>: – लड़ै परसौ लोह वीर वीराध अखाड़ै " लड़ै परसे
लोह पारण मीरजा पछाड़ै " लड़ै परसौ लोह घड़ा रौ
दरी वीरोलै " अज बावत उमट ईला रखे खग ओलै
दुद हर दुठ भांजै दल जमी सीस जुअल जुड़ै " वड़ वड़ै
वीर वीसां जही लड़ै परसौ लेहड़ै " <u>गीत</u>: – मारु आ रावण
मो पराक्रम मोहकम " असमर हथा समर अगजीत " प्रसु
उचालो मौज अपालो " भालो तुभ्म तरो भैभीत " सबल
हरा मौज मन सामंद " नव सहसा उजला नरेस " गजा
पछाड़ तुहालो जांजो " पीसरा पछाड़ गीलै पंडवेस " कुल

सोरगगार कुंअर पातल का हीसल वधौ क्रमरा तो हुत "
मन हर हरा कहै जुग माहे " कीलंब पहाड़ तुहलो
कूते " गीत :- गुरणी भ्रणा कर चमल मंगल जस गावै
चुहड़ चौ दस देस चर " जग कोमरण परसी जोरावर
" कीरत ता परसी कुंअर " पातल तणौ व्रवे वीत पंरणां
राखो भली वंस री रीग " महल परण वलीओ मोहा
बधो " सुजस परणीओ मौहकम सींग " दुलह सीरै हुओ
त दुलह " सबला हरा जगत साधार " नार परण वलीओ
नव सहसो " कुंअर परण वलीओ कै वार " गीत :-
गजां जौड़णौ मौड़णौ म र्दि भ्रगमां गमां " रोड़णै
रीमां रीरण दई वराओ " केना लेरेगे पारण सांकमानै
सेका " भ्रनारै खाग मद जोर भ्रओ " भ्रलवला करै गज
उला लेरेगे उरड़ " पाड़ सात्रव करै समर पीठौ " ताह रै
खीचीआं राव हठी र्दि तणा " दुजड़ मद भ्रीवीओ जगत
दीठौ " चे चीगर कहर गढ कोट ~~च~~ चाड़ै चक्रै " रोस
रस सकस रीरण खेत ~~तातौ~~ रातौ " भ्रना मैं जी समद
वा गरज ईभ नमा " ताह रौ खड़ग मद वहै तातौ "
गीत :- करै भ्रचा वारवांरा दुना भ्रांरण भ्रालम कलम " दीये
दत रहाई नहीं धांनै " जस लेभ्ररा खीचीआं राव क्रन
वाध जीम " भ्रस देभ्ररा मांडीओ चाव भ्रांनै " साच वातां
कहां सुणौ पाड़ोसी रे " करम दान पुजै मीढ कांही "
हांमरे मांडीओ चाव हठी भ्रंद तणौ " महाजस लेभ्ररा
संसार मांही " खीचीआं राव जस चाव राखण खरौ "
जोध परीआं तणां सबल दल जाग " खुरी करता मही
सुब सीर खुदता " तुरी बगसणा तणौ मांडीओ ताग " भ्रनै
दोध कवां हाचु राखण भ्रचड़ " ईभ नमै करन चीत भ्रांरण
उमंग लेवलां कवी सोभाग करता लखां " पर ठीओ वाह
पर वाह पमगां " गीत :- पड़े डुडला सीस दड़ चुकै चड़
पीचर का " जोध ज्यां लाल जुध खाल जमीओ " रत वसंत
सबल दल भांज भारथ रतन " राव रुकां तणौ फाग
रमीओ " लोहु झर वीकट धर पुगट उड गुलालां " स्रोण
जल खलल चीउ सेन सुरंगा " चोल मुख कीरे मोहक

कमल फुटा खला डीगला " रल तला जला प्रघला दला
रैल " खाग उनाग वर जाग वंश्रौ खत्री, खेलीश्रौ फाग
वीपरत दुरत खेल " खंडौ वाहे चंडौ ढेल माते खलै "
प्रगट जस मंडौ ले फते पाई " रोस रोला घडा रमे होली
रतन " श्रावी कटर मत रस सरस आई " गीत :- दुसासण
रत ईम नमा दुरंगा भला उभै बुद लीश्रा भुज " गज बंध
मार भांजीश्रा गाजां " गुरजीश्रां नां आपीश्रा गज " चावा श्री
गुहीश्रा चंद रावत " असमर वाह उपमे आच " हाथी
बंध भांजीश्रा हाथां " हाथां दीश्रा सुपातां हाथ " मोटा
बीरद लीश्रा मोहकम सता " चावै सुजस रहावरा चौज "
मांगल बंध भांजीश्रा मोरे " मांगल कीश्रा क वांना मौज "
रावरा मोद री ~~श्रा~~ आव रतन सी " चारां चौ बल लीध
चर, के कुजर बांध मार काढीश्रा " के कुजर सम पीश्रा
कर " गीत अनोप सीघ राठौड़ रो कहै, आसीआ नरु सै :-
समर पाधरै खेत चीरवीश्रो कहर सांवलो " पमग ताती
करे चाड़ पांनै " को रीश्रो नही फौजां तणी कनारी " श्रै
रीश्रौ चम जगर वीच आंनै " उडीश्रौ पुर आडा खंडा अंकारौ
ढहां कुजर कहर लाल ढालां " टालीश्रौ नही काम रज ही "
रीणा टले भीड़ज श्रा फालीश्रो वीच भालां " ईम नमो
दुद अरवी आत रखवण प्रचड़ " सही काप्रर कुपह रहतां
सीक " सोह चाढरा कमध वंस उचा सरै " लोह राबोह
वीच दीश्रौ लाखीक " बहस चस नीहस गीरवर तणौ
बहादर " मारु रे राव बांधे कमल मौड़ " धाव दे सत्रां
सीर पमग उरे परगु राव री कते की राव राठौड़ "
गीत :- भुज झालीश्रा कुल वट भार " कुल चाड़रा कीत
ईम नमा कीसना " आं मद धरा तणा कव आखै " आंनां
तफ तणा उपगार " मौज वरी सस मद राव मारु " परगु
बैर दखा टीश्रा घणा " उगा रीश्रा प्रागवड़ आंनै " ताकु श्रन
माल वातणा " देस सीणगार वंस कुल दीपक " लाख भाख
सोभाग लीश्रा " जोपी नांच तणौ जस गाहग " कवीश्रां
उपगार कीश्रा " गीत अनोप सीघ राठौड़ मोहे " लड़ चड़
तापड़ै लालु रै लोडै " दीलै झीलै खल एकरा दाक
कल कल तौ पावै राव कमधज " उकलतौ असमर ऐराक

बोटीआं अह रज हर उरबालै ॥ लड़ै पड़ै लेरके लहर ॥
पीसरणा कहै वारू रैरणा पड़ीआं ॥ कमधज रौ दारू कहर ॥
बोटै जे लेटै बैहू तेरा ॥ जुटै के तुटै जरद ॥ माझी रीरणा
रुके मेड़तीओ ॥ मद ईसड़ा पावै मरद ॥ दुदा हरै कोटीआं
दारू ॥ भुजलाग अनै अनौखो भांत ॥ पीधौ जीके गआ
सरगा पुर ॥ खल कोप्र करै न पीवा खांत ॥ गीत लाला
चहुआंरणा रौ कह्यो आसिआ नरू रौ :- कमरण तोरै साप्रर
कमल बीज झेलो कमरणा ॥ दुरत मंगल कमरणा वलो डोहे ॥
चड़ै चामंड चक्कर कमरणा अहपाल वै लाल सु अड़ै कुरण
लड़ै लोहे ॥ वाघ देढ़ै कमरणा धसै चाचर वीमर ॥ तन
धरें वजर सु कमरणा तुटै ॥ अगन वीच झुल कुरणा काल
ते ड़ै उरौ ॥ जोध चहुआंरणा सु कमरणा जुटै ॥ रगत लो वात॥
कुरणा जीव देआं गमौ ॥ देख दुदा हरौ दुठ दावै ॥ सांकर
होप्रा पीसरणा हर मांनी सकौ ॥ उद उत हुत कु खाग
पावै ॥ गीत :- राठौड़ करन जुझार राजड़ौ ॥ हीक चड़ा मनाव
हर ॥ ईरणा भंजीआं तरणा ब्रद तोनुं लागा वरीआ वंस
सीमर ॥ गद चरौर गाह मांडल गदजुड़ चोई पुर तरणी
जड़ ॥ करणा करणा सेन करे नव कोटी उपारी मोटी
अचड़ ॥ ररणा तरणौ सुधल रांरणा वत वाले धराले अंता वेग ॥
वुही भली ईम नमा वीरम त्रीहु राई आं तरणौ दल तेग ॥
गीत वातां कंत कुसलम कह रे वीरा ॥ कत रहत री
वात कर ॥ राजौ उलाका वधै लाजा जौ ॥ पवै मरे वो
बिहु पर ॥ पाघ अजुन हलायो पाचो ॥ काद नरे हरण
कलात कहै ॥ रैप जीपै तौ ई कंत रहै वो रिप भाजै
तौरि कांत रहौ राप्र रिघा ~~अ~~ गरगे मज सावत आखै ॥
सारां रौ चुकीओ सग्राह ॥ साह बरा सिहु औ सा फरलौ
नही कुसल ताय अमह चै नाह ॥ गीत :- पत साहा साल
चीगा धर पारवर पाघु माड़रणा त्रवीध घड़ ॥ रांसौ करै
नचीतो राजस आडौ जौ हरी इद अनड़ ॥ साहा साल उचाल
सत्रवां नीपरणा कररणा नीहाल नर ॥ मेवाड़ौ रांसै दल मोहरां ॥
धरीओ धर आडै सधर ॥ कुंभा पलां वजाड़ै कीरर मर ॥
[illegible] ज्यां घड़ा अपाल राजड हौ मांडीओ रांसौ धरती

धाप्र करगा असुरां खाग धारा॥ रावत अनड़ भरोसै रुड़ा
राजस करौ नचीतौ रांरा॥ __गीत__:- अंतर सध वसै
भड़ां औरवलतो॥ खाग दात ~~असवात~~ आघात खरै अर
चड़ वाड़ वीधु से उडौ॥ चुडौ रग कलजेम चरै॥ औ
गांत तौ दात खग आलव॥ कावलतो वलतो अरकाल॥ हिरे
चड़ पारधो हुआवै॥ डर परावै दातड़ी आल॥ पारा मसलता
फोरै पारधी॥ लागु कोप्र न लोपै लीह॥ चौड़ै पह
मांडीयौ चंदावत॥ रगे कल गीड़ सांमलै अवीह॥ __दुहो__:-
तु गंगा गीर मेर री सत सीता सब जांरा रौटै नांम
उआरीयौ चीत मोटै __चहु आंरा__॥ __कवत__:- __प्रजा झाला महे__
__कहै आसीआ नरु रै__:-___ मो सर फुटां पहल दीखरा
खाटी आप वाड़ा॥ पाट समै अवी आट सही जस कीआ
सवाड़ा॥ लाखीरा जस देरे ले गुरां साटै वड वातां॥
रांम तरौ वरीआं म अचड़ राखी अखीआतां॥ डर डमर
डौरडौ फरड हक कीसु सुरंगे वपड़े॥ झालीआ बीरद झालै
अजै जीके बीरदे न चलै बपड़े॥ __गीत__:- सही साज मै
वणावे वाज जस काज करे साज भलां भलां वाता
हुता घरौ हीत भाव॥ झांपै म्रीघां जेम डारा उपरां लेता
झपट झालो आदु वागां झीलां दीधा झालै राव॥ उतंग
वेझंग चंग सुरंग तुरंग अंग॥ नीरखंग नीहंग नंग करंता
नीत॥ मन मां उमग आंरो मौजी आ वीलंग मौजे॥ चंग
जस रग रतै चाव चाड़े चीत॥ रेरकी तुरकी काढ़ी
आरबी चाटी अलल॥ औ पावे झीलांव साज उतंगां अचुप॥
दबरां झपट लेता दुतंगा चौ संदा दोक॥ रीरावांना रीझै
दीधा अजे वंस रूप॥ रांम तरौ नांम काज रुड़ां रुड़ां
वातां रीझै॥ पर हेवा जस वास समंदां री पाज॥ जसा
हेरै दीधा जीके जीरा सु लुबावे जीके जारे नही जुगां
चहु वाज राज॥ __गीत सुपख रो__:- __कहै आसीआ नरु रै__:-
गादां तौड़रो गरीद गजां मौड़रो म रद गांजे॥ जौड़रो
सुजस मौजां आवड़ेस जोर॥ __गीत कहीयो आसीआ नरु रै रावत__
__जी हरी सींघ जी माहे__:- कीतां करे आचार मौजां व्रवे
कनीअरां॥ उधमे माल आचां अलखो॥ कहै जग मीदर
सुराजो अवर ठाकुरां॥ देखी आहरै जीम महल देखो॥

व्रवे री कड़ दरबक सब चीरमा व्रवे" करे क्यावर कीधा
चोगरा कोड़ " कहै जगमोदर पुराजो प्रवर स कोई"
हरा रावत तरणी न चाले होड " हुरे जस वास जग सीरै
राजड़ हरा " कहो पुजै प्रवर दुसरा केम " करे क्यावर प्रवर
कहो जौ रेके मरण " जग महीं जोध माहव तरणा जेम"
गीत :- भुज लग ची धार वाजीया भारी " राड़ धाड़
लुबीया रीम " मांटी परणे जल हले माहव जव हर
वाला वार जिम " वला वला खग धार वाजीया " दाटला
लुबीया दल " दुजा भीम मद्दर ईम दीसे " जारा कहो राम
हजल " सुपहां बीया तरणा मुरव सुरे " सार धार
वाजीयां सहो " सम हर नग जेही सबलावत " मांटी परणे
जल हले माही काप्रर नर पारणो गम कदै " वाजे धार
वाटै पंड वेस " जे सल गीरै जल हले जुड़ते " नग जेही
नव जादा नरेस " गीत :- कर गया डीयां सार प्राचार
प्रारवै सको " होडीयां बीयां खाधी जदी हार " कोडीयां
फोरै प्राप्रां चरे कवे सुर " राजड़ै डोडी प्रांतरौ सीरागार "
सार री वारी शीरावट प्रघट सवाया " दांन री वार
दातार दारवां " भुप प्ररा कुप जांरौ जगत वडौ भड़ भोज उ
कुल तरणे रूप भारवां " भीम सांडा जही राजड़ो वडौ भड़ "
दुसरौ बलु ब्रद मल दावै " पाड़रणो पीसरणा दन देप्ररणो
सुपातां " चाड़रणो रूप कुल भुप चावौ " गीत :- जरू राख
वी नांम जां उर प्रपर जे वहो " पदेत्रां उप्ररलागै प्रभायौ "
दलां रै रूप रारणं दले डोडीयौ " सार प्राचार भोजौ सवायौ "
दुसरो भीम गोपाल सांडै दुम्कल " दुसरे घटत प्रघर दावौ "
उजलां दुलां रीख पाल राखरा प्चड़ " चवां चीतौड़ रां दलां
चावौ " चरा सीरागार दतार ब्रद धारीयां " सदा ही धुर
दीसै सचौ जौ " चुप खेरै खलां सीस माते चकै " भुप
चाड़ै भड़ा रूप भोजौ " गीत :- कौ मांन प्रज मल सजै
जेते राघव कीधा " दले दन खाग सत्र सु बदौ गाल "
होडले उजले सुजस बाधी होरे " मांन रै गले बीरदा
तरणी माल " वडे परी रे कीधा बीरद नग वड वडा " सार
प्रचार हर बीध सवाया " तेज उदोत जस जोत [illegible]

कीध्रा कावर कलह" पचु प्रा रोर दन जोर ...
कंठ पहर ईन कुम्पर प्रंजस करै "झीलै चौसर गलै बीरद
झाला" दोन खग ईछ छोड़ी कुम्पर दुसरे" वहेगा कलु प्रा
कीन वारी" ईम नमा जैत उत ई डग प्रभरराा "मुजेस
चौसर मुजै बीरद भारी" गीत कुम्पर प्रजब लोप चंदू सेनोत मोर
उफरातै मद्धर रोस उकलतै" खल दल खेसरा सबल
खहै" प्रसमर चजर तुहलो प्रजबा" वज रज ही सत्र
सीस वहै" मद्धर चजर मांटी परा माती "वीरत तातो
जुध वजर, के पीध्रां सीस वहै राव कड़ तल कीर मर
तो वालो कुम्पर "चवे जगत चीन चीन चंदावत "साच
वाच सत पुर सधीर" वाढे खलां दलां रीरा वेला"
बीजल तुझ तरौ वरवीर" गजां गौड़ दल मौड़ गढ पती
प्रवर जोड़ कुरा करै प्रचुके" रोस प्रेराड़ ईम नमा
राखा" रीमां मरोड़ तुहलो रुक" गीत:- परखै वड पात
लीयै जुरा पूरा" वडिम वडाई वीर वर" प्रसमर दोन
झालीया प्रधका" प्रजबै बेत रीया प्रवर" कुल तेराजंर
वडोले कड तल "कर वड दोन कीयौ के वार" झालीया बिरद
वडां कालां रा" प्रसमर प्रंनै प्रंनै प्राचार" २"चंद सेनोत
लीया ब्रिद चावा" हीसल मल सुर तंरा हरै "सम हर
प्रसमर जगत सराहै करतब जुग उपरा करै "२" गीत:-
नरां नाह रीम राह प्ररा थाह नर हर हरा" सुर सीर
वार सह वात सस माथ" करी भांजरा खरी मौज
दे प्रेरा कवां" हरी राव है उतां मला हाथ" रेके रेकां
पहला दोन खग दोन खग प्रोडीध्रां "पात चीन चीन
कहां गात पेरवे "ताह री होड न होरे बीध्रां गांरा तरा"
दब गध्रा कुम्पर प्राचार देखे "कुल तरा रूप वड भुप
काइल पुरा" दुसरा नरा ब्रद खरा दीपै "देख दन उरड़
दबोध्रा कुम्पर दुसरा" जोध हरी ईदि सीरस कमरा जीपै"
गीत - कवत:- कै प्रादी कै मुरी कीना खाटी कै मीठी "जीरा
रो कीसो सवाद कहो कीरा चाखी दीठी" वा गांमां नीपजै

गीत :- दल लोधां सबल वडै गढ डागल ॥ अबला कड़ल कड़ अरड़ीग ॥ रावल हीरे रोपीओ रांगौ ॥ सबल भुजा गल भारथ सीध ॥ दल गज खंभ ईम नमै दल पत ॥ दला देहरा वागां दुजड़, वल रांणां रावलां वीचाले ॥ ईल आडा मुडीओ अनड़ ॥ गासी रांम तणौ रीण गाढौ ॥ चोरंग वार देअण खग चोट ॥ रांगै अमर रावलां हीरे ॥ कुअर मांडीओ आडौ कोट ॥ राअ रुप कह्यो असीआ गीरधरजी रो :-

प्रसन सकत हुआ पणा माआ धरण महेस ॥ सार हर सारव छत्रीस है ॥ राज अपु राजेस ॥ सीर हर सारव छत्री सहे मेवाड़ो सांहां मोड़ ॥ नाम धणा हार नम चीओ चक्रवती चीतोड़ ॥ राणा राणा प्रत पै राज सी मह सोप जाम महेस ॥ तेज न घटै त्रे भुअणा दीप हीद हीदु आे देनेस ॥ सुर लग हीदु धांणा धरणी अम नीम चीओ अमांरा राणा प्रत पै राज सी साह हीदु सुर तांरण ॥ नीनचे अवर न कोअ नर सत खत समर संग्राह ॥ राण प्रत पै राज सी पौह हीदु पत साह ॥ राणा सीरै साह राह हरां जेम फणां पत सेस सुरज नीम गहां सीरै ॥ तीम सुर सांहां सीरै सुरेस ॥ जे सुर सफल सराहीरे मह महा रुद्र भमतो असुर सभा सराहीअ पीणा अम तोको परम ॥ तो अम राणा बेअण पार, संसार बेवस चार ॥ अमर हर अनत अवेव कुजा न पुजै देव ॥ ईन हर वड़न को दीपै राणा वड़ ईन हरा अहरां पांती सकुल तेतीस सुर पीणा ईह नावै अवर चीतोड़ पत वड़ न कोअ चक्रवत खाड़ वीणा खत्र वट खरं ॥ राज सी राम समान न सुर स कोइ दहर व्रम सुर ॥ जे सुरं सेस अनेक सप मोण सरभाअ महेस तो ई मीण चार मोण चार मीढ कड़ सेस सुपांण पत सेस ॥ स्री राणा आरख सेस ॥ मोणा सीस मआ महेस ॥ रख अ अह ईन राव जग सोरै जगड़ सुजाव ॥ जग सीरै राज सेस राजे अवर सप ईन राव रे ॥ कर कोट चु मद जोरण ईन कहरण प्रेम राणा सभाव रे ॥ ईस वर भुवण आद उजल ॥

प्रोपै सीरी रांरुग सु सेस रखे "जे पट हथ अत
जोर बरमद मैमंत मुजाद तो ई पट हथ पट हथ
मीढ पुरग वाग सम नह वाद" तोप्र वाघ नह
सीर सौ वाद "अतग इद बल अरग तग पट हथ
पौह बल पुर सम रांरुग सीह न सुर' पह सह करे
कड़ सुह को वहै सुड़ल मग ईद सो मैलो रान
वल ई "राजसी पच मुरख रारुग राजै जौ समंघ
सीर हर संमरा चांड़' पांतीस वंसे न को पुजै पै
रस्त पच मुरव पट हाचां जे ईन घात प्रघात करवड़
लुह रज व्रन अवर घात ताप्र रुरव अवर सो व्रंनंत
असो दन" प्रवरच तपह ईन रारुग राज सीसो व्रन
रारुग" अत कला वांनी रुह प्रंग चड़ै भलम अदेह
अरग देह भालम कला प्रोपै चरुड़ै वांनी चौगरणी प्रांघ
न तोल अगन असपत चीन चीत्रां गढ चरणी ईन
खत्री वंस सको प्रो राम महपती ईन मात सु "रा
सी सीसो व्रन रारुग राजै चड़ौ कुरग ईन घात पु
जे ईन भार प्रढर तर पांन कला सुं पहपतो ई प्रो
तर ईन तर रुरव रुख कलप स व्रीरव कलप "कैलु
व्रीरव कलप" ईधआर गरु अत प्रप" तर अर कुल
पांतीस दल तीह सोभ न दीस" दीसंत सोभा कीसी
दुजां कैर कंटक तीह कुलां" कुआर कुमट बोर
कहीरे बील सोभ न बावलां "चतुर अरक पलास ते
चुग व्रीरव प्रवर नर भार रखे" राज सी तरु अर कल
रांरुगौ" अवर भार प्रढर रखे" ... ... कोडी

दल करद खुप्या" पीठ दाबी खगा रीठ दे पाधरै"
सत्र गप्र नीठडा गौद सुप्या" सार वाहे सजै सेन
गाहे समर" घड़ां भांजे चाड़ा दे धरणा धाव "खेध
लागे खलां सबलां खांडीप्रा" पांच कोसां दलां मांडीप्र
पाव" लुट मेरा भीड़ज लाज ईजत लई" फाड़ पर काल
हर कीप्रौ पीठौ" पहल कै चत्रै मोप्रा लड़ पमाप्रौ"
दूसर कै कौरडौ काल दीठौ" गीत सुरत सींघ माधौ
सोघौत माहे :- करण नाम करीप्रां दध कड़ा केवल
हरै सूदन वव कीप्रा कव राज साखो" सुर तै हुप्रौ
सारां सीरै सकत हर" रांण वालै जोगन प्रचड़ राखो"
पमग जर कसन कस चरा दे सुपातां वडै जोग राहाई
वडी वातां" तां करी हेत रे बोप्रा प्रचड़ां तीको "जीको
जारे नहीं जुगां जातां" मर्धा उतराण रौ मांड हो
मडंतां प्राख ताव के करता जीके ईठ "दांन धारौ
जोरग सु वर हीप्रा दवे "मीढ रा नरा पाप्रा नही मीढ"
श्री श्री गीत सुफकरौ कह्यौ प्रासीप्रा नरु रौ महाराजा तखत
सींघ जी माहे :- जे त्रंबाड़ां त धाई धाई" उकले फकारी
राड़" लडै चडै जुडै घडा लोपै नांही लीह" सार धार
उपरां फकारी वार सांम काज "प्रौ रीप्रौ तखत सींघ सुर
मै प्रबीह" खल खटं वीकटं प्रगटं थटं वाज खागं"
जुटां तुटां पड़ां लड़ उधड़ां जरद "काट थाट वाहे कट
दह वाट मार कीधा " मै वाती चड़ावे छाती मेवाड़े मरद"
चीखे सार धम धोर चहु प्रोर वाजे धार "पडे सार मार
त्यार प्रणां पार पुर " सवाई दीहाडै खार ववाड़ा जेसी
सुतन" सत्र ना पछाड़े भाड़े पाडे उभौ पुर " दीली रा
दलां वीरोल जगा हरै घाव दीधा "कीधा प्रची सीरै
जस लीधा बुद कोड़" सीसोदौ प्रजांन वाहे करे नांम
प्रची सीरै "मेवाडौ मरद प्राप्रौ मुगलां मरोड़"
गीत :- प्रासीप्रा नरु रौ कह्यौ महराज प्रताप सींघ जी माहे :-
करी भीलां खौखां तलां करे हांमर कलाल "थाट
वांका मीलां सत्रां उथाप" तो तरीी कहे कव धरौ"

मंगल भीलां कवी मोजां लहां धरणी दुजा करन ॥ वरीणी
राजड़ हुरा तो तरणी वार ॥ भुल भड़ मीलां मांगल मसत
असत भीलां धरा गहु महु सगहु नगारां गाज ॥ महाराजा
तरणौ कहै आलम कलम ॥ रीधु राजस सरस औपीओ
राज ॥ जोध पर वाड़ औनाड़ दुजा जगा ॥ लोभीआं कीना
वड बीरद व्यावर पंची नांम कोधा ॥ गीत :- केहर रै
सुदल माचीरे कोकल ॥ भीच वडौ मार को भड़ ॥
पच मुख नो कड़ीआल पहरीओ दौलत सा ग्रहीओ दुजड़ ॥
वारूचां सार मार रीरा वेला ॥ कल उकल दल सबल
कहु ॥ पुडो अनां करग खग चड़ीओ ॥ सीह अना पहरी
सीलह ॥ रावत मोहर माचीओ रौलै ॥ भांजे करणा वैरीआ
भुक ॥ वाघ अनां वप जरद वणाओ ॥ रीरा दौड़ौत कलीओ
रुके ॥ दल रावत रा मोहर बहादर ॥ दल कुल राजा लीआ
दंगल ॥ दुधर हुत वधै दौलत सी नाहर नांम डैच दारण
उरण दुसह डाअरण पै गुअल केहर सीघ पचाअरा ॥
सादुल लोध पत लंकाल कीर कंठीर अमल दुधर बीडुर
वाघ सहस बल मीघ राव सु दर वन ग्रहरण वन राव
वसीआ म दुमल मंग सकत रच राअ दोहर रगल
सुरज रीव आदीत भांणां रा तंवर प्रक उदोत कां
सब सुत सहस करण दीन पत दरणी अर दीवाकर।
भासकर कीरणाल कीरणपत उजास जग चरव ग्रह नाथ
ग्रह पत पतंग प्रभाकर जाला हल तरण हंस तीमोहर
जोत सरुप अहर मीरण मंत ~~सतापत~~ सतापरण हर खंग
भाली अल नंम गुरड़ रा गुरड़ गीधल अह चर भुज
रच हरत गस ऊजल वीहग तो उरस मल सील चुंच
चरव पांख अनल चुगल अहे राव वैमल सधर नाम वास
देरा आतस हुह हुवह सुर तप सुर मुख प्रमुख मंगल
जोत प्रकास : मड़ चर : वरल : वीजुल : जाहु : सब जखी
~~हुस~~ हुतासण ॥ अगन ॥ अ पत ॥ सीखार ॥ पींगल ॥ जलावे
जलरण ॥ चोम ॥ पावक ॥ तप ॥ दुजड़ा हव दुसरौ द आल
<u>नांम हाथी रा</u> :- रेरापत ॥ हाथी ॥ गज राज ॥ पटाम्कर
कुंजर ॥ सींधूर गजेस ॥ कच ॥ [illegible]

चौपगा रूप ॥ खग खंडौ खड़ग तरवार समसेर बीजल करमाल नल बंन नीजड़ रुक्र भुज लग ग्रसमर ॥ गी तल डारां वहै सत्रां सीर तोड़ै ॥ भांजे करे खल द भुक रुक ॥ मांगल मसत जही ग्रग्री मद, राजड़ ह तुहालौ पातल तुक करग व्यापा तल ॥ बल भरीग्रौ उस बरै ॥ कर मर तुक तरौ कैल पुरा ॥ कुंजर जु प्रलवल करै ॥ नर तर मोड़ै सांकन मानै ॥ जु तोडै जोलम जरद ॥ जेसो तरणा तुहालौ बीजल मांगल जु ग्रावीग्रौ मदड़ ॥ पौरस प्रगट तुक कर पातल ॥ खल दल ढाहर सबल खहै ॥ ग्रसमर चजर मद्धर उकरातै ॥ वहतां जु पटां वहै ॥

गीत :- लाखां मुख सुजस लीयंरण लखंमावत ॥ ग्रसम दिन्ह दुह विध खल ॥ साहां राव तंरणा बिद साचा मुहतां वंरणीया सीह मल ॥१॥ भांमा जगड जिसौ भंरणौजे दे दाह रौ वडौ दातार ॥ ग्रोपै दांन वडालौ ग्राचां ॥ को मुंख करै वडौ कै वार ॥ २॥ सांम धरंम सत धरंम साच वंरण ॥ राय भंरण सालो रीत सुरीत ॥ महि उंमेद तंरणा दल माहे ॥ कर वड दांन उधारै कीत ॥३॥ राजी सदा रहै माहराजा ॥ कौड़ा तरणां सुधारै काज ॥ मौटौ साह माजनै मोटै ॥ लीधी भुजे वडाली लाज ॥४॥ नीसांरणी :- वबे राव वीक्रम सूं धर खाटी खगे ॥ लूंरण करंन सु करंम सी ॥ रिंरा खेत संमगे ॥ नेगे नव खंड बेडीया ॥ मंडोवर लगे ॥ सांगे सदा सांम धंम वंरणौ ॥ गाज गाह प्रडगे ॥ करंम चंद क्रावर वडंम ॥ कोई दाग न लगे ॥ भाग चंद ईम भंरणौ पैहरू नंही पगे ॥ मो धर बेडी मे हुरणौ ॥ नांख देप्र लगे ॥१॥ गीत :- दातार वडा जंरणा सरसंरणा दीठा ॥ जीत खरचतां पीत वीया ॥ कुल दीपग तो जिही करम चंद ॥ कुंजर कराी न दांन कीया ॥१॥ कवीयां रेम दीयतै कुंजर ॥ जस री वाड़ी ध्रजा जरै ॥ कंरण पातां न दीयै करम चंद ॥ पैरापत पांचमे प्ररै ॥२॥ मैगल जि वडी वात मागतां ॥ त्याग न लाभै जीयै नीयै ॥ सुमर लीयैं दीयै सां सांगावत ॥ तैरो अचरज नंही तीयै ॥ ३॥

मेवाड़ वीनटै "सोर जोर घरण घोर" धाम प्रारंभी खाड़" होरके कु कुप्रण चुक्र करै धम चत्र दीहाड़ै" धुम प्रारा त्रंबाड़ गुर मीलै राड़ चहु रके वला" केहर कीमाड़ मेवाड़ रा दीजै ज जै जद प्रोडौ दलां" वीरा घड माचा वकै वीगर माचा चड़ जुटै "वहै रुक्र बंदुक्र स्रोरण भमुक्र उदटै" लाडै गुडै उधडै होप्रा बारां भमारां" कुकै चुकै उबकै वीर वकै रीरण वारां" वेगडौ सांड कांधल रौ प्रप्र खलै नाटी खलां" केहर कीमाड़ मेवाड़ रौ दीजै लो प्राडौ दलां" है हुक्रल दल सबल वल क मंगल झल वीजल" डल डीगल खल तंडल मचे वल वल वल कंदल" रल तल चलु प्रल प्रघल" भेद मुई प्रलग्रीह कमल" कायर झल झल वीचल" उप्पर धर धर मुका बल" मुगला मोड़ कांधल रै जैत जही जगे दलां" केहर कीमाड़ मेवाड़ रौ" गीत:- मत सागर जुतै दुक्रलै मंडरण जंरा जंरा वरहै ज प्राज प्रौ" जगड़ पबे जग तजी बांडरण हवडा कुल जुग राम है प्रौ" सेवंब री सुक्ख के संघ पत मिले बत्रीस उदर प्रज माष" जगत प्रनेक विविध करे जीमै" लोटै तेरौ बीरसौ लाख" मर खूटा घणा सही कै मांनव" परदेसे ई पर वरीया" साइर सतट रांम रै सरसौ" प्रलवर गया स उव रीया"२" प्रलवर नयर रांम रै प्रोलै" धरां मंन रव जीवीया धरणा" सुमंधर हैं कर पुरण संमवड़" तो सिर डोहा साह तेरण"४।

गीत:- साह वरध मांन लालंरण प्रमरारणी" वास भुज नगर बरासै बांधीया ईम कोई न बीजै" पिरीया चाढै पांणी" ई हंरा जिता नाग द्रह प्रावे" उ वदीयै प्रमरारण जेसलमेर प्रने जालोरां" मरणी प्रड बाहर मेरां" पार करौ चाढे पौहचावे" सिर सख रांप्रा देरा"२" बीरानयर जोधपुर बाचां" वले कोटडै वालां" वुध मांनीयौ चढावे वाले" कौलौ वडां कंमालां"३" उतर दिखंरा परब दिस प्रावे" सख रा सुपग सांधे" कवीयां निते लालांग दे रहा" बाक रीयां जिम बांधे"४। गीत साह भामजी मुह तै करम चंद रौ प्रकबर पत प्रसुर पुरां पत रांरणौ चार रखपाल बिन्दै बत धार" सोल्है कला करंमद सिर

हर" सैहंस किंरणा मांमो सिरदार" हींदु गुरु बिन्हे हुद वादी" निल वर सदा चढंतां नर" नगा हरो निकलंक नरे हंरा ॥ सांगा हरो प्रभ नवो सूर" जोडी खिवंरा गाढ गाह गजंरा ॥ वडी रुद्र जगत पारीख" मुह तो मईह" साह जी पुरज" सगपंरा ... पी जगीस ॥ सांगा पुतंन भार मल सुभंम" भोडी पुत पो प्रचल जगीस ॥४॥ सामत देवडो रजपुत सांमत रै सागर सागर रै बोहीथ बोहीथ बोईच रै रायो रायरा रै समधर समधर रै तेज पाल तेजपाल रै वेरसै" नीबो" मेरो" मांडरा" उदो जुगो" जेसो" वधो वरसींग" करमसी" नजै" सांगो" करम चंद" लखो ॥ मीचंद" रुघनाथ" रामचंद" पीथो" गीत वरध मांन लालरा रै" भुजगर मांड री :—

गीत :— सम्फ सांम घटा" सैहर साल लीया ॥ गाजै गिगन हेम गिर गलीया" वादो वाद चढै वादलीया" धपा सीख दे पावस वलीया" १॥ दांमणी चिहुं दिस दरसांणी ॥ दह दिसह प्रास्पा वादांणी ॥ निज धरती सारी नीलांणी" हीर हिरणां धर मोकल प्रमरांणी" राजा जद घरा पु रीजै" भोम चिहुं दिस जल हर भीजै" लिखमी खरच सुजस ईम लीजै ॥ कवीयां मोज न बाहर कीजै ॥३॥ गीत :— जुनै हर सुर बारट रो कहो :— चंदाडरा चीर चमीर न चंचल" कुमर भंडार न मन करीप्रा ॥ माहव तरो खगार मरसा दन" सुकव तैरगीजै संभ शीप्रा" पदमरा चीर पमीर पमीर पमग पोरा" सुजन भंडारन चीतव साज" जग पुड मरसा दीह जाडे चै रांम कहे कहीपा कवराज" सुदर सुपनन सो व्रन साकुर" पुत भंडारन पुहवीप्रा" पदम धरी मरसा दीन पुगै" कहतै हर चरसा कहीप्रा" कामरा क्रपडा कन कन काढी" जद चीत बीपा नही जोके" तारा प्ररा बांधी सूत ताकु" तद पी तारां खत्रां तीके"

गीत राठोड राइपाल जी रो :— पह कोट उपांमे" धरा धर हरे रिंम देसे नेसे रिंम राह" रायां पाल वसै कु दरयो" बांधा बिहु बिचै वाराह" १॥ प्राल भयंकर दाढ

कंठीर कंरांरातौ " लोपै सत्रै नंही तिल लीह " चूहड उत सदा दिन चोलै " रखल चरे वले प्रगबीह " ३ "

गीत :- लेसौ नमे तुल विप्र की प्राप्त भरीजता " करै नह सार भव जो कांई " करांरा भामणो लेउ दुजा धररा " तरणा उरण कीध्रौ जुगां तांई " कनक मै तुला करजगत प्रमरी कीध्रौ " तारीयै जतां कुल परम टांरौ " सुरां न पड़ै संगह रहौ राजो सदा " रीन तरणौ टलीध्रौ संगह रांरौ " ताग प्रांप्र वेवीत तुले सोव्रन तला " पनजगत रे लीध्रौ काज चुम रै " राह मांगै नही कदे हीजुन रीरा " प्रक्र उरणा कीध्रौ रांरा प्रमरै " तारीध्रौ परम कुल तुले जो सीध्र तरण " सुर मांनव उरणा सबांई " रीन मईक देरवे प्रासीस राजड़ हरा " तु तपे प्रमरजुगचणतांई

गीत :- गढ गढ जस कीध्रौ ईम नमा गोकल " देग तेग उधमे दन " कुल मंडरण कुल रूप कहारवे " कमधजतो सीरखा कीसन " सांम लगो कल वीर तेजसी " सांकर नेता वीदुर महेस " देवीदास संरीरवा दावौ " नेस चढ़ावै कला नरेस " मोटै तोल माजने मारू " रवाटीध्रा मोटा बीरद रववां " जैतां वडां तरणा दल जागरणा " चीत दन रवग चौगरणौ चनां " गादम तोल बोल गरुध्रा तन " रवाग त्याग दहु वात रवरौ " कमधां वडां उजलौ " कमधज " वडम चढ़ावै वीर हरै "

गीत :- के वीध्रां उर सीस वजाडै कीसनौ " मार प्रौ लडतौ पांच मुरव " जम री दाढ सरीखी जम दढ " रुके वहै रीरा वीज रुरव " सत्र उर सीस वाहै सांभल सुत " मारू मरक रांरा रौ भड़ " कारा कसी जीसी करारी " दमरणा जीम कटकै दुजड़ " सांफलतो वाहै नवल सहसौ " चुकै नह रीरा माहू चचुक " मरणा उसरा सीरवी प्रतमालो " रीरा वट रवावै वीज गु रुक " बे प्रावध चालवै बहादर प्रणा भंग गोकल हरौ प्रपार " वहै जगत चीन तक करार तुक तरणी चीन चीन तरवार " दुहा :- कांप्र पीउ प्रावै मारीध्रा कांप्र पीउ प्रावे मार " दहु परकारां है सरवी मा दल गुमे बार " भांसड़ी प्रा पांरो जीध्रां उमैं जतन

चरणा धोवत चरणा सुवरण सुहातन सोर " सुवरणा कु
दढत कीरत कव वभीचारी चोर " भली हुई जे धरा गई
गुरा उपनै रोइ मीत मेहलो बंधवांती नील ज्यौ देह "
सगौ कुवेला परखीरे " चुरा मंदे गाय प्रसत्रो तब ही
परखीरेग जब नीरधन होरी नाह " गीत मसांणीलखमणजी
रो :— लाख गुरौ तोल माजने लखमणा " लीधा मुजे
वडाली लाज " मोनीयो राणा प्रमर मेवाड़े " केतां तरणा
सुधारणा काज " लाधु तणौ वडा बैद लेप्रणा " साच
नाच सतवर सिरै " सिम मौहर वड कांम सुधारै "
कवीयां नै उपगार करै पुरै तोल पचौली पुरै " वचन
प्रधुरो न कहै वांच " जिणा दीठौ जेणा देसाप्रौ दुपुर "
सत व्रत ~~सदाई~~ सदाई खारै साच " रीध भगवांन
हरो जस राखै " व्रत चीत वीत उधमे प्रपार " तुनंनितु
लखमणा लाधु तणा " दीन दीन कला चडे दातार "
गीत लखमणा दीतरौत माहे :— काचो जोरेग माया जगत
कारमो " वात उधारै वीत वरे " मागणा वरन तुहालो
लखमणा " करन पेहिर कै वार करे " रांणा मौहरु रज
करु रुड़ी " सुजस लेप्रण सारै संसार " तु उपगार करै
दीतर तणा " वात जपै जस जो उपगार " २ " लाड खांन
हरा वड बैरद लो प्रीतां " लाखां मुख नाखांणा लीधा "
पुरा जस खाटां प्राप चौली " केतां सु उपगार कीधा "
गीत कपड़दार गोरधन माहे :— प्रवचो तीकु क चुक
उचडीरे " वीजल झाल करे हव वाह " कपड़दार राणा
रै काधा " जया वंत जोरै गज गाह " कल उकलो कटक
हु कलीया " मिलीया उसर वापरी मार " बीजड़ा मुहे
लड़ां तोबां भरा " सिरदारे प्रायो सिरदार " २ " तीरथ मक
लडीप्रौ जेर वर तणा " ताप न रहीप्रौ ताक तड़ " रोटी
खाटी करी न रुके " उजारी मोटी प्रचड़ " ३ " चुत्रभुज
हरा हुप्रौ जुग चावो " तेगां मुह उडवे तन " परदेसे
लड़ तांपै सरणां सु " धिन धिन कहीप्रौ गोरधन " ४ "
गीत :— पसमर प्राचार झालीप्रौ प्राचां " वसुह वधारणा वीस

सीध ब्रवतां राप्र सीध हरा आलां वडा तराग ब्रद आला" खग दन भुज आलीग्रा खरा" गाद्दम तोल पेख गरुग्रा तन" वडम वडाई बोल वीचार" प्रथमी प्रमर हुग्रा पाट रीग्रा" कीरगे जीग्रां तो जम कै वार ६" गीत हरदास गां धरणौ रा :— करड़ौ खल करे चु खले कीसनै "ग्राहट सीर तोड़ीग्रौ ग्रसंध" हरदासी रे सींह हाथ लीग्रौ" बालक थकै वैरग बंध" करमा हरे मुखो रे कांकल" सांकल हुत वीधूटै सींह" उगते हस वैर ग्रां मुले" ढबेड़ी ग्राजाड़ ग्रेरग बीह" वरा वीर कैसी लगां वाधौ" बाटी गज हलतो बरै" गाप्र ग्रदांत लीग्रौ धां धरणीरगे" कैवौ कहा बीदांत करे" मांगीग्रौ रीरग नही जीता दीन मांनौ" उर बलते रहीग्रौ ग्रस हास" पांरणी भोजन भवन पांग ररग" हला हल गीरणीग्रा हर दास" मांनावत मांगीग्रा वीरग भारथ" जग्रा दोड़ दुख कमरग गीरौ" जल जामरग मीदर ग्रंबर जुग" ताप्र बीख गीरणीग्रा वीर तरौ" सो लग राव वालीग्रौ सवाई" रुके धां धरणीरगे वपरीत" मारे कीसन सवाद मांरणीग्रा" पहु रे चोक तरग वड चीत" हा दल केहर हुबे बैर करग वड मन"

<u>कवत</u> :— गीरे तार गे लुग्रौ" देख जुध देवी दांत" मांत रांम मारीग्रौ ग्रमां मारौ की कारग" ग्राज राज उगरां ग्र मे गुजराती चारग" तीरग दांत लेरगे सागर तरौ" रीरग मेले रेलव" हाहा ग्रमुक रह दासी ग्रा गागा कहे गे लुग्रौ" प्रथम सीह पाछड़े पछां केहर पाछड़े गह भांजे गेलुग्रां" चंद लगनां मौचड़े खल ले ग्राडा वैर गीत ग्राडा गड़ावे" वंस पुरौ भाजते वहे वाहे वह वाड़े ववलौ सुर वरग बीर कौ ग्राप होरगे जग उपरां" हरदास ग्रखेलां खेलीग्रौ हीम खेलीजे ठकुरां"

<u>गीत</u> :— पेखे खत्रवाट खत्री खोत पुरौ" मधकर मद्दर चजर मन मोर" हो सल मल रो पौग्रौ हाड़ौ" कौटा मौहर दुसरौ कोट" कीर मर खाई कुत कांगुरा" कांटे सुरत मद्दर कीमाड़" पौरस मुरजां देख परगीग्रौ" पाट रीत सार मे पहाड़" रुके प्र जीत ईम नमौ राजड़" सरा तन

दुसरौ गढ " भाऊ तरौ मचोग्नौ भारथ "परठै जेडा समर
पग " हेवा हुवौ नचीतौ हठौ " ग्राडौ मध कर गढ ई डग
गीत :— वीज ऋल वाह सत्रां दल वाढे " कलह सुधारै मोग
कांम " व्रवै माल वल जगत वटी तौ " नीहचल जगत
रहावसा नांम " तीजड़ वजाड़ौ खलां तोड़वा " राम जपै
प्रध गमरा प्रपार " देरौ दांन वलजगत वदीता "
पड मुर ब्रद ग्रहीग्रा परमार " वहुरा वैरीग्रां पापवीहंडवा
व्रवै माल जस करसा सुवंग " त्रवै व्रत ओलीग्रा दता
उत " उदा हरौ वडै प्ररण भंग "

गीत सावऋड़ौ गीत :— कठठ कमर दीतरा दल ग्रारा चड़ीग्रा
कड़े " नरां खोटां खरां परख सह नीवड़ै " चार रा
वुर वीच चम जगर धुपड़ै " जंगम तातौ करै ग्रोरीग्रे
जै तड़ै " उडीग्रो सार वीड़ गांउ पड़ी " वलक मलकै खड़ग
बीनै घड़ वड़ वड़ी " दीलै सुरा मढर काय्र रा ढड़ ढड़ी
दाय्र मुगल घड़ा डाय्र मतै चड़ी " नरां तत खरां वीच
हठावत नीवटे " ग्रोरीग्रौ वीडंग खग ऋट प्रगट उपटे
चुरसीग्रा मोर हीदु हुग्रा लर चटे " सोहीग्रौ दुद हर
वीच धटे सांमटे " काट धट कीलव रा धंदनां मौ कीग्रौ
लोहड़ां पंरा जम रांरा सु सबद लीग्रौ " भलां
पातां भड़ां तरौ मन भावीग्रौ " उजला बीरद खाटे
घरे ग्रावीग्रौ " कपड़ां रौ लेखै वागा दोय्र दगलो रा वागो
रगक कसुमल छीट रगक चौली रे जादो प्रराता बटका
सावड़ ~~तथा~~ तथा राता दगलो रा दगलो रगक पीली
नाद री दोय्र कस बीत " पासा वड़ वागा दोय्र छीट रा
वागो रगक सावड़ रेजा चार बास तरा पाग दोय्र चौली
काठी वागो रगक चौलो मह मुदी पांच चौली फारां
तीन छीट री पाग पार छीट री ग्रतलस दोय्र ग्राधाग्राध
मोठौ रगक चौलो थांन पार चारौ थान रगक वागे रगक
कसुमल थांन रगक चक्रन रै चौलौ पाग पांच क सबो
पाग रगक केसरी फांटो रगक चक्रन रो फांटो रगक
चौलो क सबी पलां रो फारां द क सबी सावडड कडी
रवं दसवां गण्यां सुचर्ग तीन सावडे चीर मोरगक

एक पाग दोय कसुबल वागौ एक चौलौ मह मुदीरे
चौली मांही पाग सात चौली मही ॥ श्री राम जी देवीजी
रूपक कहीयो प्रासीया नरु रौ हठी सीघ डोडीया रौ —
रूपक छंद दुहो :— चामंडा चक्रत ह हयो मह मती मह
माय " गाउ हठी ईद डोडी यौ दै सुमत सुर राय " गाहा
दै ईत सुमत देव दुदाला " सोभ सीदुर रगत सुडाला "
मेक डसरा गल फुलां माला " गुरा पत गुरां गहीर
गुराला " दुहै ब्रहमा वीसन महेसवर " सुरज सीस
सुर सार " गाउ हठी ईद नवल रौ सह डोडीयां सीगार "
जीरा कुल मंडरा वीय चड़सा भीम सरीख " प्रमरै
रंगा अरधीयौ तौल वधारै तीख " रचौ कुल दीपक
कुल मंडरा कलह उजालरा हार " हठी ईद नवल नीरंद
रौ सह डोडीयां सीगार " छंद झंपतालो :— तौ सकल
डोडीयां तणौ सीरागार सांडा हरौ " खत्रीवट प्रगट
वप तोल लीधा खरौ ॥ ईम नमौ भीम शंकर वंस
उपनौ " नरां सीरागार दातार गुर नीपनौ " ईम नमौ भीम
सांडा करन एहवौ " जोध जा झर अपर कहे जा
जेहवौ " ईम नमौ भीम रांणौ प्रमर अरधीयौ " कर गहे
कुल मंडरा आप सीरखौ कीयौ " पहल ही रांणा कुअर
परौ पुजीयौ ॥ देह सत वाज वड पर्यौ वीध सुदीयौ "
तौल प्राध क वडम देख हठी ईद तणौ " परा प्रमरै
कुअर मांनीयौ घणा घणौ " खाग खत्रवट प्रघट
वडम लीधां खरौ " हठी शंकर वंस हुवौ सांडा हरौ "
कुअर कर जोडीयां रहे मौजां करै ॥ बहादर हठालौ
देख दीलतै बरै " देख पहाड़ प्रौनाड़ नड़ डोडीयौ "
कुअर वड तोल ईधकार ईधकौ कीयौ ॥ डोडीया तणौ
प्रथक जोरै दुसरा " न आवै मीठ की ईढ दातारां नरा
कलह प्रमरा मौहर हठी पचाड़ा करै " बहादर नवल
रै सदा दलतै बरै " आदरै भलाई प्रचडनीत उधरै "
नांम वरीयां म ग्रहीयौ वडो नवल रै " डोडीयौ हुवौ सांडा
करन दुसरौ ॥ उपनौ सुर शंकुर वंस उधरौ ॥ डोडीया
तणौ पातां सुदन दीजोयौ ॥ कीर मरां कलह पचाड़ा
वडी कीजीयौ ॥ प्रलवला करै प्रमरा मौहर उससै ।

भीच
हुलो भुजा ~~बीच~~ बहसे हसे ॥ कैल पुर बै सवा पाट
प्रारंभ की लखां खरचरा दरब उद्धव मौहर तली प्रो ॥
प्रमर वराता तखत प्रचड़ प्रत भ था दरी ॥ खत्री नव
खंडा जस कीरा खरा खरी ॥ वरो वराता तखत ह
बाधो धजा ॥ वहीप्रा दान वड पान पालरा प्रजा ॥ कुल
तरा बीरद राखरा हुवो कोडीप्रो ॥ दलां सिरागार सांडा
हुरो डौडीप्रो ॥ ईल प्रभंग बैसता पार रांसो प्रमर ॥ कोप्र
जुग उपरा डोडी रे दान कर ॥ प्रचड करवा हुवो डोडीप्रो
प्रज सोप्रो ॥ बेल पुजे नहो हजुरी ईनि बीलो ॥ करे
सोपा प्रनंज गंज ईधका कीला ॥ दान उरेड़ देखे मह
दाबाप्रा ॥ करह कु दन क सब पमग माला कड़ा ॥
मेल जम दढ जडत घड़त ईत मुदड़ा ॥ दे जत पतो
रहे वेग उसद देरे ॥ लुभ खुच बद झांभर प्रपर
चाले रे ॥ कड़ाला तपे चड़ उतरै चड़ै के ॥ लोक धाप्र
प्रनंज गंज लेले थके ॥ दान दीलीप्रो दीले देग राव
डोडीप्रो ॥ करे प्राचार प्रत नाम नव खंड कीप्रो ॥ वल
वल वहे उपट दबट प्रन वै ॥ हुवो दीली प्रो सघ
महरा सांडा हरो ॥ देतरे हजुरी उबरा देतरे ॥ करे आव
हुवो दान जुग सीर करे ॥ दुचीप्रा इच करहा पमग
दीजाप्रो ॥ लोभीप्रा कीना कीरत सुजस लीजीप्रो ॥ प्रम
वराता तखत नाम कीधो प्रमर ॥ नरा सिरागार दाता
गुर हुवो नर ॥ जरी जामा क सब सुपातां देजरु ॥ धु
धमल नाम नव खंड कीधो धरु ॥ देह सत लाख रे
पटे रीझ दीप्रो ॥ करे ईधकार प्रत कुरब रांसो
कीप्रो ॥ दौड़ीप्रौ सदा रारा मौहर दुबाहे ॥ सदा प्राचार
तरवार बीध सराहे ॥ प्रलवला करै कोटा गढ़ा सु प्र
चीज भड़ डोडीप्रो सदा मोटै चडै ॥ भररा चडीप्रो हु
प्रादेरे भलाई सही सांडा करन भीम सु सवाई ॥ प्रावल
दलां लीधा करै प्रलवला ॥ करै झांभर प्रपर जेम
कला ॥ दलां रौ रुप रांसा दलां डोडीप्रो ॥ बेल पुजै न
... ॥ तेज मान ही मेर माली तरा ॥

कांम जोअ चरा रौ रांरण हुकम कीधौ ॥ मार कौजे रे
झोलो सजौ मेलीअौ ॥ आवीआ सही खड़ नीठ उपरां ॥
संम रो कांम कार कोई नह सरां ॥ महा दबीआ रहै
डरै डेरां मही ॥ कांम ~~कारर~~ कारज चरणी तरणौ न सरै
कही ॥ पुकारा करै कर जोड़ उभी परज ॥ अमर रांरण
सुरणौ रुह चर री अरज ॥ गजा रावत वहे गर
कांध नकारो ॥ परज रांरण मोहर वधे तीरण पुकारी ॥
दठ रांरणै अमर हठी बीड़ौ दीधौ ॥ लोह बल डोडीअ
सीस चाड़ लीधौ ॥ करे रांरणै हुकम हठो हलकारीअौ ॥
चोम चीरवंता मही गरण धुत चारीअौ ॥ हठालौ रुवहै
रूप चड़ीअौ हठी ॥ के वीआं बोलवा कहौ खड़ सी कठी ॥
रै हकल कलल हठी कीधी हलां ॥ भड़ अनड़ वाज वाधा
अरावत भलां ॥ भड़ भीड़ज सांतरा होआं रावत भला ॥
असमरां देअरण अरी सीरस औ खला ॥ सांत रा होआ
गज वाज पाखर सघर ॥ घुमरां मीलां दल डमर आं
फैजां घरर ॥ तोड़ जड़ नीठरा तरणी के अरण टला ॥
भीच हठी ईद तरण मीलां रावत भला ॥ आई बंध सांत
रा होआं वड वडा भड़ ॥ अंग आवध कसां उससा जीम
अनड़ ॥ कसां जोधा जरद मरद पाखर कड़ा ॥ घुमरा मीलै
चैधड़ गरट घरण घरण ॥ पलेरो आंरण पंडव वहल हल
पमग ॥ अो पावे साज सीर ताज सब अंगो अंग ॥ अमर
राव डोडीरे अभंग आवध कसे ॥ उठीअौ जुध कररण
भीम जीम उससे ॥ कीध कीउ ठहल हुई हकल कलल ॥
दुठ मीलीआ घसरण डोडीआं तरण दल ॥ वडा त्रंबाल
सीधु सबद वाजीआ ॥ घरण सघरा जांरण भर भादवै
गाजीआ ॥ कलल हुई कहर हठी खड़ीआ कटक ॥ वादवा वैरी
कररण जस रैक वक ॥ रैक रैकां पहल रैक रैकां अगे
पम वादो वदी वहां वधीआ पगे ॥ होरे हड़ वड़ दड़ड़
वधां भड़ हुबचड़ ॥ अर हुआ धरर चर धुज गाजे अनड़
दोडीअौ दलां वीच अोपीअौ बहादर ॥ कला लीधां कमल
जरण जांस हस कर ॥ बहादर नीठरै हठी आअौ बहस ॥ करे
मैवा सीआं गासीआं सीस कस ॥ लीआ लगत बीसरा अ
चर लुबाआ ॥ डोडीरे डाव जम राव वीढ वादीआ ॥ वीढ

कज डोडीआ तरणा दल बीमा ॥ सीह आखा खड़े दीह उगा
समा ॥ गीरां बीच प्रचारक तंबाला गाजीआ ॥ बीढ़रा कज
डोडीआ तरणा दल वाजीआ ॥ नीठर उपरां रीठ पड़ नत्रोठी ॥
देचते कहै कल रेठ बीन दीठी ॥ सत्रां सर उपरां
मार पड़ सांमठी ॥ हठालो नीठरा सीस वुठौ हठी ॥ वाज
खग झट नीपट बीकट थट उपरा ॥ जहट आरट गरट
सुभट पड़ीआ गरा ॥ डोडीआ तरणा दल लुबीआ दावड़ा ॥
चुर होआं सुभट पड़ां भड़ चौवड़ा ॥ झाट झड़ बाट वड़
वहै झड़ प्रैझड़ां ॥ ढाह कीधा चड़ां तरणा दीग धजवड़ां ॥
नीठरा उपरां हठी वाढै नीजड़ ॥ जुड़े धारु जलां झाट
वासतां जड़ ॥ सुर तै कीधै हठी ईद आगल समर ॥
डौडीओ राव जम राव वध बहादर लड़ै रीरण दौड़ रै
बहादर लोहड़े ॥ सुर तौ सीह अरणबोह भड़ समचड़े ॥
भाई बंध हठी रा लड़ै रीरण भुजाला ॥ सुरता ईदड़ा सिरीखा
साधाला ॥ हाचां हुकल सबल महा भड़ हठारा ॥ नीजड़ झड़
मार पड़ उपरा नठारा ॥ दुजड़ झड़ वाढ मीरण कीआ खग
डले ॥ ई दड़ै रीरण वड़ वड़ै उससै ॥ धार चुवतै सत्राह
सैनीह सै धसै ॥ हठी रे बीच आगल लड़ै लड़ै हेम
कन ॥ तरस तरस जीम होरगे आडौ धरणी मौहर तन ॥
सौहड़ हठी ईद तरणा लड़ै रीरण सांतरा ॥ जोड़ मीरां
तरणा कीआ भग रे गरा ॥ बीच भारथ लड़ै वड़ वड़ै
भुजाला ॥ पड़ै धाआं पड़े वड़ सम चड़ै उजालां ॥ बहादर
हठी हल कारतै बेलीआं ॥ करै तं दलं डलां डीगलां केवीआं ॥
मोड़ मीरण ढीगल कीआ मरदां मरदां सत्रा वाढे धरा
सुत कीधी सरद ॥ नीहस दह वाट खग झाट क कर
नठारौ ॥ हीमर के हुऔ जस वास जग हठारौ ॥ सत्रां पाड़े
समर बीरद पाड़ै सही ॥ रीधु जुग जुग लगां कीत
प्रभर रही ॥ भर हरां वाढ जीपे समर अरवाड़ा ॥ प्रगट
सांड़ा हरै खाटी आप वाड़ा ॥ के बीआं वाढ प्रौ गाढ
राखे प्रचड़ ॥ बीच रांरणां पु दल मार कै वड़ै भड़ ॥
जीत रांरणां तरणी करे जे साह रै ॥ खाग वाहे खलां
तणै तोड़े खरौ ॥ काट भड़ नीप्र भ कर जीत रांरणां
तरणी आवीऔ ॥ बीच भड़ धनड़ रांरणी मने भावीऔ ॥

आप लागौ पगे रांणा रौ उबरौ ॥ बहादर नीमरा तरणौ मांजे बरौ ॥ रांणा सुनमान कर घणौ मन रीजीग्रौ ॥ दे पटौ रतन पुर परा उपर दीग्रौ ॥ चीतौड़ होरग उभै मोहर चलाग्रौ ॥ वडा गज वाज देतीरगे वधाग्रौ ॥ कीग्रौ सुनमान रांणै अमर हीत करे ॥ धणी पुन मांनीग्रौ वडा बद भुज धरे ॥ रीझ मौजां करै रांणा मन रीझीग्रौ ॥ करब वड तोल ईधकार ईधक्रौ करे ॥ हसत मद मसत गौखां तलां हीडुलां ॥ हमरा कलल बाधा करै हुकलै ॥ मार का सार का कोट रावत मीलै ॥ जोके करै सारां पहल कते मचतै कीलै ॥ वसुह हठी ईद तणी वार राजस वणी ॥ तीसी सत जुग हुई वार हर चंद तणी ॥ अलवला करै मौजां देग्रौ उझलै ॥ ढोल वेलां वधै महुरा जेही ढोलौ ॥ वरो राजस सरस पाप्र तखत कवार ना ॥ करै कमठांणा नीवांणा नांमा करै ॥ झीले महला चौग गौरव दीब झरोखा ॥ नौ वरो वाप्र नीवांणा सर अनैखा ॥ समद बाधा हठी वडा संसार मझ ॥ कीग्रा कमठांणा नीवांणा नीध क्रीत कंज ॥ सुचांनौ सहर सब लोक राजी सही ॥ जपां हठी ईद तणी वार हर चंद जही ॥ चेड़ीग्रां झुल झाझर झमक चहटे ॥ पुरौ कव हठी री वार उपर पटे ॥ करे राजस सरस हठी ईद कलो ॥ भुजे भल लाज सीर ताज मोरम भलो ॥ रांणा सुनमान कर अरधीग्रौ नवल रौ ॥ खत्री खत्रवाट आवीग्रा पेख खरौ ॥ हुई सोरौ हीग्रां भड़ा उपर हलां ॥ कीग्रौ को मतौ मतौ राव रांवे कला ॥ सम चांहां घणी मार सीरो हीग्रौ ॥ करणा घर आप रौ मतौ कु मतौ कीग्रौ ॥ रांणा कीधौ जीत्रो राव तज रो लीरगे। महा चुल मेली भलीमो लीरगे ॥ रांणा रौ थापीग्रो राव करा उथपै ॥ वीजो झेलै कमणा आग भीलणा वकै ॥ कैल पुर देवड़ा उरां को पीग्रौ ॥ दाव धरती सीरै धाव देग्रण दीग्रौ बहदर हठी नरांणा बीडै दीग्रौ ॥ कंध चापड़ अभंग दलां आंकल कीग्रौ ॥ अमर कर कोप सीरो हीग्रां उपरा ॥ खत्री दल मेलीग्रा खाग खर हंड खरा ॥ आवलो भीच फौजां मोहर आपीग्रौ ॥ दला सीरागार सत गुर ~~कटक~~ डोडीग्रौ ॥ कटक सीरो हीग्रां सीस जाग्रौ कहर

बोलवा देवड़ां तणी तेड़ बहादर" हुवौ आखो सत्रां सीस
करतौ हलां" भड़ अनड़ मेल दल खवतां भल भलां"
डोडीओ रांणा रां दलां बीच बहादर" करै अचड़ा वडी
उआरै कआ वर" आआ दल खवे सीरो हीआं उपरा"
राव बैसाड़वा घाट भड़ रांणा रा॥ करण घर चुल
धर माहे डेरा कीआ॥ हुवे दल सबल चक्र चाल
चाला हुआ॥ जोध दाप सर दीन मांन दोडां जुआ"
लुट धर कुट संपत सकल ले आवे" देवड़ां उपरा
दाव नीत दे आवे" दीह उगास माहे डोडीओ तणां
दल" करै चक्र चाल दल सबल मेलै कंदल" दीह
उगा समो चढ़ौ राव डोडीओ॥ कलह कज सीस
सीरो हीआं कोडीओ" डोडीओ चढ़े दीन मांन सीर
देवड़ां" दाहीवा वडा खल वाहीवा धजवड़ां" तेरव कर
देवड़े राजा जी तेडीओ॥ दल सबल सीह रंणो अमर
देडीओ" दुठ रांणो अमर कोपीओ बहादर" धाअ गमवा
धरा देवड़ां तणौ घर" देवड़ां उपरां डाव हुवो ईद
दीओ॥ करण हमला कीला डोडीआ कोडीआ" वीर कर
देवड़ां तणी ठावी वसी॥ सार दल मेलीआ डोडीरे
सकसी" हठालो मुजालो करै हमला कीला" भीचड़ भड़
बाढवा देवड़ा भल भला" आच मरण समै कहीओ भड़ां
आपरां॥ कलह वध देवड़ां हुत वेधो करां" तआरी वरौ
साकत सोलह साकरां॥ ठहो मौजा जीरह जरद कस
नकरां" आवला भीच हुवो ईद तणा उठीआ" सक मुह
रीमां दल वाढवा रुठीआ॥ कसे सीलहां कसण बांध
आवध कसा" उठीआ हुवो घरजन करन रेरसा"
हुई हुकल कलल डोडी आचां दलां"
<u>गीत</u>:- नमौ भाल रा पूर गहलौत रावल नडर" उरड़
खत्र वाट यौ रस उमाहे॥ काजुली रुलंतां उजेली कटारी"
बीजलो उपरा तुही ज वाहै" लीय धर आं वर रीजांरा
दोवै लड़ी" खड़ हड़ी कड़क उभै पड़ी खीजा" कहर
सुर पुज रावल जड़ी कटारी बीज ऊपर पड़ी दुसरी
बीज करै अवं दाह चमल मांगल कांमणी हस खलीआं
मरणी राग रंग होय सांमणी तीज जरा दीह जड़ की

सुजड़ दांमरणी परे प्रध्र प्रांमरणी दीया" मसे घर पाट
मौर दधीया प्रर भड़ चम चमै वाट गौलां जेहो चीजे
कसी कद लेता यल हुवो कद री वार लैध सिधाय
लही ई बाज" पलांरणे भीड़ज प्रांरणौ कसे पाखरे" हौड़
हौड़ां चढ़ै जुध करणारांम ठकुरे" होरे हुकल कलल
वापरी वीर हक" काहली वाज त्रंबा चड़ीप्रा करक" दुह
चड़ीप्रा घसरणा डोडीप्रां तरणा दल" प्राजीप्रा घर प्रनड़
वाजीप्रा त्रंबगल" डोडीप्रा राव जम राव चावरो दल"
सधरा धरा भादवै जारणा कांठल सबल" कढीप्रा सेन
घां सार भड़ कांम रा" मार का सार का कोट वध
मांमरा" प्रोपीप्रौ हुठी फौजां मौहर रेह वौ" जांरणा प्रर
जन करन भीम भड़ जेठ वौ" हेरण हड़वड़ दड़ड़ वहा भड़
हु बचड़" प्रोरवमो जमी पमगां पारे उरवड़" सेन
खड़ीप्रा करक डोडी रेसा मठ" कैलीप्रा सघरा कध
महरा उकल पटा" ई दड़ै बंधव प्रागल खड़ै असै"
जांरणा जुध करणा रीरणा रूप प्रर जन जीसे" लीप्रा
लागतां गुड़ा ता धरा लुबीप्रा" दीह उगा समा सीह
भड़ डोडीप्रा" चीटीप्रां गुड़ां फीरीप्रा फटक दोवला" वल
वल वहै वीजल जहीं बीजला" भीड़ नाराजीप्रां पड़े दल
कुबीप्रा" लोहड़े नाच उत तरणा दल लुबीप्रा"
गीत :- प्रौ पाई डारो कहीयो" नह चल प्रच रहरणा कना
ना रैनो" खाटम दाट कु हीड़ खारे खा" प्रादम
काल भदीप्रा रैप्रा" गार जम जिल दीहाड़ारणा रैगा"
भैरै खजांनौ धरती भेदै" चौर कटक लेहसी पर दैदै"
बांट वांट कहीयो प्रम वैदै" दीह गरांरणीयां ताली दैदै"
लौभी मनरव न मारो लादौ" वैही नजरां पा कवादौ"
उबर तरणौ भरोसौ प्रादौ" खोला रो धन खादै खादौ"
वसन समर रे जो मोठौ वांरणी" का वरज्यौ धन देह
वडांरणी" प्रौपौ कहै उबर प्रौ जांरणी" परबत हुत व दुटा
पौरणी" ।। गीत :- नह चल गरथ रहरणा नारेना"
खाटम दाट कु रक खारेखा" प्राज न काल नहीं
प्रोरे प्रा" गिर जिम नीर दीह गारेगा" भरम
खजांनो धरती भेदे" हरी निस चौर ले स घर

देदे" बांट बांट यम कहीयो बेदे" दीह गरागीया
तालो दे दे "२" लोभी मनख जमारो लाधौ "मुख
कर धरम समर रे माधौ " उबर तरौं भरोसौ प्राधौ"
खोला रो धन खाधौ खाधौ ॥३॥ विसन समरे मोही
वांरणी " बा नरज्यो धन देत बिडांरणी " जासी जीन
प्रौप ले जांरणी " परबल हुत बिहुटा पांरणी "४॥

गीत वीहारी पचोली माहे कहै प्रासीप्रा नरु रो :—

प्रमर प्रर्धीप्रौ रांरणा परमांरणा जोरे ईधक " दुमेटे
कीप्रौ चांन दस देस " वदे मत सुमत साचौ मतौ
वीहारी " वद हौयौ पधरै पंच पंड वेस " मनोहर
हरा रांसौ प्रमर मंनीप्रौ " सही मेवाड़ मां हुई सराह"
कीप्रौ साचौ मतौ ई वर कै कांन उत " रो दन
काढीरो पाधरै राह " रौद सुरद बदल करेतां वीहारी"
धीर सचर राखीरो धरा पुप्रौ " मव सन मतो कर
दीखरणा दीस भमाप्रौ " ही मर कै मतै जग सीरै हुप्रौ"

कवत:— महा धुम मुरत सत धारी व्रत धारी उदीप्रा
पुर सहर मां महा मोटौ " उपगारी सदा व्रत सत
लीप्रां धजा बंधी जग जांरगौ " देख तोल ईधकार
प्रमर पतग रीप्रौ रांरगौ " भगवांन तरणौ रतौ भलो
नरा प्रर रानां मनां " सत जुग दीखारो सापरत दीठै
कीर पारां मनां "

गीत:- देव कृन साह माहे प्रासीप्रा नरु रो कह्यो :—

ईधकार सांम धुम साच वाच व्रत " धरीप्रौ धुम
दे वल सचर " देखे तोल सतोल देव कृन मांबीप्रौ
प्रत रांसौ प्रमर " प्रमरा हरा सांम धुम पैलख "
धरणी रे वाधा रीयौ चडौ " वीधौ रांरणा प्रमर
वैल पुरै " लाखां लेखरणा सीरै लडौ " तोल सतोल
जो रेता रावत " सांम धरम सत साच सधीर "
लाख प्रधांनां सीरै लेखवां वडा वडौ रांरणा रो
[illegible] " देखे धरम तहाल देवा " बेल न पुजो

माल दे गांगो वाघौ सुजौ जोधौ रीरम मल चडौ वीर मस लखो तीडौ छाडौ जालरा कंन राव राघ पाल चुहड़ीयौ आस थांन सीहो सेत रांम सेत चंद वरदाई सेन परीहास सत बंब भुम सेदै जन चंद पाल जै चंद वीजै चंद महप नरंद सदै वद्द सुकल वद्द सोम केम चड़चज कमपज कीलक दरगाव री सुसील मेघ मल उग्रसेन कर पुरोहिता सस गर मान धाता जोबना सच वहे सुर बांरआं सुर वीरो चंद बल प्रतव *वसेन की सप मुनीत आद जुगाद कमल नाम ब्रहमा"

गीत:— काढी सहस री मुघ जीम कुदंतौ " कुल ब्रद चरीत्रां कांचौ " महु प्रीतां दीजै महराजा " बीजा ग्रंथौ बांचौ " तुरी खट री करतौ प्रत तातौ " लाहू वाहू रस लेरै " तुरक बीगर कुरा दै जेसी तरणा " रैन देखवा न देरै " सांभलता गुरा पहल सम पीथौ साकुर वाल सीरा री " उमेद सी बीगर कुरा प्रावै " हीत कर वडौ हजारी " राजड़ हरा जुग जुगां रहीयौ " दन जो हांमर दीधौ " पात करै जस दुजा पातल " करगे नांमो कीधौ "

गीत:— सह सीघ कीम्रा ताप्रा प्राप लारखा " लास गास बे भेद लधै " सुपह प्रमंगरौ वधै सेवगर " वेलौ रुख प्रमंगरा वधै " कीप्रा जतां समवडी कला उत " पुरखे जां सेवीप्रा पग " मोटम रेहू पारखौ मारु " लता चडै तेर सीस लग " तो दीस नमी प्रा जीके रुख तट " नरंत लागौ जगत नमौ " उगै तोपगां प्रासनो सौ ब्रख करै ताप प्राप समौ " कोड़ी गने हसे बंध कीधा " तां लेवेज रुख लख " प्राप जीसा करके मंत्री लसै " वेल प्रमतम कलप ब्रख " साखी " गीत " मादा पुरज री कहीयै रावत भीम सीघ जी रै प्रताप सीघ जी रै :— उर रहीया दो भुहमंड डगंतै " दुठ भड़ा पडबा न दीयौ " खस जातां बीजां पारवारां " लाखां रा प्राधार लीयौ " प्ररसी राज उच प्राडव वडीयां " दुजां नट पडीयां सरदार " चौरफ तुर न जौर चालीयौ " भीम प्रताप झलीयौ भार " प्रथम सलुबर बी यौ थंब पर " ठवाध पर धरा प्रेठल " पटक गीया प्रसरा हर पाद्दा " बैं गढ धीयया उदै गढ बैल

मुलीयां सकल नदी च्यौ डलबा " घाट हरौलां हीदु सुथांन "
नीमा जल परताप थांभीयौ " प्रड़ वाड़तौ पड़तौ प्रसमांन "४॥
पद राग गौड़ी पाड़त वा दव दैसो " झुठा रांम कहौ
दुनीया गत पावै खांड कहा मुख मीठा " पावक कहां
पाव जे दाझै जल कह्यां त्रषा ~~बुझ्या~~ बुझाई भोजन
कहां मुख जे नाजै तौ दुनीयां गत पाई " नर की संगत
सु आहर बोलै नांम प्रेताप न जांणै " जब उडजाए
जंगल कु सुआ हीर दै नांम न आंणै " बीणा वीसवास
दरुस परचा बीणा नांम लीयां कहा होई " माया कही
मीलै जे मायौ तौ नीरधन रहै न कोई " साची प्रीत
वीखै माया रस हर भगत न सुहासी " कहत कबीर
सुणौ भाई साधौ बांध्या जम पुर जासी " दुनीया कांबर
काल वीलुध्यौ ताता राम भगत नह सुधी " आंन देव
कु पुजै आ जौ गुसांई कु गावै " सीर पर जलती मेल
अंगीठी मठ देवी कै जावै " आखा जोरा करै अवाली
लोका कु भरमावै " कांन नाक कांटौ कुटणी का कुड़ा
कलंक लगावै " बीजा सणा कौ पहर काल री मुरख
रा रात जगाई " कील पड़्यौ जब वे घर खाऐ कहां
गई सकलाई " खेत पाल कु तीलवट बाकल कांन
प्रजा को काटै " पुजा पाती ओपा लेगा पाथर कुत राचाटै "
कहै रेक्क को जणां घणां की बोलै बौह भरता री " कहत
कबीर कुणौ संग जल ही कोट पुरख कीनारी " राग
आसा साधो उपजै खपै स दुजा " हर प्रत पाल
काल नहीं वाकै उ कहा गया न आया " बालक हुआ न
हुआ बुढा जरा रणी कीणी न जाया " कहा मुरख सुध
मध कध होवे #नांह संखा सुर मारै " आद आल दोरव
नही वाकै नह जीपै नह हारै " आ नही रांम खंम
जीणा कारा नाहर नख वीडारा " महरवांन साई सब हीका
उणा नह की स.ही मारा " हर वारा न हुआ कव ही
चरणा चरणा नह चारा " ऐतौ कांम रांम के नांही झुठा
कहै संसारा " फरसा हुआ न प्रथमी साधी नह रखी

माञ्ञा" बीरा वीचार सकल जुग भुला माञ्ञा सब भरमाञ्ञा"
सीरजरा हर न परसी सीता जल पाबाण न बंधा "श्री
रुधनाथ रांम कह समरै जे समरै ते धंधा " करता
कानन हुश्रा गोकल करता कंस न मारै " अलख निरंजण लखै"
गीत:— चुड़ राठौड़ सै|सत्र बैछव नेम नेसंक तबलो"
देरे वरस डंड रुकरा दोञ्ञ" श्ररा धांजीश्री नर
हीश्री रु कोञ्ञ "कोट दात्र तो श्रागल कोञ्ञ" श्रास
थांनो तलोरे बल श्रसमर" चर चुहड़ करतौ चक्र
चाल" पह जे सारा सो नगर पहला " रस दुरा श्रब
देरे रसाल" खल श्ररामद श्रखुटी खुटै " दीह रात
सार खांड रेस " कोटां बीहु तरा राव कमधज नेस
पैस ते कीञ्ञा नरेस" गीत छाडा राठौड़ रौ:— दुजरा
सल श्रास लख्यौ डर पंदा" नीवड़े डंड सह भरै नीमंध"
छाडै छोज वीञ्ञा छाहड़ हर" वाजंद वीत ले वारांध्य"
पह गुडर हम रोट तरा पह" पर उदल राघ्र पाल पर"
जाल उत लीरे नीत जंगम" हुकम श्रमांरौ सोढ हर"
रेवंत लेरे न श्रासौ रारवै " रेवंत परै न दुद राहै"
सीहा हरा तरौ डंड सोढौ " वरस वरस श्रागलौ वहै"
उपड़ीश्रां वागां लोह उडीरे " पुर सधीर वीर समराथ"
कुभा थलां खीवै ग्रह कीरमर " हर दै रांम तुहालो
हाथ" वाग उपड़ी लोह वाजा रे" हुकल कलल हुता
हलकार " पांरा तुहाला सत्रां उपरा " वीजल काल खवै
ररा वार " श्रब ईहरा श्रभंग श्रज बावत " नड़रा
सत्रां श्रनड़ श्रीनाड़" कमरा जेम खीवै दल दीहां "बीजड़
तुहालो धार बराड़ " दुजड़ वाह वा देख वादांनवड़ दुथीश्र"
पाथरै धाश्रर थड़ा पाला " थरा वागड़ तरी वडौ वत
थारीश्रां " लाज धरां भुजां श्राज लाला " चीत मढे चढ़े
कर कढे चा खोड़ीरे " वीत उथांम श्रांकी नहीं वार"
डोलते दुजे केहर परस दुसरा" भुजा श्रा भुजे
धरती तरा भार " गीत:— बीजुल बीज वाघ
श्रह वाररा " पवन हरा भल मंगल श्रमांरा "कमधज
ज राव तुहालो कीरमर ईतरा रूप रचै श्रारांरा"
सुजड़ तड़ लसीह मीरा धर सोपुर " श्रनल हरी

कल प्रग प्रपार "प्र दल सबल वहरा प्रज बावत "
रूप रचै इतरा रीसा वार "दुजड़ा कमरणी नाहर दाटक"
कुजर वाप्रक प प्रान कल प्रख ईह रै रुप कर
ईतरा सम हर सत्र सम्भौ सबल" कीर मर तड़ल दुपी
प्रह कुजर" बल मारुत कप मंगल बरै "कलहरा वार
कल हतां कीतौ " कमधज ईतरा रूप करै " गीत - केवी
दल गीलै वीलु कुलै कलहरा" डम्बर खल दाल लेरै
डल "कीर मर तुम्क तरौ राव कमधज "कीता चीता
तरणी कल" प्रज बावत मारच भीम वडा भड़ मुप वैरी
हरां वहै रीसा वेला" नीजड़ तुहालौ नाहर रूप "राव
राठौड़ प्ररोड़ां रोड़रा" बलवंत मांमी सहस बली " के
वीप्रां नल करै कल हतौ "कीर मर काल लंकाल कली"
प्रख ईहरा नड़रा पीनाड़ां" चौरंग वेला प्रपड़ प्रचुक"
पच मुख जेम गीलै दल पीसरां "रामां हरा तुहालौ
रुक" पर सुरती वजु सै सुदुसरा चक्र रा नाम प्ररचते
गाप्रते रेमती सता भती गा प्रर पते गैरवती जरती
वरती रेहती चमती नदती प्रद्धते कै पैण्यौती परासती
परा प्रतीव लगौ प्रती मंदते दंदती दंदैती सस मांना ह
रजै पते रंजैती ससती सतु उती ह उती रीवती नवती
मंदते मराते मरा प्रते सवा पाते पी प्रवाह मह प्रती
वाज प्रती पुजे तीस वदती मदती रसती वे प्रनतो काल
प्रती पेल प्रती जल पती मंतै प्रते वदत ईतर पती
क्रमारा चीती चत चारव मच सटे वीच सटे वीच
सरणी प्रव चाक सुदुती पसती क्रमारा " नाम प्रथमी रा:
उहांग मा जीमा खीमा ख्या खांमा खोरणी खेतीहां ऊरवी
प्रथमी मही री कहां प्रद तीहां इला नीरती हरा तु मुप्र
भोम पुसा गोत्र तीपै धीजाह " हेम चंद्र रुक मप्रचाहा
हरन पे ताहां कै सन लोहं कनक कंचन मरम ईमतं
मरुत दतं जात रूप मती पंब रंब प्रत वी प्रेम वर
हे हां चनवे प्रदरखं प्राकासं प्रापाह प्रथवी मुहा सोवप्रां
... पथवा पसकरं सगरं समो द्राहां प्रध वर मीतं

रजाहां प्रसी कनो तमस वती प प्रस वती गुता चीसेरगा मोकी सोकी उथाहां पथ्राह है माहां वीस वेत्रे रात्रे" ईद रा नांम प्रदीहां गोत्रा ग्रावा वलाहां प्रसभा पुर मोजा पर साना प्रमा परबता गीरी वुजा चरू वाराहां सबर वहीरगा रइव ताद्र लीगा उपरा उपला चमसा प्रही हांप्र उतंब लाका मेघा दतीहां प्राद नंवै संपीहां वत प्रसुरा की सईत मेघा नाउ" पोरसी रा नाम वजर रा नाम दो दुतने मीहे तीन माहां पवीहां वज राहां सेकाहां वेकाहां वथाहां प्रद काहां कुदाहां मेनी कुली साहां तुजाहां तीग मास वो चेती सापका

गीत:- दौढौ रावत अचला रौ कहौ चौहच मोतीसर रौ कहौ:-

सुर पावस गुरड़ सोपौर" मई मीरा धर मंगल महुप्र" वाप्र वीज समंद वनर" नवह तुग नरेस "पधड़ थावर भीम धर जरा" सकृत जम राव सीव सुदुसरा" चोरगा भैरव क्रन दढ प्ररा" प्रई खग पचेलस" मह दीप मेघ मेघ खगेस मदद्धर" सीह चील क दहरा ईल सुर" करगा उजल उग्रह हसु कर" पा उठ मा प्रबीह" गहरा पीगल पंड फुल जरा" चंद चोमर दरव दरह चरा" दुज वीर हेम दत धर प्रधाररा" वीदरा प्रर चत्र वीह" करगा पत पीह कर खग कुजर" भीड़गा हरी नग जलरगा भमर" प्रनल दामगा प्रचग कपीप्र प्रर" संभ्रम हंस सुचाल" गउ सीस वीकोदर वीभच गह गरा" भता अतंक सीव ससत्र भरा" रीखत दन पत पु प्रर कह ररा" कर प्रचल कीर माल" मीत मेहग पंख मंगल" मंगरा सीध सरप प्रगन भसल" पवन वीदु उदध प्रच पल" प्रगट भुज लग परा" राहु नील कवलव पच ररा" प्रहर क्रती प्रत ईस चक्रीप्रगा" गौर गौर लखत्री गीड़ गोरा" प्रचल कर आरांरा" <u>गीत</u>:- मीरगा धर काप्र गुरड मंगल काप्र मंगल" वीज कीना वज्र गीरां वीहार" ईतरा रूप रचै प्ररीप्रां सीर" पड़ीप्रा लगता हरी पमार" वीष चर वीहग प्रगन गज वहतौ" गीरा दामगा काप्र लीम गदा" पड़ मचतां पहुली पेमावत" सत्रां तरौ सीर वहै सदा" मन ~~कीर~~ हर सीध फैज रा

मंडरा " कच रे प्रीलम कमाल कहै "दामरा वजर जही उदाहर " वीजल कर उपटे वहै " देवी जी श्री सारदाय नम-
कवत पेमसीघ छत्र सीघ माहे कहैा प्रसीधा नरु रै कह -
कीसना भंभा जीसै वले वेरुौ सारीखै " दुजौ डुगर सीह " पात लाभा पारीखै " उमर वंस उधोर " बीरद मोटा बोलाडै " उदाहुरो प्रबोह " चाप्र जल परीप्रा चाडै "
प्राचार प्रसम संमर उधरै " वा चौड़ै कीरत वता " छत्र सीघ तणौ " पाता सीरस पेम सीघ माता पीता "
गीत :- करै मालां वजर वहतां कुप्रर " सुर धीर सकता सिखर "
तुं प्रारांरा वैचां प्रस उरै " कटै वैकर धर चैकेल कारा " प्रचला हर वांस रा उपम " दुजड़ मुहे पछाड़रा दुत " तेजी तुर डर रै मताह " सुजा तो सार
खास पुत " रुख मागद वाला वड रावत " जर टाला उपडै जरां " कट सुभट वाजै कैर मालां " टाला कीजै नंही तरां " गीत :- खुरासारा चा सबल महमान प्राप्रा खेड़ " वीर नवते रहै पड़ा वरतै " जेतड़ौ वीचन रो हार हेक जुड़तौ " कीप्रा मुगतौ वडी भगत करतै "
ज धर कपाटां गज घटा भईर " उपटे रस तरस सरस प्रघला " कीसन रै काल कोठार मुगता कीप्रा "
सार बै सारीप्रा प्रसुर सघला " बाज गज वाज जुध नांखीप्रा बेवड़ा " चेवड़ा तेवड़ी वांत चकता " कोस प्रातक लगां जतां भगत वडी " जवन दल वदै वारवांरा जैता "
पुड़ी सुजड़ी जड़ी बेवड़ी परुसे " चक्र प्रचार चौधार चौखा " काल चाहार उद धार काप्रल पुरै " नीवह जीमाड़ी प्राघार नौखा " उजलो धार प्रंब सार उरे वतै " कलह पांमी चत्र पत चलु कीधा " रह सकस तेरा ईवर
प्राधा " हद हुई भगत प्रंत हार मुगता हुधा " पदां धर सीख कर सरग पहता " पुद चत्र वीचत्र जम तरा बेप चौली " दल सबल वाढ वल क्रज दीधौ " वसुह
प्रंत प्रव तरवरा तणौ खत वालौ प्रौ " सार वह नही वार
जव सार पीधौ " गीत :- बलरा लीप्रा, गौ रघ

दाणीग्रै भड़ां प्ररण देह" लोय बाचा हुआं सघरणी लड़ाई" मुह खगां उडाई बुच मांसा" वीर ज ज्यां ग्रासीग्रा वले तन वटाग्रै गात ले लगायै वजीग्रां ग्रासां "वडालां जाजतां वाजतां त्रंबाला" जड़ाला जगत कहीग्रै घनोजाग" खंडालां खेत लागां खगां खंड डलां" डांडालां सलला गां हुग्रै दाग" मयरण रा राव हाडा तरणौ मुरगे मैत" सुरां जुग ग्रनोखौ दोग संसार" घाड़ हुडे सार सुन मुख सलग घीग्रागां" ~~ग्रारबा~~ भाला कड़ी लोह लागां हुई लार"

गीत:- डीड़ी प्रवल नाह नर नाह हुंता ग्रड़ी" खाग ढालां सिरै खड़ा खड़ खड़ी" धरां राम पुर तरणी सबैह जपड़ चड़ी" राज वैरण उपरां कसे रेवां तड़ी" सिल हनै पाखरां ग्रनै सुजड़ी जड़ी" लड़ांग फौजां तरणां देख सांमी खड़ी" झाट तर वारीग्रा धार सिर पर झड़ी" तोर वै कुरणी सैर कंग्रर तो रांगड़ी" साहकोसा लगां दोड़वे सुरां गड़ी" वैरद वडकां तरणा थ्याब होड़ली" खलां खारे रेर हरां ग्रसी वैच खोड़ली" धरणां घोड़ा सीरै रावली चाड़ली" रोल घम रोल तौ सेल जस राज रै" जोघ नाहर ग्रमर हुत जुटौ" फाड़ ग्रोडरा कंगल डगल डडर फरल" कर ग्रफर सुसरौ मोर फुटौ" भईग्रां दाईग्रां वीचां वध वडा भड़" पांरण कर पेलीरे जीसौ पुगौ" ढाल बगतर दतौ सहत उधेड़ धड़" ग्रेल साबल ग्ररणी मोर उगौ" कहीग्रै जीसौ सराहीग्रै वैरीग्रां" कहे ग्ररजन करन भीम कुभौ" सी पर बगतर डगल फाड़ धड़ सेल सु" ग्रमर पातौ खलै पाड़ उभौ" गीत:- बह सनीह सोग्रै चोल चख पुर भरीग्रै बरै" पाड़ पातौ ग्रीग्रै सेल पीठौ" नाह रै खलां ग्रीर माल नी जौड़तौ" दांगवे कौरडौ काल दीठो" घुरतौ धरणा उपाड़ीरे घाचरै" साच रै रूप पातल सवाग्रै" घालीग्रै घाग्र कमधां तरणौ धारणीग्रै" ग्रर हरे जांरणीग्रै ग्रंत ग्राग्रै" रोल तौ सेल घम रोलतौ कीता रीरण" कला दुजा तरणौ ग्रंजस केहौ" बोलतौ सत्रां जस राज रै महाबल" जांरणीग्रै मारु रे काल जेहो" खलै पातै ग्रमर सेल घुरवी

लीप्रौ " इले कीधा वले कमंध दुजा " कवी कीरत
कलस न्याप चाड़ै कमल " पवाड़ा सवाड़ा तणी पुजा "
पुडा हुवै कीआ चक चुर " पतौ कीप्रौ बागली पाड़े "
प्रणा भंग मुसल सेल प्रचुक " प्रो जर कमधज न
रहीप्रौ रे कोप्र " भांजे करणी करणी कीप्रा भुकु " जदां
भांज पाहर सत्रां सीस नांखे गरद " प्रर हरां सरद
कर रीरा प्रभाप्रा " नाहरा तो जीसा रीप्रां नाहर नीडर "
चड़ां वाहर जीके भलां पावा " कांन रै वैरव चरमौर
भांजे कमध " प्रो रीप्रा भला प्रस समर उडा "
चोड़े मोटै चमल तो जही चुधड़े " चड़ै वाहर जीके
भलां पुडा " उकले रोड़ लागी प्ररस उफरो " टले
काप्रर कुपह घरा टलै " बीजड़ झड़ बीचाल-जसा रा
बहादर " रोल वा रीमां प्रस तुहीज रालै " पड़ पातौ
प्रमर पाड़ पांरणी पहां " सीप नर हर जगड़ क्रंन सवाई "
कांम तोसा करै खलै भांजे करन " भरोसा जीप्रा राव
दै भाई " <u>गीत</u> :- घरा वाता करण प्रोर खग घरटै "
मद माता करता मुरड़ " ताता तां पीसी प्राज सावत "
राता गोहु राठवड़ " वीरा वीरा करा वीसवा वीसे " दल
खल भोला प्रोर दीप्रा " खग घरटै रीसे खुमांणो "
कमध जपो से चुन कीप्रा " धप्र घरट खग झर पट
घाते " सौह जोधा भेला सबल " नांना भला पीसीप्रा नाहर
मारु मोदा तणी कल " करसां लोट लोट कमधां रै "
पल चर राजी हुप्रा पल " नर हर हुप्रो नौरवी नाहर
वोढ वैरी की चवल " <u>गीत</u> :- नमो तुझ प्रातम
सकत कहै जुगनाहरा " चीबीप्रौ धसल खल वीढरा
चातो खलतां रांणा रीधौ ईसा खेल सु " पड़ीप्रौ सेल
सु प्रमर पातौ " <u>गीत</u> कह्या प्रासीप्रा नरु रो पुडावत नाहर
सीप जसवत सीधोत माहे :- काढीप्रौ कर नाहर कहर
क सुमौ " जड़ लग मुह वीस मौज हर " पीतां सभौ
लो रीप्रौ पातौ " क्रंन चुकतौ भागौ कहर " चौरवी खाग
भंग पुडावत " दांणा क सुमौ छक वीप्रा " लीधौ घणौ
जीके घर लोटै " घर पीधौ ज्यो नीठ गप्रां " जोध

पातौ उबकतौ घर पड़ीओ " हुबकतौ गौजौघ हूरौ " नर हर हरा क सुभौ नीकौ " बीजल मुह काढीओ बीओ " मारु था दारु मीत वाला " जहर कहर नह जार बीओ "
गीत: — नाभी सज साबल सेल मचांरमो " घर गोली वधरगौर घर " दे धमड़क बीलोओ धुहड़ " नमो नमो नाहर नोडर " चौरंग मरकी रचे धुड हर " जग जस मारवरा लीओ जीरा " धम रोलीआ धमड़ के धुहड़ " रोलीआ साबल रवी रीरा " पातौ मही वीरोल पाड़ीओ " बाप जसा वत बाहु बल " मारवरा सुजस लीओ मेवाड़ै " कमधज बांध्या दोढ कल " गीत — कमधज कर भेला साल तरणी केल " हाथां भोभी जगड़ हरा " साबल मुसल वाहु जसा वत " रवल उरवल रवांडीआ रवरा " रवोटी साल हुई रवेड़ेचां " धरा डोफर दारवता धरणी दड़ साबल मसल रवल छंडीआ " कमधज पाड़ीआ होरेहे करणी " कोप्र प्राव रवौन रहीओ कमधज " सम हर उरवल धारण सपुर " भांजे रवलां मुसलां भालां " गीत कांन मायौ सीधौत माहे आसीआ नरु रै कह्यौ : — जग धुडा कांपल सीध जगारा " धरा पीतल क्रन रा धरणा " मोटा बीरद मांत मध कर रा " तुझ भुज मेघ साहु तरणा " धरणीआ दल रवाटीआ धरा दल " आहीव वार होरेहे अचला दांन रवड़ग बीध दुजे झोलते भुजे झालीआ बीर भला " कुरसी बंध वड वडे कमांआ असमर दन देहु वीध प्रन मंध " वड गुरणा सु गुचाआ वीराजै कांना बीरद तहाले कंध " असमर दन देहु वीध अजु आलै वा धोड़े दस देस वरवांरण तो सु ब्रद वरणीआ मध कर तरणा तु बीर दे वरणीओ तड़ तारणा "
गीत — अई ~~वाहन~~ वाहन नर नाहु हव वाहु रा उत अभंग तररा उगा समौ रचे रीरा ताल " लगै छंडी आल वरव राल धी दन लटीओ " काल डरीओ मती मेल वै झाल " दलां सबलां रवलां वाजीरहे डुगरा " दलरा फुरी आल दाटक दीवांनो " भमे नह गओ अंत्रल उर भेदीआं काल तीरा दीओ तीरा ताल कांनो " रगेह इल अपुरव वात उमट अभंग " मार काम दर धीन तुझ मरकै

पहल सहु पीउ पर पर लागां पधां ॥ आडीपैं आलम रवां हेके झटकै ॥ चरा बापी करी वहतां धजवड़ा ॥ तेवड़ा कौसन तरा भांज तुगा ॥ कत सु मौर दसनीके सिरे कालजै ॥ दुनी नम रै जीके प्रमग हुगा ॥
छंद महादेव रा कह्या प्रसीप्रा नरु रा छंद नाराज रोम कंद जात -- दुहा :— संकर चले सनान कु नीरमल गंगा नीर ॥ डंड कमंडल कर कीप्रा पहर गजां तुच चीर ॥ पारबती धर वाम अंग सिर पर गंगा धार ॥ पुन मदन परभात कीप्रा रै ती पुर मुरार ॥ कर असनान जुगत भत पहर भभुत सीगार ॥ छंद जात लीलावती :- संकर रमन राजी हुआ करवा नीरत अपार ॥ सीली कहे पटड़ां सीरस आंरौ अमल प्रनंत ॥ कनक बीज बीजीप्रा वीरवी पीप्रां महेस महंत ॥ अमल कीप्रा राजी हुप्रा आई तरंग अपार ॥ हव ई सुर कदरमी कहे करवा नीरत नीपार ॥ गजह तुचा चोला कीप्रा सजब धंबर टोप ॥ चंद नीलाट गंगा कमल ई पुर रुप अनोप ॥ कुंडल झलकै हेम जु माहे जड़त अनुप ॥ वरो भभुत महेस वर ईसर रुप अनुप ॥ गाहु चौसर ॥ कहै संकर नाटा रंभ करसां ॥ कोड करे मन आरणंद करसां ॥ कर कर नीरत प्रत चीरत प्रत करसां ॥ कदरमी कही वीरतन करसां ॥ दुहो :— डमरु डाक डह कीप्रा सींगी नाद समंत ॥ गीर सभंडी पाड़ गत वाजा वजे अनंत ॥ छंद नाराजात :- वाजा वज ताल परवावज मंदल ॥ चंग डफां जंत्र वंसुरीप्रां ॥ सी मंडल भेरर बाव तुरही प्राधरा ॥ नौबत भुगल गुरीप्रा ॥ कर नाल मजीरा ढोलक ढोलु धरा वाजा छतीस गुरै ॥ पारबती पास गंग धर सीर पर ॥ कोड कमाली नीरत करे ॥ धागड़दा धरराट धनकता थेई थेई ॥ थेई थेई ताता ताता थेईप्रा ॥ फर गर घट वीकट नीपट नट वट पट ॥ फलंग उलंग तट वट फीरप्रा ॥ लट पट जट मुगट भभुत वरो घट चे चौगट झट पाव चरै ॥ पारबती पास गंग धर सीर पर
[illegible] ॥ झरारराट झरारा झमके झम

छमक छम छम छम झम झम वजत झांझरीयां " खेखट खट वेट लट लट लट झट झट सट सट लुल लुल खेल खवै " पारबती पास गंग धर सर पर कोड़ कमाली नीरत करै " छमके छम छक डमरु प्रत डमरु धमक धरा गीर धुज वीधा " फरा गरा धर फेर नीपट नट वर फीर प्रघट उलट पलट प्रोप वीधा " हस मस हल हक हव हक हुकल " फलंग उलंग फर प्रफर कीरै " पारबती पास गंग धर सीर पर कोड कमाली नीरत करै " कस मस धस धमस हमस हस मस हस " नीहस बहस तस कस नमरां " उर जस कस सरस बहस वस रस जस रास सरस रस चस रमरां " लट घट घट मुगट फीरट फरंगट घट ईसु वर रमत रुप प्रपै " पारबती पास गंग धर सीर पर कोडक माली नीरत करै " हल वल गल मोईग गंग सीर खल हल कुंडल झलमल जोत करै " मल हल रज मलल माफल भुज फल " खेलत संकर खेल खवै " वल वल बल चकल रमत लुल लुल प्रंग भुज नाचत पाप वीख मैं " पारबती पास गंग धर सीर पर कोड कमाली नीरत करै " हक धक धुन हक पपा धन पपाधन " धक हक हक धुज धररां " पड़ताल प्रगट झट झपट ले प्रट लट " वीध वीध सीध संकर वररां " वसीधौ सीव रुप अनुप रुप रहे " देख रुप जम रुप डरै " पारबती पास गंग धर सीर पर कोडक माली नीरत करै " घरा हरा घरा घरारां झरारा झरा हरा झरा ररारा रम कठ नेवरीया " भरा हरा घरा सधरा भमर गुजत भरा प्रधरा जुप्ररा " परा प्रोप वीधा " कसरारा तह तरारा तेज तम करा तरा " बौह भव खेलत प्रपर बरै " पारबती पास गंग धर सीर पर कोड कमाली नीरत करै " खल मल धर धसल जुगल वल वल धर सल सल सेस होप्रत चकलं " मही फल चल बहल प्रचल गंग खल हल नीरत करत ईसर चंचल " तेतीस कोड़ सहती लीरवमी वर जोप्ररा प्रोप्रे रुप जरै "

दुहो :- पारबती पास गंग धर सीर कोड कमाली नीरत करे"
कीधौ संकर कीरतन सीका तट सा भाप्र"
सुर नर अहे हुआ चकत कीरण वरण वीप्रौ जाअ"
कवित :- कीरि संकर कीरतन" कीधौ नाट रंभ धारे"
चकत धप्पा त्रहु लोक" भ्रमर जोवे को जत धारे"
वरण भभुत प्रन रुप" वणे कुंड डलना घंबर"
पारबती वैरण पास" वणो गंगा सेर उपर"
देखी प्रौ जीप्रां अध रुपा प्रलग" वर पारबती गंगवर"
तो तणो चीरत जोरौ कमरण" नमो संकर हर ईसवर"
कोन सत्र सल रौ मोने जेत सीप रुप्र जो सजे" कवत:-
मुगट भाग भल" हले श्रीत मकराक्रत कुंडल वंसी
वेत खड़ग लाज पीतांबर नमल" खत्री गुप्राल मंडली
कोड़ तेतीस प्रतर" पहली जादव वंस हुप्रौ हेवा भालाहर"
कव राव भगते केतव ले सारौ जनम सुधारीप्रै" रो
कलो कोन सत्र सल रौ जग दातार जुहारीप्रै"
गीत :- खाजी खेम दौलतै तरौ" खग भार नीराट माचीप्रौ
खल खट" जस लेप्रण जग माह जस" समहर
वार होरंगे दौलत सुत तुरावत प्रागल तुरस" चड़
उपड़े वाहै खग च्यारां" उससतौ बहसतौ प्रपाल" प्र
जन हरौ होरंगे प्रारवाड़े" चणीप्रां मौहर खेम झन ढाल"
भांजै थाट चाट मोटा भड़" वर भर प्रप हर वरां वर"
सांम मौहर होरंगे सुरौ भड़" समहर भर मचतां सीखर"
गीत :- हकल दल हप्रा वाजीप्रां हकां" धरा धाप्र गमे बीनै घड़"
वैरीप्रां सीस वहै सीरण वेला" नग मल उधाड़ी नीजड़"
कल माती ताती दौलत कौ" वीध वीरत उपड़ी वग"
वागी ही जदी वैरीप्रां सीर" खाती रीरा नागी खड़ग"
रावत मौहर मचीरंगे रौलै" उससतौ बहसतौ प्रपार"
उधाड़ो खांडो प्रर जन हर" वहतौ सुर न लावै वार"
गीत :- दौढो राउत मोहरण सीघ जी माह प्रसीप्रा नरु रे कहो :-
वीरव करी सु प्रर वाघ वीजल" काल मारुत ईद खग कल"
भीम मद्ध प्रर प्रगन भसल" चार उमट चीग" दीप
देध हणामंत देवी"वाप्रर" वीर धावर मेर रुद्रवर" चक्कर
वजर हेम चावर" समर मोहरण सीघ"

गीत :- पड़े प्रर समर नै वाजै पातां " मुल न जंरो मुड़रा मतो व्रवतं दंन माहुता वीजल " द्ता हरो दइ वात द्तौ " मोहुरा सीघ तरो कलं मंडरा " कुंप्रर दोयै दोयै प्रचड़ करै " ताग तेग देहुं वैध तेवड़तां " चीग वडंचा बैरद घरै उ सुरत सीघ कीध्रो जस सारै " नायै कपायै क वडै नर " सुक्रव नै वाज " पछाड़ै सात्रव उघारै कीरत प्रमर "

गीत :- चार रहै नचीती धक्री चुधड़ै रीघ जस वासहद्रो दोप्र राद्दु " रावल भीम जीसा माहराजा कपुर लरीखो साहू " थाट पाड़ प्रवी थाट वरो धीर " दन जस वधीप्रै दसै दीस " रावल करै नचीतो राजसजारै सीह कपुर जीसा " जोड़ी प्रवचल रहै जुगां लग " वड दन व्रवे वधाररा वांन " प्रज बावत प्रागल कच राउत " पार थाट थो मरण परधांन "

गीत :- वहे न गौका ही कज ही कुड़ काचा वत " मतो मांटी परणा तरो साचो मते " रहै न हटां कर कीध्रौ वडे रावते " कते तरवार रो पारा कीघी कते " टेक राखा परम दांन रच तारगीप्रै " वडे कोटे गढ सुर वारवारगीप्रै जोध कीधो जीको जगत सह जारणीप्रै " प्रापरै पारणा चा खेड़ गढ प्रारणीप्रै " रांम चंद तरो वड बोल जुग राखीप्रै " सही वाले चरा सुर कर साखीप्रै " प्रसमरां प्रचल दुदा जीसो प्रखीप्रै " भलो जी भलो कत मल कुंप्रर भाखीप्रै " हेड़वे पीसरा चर वाल उहरै " वालुप्रै सीह प्ररा बीह दीलते बरै " प्रावै प्ररा पल प्रपल प्रनड़ धाह प्राप रै " कुंवर नाहर जही गाज कतमल करै "

गीत :- दाखवे दस देस ईभ नमा दुदा " मुल न पुजै दांन मद " वैरीप्रां मुरु करै रीरा वेलां " रुक तुहालो रांम चंद " चवीप्रै जगत ईभ नमा चुडा " सुद न देचरण कर सुर सधीर " प्ररीप्रां सीस वहै प्ररा चीतो " बीजल तरण तरो वर बीर " चंदा तरा इप्रो जग चावो " उदीप्रा सीघ तरा प्ररा बीहू " कवीप्ररा कीत करै गढ कोटां " सुज देख सत्र डरपै सीहू " गीत त्रकुट बंध रावत मोहरा सीघ जी माहे प्रासीप्रा नरू रो कह्यो :- वागली उपरे

सीस उमट" दुजड़ ग्रह दाछल" खर हुड तांता खील
मोले" भीग कुत सोलहां भल हले" पड़ पहुट खाग
झट नीपट उपट "वीकट कट घट गरटघटवट"
कट भुगट झट झपट को पट" घुर वैसट सुभटलट
घट" खहुट घट मट नीपट खल खट" कट वीकट पट
चीप्रट कीचट "दुनट मसचट मसट दुदट" कट भंभट
भट करट की करट" भरर गज घर मरट गाहट"
देदी अभड़ दड़ी आल" हल हुई बेघड़ हुकलो "असमांन
लाग कल उझलो "बह सीप्रो घाप्र बंगाल बोलरा" घुर
मोहरा सोच "वीजलां डर बल वीद्दड़े" दोग हुआ भड़
घड़ उपड़े "दल लबल खल चीप्रल डोगल" पुचल
रल तल खलल जल पल" कलल खल बल दल
मचे कल। डल तंडल खल खडल डोगल" रीरा चपल
पल प्रचल रल तल" कलल दम गल दुख्ल हुत्तल"
चल वीचल खल काप्रर चल चल" कल तंदल कट
अंतेल कंब्र प्रल "सत्र काप्रा डल डोगल सोखल"
घज वड़े उमट च्चीग" दल रारव कुल दत्र पत रा"
कर हलां रीरा वावर करा" अवीप्रा प्रौ रंग तेन उलट
असुर दल घरा पार "वरीप्रा रावत वांकड़ा" घरा घाप्र
घड़ अनड़ घड़ा" कर कचर नर वीहर वर कर" कर
अफर घर चीप्रर कीकर" हर अद्दर सुरसचर अवसर"
ढचर पल चर कचर नर चर" वरर काप्रर उम्रर
घर घर" वर मद्दर भर जोप्रत अवसर" वहर पंजर
खंजर वखर "चर वीचर भर मुचर खेचर" असि असुर
उर वहर असमर" पांच मुख परमार" दल थंभ उदल
दुसरा "खाग क चर दल मुगल खरा" मार का ते
सो। वार मोहरा "आज कर अखौ आत" भड़ मचे भड़
प्रावध इलां "लोच पर लोथां उछलां" घड़ वड़ड घड़
अघड़ घज वड़ "दुजड़ पड़ भड़ सीस दड़ दड़" रत दड़ड़
संघ बड़ड़ रुड़ड़" भड़ड़ भीर गड़ कड़ड़ मुड़ड़ "बड़वीजड़
पड़ बेहड़ बड़ बड़" दड़ दकड़ पड़ रीठ दड़ दड़ "फड़ड़
फीफड़ धड़ चीप्रड़ फड़ फड़" खाग भड़ दड़ जोडरा

राखी वात" गीत कुंप्रर प्रेनाप सीघ जी रै . — कहर
साही जांदो तुरी खुरी नखेव कुंप्रर" दगम दाढल प्रपल
चाड़ डांरो "तत खरै वधे प्रत झाड़ीप्रौ तेग सु "पाड़ीप्रौ
गुड वाराह पंरो" वधे सारा वीचां जैत रै वीरवर"
ढल सबल राख दाखे भुजां दोह "दुजड़ चौ घाव जम
राव जालम दीप्रौ" लीप्रौ रखल प्रखल उजलौ लोह"
प्रंग प्रतिम सकत नमो प्रांना कुंप्रर" सोच सारै ईई
वाहु साराह" पाघरै वदे वादो वदी पाड़ीप्रौ "रुक सुझाड़ीप्रौ
भलो वाराह" गीत :— सुर तांरा सीघ वल वीदुर
सरीखी जग हर दास जीसां घरा जांरा झालां वडा
तरा बीद झाला" तां झालीप्रा वडा तुड़ तांरा "तेग
त्याग वीघ कीप्रा कड़ तेल "घसीप्रा सू दल वजाड़े
धार" दीपीप्रा भुजे तुहाले दोला" परीप्रां तरा बीरद
प्रगा पार" पाट रीरे कीघा पाट रीप्रा "वीगता हीर
बीरद वल" रुडा भुजां दीखारे रुलता" केहर रा कांठल
कल" चंद सेनैत कीप्रौ जस चावो" देख तुहालो लई
दुजे" पुरा सुरा तरा पवाड़ा" भारीनग रे पीप्रां
भुजे" गीत :— मीरा घर कांप्र गुरड मंगल काप्र मां
वांज की नाव जगीरां वीहार" ईतरा रुप रचे प्रीप्र
सीर" तुझ तरा झाला तरवार" वीखे घर वीहग प्रगन
गज वहतौ "मीरा दमरा कांप्र भीम गदा" पड़
मचतां पहलो पाट रीप्रा "सत्रां तरौ सीर वहै सदा
कह प्रह गील प्रगन क कजर" वाज किना प्रंद रै
वजर" चंद सेनैत तरौ खग पावै "इता रुप रचै वहै प्र
गीत :— राजा सवाई जे संघ माहे कहयो प्रासीप्रा नरु रै
गदा रुक उथाप ज्यां थाप जां रुक गढ" वजाड़ै प्री
प्रग जीत वाजा" प्रवीप्रौ भुजां पत साह जांरो ईला
साह दह रे तरौ भार राजा रीम उप्रर धरर गढ
कोट प्रौचं पाहै" कहै जारे कलह कमरा करीप्रौ"
वरा रौ पुरी प्रौ देख कुरम बीजड़" धरा रौ भार पत
धरीप्रौ" ईभ नमा मांन दई वांन राखरा प्रचाड़ै प्र
वकै प्रालम कलम कीरती वाह"

पद्म प्रन उतर दीसा" कांम दखै जठी वीदा कीधौ"
ताह रे भुजे ~~सिरस~~ सोरठार वीसनेस तरा "दौलो रै
धरणी धर भार दीधौ ॥ गीत:- साहीजादा प्ररज करै
राज सू" जोड़े कर सांभले जग" तां धापीआ जीके
हुआ धीर" उथपीआ सोग" प्रलग" पात तारा कहु
पुगा" वल जोड़े करबो वखत" तरवारी रगत पुजा
तासु" त देरै जां रै तखत" दुजा मान जगत ईम
दाखै "दौलो धंम ताहरौ डर" तरवारै रोड़ै कुरातानु"
साहीजादा जोड़ै सु कर" रुड़ प्रचड़ जे सीध रांम दे"
राखी जै साखी दोय्र राहु" साह होरै तौ ही ज साहीजादौ
साह करै दुजौ जे साह" गीत:- गागा हर गुरो
वड वडे गावो ॥ भालम वड मलीआं वड भूप "आखै
धरणी दांन खग प्रगभंग" रुप रांम राखै धर रुप"
लीखमी दास तणौ जस लोभी" खाग सु दन ब्रदलेरै
खरा" चड़ौ वड़ै लीधां चाय्र भाई" धरु प्रोपन
देखी प्रो धरा" कवी नीवाज दांन खग प्रगा कल सह
वातां देखीरै सीरै ॥ कलहर" जीत पढ़ाड़ै केवी "करत
जुग उपरां करै" गीत कांनजी साह माहे कह आसीआ नरु रै
तीजड़ ताकड़ी घड़ै धरी प्रगा घड़ा तोल जां" करै
नह कदे वापार काचौ ॥ वदै दोय्र राह प्रालम कलम
वीचाले ॥ साह रौ वाह वापार साचौ ॥ कट घट वीकट
खत लीखै सीर केवीआं" दुगम मुहगै करै भाव
देखै "हौड़ दुराग करै भरै डंड लकरा" लेरै खल मार
सार प्रोलखै" नवल रा कांन भांमी भुजा वडा नर"
साह कर माहरा जगत साधार धांरीरै धाल सत्र
भरै खत धरा धरा "कांगीरै आरगीआ वडौ वापार
कवत:- धाबलो आल सुसील प्रंग दोल हीडंती सेत दंत
वे सुली वधारा वदह बोलती" नाग हनेतै नड़रा
... पवीधी हेम पथ हीडरगी सती त्रीभुवर

तराा " जैत जतां दीधी गुरा जोड़ां " जोड़रा खलां
वि दोडरा जाद " अह रसरा सीरखी तीखी प्रत "
जम डसरा सीरखो जम दाढ " उमग अंरा दीधी राव
उमट " कीरत जै री जगत कहै " सुकव कमर सोहै
सोनहरी " वैरीयां चा च्यड़ मा‍ह वहै " ददा हूंरै दीधे
वड दावै " सोनहरी जस लेणरा सीपाल " सुकव कमर
बाधी प्रत सोहै " अमर हुई जुग जुग पुरी आल "
गीत माला खड़ग रा कह्या :— मुर रो कवे धांन मधान्ह
कुल मंडरा " सुहै उदल वेढरा सुबांस " चलरा मुरााल
चीत वैध चुत्र भुज " हाचल मयंद कमल हर हास
असमर हथा उदरो आरख " समरी जरा रैम राह
सन नै जयौ रात रै दैरा रायरा " वाच तल पदरी
प्र वदन " चैत पड़ कार मचंता चुराग " उपै सांगा
उत अडर " पग क्रीलाल उरप परमे पुर " सीघ जुगल
मुख सहस कर " चलरा सधीर अध्यास मचो हत "
कर गजां कर मुख क्रेलाल " गुर गैह लौत गाहै वा गज
दल " परहै सीघ समर पुंचाल " गीत :— ईम दुजी
भसु भासरा प्रीथ्रीरा " गज गत रुसरा तपति जगा
सा बल जा गह लौत न साम्है " सीघ वैहा गजल सांग
सु जाउ " कुंजर दमग फुराद केवा प्रत " नलवंन हथ
मेवाड़ नरेस " हाचल खड़ग पहटि कर हाकै " भैरा
हर गैत प्रघां दम बेस " २ " मै गल पांम नग जलरा
मार हथो " कुंभ कलु धर बल के वांरा " कर धाउनै
हर चंच खग कच रै " खर हथवै हांग सैल लखु
मारा " ३ " गीत :— रस लुबधी सरस हौली वीरा रस "
तहस नीहस रीरा करै त्रसीघ " मीत वाली कुजरा
मरोडै " दुजड़ तहील दौलत सीघ " आठ पैहर रहै उद
माढी सैम वाढो डरपै सगला " डाई बांध वाल जीम
डाकरा दुजड़ हीला ई भरै डला " दल सीराागर ईम
नमा इगर दावा मौहक्रम तरा दंताल " करडो डाव पहड़ीयो
वलहीरा " कुंअर तुम तरी करमाल " ---- व पारी मीर
रो ई नावां उबरा का सुमन मारे करा प्रर हट ईद
सु ईढ " नीत नीत नव लीधा अक्लल माहे कीरत कथा

तांको माहव मांन तरा जाते जुगेन जाय "तु माहव मह रारा दत सत भरीयो दारवीयो कहीया मां सारंग हरा मो मत सार वखारा "ब्रह्मा वीसन महेस सीस सुरज चर गीर जोतै रहसी मां नाव तरो घुमा हव प्र नरेस" माहव मांना वत तरा होइ न दुजा होय जे मांझ झांप भरतो ही गयरा न पौहचै काय ॥

दुहा:— असीया नरु रा कह्या रावत महासीय मांनावत रा दुहा पुरा सपुररा लीख्या वांचौ सुरो जीरी नजर सु राम राम वाचजो जी भवानी जी गीत:- वाजै खग झाट नीराट चड वल" सत्र सांफलै उडै प्रत सार "जोरावरी उतारे जोरो "जोरावरां भड़ां रो जोर ॥ कलमाती तती मोहकम को" घड़ रती मचीरे घमसांरा "मार सार उतारे उमट" मह मार कां भड़ां रो मांरा" दुहा हरो सही सो दुजड़े ॥ बहसे नीत उससै बरै" साबलां भड़ां सजा दया सारे" कलह कलह नीत फते करे" त्रबोलां तह तांह चड़ीया भड़ चीतोड़ सु अमरा दल राखरा अचड़ उधाररा वातांह" कल कल तां कुतां कहीया मांना वत कथन अचके रो जोम उगरो रुड़ा रजपुतांह" भड़ माहव मैमीत मांना उत मरदां मरद अमरा दल आगल हुओ जुड़ राखरा रीरा जीत" रे घर दल पातह वीढवा कज वीजु जले उससीया भड़ पुरमा कायर कुमला याह" अगट दलो ली पास अव चीती माती कलल उससीया माहव जोसा बल" झाले बांरमास" वचन सुरो वरीयाम आडो माहव आवीयो बंधव सुर तसीलो आं कल हस मारा कांम" जंग रावत सु रेह कहीया मांनावत कथन आपरा जय आड़ा फोरा दल रोका दुजड़े" सुरो साबल झाल आडो माहव आवीयो उभो मांनावत अनड़ पाले कुरां अरा पाल" बल पुरीयो बरैह मांरो परा भरीयो मद्दर कुअर ले आयो कुसल रावत रांम पुरैह" खड़ रांम पुरा हत बुदी दीस ल्याया कुअर पालेवा खल पाधरे क वलो झाले कत" बदी स बीरहेत प्रथ

तोन माहव मांन तरा जालम जस चड़ीग्रह" मह मेवाड़
घराह श्री दूदीग्रा जद उबरा तीरण दीन तां राखीग्रचड़
माहव मांन तराह" तीरा दीन डीगे ग्रनेक कुंग्रर पु
ईन उबरा तुत दर हीग्रौ माहवा रेंरा धारण रेंक"
रेंक माहव भैभीत दुजौ रावत गांगड़ौ तीजौ हर मर
उपरां चौथौ गढ़ ग्रग जीत" काग लीरण वाताह दट
कांरी वीसमी कही दल हुई हुकल वलल गढ़ गह मह
मातांह" रंक उससां ग्रपार रंक वह सांवल पुरी ग्रारे
कसे रीता कां ग्रमर रंक तोलां तरवार" ग्रां मुरव
लाल चग्रां छक्रां हीक मुरव कु दन कली रवीवी नगारां
गुठली हुई वीगत भड़ां" वांहीक कु कहीग्रां हक्रां हीक
कु वातां कहे सककजां ग्रर ग्रजां तणी वातां वीगत
चग्रांह" चरव मुरव कीधै चोलवल बल मुद्धां वालतौ
वरीग्रौ रावत माहवौ वीरत फौज वीरोल" इतरै
गढ़ ग्रांलौह कहीग्रा मांनावत कचन कुग्रर उतारां कुसल
पौलौ दल पालौह" सकतौ सुर ग्रनाज गुजीग्रौ रावत
गांगड़ौ ग्रमरा कुग्रर ग्रागलौ कलह समारण काज"
वल भरीग्रौ वरीग्राम कावलतौ वलतौ कुग्रर दीसै पीथल
दुसरौ संगा जीसौ संग्राम" कहीग्रा माहव रेंम कुग्रर जी
ग्रागल कचन मां उभां कुरा ग्रांगमे इसड़ौ गढ़ ग्रावेह
डकी माहव दुठ कहीग्रां कड़ कड़ता कचन पौहर कतौ
रौकां ग्रगर जौ जम होग्रौ ग्ररुठ" ठावा ठकरालां हरव
तालां राखौ ग्रचड के कुग्रर गढ़ उतरै क लीग्रां कीर
मालांह" सूरत सिंघ सीघाल बेल बंधव कुग्रर सुद्धल"
ग्रागल उभौ उससै दावौ मद्दर दंद्धाल" जागी जांमगी
ग्रीह कल लागी दीसै कहर भड़ दीसांलौ डंमरण की
मालां कसीग्रांह" कुग्रर ग्रमर कनौज" माहव मांगल जो
मद वहती चरीग्रा मोहर" पनग ग्रन वल पांखीग्रौ
डांखीग्रा नाहर तेम" ग्राग्र उतरै कनौज कुग्रर ईम
कहड़ावीग्रौ हल कर रावत गांगड़ा ग्रौढ़ड गज्रा ग्ररोज"
सारंग हरौ सीघाल सकजौ भड़ ग्रकत हरौ उससीग्रा
ग्रमरा पु दल बे रावत बीरदाल" माहव ग्रर सधीर

मेज्यारी भीख" साचै सकतौ सीह गुजीयै रावतगांजौ
यै आंगै अमरा सु दल उससतौ अराबीह" कुअर पु कर
जोड़ कहीआ मांनावत कथन तु ठकुर घर तादु री मेचा
कर दल मोड़" रुद्र जैहर रही तीह कुअर अमर कनौज
मां ईतरै उता मल हुई दल लगतौ कहीयह" मांना
वत औनाद तीसडौ भड़ केहर तणौ उससीआ अमरा
मौहर बे वेगार बराड़" माहव आ कसी ठकैहीआ मानावत
कथन दोय भड़ दोय सहु सांमी हर परबत फेरी पीठ"
के उससां अपार के नीहसां बहसां हसां चड़ी चड़ी
चां पर हुई दीसां वीसमी वार" सारंग हरौ जड़ाग जीसड़ौ
भड़ जसवंत हरौ" हल हुई खड़ीआ करक उसस अंबर
लाग" कीरण मुख तुटै तोअ कीरण मुख दीसै ~~लग तोअ~~
चौगरणा" है हलचल हुकल हुई दल दीसै लग तोय"
रीम हर देवा रेस ~~चाय~~ चाप रीआ चीतौ दस आवै
साबल चुराती उससतौ अमरेस" वर दीधौ लुध वेस
हर संकर कतल हरा दोय सोध सायक दोय सहस
माहे अमर महेस" रै आया चीतौड़ खारख चारवे
हांटीआ चावी मन सु चीत वे ठावा ठवी ठौड़" फौलां
तणा पड़ाव कागली रे लगता वहे उतरता पहलीआई
वाता घात वणाव" सुरौ साबल भाल माहव उसस
बौलीयै दोय भड़ दोय सहसां जीसा पाले करा अरा
पाल" र ढोल कोट हीसल मल माहव हुवौ मांनावत
मरदां मरद मुछालौ मन मोट" माहव मांगल जेम बीरद
घटा कीरत भुजा लाज लंगर पोगर खड़ग पैर समद
अदेह" आ पांण उब राव तद माहव तेड़ा बीआ पैहतेड़े
नं पुछीआ कीजै कीसड़ौ डाव" जुने परधाने हवल
प्रोहीत वड वागीआं आगे ही राखी अचड़ रुड़ी रजपुतेह"
कहीयै माहव रै मसल परगह वाढके सु...... म मेलीजे
ठकरां सांम धरम री नेम" बा ईब हीजै लीह कहीआ
ईमि माता कथन अचड़ करौ जीम उग रौ ईराजुग

जुग च्यरु करु अरवेला खेल ॥ वह परगह बल दाख
कहीआ रव ताले कथन माहव वेला तो जीसा रावत
कुअर राख " उतस अंबर लाग कहीआ मोनावत
कच पौ आप्रो अमरो कुअर भाई रो मारै भाग "
आगे माहव सीध भाई सुरत सी वना नाहरना परवर
पड़ीरो बवो अरड़ीग " मुरो तीजै भाग सुरौ साबल
रोलतौ कुभौ काय अर जन कली उभौ अंबर लाग "
आगे माहव सीध बेला सुरत सीध चव उससीआ अमारा
सुं दल धजवड़ झाले चीग ॥ पड़ीआ चौचै चौथै
जाम ब —— रड़ा हुता बहस कुअर खड़े कनौज दीस
वल भरीआ वरीआम " ता —— ह पड़ीआ ठकुराला
सज धां लाख फौज मौहरां मद वहता मसत आयौ
वल भरीआै —————— सीरस आगा
ही लग राज गढ रा —————— मरण सीरग
पड़ी आह जड़ी प्रलग सौ जौजनांह वघा ——
हणमत माहवी आह " पै दप क बंधरा आज बलवंत कोप
बीड़ौ गहौ माहव हणमंत सारखा उससीआ भड़ आज " पुरो
रवत चीत माहव जौनु हुतौ मौहर सकजा अर अकजा
तरणी पुजत नह परतीत " तुरानत तुड़ तारण माहव जो
न हुतौ मौहर मह उपर मांरी परणौ कुरण वदता कुल
आरत " उसस जत अथाह माहव जै न हुतौ मौहर काप्र
सुरा रकसा करता करम सराह " कुअर बीरदावेह माहव
न कोधौ मौहर " नाहर न परवर पड़ी मांगल मद आवेह
आगे बलती आग वल माहे गत मेलीआ माहवन मौहर
हुआै खत्र वट झाले खाग ॥ कल चालो गह कुत मुहाले
हुआै मौहर कुरण खांग झाले का वलै हीसल अमरा हुत
ते कुअर त सुत्पार माहव जौ नहतौ मने धीस उनौ रौव
सौ अलौ भुप गन झलत मार " माहव मुहालाह
कहीआ ईम अमरै ——— वत पारे भुजे वाजां वीर
रालाह " बीजे बोह ———— डीरो उससीआ अम

------ कर काट लगती लागे उपरली कुमर कृपा खेड़ीआ
बा ---- ट" कुमर कर मन कोप नाहर लीधां नाहरा"
कीर मर उद जांग्रौ करग डेरा की ग्राड भोक "सुरज उग
मतां हे हालरा सी हुई हलां खत्री रग ग्रस करखा बरै
खेड़ीग्रा खग वाहीद" हुबड़ दड़बड़ होग्र हुड़ खड़ खड
ग्रोड़रा कड़ां ग्रमरौ मौड़ी ग्रवीग्रौ पीपल जु पहलोग्र"
रावे पुरलीग्रौ रांरा वातां कोटां वाप रीग्रौ ग्रीग्रौ ग्रमरौ
कुमर मौड़ी दीग्रा मलांरा" पत भड़ उससते हुग्रो खत्र
मते रौ रा कीरगे ग्रौ ग्राघो ग्रमरौ कुमर मौहरां मद
वहे तेह" मौड़ी दे मौलांरा कहड़ाग्रौ ग्रमरै कुमर"
ते सोरखो वेला तवां माहव ग्रमली मारा" तले
कर तरवार मुधां वल वाले ग्रमर कुमर जी कहड़ावीग्रौ
भुज पारे भर भार" कुमर ईम कहीग्रौ हद खेग्रौ
दड़तां दुग्रा माहव नमो हरां हुग्रौ पच मुख पारख री---
--- कहीग्रौ माहव एम कथ सांभल ग्रमरां
------- गां नर नीकलंक नीगम" ग्रपनो घहे ------
------ कुमर माहव सु पांचां मीले कीपौ वा ------
------------ कहौ ग्रासीग्रा नरुरा
------ उ गुरो" माहव

दुहा :— सारदा ग्र र ------ चातो मातो ईसो"
मांनावत" चर मारे

रांरौ कुमर देहीग्रौ बाल चम्रल बांहा सुकोप
रांरौ रीसारौ मने हची वह तारी कलो ऊभो ग्रगाड़ा
लोप" दल कल ताकैं घात दावो देतर वा करे" ईतरै
कुमर ग्रगली ग्राई ईसड़ी वात" तद कुमर तड़ तांरा
परगह सारौ पुछीग्रौ कहौ हे पाका सु करां रीसारौ मन
रांरा" खेच वधे चीत खांत बे उपड़ी बराबरी कुमर
ही मन कौपीग्रौ भरके मंगल भांत" सांभल सुरत सीध
सकजा भड़ सा ग हरा ग्रागे ग्रागे रे हुग्रा थे चर
ग्राड़ा चौग" कागल लीवौ सीताब कहड़ावौ माहव सीरस
वेगा वेग पठावजो" वासक रुकज बाह" रावत वात
वीचार कहड़ाग्रौ कुमर सीरस ग्रागे हीमा हरे झालीग्रौ
सांम घरम रौ भार" रावत लीख पुर मारा कुमर पु
कहड़ावीग्रौ ग्रगे रैन हुई ईसां कुलो पीजे कांरा" तु

सारंग दे सुर तु रावत नेताजी सौ कहीयौ ईम अमरै
कुंअर पौह बद खाटण पुर" अमरा कुंअर अपाल
कहीयौ ईम सांमल कमध कहीयौ पांचां रौ करैं तौ
------------ बीजा प्रन मंध कुंअर पुह परी दीया
------------------------"

[illegible]
11.10.47.

— समाप्त —

गीत :—

—: आढ़ा किसना रा

श्री गणेशायनमः

श्री गुणेशायनमः अथ खेत्र पाल पाल गोरा जी रा बीठ मेहा जी रा कहीया गांम होपल रा वासी कुसल जी रा बेट। या छंद उपरै मेहाजी नै खेत्र पाल रुपया ५) नित देता नै सांभरा मेहा जी रा मुंढ आगै नाचता। गायो गोरा गुणो गहीर सांवल धीर सूरस समपं। खिच सह बावन बीर। खेलै भवण तोह खेलले॥१॥ छंद वथ माराज॥ भवांण तेह जाण गेह रूप देह रच्चये। सुरांस जेह मंन मेह पनगांप रच्चये। तपंत तेह सेह जेह रोह रोह गल्लये। गुणां गहीर सूर धीर खेत्र बीर खिल्लये॥२॥ ईला अकास मंड तास अम्र वास आंणये। उसास सास अधीयास जगी यास जांणये। जुरांन तास जंम पास ग्रम वास नल्लये गुणा गहीर सूर धीर खेत्र बीर खेल्लये॥२॥ कासी भुवाल कोट वाल रख पाल सेवये। विघा वचाल बाव काल उज्ज वाल मेवये। चोरंत चाल भूठ बाल बब राल बल्लये। गुणां गहीर॥३॥ रंगां डरेल चढ्ढ तेल मन मेल मोहियं डमंक भेल घुघ- रेल साथ खेल सोहिये सकती यांस मेल खेल हेल मेल हल्लये। गुणां गहीर सूर धीर॥४॥ पमीर हीर पट्ट चीर चंगीया सुचेलयै

जडाच खाग जुध जाग खलां खागये खदा खिसाग
सिव खसाग साचे याग सागये। पवंन याग
मन भाग चाग चाग चल्लये गुणा गहीर
सूर धीर खेत्र बीर खल्लये ॥६॥ नीरत्त नंम्म
नाच द्रुम्म धंम्म धम्म घेरये। डंरम्म क्रम्म
खंखि यंम्म द्रिम द्रिम द्रये। धूगी पयम नागरम्म
मुख पैन चल्लये। गुणा गहीर सूर धीर ॥७॥
पाये पट्ट पंख ऋट्ट वेद वट्ट वच्चये। पैसा
खघट्ट खावियट्ट नट्ट थट्ट नच्चये। दयंत दट्ट
धाय धर सूल सद्ध सल्लये॥ गुणां गहीर
सूर धीर खेत्र बीर खिल्लये ॥८॥ चुवा चंनन
बावे यंन (कावरी)। बास बन सुबन। चीरत
चंन सुधम न भखोयंन भोजनं। धूगी पयन
नागरंन मुख पेन चल्लये। गुणा गहीर सूर
धीर खेत्र बीर खिल्लये ॥९॥ करे तरे तड़ंग
रे सर वरेत सुम्मरे। वसंत हेत विभरे दसं
रेहे कंधरें। धरे धरे सुमंदरे पुरे पुरे
खपल्लये। गुणा गहीर सूर धीर खेत्र बीर।
मागक्ष दत्त चित्त व्रत वत सत्त वचन॥ क्रर
क्रत्त खार गत्त साव रत्त लोचन सिवा
सुतत्त जोग जत्त भांत्त गत्र भल्लये। गुणां
गहीर सूर धीर खेत्र बीर खिल्लये ॥११॥
डमक्क हेक्क डम रुड हक्क हेकड क्कये।
भठ कंपे मृदंग भेर धूगल्लो भट्ट क्कये ॥
टांम क्कये हेर हक्कये हेग हक्क पेस गल्लये
गुणा गहीर सूर धीर ~~बी~~ खेत्र बीर खिल्लये
बहोतरी कला बला वेनी टला उद्दद्द लोड पल्ल
गुणा गहीर सूर धीर खेत्र बीर खिल्लये ॥१
पिंपगरा भुपंग दत्त मदरा सुभगये। खनंगर
बिहयंग नांम स्रगरा सुचंगये (पीवा वालो अ
पत खमल दारु भांग इताप) नरान तुर
खवेब ~~बट्ट~~ टल्लये। गुणा गहीर सूर धीर खे
बीर खिल्लये ॥१४॥ कवित्त कल सरौ॥ कवित्त

कवित :- कलसरौ॥ कवित्त॥ खेतल बीर सधीर हीर तो खिव
हरे हर। ब्रहम रिखे सुर बदे। भेद बुदे
खिया भर। गुणा गंध्रफ गहीर। सेख रिख
जिख मिलै सुर। मुर भुवांण मोहरे। ग्यांन ध्रत
धरचैं गुर। सिंभु सुजाव थायौ सुबुध। सव
भेव गण राज सिंध। गौरा खिसन गरवा
गरू। वाचैं मैह वखाण खेध॥१५॥ खेत्र पाल-
जीरा छंद संपूरण लिखतुं आढा किसना लिख
यतुं सांदू लधो रामजी बिकानेर री धरती रा
गांम बीका सररा वाली समंत १८८९ रा काती बिद
भोमैं वाचै ज्यांसु जै श्री सीता रामजी री
बांचज्यो भामारा कलींग दांनजी बेठां लखावा
श्री उदेपुर मध्ये आढा किसना जी री हवेली
रा पोलरा दरी खांनै बेठां लखा॥- गीत:-
गीत:- माहाराजा सिव दांन स्यंघ जी भीम स्यंघोत नाहर
सुं भगडो करै नै कांम आया। जी भाव रो
गीत आढा किसना रो कहीयो। गीत सुपंखरौ
क्रोध भरीयौ लोयणां धखे जेरसौ आगरा रा
कुंड। गाला आहारीयो केई बेरसौ गयंद थौजो
देह न धारीयौ धेरसौ धायडे आस। महाराजा
वाका रीयौ अरेसो मयंद॥१॥ हैजमां पालीयो मद
जात रोला भंज हठी। रार गुला लीयो पंजा
धारतो सरूठ॥ सांम हो चालीयो आस मेघू
पैड धरे सूर॥ दका लीयो दो हथौ नौहथौ
वाघ दूठ॥२॥ जुधा धायो वाहरां धाहरां सीस
आयौ जांण। हाका केह हाकां डाका खेजायो
हमीर॥ सोर भरवो छात धाढ वात लायो
जठै सिरै॥ क्रोधंगो सांमहो आयो विरूतै
कहीर॥३॥ गौलो फुटे दुसा हरां जुडे यू नलुटे
वाघ॥ आच छूटे सिवा धूजा हरां जाग
भूक। सधे गज गाहरां संजरा धाग अब

पटैतां रावतां कथां अणायै प्रीत। सांमले जमीरां
हींदु थमीरां सराह सखे। सादुलां हमीरां वंस
देखाली सरीत॥५॥ बखांणे दीवांण भीम आदे सीयो
वलो बलां मिलै जोध उजला जिंका नूर सीमोत
साव धीर धनी पणा वाली करे लीक॥
आजी जाजी कीत पाय सीवो पगो ईस जीत॥

गीत:- दुजो महाराज सिव दान स्याधजी रा कुंवरी व्रज
कंवर बाई भटीयांणी जी मूलोली रा सती हुवा
राक पारस कांन रंग रस दोय जणा सतीयां
हुई। ज्यां रो गीत आढा किसना रो कहीयों॥गीत॥
समर सभे सादुल सरग गयौ सेवो सही॥
करी अदीयां पुरां खबर कासीद। याग यह
कर वलण काज जेसल पुरी दुकल असमेध
वाला कदम दीध॥१॥ आध हुण याग मंजन
करा आदेश उकरो समुख सिव चरण री अरु
तरण जाई जिके वंस सीध चढतैं सीध चौढ
परण आई जे के वंस॥२॥ पण पांणी ग्रहण खवा
सरा पणारी खिंडु खेण मणारी दिखाली बात
नगर बागोर रंग रस जणी नेहणी। उदै पुरै
गैरुणी करी अबीयात॥३॥ रंग दोयें धणा
माधव सुत नरांणीयां। जयै हुकरांणीयां धनौ
धन जाव। पीव संग व्रज कुंवर आग झीणाय
णीयां। एम भटीयांणीयां चहोडी आव॥४॥ दुहा:- एज
पूतां रज वार पैला भडिया परखजै। नीज पत
व्रता नीरार॥ पीव मरण जांणी पणै॥१॥ नेही
गेही नार बिहुवें रंग रस व्रज कंवर।
चसतां पावक चार एम सुहगा उजालीयौ॥२॥

कवित:- श्री सीता रामजी रो आढा किसना रो कहीयों:- श्री
यन कवित मैच्यों थोडो है॥ यसौ ज्यांरा हार
को सुख किसौ यसो होयज खिना पूछीयां
पारख है। अं आढो तरै सु भी आच्छे सुर ज्यौ
श्री सीता राम जी नै भजीयो है ज्यारा रो
सदु नांव है। ई कवित मैयौ थोडो है कवित॥

:-चर दुसाख रार गांम। थांम नव निध परोत
तन। मुहगा पर भूखणा गयंद खंमा पसं
वाला। सुणण राग रूपगां मांस जीमण मद
प्यालां। जय-जीत लाभ वाखांण जग। है
आणंद हमेस नै। पूछो पां खेना पौ पारखौ
वां भाजीयो पव चेसनै ॥१॥ कवीत श्री नारायण
जी रो पाढ किसना रौ कहीयौ। पत राठोड़ श्री रांम
कह राजी वेनै भावसुं जीम्या ॥ कवीत। सवरीह
र भीलड़ा ठाबोर। दाद गोपीयां[२] परांगी बिदरां
केलो[३] दोत। भारं[४] मीरा रजीग भौगी। तंदलै सदांमा
तणा। खीचं[५] कर मांय रखायौ। सागै दुपद गौरस्स
नंद दसरथ जसमंत जीमायौ। घण गौहे जनक
पंडवें[१०] घरां। कमला निज हाथां कीयौ सेवगां
घरे रघु पत वर सहु। जीमण रुच रुच जीमैयौ॥१॥

दुहा:- दीवांण श्री जवान सींघजी रा पाढ किसनारा कहीया
कीधां समधी कंध। रांणो पत साहा रहै ॥
हथ जोडै पत हींद। सुकवां हुंत जवानसी ॥१॥
उलट वहै सुर आपगा। नह उगै निरणाल ॥
जद हूं तजै जवानसी। पालां पत पा राणो ॥२॥
मंगायो जगां काजी सुकल कहाय ॥ दया
तजै रज पूत जद। चारणं या चर जाय ॥३॥

गीत:- दीवांण श्री जवान स्यंघ जी रो पाढ कसना रो
कहीयो गीत ॥ रांसण गज रीझ करण अल सरौ
मन पह नसरो धोल भगा वाजै ॥ दरस
दरस रीतौ वालो। जस रीच्छ सोबीया जग
सुबां मन दह कै ठाकर सुण। प्रत पह
कै सुद तार पणो सहकै रांण जवांन प्रथी
सर ग्रहकै वंबी जीत तणो ॥२॥ खग नंगी
तोड़ण दालद खल। चार पटे गीत रह घडै।
रेण भीम वाहे करगो। जंगी पती तणी कडै ॥३॥
पसाहो पग लगै अंगारा। चार उमंगा रर सुजन
घणे ॥ बोह माहां उर पड़ै नगारा। सुजस
नगारा हूंक सुणे ॥४॥ गीत:- दीवाण श्री जवांन

स्यंघ जोरो आढा किसना रौ कहीयौ ॥ गीत ॥ देव सुर
राज सिधां सिव देवत । मह मह दुज
राजा सिध भरै मांण । पार जात तर राजा
पर गर । राजां सरै जवांनौ रांण ॥१॥ सेनानी
दल पतां सरो हर । रथ रवीयां पारां गुर
राज । नाग सहस मुख गोरख नाथां । अच पत
सिध भीमांगो आज ॥२॥ तुरां सपत मुख ग्रह
नापत । तारा सीस मानस (मान सरोवर) सिध
ताल । नामां सिध हरि नांम मह निध । भूपां
परसी हर भूपाल ॥३॥ सरिता गंग मेर गिर सिस
दख पुसकर तीर्थ चर दांन । सवच पुरा राघव
अवतारां । ज्युं छत्र धारां रांण जवान ॥४॥ गीत
गीत:- रावत दूल्है स्यंघ जी रौ आढा किसना रौ कहीयौ
गीत सुदत करण अच छाहरा लाहरा लियण
जस । सांम ध्रम राहरा चेत सउजां । जंगानौ
ताहरा न्याय धूजौ भुजा । दूल्ह गज गाहरा
अजा दूजा ॥१॥ मरद कामा? दस सहस धरमां
मरा । सत्र अनम नांमरा जुध सिधाला । सांमरा
नेत मन मौर तौ चर सदा कांम रा औट
पाहाड़ काला ॥२॥ मन समंद अभ निमा केहरी
राड़ मम्क । झाड़ आद्ध हरी यंद झूमा । भीम
नंद धणी हिंदू तूम्क अरधै भलां । पतु रंगां
अणी कढ मयंद धूआ ॥३॥ लोयण ध्रम सांम
पर चर अलर लारै । लोह कुल वारौ
निकू लौयै । पांण तौ दूल्है कां चाल केहर
अजा अरजन पणौ । तुम्क थोयै ॥४॥ गीत:- दीवांण
जवांन स्यंघ जी रौ आढा किसना रौ कहीयौ:- दुहौ
दुहौ:- भीमाणौ अवतार भव । निज पिर रिव हिंदु सपांन
होयां फल समदर सदू । जोयां समुख जवांन
गीत:- मिस्त्र बेलीयो सांणोर ॥ गीत:- दालद्र दुख मिटै
धरै बोह आणंद । निपर कटै अघ वीघन ना
दीना नाथ जिसौ तौ दरसण । प्रथी नाथ सभ
नमा पता ॥१॥ संपत मिलै टलै विपदा सुज

आभय आचत जलै अमान। हर मुख दरस सर फल होयां। जोयां तो मुख रांण जवांन ॥२॥ कुबुध टलै तन सुबुध प्रकासे। वासै नव निध रीध ज्या वारी भीमाणी वर दायक भूपत। जग नायक सम हूंक जुहार ॥३॥ ईजत परा उदक अघ आवै। निज सुख पावै नुवै नुवै ॥ अठ सर तीरथ दरस अवतारां। है फल रांण सलाम हुवे ॥४॥ संमत १८८० रा सावण वद ५ रवेरे दन सीसोदा री कोटडी री चांनणी मध्यै वणायो कसन

गीतः- दीवांण श्री जवांन स्यंघ जी महल भीम निवासां तीरै रै रूप वार उपरै महल वणायो। नाम जल निवास महल जी री समो हरत समत् १८८१ भादवा विद दनेस मोहरत हुवो जी री गीत आढा किसना कह्यौ ॥ गीत ॥ सन मुख सामंद गीरंद वाग सुख। ऊपर पीछोला पय आप। विलसण सहल जवांन वणायो। नवौ महल उदीया पुर नाथ ॥१॥ पोत विहार राग मद पीवण अह नीस रित ग्रीखम आणंद ॥ सनमुख जाड निवास सर जीयो जल निवास अदभूत राजींद ॥२॥ उजल नीसा कुराबां अमले। उडः गोर दीआ उदमाद। सीचो भीम सुतन सुख करवा। दालद जग हरवा परसाद ॥३॥ ग्रीखम बरखा हीम रत गौखां निज पर गर कुल सुखी निरद। दुमल जवांन रहै। दीन दुलहै॥ आठुई पहर लहै आणंद ॥४॥ श्री गुरु गणपति इष्ट देवता न्योनमः कवित वस रुघां महाराणा श्री श्री श्री भीम स्यंघ जी रा आढा किसना रा कहीया

कवितः- दर्वै ॥ आज ईसवर आपमे आज दधीच विवन्नौ। आज मुवौ हर चंद। सुतल बल आज संपन्नौ। आज पडीयौ आज करन। वीकमो मुकत महल्ले भोज आज धर भंग। आज सत व्रत दीव हल्ले। वल लखो आज वसरा मीयो। मर जैहो पायो मरण। सुद तार सीम अरसी हरो। भीम आज पडीयौ भुपण ॥१॥ सत जुग भीम स चोर। भीम

कल जुग नह खाग भेटण। भीम सुकाली चंद भीम
खिव उणंत भेटण। खप हुड़ भीम खरेह। भीम खग
धेह महो दख। भीम खनार खभंग। खभण खित्री
वार खित्री सब। प्रत दीह वरन खर पालवा। जीहन
कारन जपीया। भीमेण मरण करे नहो। हैंनां नत
नह रहीया॥२॥ परखण भीम सुपात। भीम पालणो कुपात
रांण भीम रंजणो। निपट खग रूपगां निघातां। भड
सपा हामलां तलां भापतां तुरंगां। गांन मधुर
गंध्रवां। तांन खाचणां खलंगां। खिव काब सुभड
खस गायकां। गंज कास खच गंजणो। भग गयो
भीम खरसी हरै। रांण खडगा रंजणो॥३॥ खत मुहगा
खत्रां। जेम मुहगां जव हारां। वल मुहगी वड फरां।
तेम मुंहगो नर वारां। हेड खस सीधुरां। वसन
मुहगां बौह रंगां। हुनर वंध हुनरां। सुरां ववरची
सुढंगां। गंध्रबां ढाढीयां जांगड़ा। ताव फलो कोते
तलां। रिख वार भीम खीस रामीयो। खाध विधारणो
रेतलां॥४॥ सेल दुरां खंजरां खीरह कातरां झिलंमां
तेम राग चेल तरां। टोप दस गांन हिलमां। हद
मोजां हथलां। वाण भूपांण रुकाणां (भूपांण नां
करचो खडग बंदूक) वाखुड बंदूक। उड़ंग चौ खीच
केकांणां (पाखर च्यार तरैरी। रौद्र री १ सुरे गाय रा केस
२ सादी सल्यारी ३ लोह री पैरी ४) चौगणा मोल देख
रख चीत। भूप वसावण भल भलां रिख वार भीम
बिसरां मीयो। खाचव चावण रेत लांया। भीम सुदाब
सीम। भीम अपराध पचावण जास कज कोड करीस।
भीम निज सीस नमावण कह भीम कर नवो कम
भीम लाखो फलांणो। भीम सेवगरां प्रत पाल चवल
सोचाल चुरंचर बीग डैलां वेढणो। सुचेत मह रां
सुर भर। हेला हमीर हामीर हर। दत खव वध्या
भर दीया। सेवगां तणा भीमेण सम। कवै न कोई (दू
सुदीया॥५॥ उपज रेख उपरांत सुजल सेमां बोह
सीमां॥ रैत हार बाजार मइल घर तारक दोमा (गयं
घना सीगड़ खनै कजली खानुपां। मद वहतां

मद झरां। पर कह वदां हिम रूपां। रतिक लाल फूल कस त्रंब परा। परठ कपोलां ऊपरै॥ किव दियण यसा सासण करो। भीम पधारो भूप रै॥८॥ कुद्ध कवी पांणी केक॥ पनें कुरसांण धंधारी तिण ज धलो भीमडा। राड खर तणा हजारी। साजे परठ रतिक लाल। लूंब गज गाह लगाया। रजडा हुणा हिम रूप। परो कड़धो किव पायां। कस साज लूब ऊंबा कीया। भ्रगत राज उंफल मगां। भीलाला भीम पावो भिसु। वाला वन सरा वीदगां॥ ९॥ ग्रीसम रीत झल हलै। किरण झलै दिन कर। सर वर लघु जल सुखै। दुवै तरवर वन उंखर। वागां सुजल बिहारी परच पंनण कसमीरां। पगूरी पासवां। सुगंध कुम कुमै सरीरां। सारंग गान सोरठ श्रवण। सुधा पान ढुला सरै। भीमेण रांण पलीया भमर। सेवग तिण रत संभरै॥१०॥ भर सांमण पधो पांमथ घुमंड। जमी पण खंड वरस जल। मोरा कोइक मल्लार। तीज उच्छव वर तीजें। गहर हकाला गोर। प्रगर मद प्याला पीजे घरा दरस ढैल चरीया गुमर। कसतुरीया खडमा करै॥ भीमेण रांण पलीया भमर। सेवग तिण रत संभरै॥११॥ उत्तर पवन पसाच। पदम (कमल) वन सघन प्रजालै। हेर हेर गाइजे। कोकां पाखेर कीचालै भुगत्या किप भ्रग मदां। दाख मादक रे राजा तेल तूल रिव लाय। कीयांच समीप वसाजां पह निसह गांम गोरा उरज। रचण सुरां पत रूपरै भीमेण रांण पलीया भमर सेवग तिण रत संभरै॥१२॥ पख्व कुरम पारोज। गौड़ राठोड़ भीलालां। खग वाढ़ (पालूकां) खीचीय्यां ज्युं हेज रवेर हालां झालां। परमारां डमरां। पुरस हाडा चहुवाणां। गोहील मोहील गणा। लखां लीदूं दुर कांमा। बुंदीया समग पचाड़ा करण। पाडू पइर पदेह हडो। रिचपाला भीम ने कीयौ

98

बियौ जग दाता तीजो हुऔ ॥३॥ बौह कौ चट बेठणां
खुन समणा श्रत खारा। हाथ जोड़ बोलणा। सुखा
कहणा जोआरा। थांग मणा दुख थाय सुखी रखणा
कविराजां। सिर चर लग सम पणौ। सनर रहणा
जस काजां। सुतां जगाय जीमाडणा। मात पीता सम
मौहरै। वीदगां भीम भूर खिना। कुण पतरा दूंद
करै ॥१४॥ जे पतसाहां थगार। सुकर जोजेया नराणां
भीम दाब पागड़ा। कैवां चाढे कै काण॥ जीमौड़े
जीमणा॥ देण हाथां मद प्याला। तै मन्हवारां तणां
चाढ सीर लीयण। थह जीम सीरह अपरैं बिदु
तणा भूरा खिनां। कुण पतरा दूंदा करै ॥१५॥ अच रसी
आसीस। कहै रूपगां थढंगां निजर दुरासी तपण
वदन कर सूब बिरंगा। तोये सोह चर तणी। सुहै
किव जणां सुभासी। दान पान सर कान। सुणै
भूप जीम बिडरासी। वित होण हुवा दुख दुर भरस
वरस। दारू भड़ दरसावसी जीण दीह भीम हाथ
जगड़। याद सुपातां आवसी ॥१६॥ पोह लाखां प्रत पाल
लहर समपण विह लाखां। लाखां मुख जस लीयण
भूप समभण खट भाषा। किव भड़ लाखां करनै
करण चूखंला हमेसा। वागां वाध्या जेम। कलण
मद पीयण बिसेसां। हो कबा करण दालद हरण
सैका पालण जग सरा। भीमेण थाब नर भुपग
लोख दीयण लाखां हरा ॥१७॥ जगा हरो जस चनर
मुरां चरतो भीमा जाल सीरवां चनसा रंग। बी
नरन को अतुल वल। भीम ईंद्र वरसीयां। गपत
सोरो जग पावै। थन तर हर जोपीयां। निंरू बिसु
नीलावै। तै चवल हैको वांमी तरफ॥ सीसांदे स
दत सहत। धारतो भीम जस रप धुरै। बीजां सौ
सब सी बोहत॥१८॥ देह जीब दोय भाग। धपै
पुल रपत करारो। लग खीमांण पागड़ा। हुवै सु
पुरं अपसवारो। राज देस गज बाज। कोस दब नै
पीतां रे। मोह लजे मत लोह। वसुधा सुत लोक

ईन जस वास उवारणा। पुल मरण भीम निज पुतनै
चवो भलावण चारणां॥२०॥ सतीया ले सीसोद। भीम
सुर लोक सधाये। त्रदस कोड तेतीस। लीयां सनमुख
हीर आये। वल पोहपा कर व्रखा। देव दुंदुभी बजाये
गन्धव अपछर गाय। रीष चारण बिर दाये। कर
पकड़ मिले आदर करे। देव तखत बैसण दीयो।
श्री नाथ भीम सीसोद नैं। भलौ भलौ मुख भखीयो॥

दुहा:- वेल विलगी तर वरा। गिर वर नीलांणा।
आक भीम अल वेलीया रंग मैहलां राणा॥१॥
खागां बाक रखे खा। रागा मद अनुराग॥
आव भीम लागां उरस। वागां भूरा वाघ॥२॥
लड़ता अड़मा लीयण। लोभ कर कर लागता॥
बीनड़ तान रड़ता॥१॥ भाल हुं कर मागंता
काच रता ओपता। तेण चित खत तीलता।
बेटां लड़ बावलां तेम बकता बोलंता॥४॥ मोगता
चीज आभलण मिलण। उतार दीयण न आखीया।
सीसोद मरण नर सोचीयो है। अग अग पथ
रहीया॥३॥ खर दरसण मानणो। भीम सिंघ
राज परखण। हींदू मुसल माथ राण आदर कर
रखण। वरखा रत सम भीम भीम दुरभख
भड़ मंडण। वारा आलण भीम। भीम अदता रांखण
दे लाख कोड़ देदण दलद भेदण जस रस
भेवरो। दुधोयां कज मापा दीयण। राण रूप
जग देव रो॥४॥ भीम हेत उहेम। भीम जला
लग हांण। माहि बजा दावनो। भीम जखरो
आ ढाणी। भीम सोढो सुंम रौ। भीम हामू
अर सांरणा माह राण सुभावूं मोर मन॥
ओपम देसरां। देखीयौ न न्रप देख सां। सहजां
भीम नरेस रा॥५॥ भीम चनण बावलौ भीम
सौ वन सौ लंम्भो मुखा मालव भीम।
भीम तसीयां दध सम्भौ॥ नर परवीया परव
... पंखीया तरो वर। खलक खजांनो

पारस कहा। प्रगटन सर भर पागरो कुण दान वार
जोडै केरां। दूजो भीम दीवाण रो॥६॥ गीत॥ माहाराण
श्री श्री श्री भीम स्यंघ जी रा देव लोक पधारीयां पछ
ऱ्पासीया बांको दास जी रा छोटा भाई ऱ्पासीया कुंभ
रा कहीया॥ गीत॥ पूतां जेम पात पीखणा पारणां।
भवणो पाणां जामो भीत। पालग परन मीलै कद
पाछा। मेवाडो साचो मावीत॥१॥ छोरू जेम सुपातां
चाहे। मैंगल सांसण देतो माल। जांमी जको हमें
कद जुडसी। ऱ्पडसी रो भीमो ऱ्पब दाल॥२॥ नीपा
वरण नांगरू नांई (नागरू बालक रो नाम है। स्यंघ
पद्म चारतो में) मांगे रुकम लेवतां माम। दूजो
जगो गयो जद देखो। लाख प्रकार भगो हव लाड
बेटा चीत करो पह बीजा। चारण वरण करो कुण च
ऱ्पायां चाव करो कुण ऊतरो। राणै राव कीयो
जेण रीत॥४॥ जग मग नगां जडावां जग में। दी
नह देवाल दुवो। भीमां जल जाल पल भालो। वेह
जंन चोर लो वुवो॥५॥ गीत दूजो:- सीसोदै भीम ह
सुरजे। दत्त पातां सह पोक दीयां। मेर कुमेर
लंक गढ मोजां। करगां नह पण काज कीयां
सुमना (देवता) वास सुमेर सदाई। दीयां सुम
हुवै दुखी। सुमनां पाले पाल वासु करां। राणै मे
मजाद रखी॥१॥ ऱ्पलका पुरी लको चन ऱ्पाची
वारत वैडो एकन वेर॥ भीमै रेखवरो गाठ भंजर
कीधो नह दन ऱ्पोक कुमेर॥३॥ हाटै राम दांन
दीधो। कुलस भभीखण हूल हीयै। ऱ्पाढू उद
दो पोऊँ उपय। दत जेम भीमो उदक दियै
दो च्यां परब ऱ्पख लग दाबै। कुरब वडा कीध
काज। ऱ्परसो सुतन खजांनां उध्यम। मेवाडो पोहतो श्री
समंत १८८६ रा दुतो वैसाख वद १० सुक्रे दीव
श्री जवांण स्यंघ जी नीखल मगरै भेरू नाहर
जो रो गीत ऱ्पाढा कसना रो कहीयो॥ गीत॥ पा
भालुवां नैरतां जंगी धुरायो सारो उधायो। स
दिखायो जोस ऱ्पगा ताम राप। छाती जंत्र

वीरतां शूर मुखे दायो। मोहपो छहायो फते पायो प्रथी नाथ॥१॥ हीया काचां धाव रैन शूरम्मा चटे लहेस। देखे दावरै पावरैल भेजा गजा। साभीयो जवान ईसो बाव रैल सीह॥२॥ हाकां डाकां त्रबाकां गजां दीयो पहाड़ हाका। बांध पाका जोड़ै मवाड़ीयो सीधु बोल। धरा मेद पार खाव पछाड़ीयो घोड़ै थाड़ै ढाला मथो पाधाऊीयो सीसोद खडोल॥३॥ जोतां मड वेहरी हीदुवा नाथ जगा॥ दीयूं भूपां ऊपे हरी तीख खाग दांन पाधटतै केहरी तीसरै वार तावै पबै जोरा वार कीधी चोट लेहरी जवांन॥४॥

गीतः- दीवांण श्री जवान स्यंघ जी रो स्याढ़ा किसना रो कहीयो श्री दीवांण जवांन स्यंघ जी समत १८८८ रा प्रथम बैसाख सुद १२ सनैरे दन दूजो वखत लीखलो मगरै नार मारो जी भावरो गीत स्याढ़ा किसना रो कहीयो गीत॥ बाजे त्रबाला सबदां सीधू चारवड़ै सरोल वदं। भेड़ लोड़ा खद चीडु पालवै भटैत॥ दिवानाथ साखड़ै। बंदूक झला घालै दीह। पहाड़ लाखड़ै राणै साभीयो पटैल॥१॥ खारो गजो सांबरा वराहां मृगा उधरैल। दुरदा दाटणो हद रैल गीणे दीह। सैत्री धारां भुजा धार लारां मूंछ रैल खंचे। वारां दुजो दूध रैल दहायो खबीह॥२॥ जोमगो धवय हालो उराहू ऊंचायो जेत्र। पत सूंही फेरे षायो धवायो तोडो। सुजाव भीमेण रावण गीरायो सादुल॥३॥ पेखे तो खापै खपरा साप खोद कारां पड़ै। रमते सिकारां लाम राप बाब राड़। भामणा जेहरा हाथ धातं जवा नेस भूरा। प्रथी नाथ वार वारा नाहरां पहाड़॥४॥ दुहो:- श्री जवांन स्यंघ जी रो स्याढ़ा किसना रो कहीयो॥ जात गता गत सुधो वांचे तोई दुहो नो स्पर्थ जुदो त्रयो वाचे तोहे दुहो नो स्पर्थ जुदो दुहो॥ नरा हैप भूस रस गज वर सज करेह सुदान नया सजन दल हेत वधसे

नर-मनस ज्यानै हैप अचरज होवै है धारा दान
कौ ॥ हू भू कैला जमी सारस जल सेम्भा वाली आंस
दै है। और गज हाथी बर श्रेष्ट साज बाज समे
नो दान दै है। जोसु ध्रपी का नारा नै हैप अचरज
है है। और दान पाय कवेस्वर असी दै है। के है
सुण धारो नृप जे राजा सजन है ज्यां सुख
घणा हेत और दान वध्यो। और थु घणा जुग प्रत्यक्ष
अमर रहो राज करो औ तो सुधा दुहा रौ अर्थ है।
२५५ दुहा नै उलटो वांचै जदी दुहो दुजो होवै सो लखां
हां दुहो विलोम ॥ नवाज दासहेपत प्रसधावत बतहेतूदन
जसवाना नदासुहारेवज सरवजग। सरससूपे हैं रांन।।४॥ यो
उलटो पछ्या दुहो। ईको जुदो अर्थ। दीवाण जवान स्यघ
जी किसा क है दास जे चाकर ज्यानै नवा-जस
करे नै मोटा करै है पत वध्यारै है। वत दोलत धन
हेत करे नै दै है नै जस लै है जोसु जस पावै है। न
दास बदां मह वेद पुराणां मह ज्यूं। हरी विष्णु
कज। ब्रम्हा। कहो जो जल जल रो नाम है कमल
जो कमल सु जनम्यो ईसो भ्रम्हा। और सरव कहीजे
श्री महादेव सिव नाराण ए तीन देवता वेद पुराण नै
जगत मह अच्छा है ज्युं राजे सुरा मोटां मह
सरस अच्छक रांण है राणो जवान स्यघ है। औ दुजो
विलोम दुहारो अर्थ है कोई दन अ बखो
चरचा होवै जद वणा वणो घणा कामरो है कोठ
गीत:- कवित दीवाण श्री जवांन स्यघ जीरा समत १८८६
आषाढ़ किसना रा कहीया। तीखलै मगरै माहरा मइ नाम
नाहर मारयो जीना हर रै श्री हाथ सु श्री दुरबार
हाथां रै गोली लागी जो भाव रा बदुंक रो नांम जम
डकार है कवित:- पेच सीरिता सी कै श्रवण की तीरता
सी कैध्यो काल की सुतासी लुकमान हाथ को नीहै
कोयल नजर तैसी ईद के बजर ऐसी लाड़ुदै जज
जैसी रुदर समो नीहै। अतक डकार नांमे धरै
अरि अंत। अस रच्यव दिवान भुज चंडी रुप
चीनी है। (बंदुक रो नाम जम डकार है।) राव रै बंदु

रा सधूळ श्री जवान रा न नाहर प्रसंग बे को
जाहर प्रबीनो है ॥१॥ गीत थोस्रां भारवरा केनरा बीच
हेरीयो करौला स्रबे / करे धुंसा भड़ धाट पैरीयो
कुटेत ॥ चौतरफा स्राखा ताखा (तीखुलो) मगरो पहाड़
फेरीयो चमू / प्रथी नाथ जवा नेस घेरीयो //
पटेत ॥१॥ सारंगो उगायो चेत लगायो वराहा सोच
भगायो मदोला मांण केवारा मयंद / खुल गायो
लगर लजो हापला चाटतो ध्यायो / मेवाड़े स्रपोड़
रेहो जगायो मयंद ॥२॥ कोप ध्यायो डाला मधो
नोहधो स्रभायो काचां / चलायो होफरां करे कोपणां
चलूल ॥ बोलीया कौल ध्यायो स्रायो हाक जोण
बेला / सोर भरवो दुला रांण ढहायो सादूल ॥३॥
बजोड़ तबलां तासां हलां कोप्प महा बली/बानैत
सांभली गला जोध्यांण स्राबर / खेल खैत्रो पणा
काली घोड़े घाडे देखाड़ीयो सेर ॥४॥ खोरां पबे
कोडां मंचे भलके रावतां लाग / अंचो भवा वाग
खंचे गेणाढ स्रदीत / सुजाव भीमेण नेकुं मृणारी
दिखाई साची / सोसो दीया स्राव चीर पणारो सरीत ॥५॥
सिकारा गपारा सुरंगो स्रोढ़ के दलेस सूला धरा
फेले कीरत्ती स्रमापा रा सधीर सादूलो मारणा
पाप स्रपारा जवानो लीध / कायो कायरा स्रजान
बाहु बीर ॥६॥ <u>दुहा</u>:- रांणा हिंदु सपान रेंवं बीर
जवान स्रबीह पत सारा दहला पड़े सहलो
मारे सीह ॥१॥ थाट स्रूप जवान रेपर सज धांसा
हर साथ / नाहर मारण नाग स्राह बिसूध्या जाहर
बात ॥२॥ <u>गीत</u>:- दीवाण श्री श्री श्री जवान स्यंघ जी
समत १८८६ रा असाढ़ वीद ३ बुधरे दीन तीखले
मगरे दुजी बेला नाहर ~~मारो~~ मारयो श्री हाथा
सु गोली लगाई बडो नाहर थो / जीण स्रोता रो
गीत:- गीत स्राढा किसना रो कहीयो गीत ॥ बंका
तेरखा कटार दछान वदारां सर बोल /
मयंद गाज तास दांमेर सा मयांण / हाथलांण

ऐसा भयंदा होदु मारण ॥१॥ दुला जन्न सुना सौर
चौख मै करता नद्दी । वज्र नखानो खमै रपदु ता
तीख वांन । साबूत रोख मै भीम वालो नसा दीहा
ईसा । जीख मै विरता सीहा दीवाण जवान ॥२॥
घासा हरा खेरोलै रपपाड़ रांहा पला पाव । रपौपण
पाहरा जगा तौलै रपासमाण । दोह चौलै जाहरा
रपखाड़े । तौड़ा भोड़े तुहो राण ॥३॥ करौला दुवता सपू
तूप वध्धा चाहे क्रोध । लखै भाण गहे रपां त्रो
कद्दा लोढ । जौत नामी जड़े रपौण सेसद रपाड़े
जौस । सौर भरवो साहे गाहे परेत सीसोद ॥४॥
तै खसीसै यंद (यद) चंद (चन्द्रमा) संबरा (रपाक
मै रपासोस दे) जीनाया (इंद्र को हाथो ने चन्द्रमा
हिरण जवाया) दुरां रपचंग रांपा याहे मंगरा
जावा ईस (रयाव मारया जीदु सीव पारबती रपए
होय नंद के रवर पच्या दे रपभै तंबरा (तंबाग
उनै रपभै दान दीयो) राण रपाडंबरा राज्या छ
दिया वाघंबरा संबरा दिगंबरा वरीस ॥५॥ गीत दु
गीतः- रपाढ़ा किसना रो कहीयो गीत । पौचे ऊचास रपदीत
यद चंद रै उध्दार पावै । मनां काम दुव्या पा
दुलासा हमेस । जवांना जदंना उंका रोडीयां सक
जावै । मनावै सकलो हाथां जोडीया नरेस ॥१॥ द
वाग भाग माघ वांण सौत भांग रंजै । उरा दुल
संजै देवगो रपपार । वाघां खेर चढै रसेघा रांग
छतीस वंसै चून माय रपदजा प्रसंसै जरा च
मौत रहे सुरेंद्र जामणो नाप सुखो मनां । विद
चांण तणो तंबा रपानंदै रवेसेस । रवेन कोट
दू सकारां काज जारां चढै । भांमणो पै करै
नामणो भवेस ॥३॥ इसा कौत केणरा बिड़जा
औधा हरे । रपभै रवेनैग वाहरा दैणरा रपनूप सा
रेणरा देव राजा सारा हरा रपरखै । भीमेण
नाहरां पछाड़ चाड़ा रूप ॥४॥ गीत दीवाण श्री जव
रयाद जी रो रपाढ़ा रवेसना रो कहीयो गीतः-
सूर रेण रोसे चातस रो हमीर हाथे । कीरती

रो सोरख जेणरो रहीम। जांमा दांमा गांमां गजा
खरांमां देणरी मोजां ॥ भीमेण रो जवांनो सवाई
बाजी भीम॥१॥ दांनरो करंन मेघा निधान रो ऊंच
दिलां। किलंमां भांन रोजगां खगां गुडा केस।
पिता गादी हीदु साजै राजै खिहान रैं पाल।
दुजो धरो सीध हींदु पांन रो दनेस॥२॥ खुर
सालंम रो वेण करां माध वांणौ साजै। केर
वारस त्रांणी सेन उभरो नरेंद। धारंभ रौ रांम
तपै सीसोद धरांणौ थोंप। स्याम स्यम रौ उपासी रांणौ
हा दुलो समंद॥३॥ तीर ठांण धांणीयां रुबाण ठाण
दुंता तिका॥ सुपातां हाणीयां रौर प्रथमी साधार।
जवांना विरद पार मुंधा रो तारीया जैतौ सफल
धार राहा का जांणीया संसार॥४॥ गीत दीवांण श्री
जवांन स्यंघ जी रो आसीया बुधजी भांडीया वासरा रो
कहीयो गीत:- करैं मौज दरीयांव जोम भांज पातां
दुरंद। सिरैं खन राईयां दीह साजा। उधरै
चाचर सदा चित उजले। रांण री तेरे नह
कोय राजा॥१॥ पौत रौ धड़ोरौ सिरौ मण प्रथी हूं।
करैं दब झडी रौ मेह करतें। भुणे पाणां अपरां
दांन रो धड़ीरौ। वेल दध चंद्री रौ रूप वरतें॥२॥
खपदावी साल खब हाल धर ढाल खौ। रिमां
उथाल बुद भाल रहयौ। माल गज हाल
सुख पाल दे मागणां। बडा दुख पाल चित
चाल वाहणो॥३॥ भांण हीदु वाण रो पांण सुत
भांण भत। खेहद वाखांण रसणांय वरणो। मौज
मोहे राण धण जांण दुनियांण मैं। कितो दीवांण
खचड़ांण करणो॥४॥ वंस खज वाल लेवाल जस
वीलालो दांन देवाल किरणा लहावे। उजलै
भाले जग पाल धर अपनो। धारणां पाल
भूपाल धावै॥५॥ वार नह नासतो धरा सिर
वायरै। धरा सिर खासती खलां धूमौ॥ (खलां
धूमो रो अरथ दुसमणां रैं माथै भौ डर है)

जवानो सीध उभो ॥६॥ गीत दीवांण श्री जवान स्यंघ जे
रो आढ़ा किसना रो कहीयो। गीत ॥ वाजा भायतां चल
राखै राखै भड़ा तेग वाहां महो कीत कप
राखै ~~भम~~ हींदु वाण मौड़। पातो रौर श्री हपू
भांजणो राखै बीजो पतो। राखै आरौ जवान
चक्र पांसु अरोड़ ॥१॥ रीझ वार गुणा हेला हमीर
सुभावो राखै। पावो राखै रबिरदां सब दे
खगां पांण। रैणां रचेतु चक्रां पावो हींदुवा
धरम्म राखै। दले सुरां डुलां राखै भाव। मीर
हुं अनमी रा खैल पैटो अमीर। छत्री आरतीक दौर
कमी रासू देरौ राखै। हमीरां सू वेरौ राखै विजा
हमीर ॥३॥ रखा रचेहं दसा चीत लाटबो अरीड़ो रा
राखै आड़ो गौड़ी पात साहा डुला रांण ॥ ४॥ गी
गीत:- साहिपुरा रा राजा श्री माधो स्यंघ जी रो आढ़ा कि
रो कहीयो दुहो ॥ मच्या आवतो मोसरां। जस चौसरां
सजोर। तुं हीज धरै अमरेस तण। रह पण सात्र
वरौर ॥१॥ गीत गाथां कीरती सांभलै मौज तुरंग
सां सणा गजां नीयणां वरीस आपा अमरेस नंद
चायडै भरापा खलां वाढ़णो आवलो चमूं। साहि
पुरा नाथ हाथां रो डुलो समंद ॥१॥ खर अनी
हुंत राजा धिराज समेला खड़ै उजेला हमीर वर
रवीरदां असेस। वागां झाट सार री अमेला सं
थाट वाढै। बेला आचार री हेलो स्यंघ माध वेर
कलू हनो जरो भांण नंद भू प्रसंसी कथां। सब
थौज रोजांण चाहसी हुलास रु कडा आरांण
फौज रो बिघांसी रैमां रांण वंसी आहसी मौज
पयौ रास ॥३॥ जंगां ढाल रांण रै उमेद सीध
ज्युंहो। सपूत बिरदां लेण रवैना दास दूवैत
तसां स्यंघ आगाच्या मेटणा रौर बाच्या तोनै
जोधां माथा रच्या नाथ राखै रचेर जीव ॥४॥
गीत:- दीवांण श्री जवान स्यंघ जी रो आढ़ा किसना रो क
सामत १८८४ रो कह्यो गीत। सरस वधै हींदु वा

भीम दीवाण रै तखत राजै भलो। जवांनो उगता भाण
जेहो ॥१॥ हेम गिर गंज गजिम गलै खसहां हसम।
पूजत तप सार सम तेज पूरौ। खरस
हर विनादी रांम गाढो खड़र। भल हलै
दिवाकर रूप भरो ॥२॥ खाच पग नयण रूप दिपे
तस कर खलुक। पदम जस कर सघण
हुलस परखा प्रकासै मेट तम उदै गिर
उदै पुर। सीस वद जेह खादीत सरखो ॥३॥ गालम
खसह खुर सांण पाला गिरां। मोद कवियांण
लारिज समाजो। जवांनो हिंदुवा भांण तप भांण
जिम। राण पित तखत जुग कोड़ राजौ ॥४॥

दुहा:- सांसण गज लाखां सुदव। दीपण सुपाता दांन॥
तू प्रतपै प्रतपे जग पत तखतै। जगपत रूप जवान॥१॥
सेखत भीम प्रतवे तेहू। निज धनरव नरीस॥
खदता खिलात उपड़ै। कांनां लगै कसीस॥२॥
हूं हीज दीयै भीमेण तण। खपहड़ खेत उनमांन।
पित जैही सुद तायणै जस रथ धुरी जवांन॥३॥
तू हीज धरै भीमेण तण। राणहैकण रीझ॥
कवीयांण खमरो करण। पुर्गी जग पत तीज॥४॥
सामंद उभले जवान सौ। सुख करणा सुभियांण॥
दालद दुख हणा दुझल। परख हुआ उधांण॥५॥
गीत:- चंगौ खेगा करवां
रांण जवानां राणला ॥५॥ चंगौ पाद। गुणां खीचा
भरौ दसौरै दहू पंगौ पादै। गुणां खीचा
भरौ हंगौ जसौ सैग वांन। रूप हीदू धान
रो अपसी वांन ॥१॥ खारै कलू वार लेस लगारै
न धारै खत्री सारै भूबे हारै कीत हकारै
खसंक मागणा। खपारै तारै दुसारै कुरंद मारै।
धारै रीझ वालौ भूरौ रंकारै धनरव ॥२॥ विरदां
धरो जरो हरो (वपंजा चीज रे दै) लीखचे तेग
पारस। हीदुवांण फौज रै दिनेस सोचै हाक।
लाखां नोगां दीयंतो भोजरै रूप लेचै नपी।
पांयां भीमेण रै खेचै भोजरै पनाक ॥३॥ हांमू
जगा दुसरा खसंका चीज चंका होतां। हिंदला

तो कनंका पबैल्ले कालचू दैण। बंका दांन थांनको टंका
तै जवांनण बांधो। बार सेंका उबरै हजार टंका बेण ॥४॥
गीत:- दीवाण श्री जवान स्यघ जी रौ थाढ़ा कीसना रौ कह्यौ
समंत १८८४ रा असाढ़ सुद ८ दनै श्री दुरबार त्रंबेसर
जीरै मगरै सकार पधारया नाहरो एक मारो नाहर
एक मारयो जी भावरो गीत। च्यरै अनड़ा धाहरा औसर
लोथा जूथ थासा हुता। वाहरा कैरो लाहा काचां
हुतां बकार। जहरां ठहरां मूल जाहरां त्रंबाटा हैरा
सीसौद जवांन एमै नाहरा सीकार ॥१॥ हवाई बंदूका
रा ~~सैघु~~ सींधुवां सवाई हुकां। सोर तेग पलका अमार
हैस कांम सुणे वीरता ई तो दहल्ला पडे। पात
साई सादुलां सहल्लां सकै बिजाई समाम ॥२॥
केतां पेरै करोलां अम्भाड़ा बीच हेरै केतां धटा
बीच चेरै केतां फेरै भड़ थाट। केवरां कटारां
धुरां सीसांणी वखेरै केतां। फेरै केतां नौहथां
श्री हथां खाग झाट ॥३॥ सीमाड़ा बराड़ा पड़े। साबेर
बिखंमा सुणे। रोखंगी अखाड़ा जीत वदै उभै राह
बघाड़ा जवांन सींघ भीम वाला बाब राड़ा ॥
पटै तां पछाड़ा थाड़ा हीदू पात साह ॥४॥
गीत:- दीवांण श्री जवांन सींघ जी रो आढ़ा कीसना रौ कह्यौ
समंत १८८४ रा भादवा सुद ४ सने। जीत वाला अवि
छतीस रांनां उजाला उड़ा चाह। ईरां केरे
माला झाड़ थवांना अथाघा खाग दांना दवांना
उजाला उभा हरैं परवां। वाहरे जवांना भीम
वाला भूरा वाघ ॥१॥ जागणा पराई धरी नाबाटरां
बगां झाट। चाहो कीत अनाटरा बाटणा चमीर
रांम चंद्र पाटरा मुदाई थाड़ लागै राणा। हीदुवा
पाटरा भाभो बीजोई हमीर ॥२॥ दो कावा जको कासा
होवैं जामो कवंदा देण। तैमां पोका चोका दलो
थीलोका आरंभ अंबौना नीर बिरदां चहोड़ भुजां तोल
खग। खुमांण दलेरा रौका मोका जैत खंभ ॥३॥
पोखां भौजे जवांना सुपाता तौर पाला वाला। जाड़ा
ताला वाला माला हुवा थथै जीत ॥४॥ जीत

गीत:- गीत दीवाण श्री जवांन स्यंघ जी रो आढ़ा किसना
रो कहीयो । गीत । तसां सामंद सरूप पात जादां
भंज तोटा वाला । धंसी भुगंग दोय वाला
मातेस अभंग । थरां सैन दोटा वाला भाराथ
अभंग । छवा भीम जवानेस पटैत छकैटा वाला ।
रांणे राव अबीढ़ा संगौरा वाला रंग ॥१॥ लखां देण
चंगी पंगो काजरा विरदं लोभी । धमको परख
भडांबा जरा अथाह । गुनो चाल जमी चखां
सामा जरा बीजा जगा । परवां थाँप कुनी चखां
काजरा प्रवाह ॥२॥ सुपालां जसंम्मा भेद पालणा
कुसंम्मां सम्मा । गाढे राव विसंम्माह हसंम्मां मेढ़
गज । जांणै दथूं दसंम्मां रसंम्मां तेज धार
जेतै । गासैल चसंम्मा खैत्री धार वाला गज ॥३॥
सीता नाथ गाथ कीत आखरां रजण सदा ।
भडा साथ कै जमां पाखरां दुरा भेस । प्रत
पैसार वरां भौड़ जवाना मजे जायाथ । नेजा
बंध हींदू नाथ भाखरा नरेस ॥४॥ गीत वारी
ख्यारी कुल देवी पीठ उरी आढ़ा किसना रो
कहीयो गीत बारह आदीत तेज मुख बरसे ।
जेण कीत जग जांणो । चौढ़ घनो सुपालं
पालण । महा सगत ब्रहमांणी ॥१॥ धन अज विगन
नय वितर धारण । क्रम अथद धन कहावै ॥ ते
सेवै निस दिन जन त्यांनं विघन अनेक विलावै ॥२॥
वाग देवता रूप विराजत । प्रत मुख जगत प्रसंसा
भुज तो वारी वंस आसरै हंस क्रमण भुज हंसा ॥३॥
(मन सुध साजा रखण) माफ करण तन सोर
जमाया । पादो कीयां पालो । मोटरां भड़ सेवग
चै मांढो । वड़ वर सावन वाली ॥४॥ गीत दीवाण
श्री जवांन स्यंघ जी रौ आढ़ा किसना रौ कहीयौ
गीत:- कंधांबा कड़ै धनं खांजै हाटां कड़ै कायजा
... सांवड़ै भांफा भाकड़ै सभाव ।

२०बंद

साचा झाला मौडांसा भरतां झाला। अौपै वेना
सूंड रैम दाला ढाला अंग। वाज रेहा उतरै तौ
करां रोम्क भीम वाला। मदेवां क्याला खेरै चौवं
दंगा ॥२॥ सास नाका वंस लोदु पाखा पूठ पाका सोह
पाका सिग्र चला काला गड़ै माका पीव। सदा काग
खैंग रांगै दोच्या लूंब झूबा कोच्या तारवा लड़ै
सूवा सीस पड़ै पौडां ठहाका सदीव ॥३॥ होगां
वाला सुरारी अतोल अौक लतां छाहा। सारवतां
तपारी हेम रुया रीस्न काज। छत्र धारी विलास
जवांना जगा जेम छाजौ। राजो देण हजारी
हजार साला राज ॥४॥ गीत दीवांण श्री जवांन स्यंघ
समत् १८८५ रा प्रथम असाढ़ वद ८ रा लगना
आढ़ा किसना रा बेटा कुंवर महेस दास रो व्याव हुवै
जद श्री दरबार जवांन स्यंघ जी किसना रै हवेली
हुतै पधारया। गोठ जीम्यां नजर नोच्या वर कीया
घोडो सरपावै रारया नै पछै रुतै रा रुपीया
साढा तीन हजार पीलोडो नै श्री हाथां री पुंचां
प्रसादी कयो रोजा री रुपीया १००१ री किसना नै
बगसे पधारया। जो सोहा रा श्री दरबार रा गीत
किसना रो कह्यो गीत। सिख धरम उजाल हुए सबमा
जगदुता दीवांण जवांन। पाता धर पावल ले पीला
मात पिता अायौ मिम्क मांन ॥१॥ मे स्तारो खीमाड़
मेडतां नव नेच्य बगस पाढ़ कल नीत किस
तौं भूपडै वेल कुल हुवौ पामणो हुवो हमीर ॥२॥
जव सन मूलै नोछावर। प्रगट गोठ जीमे सुख
पाय। भीमांणो आपांण मांणव आय सरन लीया
अपनाय ॥३॥ पातां चार नवीयौ पधार। बल चौ
भुज विरद विसेस कीयो जीतै अम नेमा
कुंभा। सुकव कुटव गोर भर सुरेस ॥४॥ गीत
गीत:- राव सुरताण रा आढ़ा दुरसा रो कहीयो गीत
सुरताण कीयो खुमांण सवा हणो। सुजस अपरा ह
हुत सवाय। राव सुरताण राय सींघ राखीयो
राणो ईसरण राखीयो राव ॥१॥ ऊपर माल अमर

उलटीयौ। हैवैं दल भेला हुवण। पण सरणैं गांगा उगरीया। सांगाई उगरीया सरण॥२॥ डवारवा वातणो राव खाबू। हर जौन करत लखा हर घर घर होत गंगेव तणो घर। घर घर होत हमीर घर॥३॥ बिहु साहिबो पगां रखी बिहुं वालो धरा बिधुरा वांक। सबलां खनड़ा बिहुं तणौं। सिर खाबू खनड़ तुहालो खांक॥४॥

गीत:- सीरोही रा डस राव देवड़ा मेरा रो गांम मां चालरा चण री कवो सीरोही रा चारण रो कहीयो। मांचाल ऊपरै रांण जीरी फौज गई जद को सीरोही राव उमेद सिंघ जी री वखत रो गीत। पोमा वाव (गांम) चै वन्चै पुराड़ा (गांम) पड़ीया री पाधरी पलो मांनो जो कहीयो मेवाड़ री मांचा लेजा जीयो मतो। (गांम पोया वो रांणा वतारो नौ गांम पुराड़ा बामणोरा गोढ़ वाड़री सांडेरा सुकोस पाचन पर झगड़ो हुवो झाड़ पहाड़ी समाड़ी झंगी। धार कलण पर भार थयां भड मर सौल सकर भाजेसो गोढ वाड़ा मांचाल गया॥२॥ गढ वानू कहीयो गोढ वाड़ा। करतां बिहुंई काम कया खागल गया लो मरण उपजै। पाछां उतरै पर॥३॥ कोठे फरोदै हाड़ा काठो। बात तंतरो एह बिचार। खागल वावदेवड़ा ऊभा। वैरी दूत रज्य वांसै दरबार॥४॥ गीत

गीत:- नीबज रावणो जगत सींघ जी रो गीत। राबड़ीया दुध पडुंदो रोटी। भुग तीता कर मीठी। दैरनड़ लै नित की दीवाली। नीबज बीनान दीठी॥१॥ करै गरठ दुजी कोरडीय्या। पाव घरत नै जगा पचास। भुप खनोप तणो भुजाई। मातो गोठ बाहेमास॥२॥ सीरा चावल मांस सोहिला। दारु नै बंधीया दही। खण दुरबार परबै सब रा रै। नत दीवालो करै नही॥३॥ साख तणो सुरज सगतावत। यारी रीत खमामी। ठाकुर नांमी खवर ठकांणा नीबज राजा नांमी॥४॥ गीत कुंपावत सादूल सींघ ठाकुर रो खाट दुरसा जी रो कहीयो कंवालो यारा

गीत:- संग साथ बेहा धल सेल साहियां मच्च कर
कहर तणैं कन मूल। सबरो घणां वचै साखैलो
सवरै थोल कीयो सादूल ॥१॥ मंडोवरा मोहूर मेवाडां
भालै उद जोया भाराथ ठग नामी वच घण ठाकुरैं
नजर परखीयो दसमो नाथ ॥२॥ आलण हरै अपरवा
घर औपम। सेल सबल दल साख संसार। जोधपुरै
साचो जोगे सर हेरीयौ संभु कीयौ उणे हार ॥३॥ नरसी
घोत मले गिर नंदण (नंद गिर आबु जी रो नाम है)
धार पहाड़ धरे खित्र धोड़। धर खायक साचै धूतारै
राखस सिंध्य दलीयौ राठौड़ ॥४॥ गीत श्री श्री श्री १०८ श्री
एकल्यंग जी माहाराज रो आढा किसना रो कहीयौ

गीत:- नागर आनंदा अखाड़ो जूथ आसु राजे नाड़ नाल
चुगांग लेवाड नाला प्रवाडा सचीज ॥१॥ कठे हार फणी
मणी धार सूलतो कंकरा। औपै निसा धणी भाल
गलौका उधार। धरा धौका खैभाड़ राखणा दासां
पांणी अणी। धणी भू साहसां हसां मौका जया धार ॥
नाथ वैण अमसा सुरार (सुरार नाम इंद्र को है) धू
औयणां नांमी) रौलां काट खेमुखा हरां मा दिल खेस
सुखा रूप धार जैस कांमी कांमी औड़ सेवा। मेद
धार स्वामी भांमी चौमुखा महेस ॥३॥ राण जवानेस
रा सदा सिहाय सिध्यां राज॥ आसवार वाह नंद केस
असंक) चत्र कोट देसरा राजेस किसनेस चवै। जयौ
धारी सेस रा गुणे सरा जनेक ॥४॥ नीसाणी रांणी जी
बीकानेरी जी देवल चरणायौ जद किसनै आढै कही

नीसांणी:- श्री गणपत कासी सुमत विबुधां अगवांणी/ रु
वंती भीमेण रो गाड माहा राणी। जैकुल रीड मल
जोध ~~भीमेण रो गाड माहा राणी~~ २ वीक ३ लूणा कर्न
जाणो जैतसि कलो ६ न्रप राय स्यंघ ७ कन भोज क
पुर ८ करंन ९ अनोप स्यंघ १० अणदेस ११ बखाणी
अणद तणो गज स्यंघ सुत १२ जग कीरत जांणी लघु
बंध्यव सुरतांण सीध जलाल गहांणी। सुभट अरवो
सुत जौण रै पर हप अपाणी ॥२॥ चंदम कुंवर तीजी
धीया पदमा आइ नाणी सो परणी दीवांण भीम

सुरज हींदु वाणी । रूप सील पतव्रत जुग तईल
कीत रहांणी । जांणे राघव जानुकी पर-गट गह
पांणी ॥३॥ दिना सुहागण रुकमणी वंसी धार आंणी
जेण पतिव्रत ~~सुहागण~~ जनम हूं सामीयो सपाणी
करी सुहागण भीम रांण मन हरख प्रमांणी । जेण
कीयौ अनकूले विध हाखेण अरसांणी ॥४॥ सु आधीन
पति कां हुई सुकीया सर सांणी । कंत हुकम अर
धर प्रसाद आरंभ करंणी । अठारह चोरासीयो
सांवण सुध आणी । तिथ पंच दस मिंदुवार सद
परणाय प्रमांणी ॥५॥ उण दिन बीत उधम्मीयो
जग कीरत जांणी । दरबा भड. कुरबो उरड़ मोहता
रूपांणी । असा हाथी गहण अपार तीर पाव सम्भाणी
दिव राजा हीरा गणियां सहना दिव राणी ॥६॥
पदम कंवर कीधा जस नांम जुगांसी । अज वाले
रासो हमीर सासर उत नांणी । पावै दरब सुहाग
पद राजा गुर रांणी । दे माटी दाटी धरा उजी
अपगांणी ॥७॥ दिण हीतो जूं निज करां अध निकं
उआणी । सावित्री ब्रह्मा तणौ रानै रना मतांणी ।
सारो रोहिणी संपत कुबेर । माधव इंद्राणी । रघु
रैहु ईसु हाखेणा अज ईंदु मताणी ॥८॥ जुनाई
गय चंदरैं पीपल पंगाणी । रांण राजां रावला
रांवां खतांणी । अध मेचे गाडे पला धर गई
अप्यांणी । लाहो तो ज्यू कीत पुन्य दिरण हीनल
वाणी ॥९॥ हैले समंद सुरताण री औपमू हिंदुवाणी
बीका नेरी भीम री अर पंग वरवांणी । राणा सासोदी
यां पोह पादण पाणी ॥ १० तैदे वल परच वलां लख
अप लगाणी । तो सारीखो कुही जाट मनची मह
रांणी । कुण पारी रामबड करै करम चहु वाणी ॥
सुजस तणी किसनेस दिव अपणी नीसाणी ।
पदम कंवर देवल करै जाहर अणखे अपमांणी ।
ररखो अरखो अणखीयाती पला जस वाला रांणी ॥११॥
गजन तणौ सुर तेस सुत पाटैत प्रमाणी उत
ठ रंगेर तै हापो हान्ने का दीया जस काज

रिकवांणी बरहांसा खासां जीतैं लोसा का साणी
पलि खोय्या उडा गला नेसा स प्रमांणो । सर पाना मोती
सर पेच सभांणो ॥१०॥ रकिन रांणी नथ त्रेवरा उर हार
रकितांणो । हेम हंसां कर कंकण नुपुर पयंगणो । र
सुरंगा अंबर पर फुल प्रमाणो । कोर यल कज
बादलां सूरज किरणांणो ॥११॥ कीरत पुत्रां लाड कर मा
कमंचाणो । जाणै बीद वणा वीय्या । हिक साथ लख
गत देवल परणा वला के अकप कहाणी ॥१२॥ परणंता
केवर नह करैं नाणी । अतु कोते रमो अपोल मेन वरो
है जग आगलो है लखता भुल गया सो पछैं लि
दुहा:- रांणी जी श्री बीकानेरी जी रा कसना रा कहीया दु
रासा हाभू वंसरो । आ पारख अण फेर ॥
दत्त खग हक वग्गो जदन । है नगो सम सेर ॥१॥
सारा हैदु सधान रा । भीमा जल भुज भार ।
परणी जीनरी पदंम । अचरज की आचार ॥२॥
सौ औरवांणो आदहूं । सौ जाणै संसार ॥
सुबा कर जंद सुबश दातारां दातार ॥३॥
सिव देवल री साथ जस देवल कीयो जोको
गुणां कनोजी गाथ । पल माहे रहसी अमर ॥४॥
तैं सिव मंदर परणंता आरंभियो आचार ।
पदंम कुंवर दुजा न्रपत । जजौ नपती जमार ॥५॥
अनारैं धोरा सोयैं । रच सिव धाम अरेह ॥
पदम कुंवर उदीयकर पुरी मोहरा वधी मेर ॥६॥
कवित:- दुजो देवल करैं । ब्रहम भोजन जीमावैं गऊ दा
करैं कोडी दीगला । वलै भूर सीव रावै । धोती पोत
धरम । काय गोती धार कुंते । बीकानेरी बिना
कंमण पाता दत्त कुतै । वरै हार लास मोती
कडा ईल राखण जस आपणो । हा थीयां तणा हा
दीयै । तिको वंस रासा तणो ॥१॥ गीत राव अपरवै रा
धांदू जी लखावत नोबजरा ठाकुर ने चुक कीयो
वेर में जी रो गीत सांन भडो ॥ बाजीया अपखड
वक्के । धूजीयो भरभंड चहै चडके । हुकलीयां
किंदर हके । धोधींगर आफलीयां चकुं ॥१॥ भीच भर

मानस रहै । डलाइ खोट लुळी) राले मोहे जस ऊगो ॥
सभ्क अवसांण गुलाब सिंघ हर । प्रेमचै ठाहुर थ्रूगो ॥८॥
गीत:- आसोप रा ठाकुरां कनीरांम कुंपावत रो खड़ीया
बखता रो कहीयौ । भाला रो गीत । जब रसा हियो
हबोला करै पावक जेसो । कड. होकता बीजला दीठ
कांसो । अखाडै रामडै घेरै तरे अपछरा । धी बीयो
सराबा डवर धारको ॥१॥ तिको अधीयाल बढ थोली
हेर मैं । तोलीयो खवां मेंगजौ घणां हूंत । कर खुरी
उराय मरो लीयौ कान्ह रै । जेको किलम मचे परा
कक बोलीयो कूत । ख्याल देखै तरण वरण अपछर
खडी करण खल खरां रहवाण रै ही । रोद चें पंजर
असरण सरण रो पीयो । जम गरण अपीयो अरण
जेही ॥३॥ परम डर धारीयो पूर मांठे पवो थापडै
वाढ थोपै चलूला । किलम चै सांम्हो करग धूंदो
किनां । परै फूटो धजर भाल फूला ॥४॥ सांमचो
सारीयो कांम नव साहस तारीयो देस बंस सगस
तालो । थापडै नबाबां तणो रत धारीयो । भुजां
सिण गारीयो रहै भालो ॥५॥ गीत बीकानेर रा राजा
राय स्यंघ जी रो । सांदु माला जी रो कहीयो पण
गीत में माले जी गांम मदारो मांगीयो । राजा
राय स्यंघ जी दीयो । गीत राजा स्यंघन करग ताहर
रासी गिणिय पञ्चाणिय पसाह च गनै । सवा कै
दीनी सांकर नै । मह दीनी सो केय मनै ॥१॥ रिण
सीस अचड़ हद राखी । घणो प्रप खीम दाखी धू
वडा स्यंघ हित आंकवा लियो । मादल चुरं देतै
भूपाल ॥२॥ कोड़ पसाव अगाह कुंजर । हेतु वांद
दन दलिद्र हरै । राजा सिरै कलावंत राजा सांस
मह सांसणां सरै ॥३॥ गीत:- दीवांण राजा राय स्यं
जी भोज गत्या ढाढी हग्रा रा कहीयो । कसन गढ
रूपनगर राजा रूप स्यंघ जी री बहन तथा बे
री औरंग जेब पातसाह सुं सगाई कीधी सो उण
बाई श्री दीवाण हजूर अरज मेली सो आप हींदु वा
पातसाह छो सो मारो धरम राखसी । नेम नै

परणो नै लेजासो म्हारा खावंद आप दो आप नहीं आव सो तो देह भाग सुंपण हुरक नै तो परणु नहीं जण पर दीवाण पधारे नै परणे लाया सो गीतः-

गीतः- धरा बंध खित्र बंध चित्र कोट गढ ढोलड़ी। पुर- बला लेखना खत्र प्रमांणो। साह अनूंग अवतार सिस पालरो राजसी ऊसनू अवतार रांणो ॥१॥ मंडलो अमै पुर कुंनण पुर मांडहो लखता राम आसुर लखायो कथन सुण द्वारका हुंत आयो किसन। उदैपुर हुंत ईम राण आयो ॥२॥ धुरता नगारां लंगर फोजां धणै सेवरा बंध पै बंध सनेहो। पाव घर जेम कुंनण पुरो चढ़तां। जगांरी जोधपुर ऊसन जेही ॥३॥ एक अंधकार हींदु तुरक देखतां। जका तैकी धसे सार जांणी। किसन रुकमण धोरे लेगियो कंवारी। अमर रै कलोधार परण आंणी। धरंला धोम पर कोट चौदै धकै। तसां असुरां घणां दीपतो त्रार। पहल के गोयो सिसपाल माया परक। परक सीर रेहल कीयो पतसार ॥४॥ ग्रहण कुंभाण विरधा पती राय गुर। कथन कीयो जीता जगत कहसी। राज सो रांण हींदु वाण धम राखतां। राण वारवाण जुग च्यार रहसी ॥५॥ यो उपर लो गीत भी दीवाण भीम स्याध जी सुणे नै हुकम फरमायो कै किसन जी आढ़ा पण आठा रो एक गीत माहा रांणा राज सींध मै पै बणावीयो गीत है तो ठीक पण सायाण है मै पै बणावीयो नहीं नै गीत मैं पुनरुक्त बोहुत दर चारण रो कह्यो नहीं नै गीत मैं पुनरुक्त बोहुत है सो ते पदै चोकस हुई जद ह्या ठाढो रो कह्यो उपरलो गीत नीसरयो ऊसनै कह्यो जी हुकम सो भी ओरी हुकम सुं आठे किसनै रांणा राज स्योध जी मै गीत कह्यो। गीत राणा राज स्यंध जी रो आढ़ा किसनो रो गीतः- दुहाः- दोत रंगी परणी दुंवा। वरणी व्यास रुवंद।
पोह राजड़ लायो परणं अपरणं जादव ईंद ॥१॥
जय अव रगा सेस पाल जेम राजड़ गौरधर रांण
कन वज्जन रुकमण कलो लायो अवलो मोय ॥३॥
गीतः- बडो सागोर गीत ॥ अकस दिली चीतोड़ रजवट (खत्र)

चरम उचरण । चडे कारण करण लेख आनूप । दीकट
सिसपाल अवतार अवरंग वरण । राज सी राण गिर
चरणसा रूप ॥१॥ फरे जिग रूप भीखंम कुनंग रूप पुरा
कमधजी रुकमणी सुणी कथ कांन । वखत जिण मोल्हयो
पत्र आरत वृती । थिरु जगती जोही उदेपुर थांन ॥२॥
अगा दम चोख रुकमण प्रिया उचरण । लखां संकर
हरण वरण जस लोग । भूक असरण असुर चरण थावर
मरण । जगावत राज ऊपर करण जोग ॥३॥ चरम हिंदुनाथ
निज प्रिया अरजी चरे । उतर दिखणाधा मग करे
अविद्याह । दस सहंस नाथ जादु नाथ दल दाखिया
नत्रोह हाकीयां बाज नर नाह ॥४॥ वेहरा थंक जिम नेह
खित्री वट जगत आध हरा जस जणायो । साझीयो देह
वंध दल श्री कसन । लखा हर सेहरा वंध लायो ॥५॥
लंगास चौड़ां भड़ां उरड़ फोजां लड़ंग । निरख अंग जोम
चीतोड़ रा नाथ । हाथ सिसपाल रहियो मसल पहल कै । हि
कैरयो अवरंग मसल हाथ होम असुरां नपर वादे
थोणाह सम । लीया सव गाढ़ रुकमण त्रीया ललार ॥
श्री कैसन जेम राजेस सीसो दीयो करतै साचो
बीयो करतार ॥६॥ मांण भंग करे सुरतांण आणे महल
सुकव सिस भांण दुनियांण साखी रुकड़ा पाण हींदू चर
राखलां रांण जग वात अखियात राखी ॥७॥ गीत-दीवांण
श्री भीम स्यघ जी रो आठ किसनारे कहीयो गीत
वचाव चालै च्याल कलै हसत बाग्यांनां । सुज पटे
काले दसात अपह साजु । कैला उर हसत आलै कुर
कुबाणां खेलालै दीयो जोबन मसत बाज ॥१॥ सुवर
उर ढाल रे भाल री प्रपुल सुज । जोख सुख पाल रे
चाल री जूद ॥ भाल री गज भीमेश दीधौ मनौ । हीम
पीलो पिंड जवाल री रूप ॥२॥ नपारी साज अफुलाणा ना
वड़ द तुल गुकर आव दरी पसम तास सरांरी वाल
तिलक अरती हरै । रेल पेच हजारी दीयो ही वास ॥
धमक पौडां पटी नाग सिर चड़ चडै जास कहे चड
खेडै लूब झूबां । उडड कर भीम वालां लहर उनडै
सुणे नालां वहर पडे सूबां ॥४॥ सबचै

सवैया:- समत १८६८ रा भादवा विद ८ सुनैं / सवैयो / साद किसना
कत श्री क्रसन मे सवैयो ॥- भादव साठम आय निसा
गयलोक बजी नुबतें सहनाई / द्रुयान की बरखा बरखी हरखी
प्रथमाद फुलै बनराई / मात जसोदा नंद पिता
धन जा घर जांमित नंद कनहाई / धांम अहीर
कै उछब धाजत बाजत गोकुल गांम बधाई ॥३॥ उदे
पुर की हवेली / कवित श्री क्रसण का जनम उछब को आढा
किसना को कह्यो समत १८६८ रा भादवा विद ८ आठमे
कवित्त:- भदुव आसित आठै आये देव रूप धरे जसुधा
कुमार को समुख दरसतु है कलस बधाये दुब मंगल
बखाने गाये देव नर नाग ब्रज्जा लोग हसतु है /
गावत बधाई धीर सरीता नहाई ~~ग~~ गोप रमैं दध
कादम अनंद सर सतहै / गोकुल जनम लीन्हों कान्ह
त्रिलोक नाथ नंद ब्रज नाथ आप मैह बरसतु है ॥१॥
रूप झमाल:- मेडु श्री काला जीरी खड़ीया बरवला जीरी कही / ~~झमा~~
झमाल ॥ कानां कुंडल हंस गल कण दोरी कटी धार /
पाय धमकै घुघरा चढीयो पावड़ी धार / चढीयो पावड़ी
धार / मुंहर बंकैरी लोयण रत्तला लंक / गोसा संकड़े /
रूप अंदे सब नारस की ईस जाही / कहीं सार
त्रिलोक / नलीकी पुज्जही ॥१॥ जड़ गहरां मंड खेजड़ां /
सरां तणा पत साव मान सरोवर सारखो कोला
लोपै तलाव / ~~भम~~ भरैं पण हारीयां / कमल सुचंगां
कुंमस उज्जल नारीय्यां / राग रबोला होय / सबोला
सीपजी / रिध सिध राजै हाथ वीरांजै नाथ जी ॥२॥
~~ब~~ बीयां बणां मै भारीय्यां / झुला फिरै सालाब / भार
पहलो नाद्दीय्या नै पीवण सुराब / सुराबा फुलरा / पग
घट लग्ग पूर हजारां दूलरा / रंग सुराली नार महोला
रूपरा / सूंघै अगर अबीर धध्धका चूपरा ॥३॥ धारा धमकै
धावला / सेस धमकै मथ / पाय घमकै घुघरा / डक
डमकै हथ्थ / डक डमकै हथ्थ अजै राजै रणा ॥
लंबा सेर जवांन अकेरां फेरणां / सीरै बावन साथ /
डमकै डैरवो / भरीय्या होद कमोद / खिलै भैरवो ॥४॥
बोइ चंपा बोइ केवड़ा बोइ केतकी गुलाब बोहत

चंबेली दावदी। मालण लीयां छाब मालण लीयां
छाब कसार पुंग पीयां। खड़ी तंबोलण जोड़ कबीड़ा
बंधीयां गांधण रूप नीपांन। फूले लीयां रुवा प्याल
दीयै कलाल। दुबारा दारुवा ॥५॥ गहर कीया वाडीयां
सहर तलाबां सद्ध॥ बाग डीयां गिर मेगारा। रहीया
साहिब रद्ध। रहीया साहब रद्ध। सबै पिय जाणण।
राजा पूजै राव। लीयां संग रांणीयां। चारण हद
पीर पीब बणीयां गियां ॥६॥ पांन चढै हुड़ बकरा। हुवै म
मगयां गंज। झुला झुलो ध्रत घणा। दारु मांस वीर
रसोडै नाथ रै। सबल मिलै हेक पांतस कोई सापरै
जीमै विन जीमाय। वडो हेक साहरो। पाया सीत प्र
पलै घर माहरो ॥७॥ जोगी भोगी छत्र पती हेव जुहा
नार। मन वंछतरी वन वाजरा। पगां खलकै देवर
लंगर लाजरो। बखतो नाथू राम सजोडै साथ जी।
बेटो बाप गुलाम तुहालो नाथ जी ॥८॥ गीत रावत
गोकल दास जी रो मह्ड महादान जी रो कहीयो
गीत:- सावझडे:- चसल वाज घोड़ा भड़ा रहै पोड़ां धमी
घणा प्रसणां डरां सेलड़ा धम धमी रुड़ त्रंबक नै घु
नी दसै भारमी। जोध गोकल जसा बींद भोगै जमी
खोच भाला चसण पीयं॥ पानक रवी बनी नव जी
रतन गरमा वरी फोज पलीया मीहर दीयं तरंगे
फरी। कैल पुर चुद मकड़ दरू चीकरी ॥१॥ है खुरां
हींद लागां चढै हींदणी रपाट पोहरां रपज करहै खो
दणी। जसाहर करी मचकाय। जकड़ी दणी बिलालो म
माणौ नवल बींनणी ॥३॥ सांकड़ा उवट भीड़ घोड़ा से
रात दिन माकड़ां झांफ भरता रहै। लग झरां रपांकड़
रपग खला गासहै वाकड़ा रपगै चारसणांक सुची वहै
लंगरीरा चरकां रट कलेणका। वजाड़ चणी नारद ले
बेणका। रिझाई पिलंग रस लूब रंग रेणका। भलो
उमराव अग जीत भीमेण का ॥४॥ सेल पलका हुवै अं
भलका सधी वीर दल काम लै चाले गल का वं

कर जुको । पमोङा बंदूका लाय लोङा थको । ढैल ढव उपरा अवन जोवन छको । धर ढ्रैं उरे व्रत करै उभी धको ॥७॥ गड़ गडै नगारां नाद गहरायलां । चोगणा जोस मुख चढै चकरायलां । नत मंडे भीच ढेला पडै नापतां चला दाती रहै यसा अरु पायलां ॥८॥ समापण दवालो बंध गज क्षासरा । ढोयै तजकां सत्रा सीस सांगा ह्रंरा । पमंग उडतां जुडै दलां रजकां परा धणी रजकां तणौ रहै सज क्षेत्ररा ॥९॥ चड़ च चाङा पला भोग भोगणा थंनो । क्लह सबलां खलां ढुंत राखण क्नो । क्नो धज दार अस धार प्रतपो थनो । पत क्षत नार भर लार सीयो पनो ॥१०॥ गीत बूंदी रा राव राजा छत्र साल जी रो संढाय चहरी दास रो कहीयो गीत

गीत:— तलां उग लागा वहै ज्वाल ज्वाला तमंक । दमक यीजर दलां दीपण दुडुंआ । सता गज क्रासरा कसी खासी चुरां । मोल नैन चाले कीय मुहडा ॥१॥ धणा चहुवांण रा सम पीया रीम धण ॥ लीज धण खीज धण वहण लाजा । देख समै गलां अपध वण दोकड़ा । रोकड़ा नतीरैं राव राजा ॥२॥ पेड पाहाड़ दुरा परा पांखीया । उंखीया हुसत मद मसत दुतीयंद । हाथ घाले नको मोल वैराय हर । नाथ रै खाणीयां यसा नडी यंद ॥३॥ सतै लहरो समंद दीधा खेन गयंद सज । खांण मन मौज रै बोख असमान । छत्र पती मोल बै नही कोढ़ कीया । दीये रुन दोड़ खोढ़ा कीयां दाम ॥४॥ दुहा ॥ ईंदर कीधो खोरडो । संकर खोडी खाल । तो ऐन कुन है नाथ तणो सुंदर <u>गज</u> मन सत खल ॥१॥ सोरठो ॥ तैपां गडै प्रवाड़ सींधुर चढ दीधा सता । अजे उदेपुर माह नांग लाढै नाथ उत ॥२॥ गीत राठोड़ गोगा देवी रमदे खोत रो दला जोईं याने मारीयो रजेब भावरो । वीठ मेहा जी रो कहीयो गीत जात सोरठीयो गीत

गीत: रोढी रल तली आरांण उन्ही । खला तंडल साय

खेचा बीजल सार बाँट। घड़ी हेकण घाय ॥१॥ वेर
वीर तणै वाहो। निह संजोयन डार। हाथ गोगा देव
हुंता। थपाई रत चार ॥२॥ कट उभै खोचण दलो
करीयो। वरंग सूच्या वैर। वैर वीर मतणो वलीयो।
वाल जै जिम वैर ॥३॥ परट कट कट तासला चण
खाट वरंका ईस। छुटलो वल जाय छुला कै। सेस
वालै सीस ॥४॥ खाग झल ईर वस खोयो। जोईया
जड़ मूल। बाप मांगण गयो बेटो। चड़ चमेला चूल॥
भाजीयो रांणक देव भारो। सग लड़ा यर साथ। कमंध
गोगो खमर कीधो। निमो गोरख नाथ॥ गीत माड़ा
राणा गढ लखम सी जी रे चीत्र कोट खलाव दीन
सा को कीधो जेण भाव रे। जुनो। ...... कहीयो
गीत:— तेरैसे समत वरस सग तीसै जवंन हींदुंवा हुवो
जुध। रांणै वात खबीढी राखी। तेइस पीढी झड़ी तद॥
सुरा गुर गढ लखम रौसा (पाटवी) कंवर नाम) अरसी
कुल मंडण खारोड़ खाया काम दलो दल खाया।
चोरासी राजा चीतोड़ ॥२॥ दीन खलाव केरे गढ
दोलो। हर रीर माल वणाव हुवा। सात लाख झड़
हींदु सारा। मेछ अठारा लाख मुवा ॥३॥ रामायण भार
विच रांणौ। तवां समरसी सीम रण तसो। साकौ
कीधो यसो लखम सी। आगै हुवो न फेर यसो
(इण गीत लार लोक रेत कवीला मैं लख्यो है सो
देख लीज्यो) गीत राठौड़ राम सीघ कलाण मलोत
राजा प्रथी राज रे कहीयो जात पाणा वंच वेलीयो
गीत: सरणाई चरण वखाणै सबदी। मन जोगी जोहा अमर
रांमा वदन वखाणैं ~~सबदे~~ रांमा। हाथ वखाणैं वैर हर
रीसाणे सुर तांण राणे। राणे हौथाये नरखै। रवील
चार कवर खुद चा खुनी। लीगइ राज हम्द पखैं।
तेहिज कलीयांणोत नमैं तण। राखण मन हेकण रह
हेक कणी बीजौ नह होवै वल जुग चोथै पंचवर

नारो। सलख कनोचर कुसम सर सुणीयो. ज्यां
वांदीयो संये सग। वेखीयो ज्यां वाद्धीयो वर ॥५॥
लाखां सरस पुज वन लोहै ॥ सर सांई
सरसो सह लहु भाभी रामा भारी हथ ॥
सगां नर हीया नार सल ॥६॥ पंच पंच
विध्य पंच उभे पंच। पंडता हरै तणा
परकार। जैता हर जगत जीवतां। हारै नहीं
वखाणन हार ॥७॥ गीत माहाराज गज सीघ जीरो
गीत:- कुला सांईया जी री कहीयो। गीत स्पाजुणी वार
संसार ईसता चोरंग। अमर अखुर तचाय लड़
वड़ नह राज सीघ कुहारी। नारु तणा
आभूखण न्याय ॥१॥ पग पग लगै सरीखी पायल
हात हाथ प्रत कंकण होय। सरज्या नहीं
अभ निमास लखा। दोय पासा नासा नग
चोय ॥२॥ श्रवण श्रवण कुंडल सारीखा। आंख
आंख प्रत आंजण एम। संभ्रम सूर तुटली सम
वड़। जुडै नहीं भकवे तर जेम ॥३॥ ईल
अधपत अबला आभूसण अोड कीया तर कीया
अनेक। नासा अग्र मोती नव सहँसा। है कांकवै
तपै तूं हेक ॥४॥ राजा हुक्म सभी अन राजा ॥
होड कीयां नर बीया हसैं (पांणी हड नाम
मोती रो है) पाणी हड पै हरे हडु पासा।
नासा नार जुही निकसैं ॥५॥ खात मरु हारी
पहली कुकरी अर्थ। पंच पंच विध्य पंच
उभे पंच हीते। पांच नै पांच दस। दस नै
पांच पनरा। नै उभे पंच दस पनरा नै दस
पचीस त्वरी धारी पंड है जीकार पांचही ॥ गीत
मै कह्या जो जगत मै जीवतां वखाणण हार
हारै नहीं है यौ तो मूल सुध अर्थ है अन्य
अर्थ पंच पंच विध्य पांचा नै पांच गुणा
कीधा पचीस हुवा। फेर पांच जदी ३० तीस हुवा
फेर उभै पंच दस मेल्या जद ४० चालीस हुवा
सो चालीस सेर को मन। व्रज भाषा सु मन हुवोजी

मन सु वखांण वा वाला नही हारै छै इत्यर्थ ॥२॥
तीजो अर्थ-पंच केता पांच ही जणां कवि गीत मैं
कह्या जे। सरणाई१ सीध२ सरसती३ असत्री४ दुसमण५
ऐ पांच ही कहै छै। एक पंच सबद तो अठै लाग
पचे तिण पंच पांचा नै पांच गुणा कीया पचीस
होवै२५। उणै पंच सो दस हुवा सो पचीस नै दस
भेल्या पेंतीस हुवा सो कवि कहै छै। कै सरणाई आ
पांच ही जणां कै छै आज पैंतीस वंसा मैं रम सी
तो जसौ रजपूत नही पार पंडरा पांच ही पुकार
जीवतां जगत मैं वखाणण हार हारै नही छै पांचे
नही छै इती अर्थ ३॥ गीत सुर तांण सीधरो अर मा
वणी सुर तांण आगला मतो माल वांसै सुभ
साल। जस माला पासै कव जोवै। माथै रंभ तणी
वर माल॥१॥ वहब विपद हुवा कहवा वावर।
अर अंतेवर केव अधर। मोहर भंवर पांसै रर
मलीया। भाये सर हर च्यार भर॥२॥ रीस
रीझ रूपग कांमा रस। मुज लग अंग सुदन
भाराथ। मुके हेक वरग मांना वत। सरग वरग
मुर लेजो साथ॥३॥ गीतः- बीकानेर कंवर पदम
सीध रतन सीधोतरो। भाई मुंहण सवरा वैर
महे दिलीरा एकाने अंव खास महै मारीयो
गीतः- जिण भावरो कहीयो। दुहो। एक घडी आलोच
मुहण सीवालै मरण। सोह जम वारै सोच।
कीयो पदम करन उत ॥१॥ गीत कहीयो गीत छै
गीतः- अंब खास विचै विपरीत उरतां। करतो जिग
धरतो कदम। मंपण न बाहै जठे राजवी पडीया
लग बाहै पदम॥१॥ गहु मह चूक दलीचै सांग
बीजां नह फाटै वकर। उठै वीया राय सीध उप
करन तणा धारा सुकर॥२॥ मद उतरै जोध मत वा
जूह साह दरगाह जाहै। महपत मीरां छडी म
तूं मारै तरवार तहै॥३॥ पुगतां आग बदन ई
फूलै। दारण असपत तणो दिवाण। सम दिवांण

गीत: दीवाण श्री भीम सींघ जी रो खाट किसना रो कहीयो
जात बेलीयो सांणोर। गीत ॥ ताजीमां वगस चाढ
देतालां। सांसन नारव रूच श्रवण सुन मान।
जग जाहर रूप हुउ भीमा जल। दुजा जगड़ नहाला
दांन ॥१॥ दुज जवहर पाल सीयां दळीयां। दौलत
निजर नवै निच्च द्वार। खुमांण तो दत सुदा लंग
मालम आलम दुनी मझार ॥२॥ वालां कुळल कलल
वहालां। पालां हल वलं फररप लाख। हापां
उद्दर रूप निमा हाकू। सर सालां जस वालां
साख ॥३॥ गुर गहलोत चनो रायां गुर तो खग
दन विसुधा सिर ताज। जस कजां कीधा भीमा
जल। राजां सारीसा सिव राज ॥४॥ नीसाणी सिर
दुधो। खारीया कांकीदास जी री कही। जंग लीवाळो
विलायत में मुलक है। जठै लुगायां रुपाली होय
है ज्यां मरै है नीसाणी चसम आख कटारी
चालै उपर खारीका (जार पुरख) घाव कलेजो घालै
जालम जोटीया (जुलमी जबे जारगीयां) सहर गुजा
रसालै बाग बिहस्त है (खुसी करै रुकल वचा
सरीखो है पर हल चिर नेहतद) गुजा नांमा
सहर बाग मिस्त मुकत। देखन हुसन कमालै। (रुप
रूपदो सुंदर) चिरत करे सद (खुसी- रूकल वंच
निच्चो मुकर हुसन (रुप) मुकसालै वहत तमास बीन
(काच का महल की सी तरह के है तमासगीर देखण
हार) ईस्वर मुंहारा सु-जीव कदे रूप सु संगल
करै ज्याका मांग हीन हुवै। काढो रघवव डालै
चंदा चीरकै। रुवरू ज्यान निकालै हुसन परस्तीयां
हुर परी बेहालै हुवे हार हार। दैवी निजर
निहालै मरदां माहरू। मुक दैर सती झालै
बांम कसां नदी। वरक बिना वर सालै दीपत
देहदी। गत विहतर मद गालै ईसा हाथीयां।
टेक ईबा दत राले आफत अवलीयां भाव डाव
कर भालै खाटू रुकीय्या। दिल सीदा कर डालै
रुपला हूं नदा। गुर खील वंसु डालै चिदवी

मुंगीय्यां । लाज मरै दीलालै सबद री रसा नदी । नदी
बगोचूं नालै सीरव सरोज री । लंगा हीरै उजालै
गलू गाय गाय । मजनू लै लू मालै जय दीजा
पजरू । सीरी (स्त्री) खुसरु (पुरुष) वालै रस में रलीयां
पुसत पन्हा कर पालै दिल दीदो दीसलै । ~~सेन~~ लेत
सबीर दिखालै जल्ला (पुरुष) धूंमनां (स्त्री) मयूख
दीमालै पासक होत ए सबही जंग रीझ्यालै । रैसी
ओरतैं । काज बई सक कहालें योर मकान पै । सादक
ईसक सम्हालो मडूं । जद तैं ई यइ जालै । दरजा ईसकदी ॥१०॥
बीका देखे मरदाने चन्द मुखी भुके नैं हाथरी
माला दे है । काम का गरब यु कसी धरै । नरू
बीजलो जीसो सोभाग्य मान बिनाही पोमारै चाल
पाछो पण ईसुर की रवंद जी । ध्यान में दुख नीध्यान
करै । हिरण चीन को मृगनैंणी मन नैं मोल लेलेगी
घणो सदुर दार सबर दार । ललाई होठा की पाछी ।
गुलाम मुंगीया चाकर जीसा दीसै । लाल माणक
पोये खिसाणी । कमला कै सोच पड़ै । पुर खंर जो ।
हारे सौयां है पारै । <u>गीत</u> बीकानेर रा महाराज
श्री रतन स्यंघ जी रौ पाठ किसना रो कहीयो यो
गीत :- संढायच खेत सी जो करे नै कहायो है । दुहो :-
किव चाढण पस कुंजरा । बाढण खला बिसेस ॥
सुरत बिवेनी कुन करै । ज्यां अभो रतनेस ॥१॥
:~: वाला टूकलैं हजारां करी खंमालां पगाजा पडां
खीलालां रावता भीड़ समाजै बिसेस । राव मारु
साजै दीह चारीया विनादी रीत । दुरतेस गादी
बिराजै रतनेस ॥१॥ कीध गीरधी मोटा रावगाये
पेस करें । कहां भोज सारीसे कवेस जायैं कीत ।
जीतरा जांगीय्या रीड़ राठौड़ रूमपै जोस । रायां
सीध दूसरो व्रत पै ईसी रीत ॥२॥ मेहर सहर
पाण डाण वरतीई मही । रूमाई सवाया हीयैं चाढै
वडा पौष । वंस भांण ऊंची तांण चारीयां सवाई
वाजी पाधांण जागलू धरजै बिजाई पनोप ॥३
हूं वनां पालगा भांगरा तेज लोय्या हरी ।

पाणरा अन्न भोज आपांण रा पाप । रूप माथ वाणरा
हमेसां पिला पाट राजो । मेत ~~क~~ बंध रतनेस
वीकांणरा नाथ । समत १८८६ रा माह विद ३ ॥
२१५ कुंवर श्री अमर स्यघ जी देवलोक हुवा ज्यारो लार
सतीयां हुई ज्यारा कवित आढ किसना रो कहीयो
कवित समत अठारै सत पचा ताय वरस
पचातेर । मास जेठ पख सांम चौथ तिथ
असत निवासर । भीम सुतन अणभंग । अमर
रवरां मुकट मण । तजी देह तेण वार ॥
कहर गतद ईस कारण । पड़ धाह वलो हाक
पड़ । धीर होवै कुण नर धरै । पीत रत
कस दन पण श्री परम । करला सो दिननां करै ॥१॥
सुणे धाहा तेण समै । कहै त्रहुवै कुलवंती ।
हेक खवासण हरख । चिढ़ पुर पुर चाहती । आपसू
मै उच्चरी । सदा रहती गल वथां । पल पल
देतो पीव । हरख मद प्याला हथां । पोसाक
अतर भूखण पोहप । जोलो नह करतो जलो ॥
पसड़ी न होय पित आपणो । आज पधारै एकलौ ॥२॥
पवैतां मचावडी । हुल पांवार हुलसे । वीर पुरी
विल कुली । सोहखा वास सरसे । जोगी नाजर
जाती । म्रतक त्रिय काय मुसलला । अता देवस
आग अवस । चल जावै एकलला । पव उभै सुध
परणी पिषै । पदमण सूं बाधो पलो अग लोक
दीह देवलई सखी । अमर जाय किम एकलो ॥३॥
ज्यां नयण नीर खिया । चहण रकाब सुणंच्या ॥
निरखे मांग सिंदुर । विवध नग चोटी वंधां
निरख भाल ज्यों दिया । नयण काजल अणी पालो
निरख पील उर हार ॥ चूड़ कर नजर दवालो । पोसाक
अतर भूखण पोहप उछरंग दिखा सनूपनै । दिवालै
नोज जीण धरव दई । रंड वाड़ारा रूपनै ॥४॥
यम चहुवैल सलहा करे असनान गंगजल ॥
अतरां मंजन करे पवसाक भला हल । आभू-
खण कर अंग करे अणीयां लो काजल । अमरा

पुर कर उद्धव । करे हरि ध्यांन सउज्जल । कर हरख
देह होमण करार । कुल बिढुवै उजल करे । यंम करे
साप ~~ह~~ अमरेस रो । क्रम क्रम ~~न~~ सोतो ज्याग करे ॥५॥
कुटंब कुंत कुल वंत । करे मेलो खिल कुलती । कुरस
रूप सतेज । अई वाहर झल हलती । खीढुं कुरंगां चढी
झमक आपण रम झोला । वजे ढोल वाहरू । दुनी
करणा रस ढोला । आसुंवा धार हहकार चल । मर
अपार रज नम मिलो । कर उमंग रक्क अमरेस कज
ध्यार अंग होमण चली ॥४॥ अस चिढुवै उतरै । साप
गणगोर अरच्चे । भव भव आभर तार । जोड बिढुवैं कर
जचे आसंन मंडप आप मुखे हरनाम लोपंती ।
चालो खिल कुला खेलां । पैंड असमेद दियंती । पुन
दीप दुजा दे परक्रमा । दिया चीत सुर पुर दली ॥
दुला सव ग्रेह पैठो दुलस सतो दुंला सव सास्सी ॥
चौदह वाज ढोलडा लोक करणा रस लग्गा ॥ गाग
सुरंग रीत पंथ । जेम जोहर दिन वग्गा । वीर मरुले
वहेत वग्गा जालो रस वांनै । वगा दिलो चीलोड ।
रयेण गढ़ लखम पयांनै । असमांन धरक रहियो
धरक ॥ कर जग हाहाकार रा । वगा आसलां मरतां
अमर । ईसा ढोल जीण वारा ॥५॥ पद पंकज होमीय
होम कर केहर ओपम । उदर सरोवर होम । होम
कुच कंज कलो सम । भुज म्रनाल होमीया । होम
कोमल सम वाणी । होठ बयंब रद हीर । होम मुख
चंद रतन कंचन होमे तई । अग पधा कंवर अमर
सख्यां गल वधां कीधां गई । लाजे उदिया पुर आप
सुहागण भलां करार । ज्यां हती गुण कंत । भलां
कर जोड मनाई । प्याला भर मद पाय । रंग मिरते
भलां रमेतो । ज्यांर राज कंवार । भलां खुदीया सम
अंत दिन फल सेझां अधर । आगमी फेफल आगरो
भुग तीओ जीकां जग सुख भलां । साहिब तणा सुह
खीव धन धन धावडो । धनो पांमार असंकी । वीर
पुरी धन वहां हेत धन धन हद लंको धन
माता धन पिता । जीहूं धन जिण कुल जाई ।

जात रात चिन जपा अमर चिन जिण
घर आई। आसली सूर चिन आगमण। जगत
दसी नइ जोवणो। कुण करै कीना कुल
वलीया। सेभ संगा राणो ॥१॥ वत्र भंजण चित
सूर। सूर पढतै नर नाहर। लाखो कंवर
अतोल। बोल गज देत बराबर। सेवगारां साधार
दूढ दाता गर दाता। जग जाहर जोधार
खवो वंका श्रद खांच्या। जीण रीभ रीज
जाहर जगत। देल हमीर हमीर हर। सीसोद
चीतूं सतीयां सहत। अमर पढ्ंलो अमर पुर॥१४
कवित संपूर्ण। लीखतं आढा किसना वाचै। ज्यानुं
रांम रांम वांचज्यो समत् १८८२रा भादवा वीद
१० सोमे। गीत:- रावत हमीर रायवजीरो आढा
किसना रो कहीयो गीत। जात पाल वर्णा साव-
भड़ो गीत॥ लीज सुभड़ा करै दलेल नासी-
हत। ठाकुर रखे उतारो खास जत। सिलह
सिपाह रहो कस साबत। आया बे आया चुंडा-
वत ॥१॥ जड़को तोप पयांद जंजीरा। मदत उकोरा
खाजे मीरा जुध मत वंछो नींद सरीरा है
वैरी पाडेस हमीरा ॥२॥ येल लखत लागा कुंपा
कढ वाढो सेन पंवारां वागड़ी चढ हेरै
चहुंवाण वहा चड़ पार घड़ा रस लेहै
रघड़ ॥३॥ (डुंगर पुर भगड़ो कीयो। लखतं राणावत
नै भाजे ने लीय पंदमां चीनै परड़: लीयो)
सूरज वास सराड़ा लुट्टा। देव साम जंग
रतना दट्टा मुगौ हड़: जुध जौहर मट्टा।
कटा वेर वतोला कट्टा ॥४॥ (पट्टे वास वाले
सदा सव राव साधे पासो पंवार नै भाज्यो
धार रासो बाढत ने वीरा भाई रै हमीर जी रै
सामरी बरछी लागी मार लीयो।२) पट्टे तीजे
भगडै पादरड़ी गांम वागड़ मै वडारा पवांण नै
हमीर रायव जी रड़ के पोडे प्रण नै मारयो ॥५॥ चौथे
भगड़ो जगास वाली नै मिना तीन मारया

गांगो १ सामो २ देवो ३ ॥४॥ पांचमो झगड़ो सडो पाल लुटे
गांमैं तीर तनो मारयो ॥५॥ छटै झगड़ो वागड़ मैं गांम
मुंगौड़ तुगो जैठो जगैर चंद गांदी तथा छेटड्या नैं
भांग्यो फतै कीधी ॥६॥ मुंगांमैं तखला जी रो पालबा
लाग मैंतो मारयो ॥७॥ रामो (भील) चडच भंज भवराई
(गांम पाल) जुडमौ गांमौ पाल जलाई । मार सदा
रसिव खेत धमाई । (पंडत नैं गांम गलड मारो) भाला
तुपा खड़ा है आई ॥५॥ सखा राम (पंडत) रुख
मेस समझाया । (दुख मागदे राज सतारा रा तथा
मुंजी पटन री जीरौ फौज माहोली भेजी) भिड़
माहोली जंग भजाया । खेत उपासण बंगस खाया
खाया बे कुहनबो आया ॥६॥ उपासण जसुंत रानरो बंगस
मेवाती ने मारयो (लसकर सेर खान मग लागा)
(सादड़ी री संघी भागो) खाज माल लोढा वल खाग
साहजादा री पायखो मारयो वागड़ मैं गांम लोढावल
पवाणगांरी जीवो खाय गयो १ मोहन जमात दार सर
जेरावरा चगेड़ी मारया) ईत के सुभड़ बहादर खागा ।
भिड़ज गुमाय ईमांमी भागा ॥७॥ जीवो भिडण चंगेड़ी
जाए । सझे भदेसर अबदुल सारा । कीत बरछ
चीब करारा । (भदेसर लोधी जद अबदुल्ला खां
नैं मारयो तोपा २ घोड़ायलौ कीरत सीध राठोड़ दरा
बखांनै बरछी सुं मारयो । मीर दराब खांन हुं मारी
दिल अंहकार नैं छुड़ै दोड़ । अद्ध रावत पास अरोड़
धम धम पखर नापता घोड़ा । लोते खांन ईसी नै
तोड़ा ॥८॥ चीरज रथंड़ नाहिं चरैगा (गांम परवारडे
दलेल खां री पायगो मारयो तथाई ५० दुजा मारया)
फजर सांझ अज चीता कैरगो । कायर सौ मुंह जो
करैगा । सो मीत बीना हक नाखं मरैगा ॥११॥ रुसमी
खाय बदन कुंमर लाठौ । वंकां भड़ा नबाब बखांणे
जीतै हमीर नांम जग जांणै । उस हुं खुदा नजी
कन आंणै ॥१२॥ रात दिनां अजकार वलला हा
लीया रसिर रचैरै हलाला । भूखै भीम परख कर भा
वो अबा नेत भदेसर वाला ॥१०॥ दुहो:-

दूहो:- दसमो है। बारै दुहा गीत है। समत १८८३ रा आसोज सुद १० भीम मोरत गीत राणीजी बीका-नेरी जी महादेवजी रो देवल करायो जीणरो स्याद किसना रो कहीयो गीत जात वेलीयो साणोर गीत

गीत:- सुभ दिन दे भीम विचारे सुकत धारे दद धन दरब उथाम। रचल रीत देवल माहा राणी। नर पल कीयो जुगा जुग नाम ॥१॥ प्रारंभ लाखां तणा उठाया। सिरै पढाया जग दरसात। कर हर मंदर बीकानेरी। विसुधा अमर करी जसवात ॥२॥ बागीचा पत्रसाला विसेस। कंउ पाज अम साल कराय। कीत गाय को अचल कनोजी। बाग नाथ प्रसाद बणाय ॥३॥ ससुर हमीर ददो नृप रासो। सुज कुल कमध पीता सुरतांण। देवल दत अचरज की दाखां खांवद पायो भीम खुमांण ॥४॥ गीत

गीत:- किसना रो कहीयो। खुउद पत भीम राणीयां रांणी जम पाखै। बीकानेरी हरत विरद लाखां धन जस काज लगायो। पायो भला सुहाग पद ॥५॥ पाल करी देवल परणायो। सुज दश दीधा रीव सुकर करी भलां तो परक नवज्जी। महारांण साची महर दरसत नेसै (कुरव) सीर पाव हजारी। धण हेम बुठो घरो घर। सुत सुरतांण नाये कीलो सीर। नाग धरै निज सुभ निजर ॥३॥ कर सीख रात कतो करतव। नेह भीम अजवाल नज। कवर पदम राखी ईल कीरत। साखी रीव सीस सुकेव सुज ॥४॥ रेहंम मदावाद रा पात साह महंमद बेगडारी फौज भाजी जी भावरी। गीत जाड चा राव खंगार हमीर रीत भुज रायधणी रै सुघ रैव रा पाला रो कहीयो। साणोर गीत:- संग्राम पडे पर गइ सुरतांण जोध उबरा खान जुवा। राव खंगार तणो रैण रोहै। मामो बोहोतर ७२ सीतर ७० मुवा ॥१॥ वहीया हेक हेक वीगहीया ॥ साहे गज दले कादद समाय। हाथे जो पडीया हामा वत। मह मंद तणे न पडीया माय ॥२॥ दू

रण रसकर तणा चोथा। घण घाये उतारयो थांग।
पहलू काबैगै परवारयो। सत्र नवा करसी सुर तांण ॥३॥
जादव आरौ खेत जुड़ंतै ने जाला दल भीम टीयां
पडीयानो रला इथणा फुर। ईला न लेका खावदीया ॥४॥
(आरो नांम पहाड़ रो दे घाट आगड़ो कीधो। गीत-सावझ

गीत:- कसना रो कहीयो। कर सेव देव चोम्य दर कमंधांणी
लाखां दब जस काज लुटाणी। पदम कंवर आपै
प्रथमांणी। राखा पणो उजालै रांणी ॥१॥ रांण कुल रूप
तीस मझेरी हेल समंद तो जिसी नहेटी। खदत हुंत
धर दोड़ आनहेटी॥ नहलो जौड़ै वीका नेटी ॥२॥ गहवंत
रच देवल धर गंगा। मौजै धन आस गांम (पुरव)
मतंगा। चीत सुध लोया प्रवाड़ा चंगा चाड़ा भीम
तणी धर चंगा ॥३॥ गीत रा दुहा॥ ई क्रम सू दे आरसि १
रांमा कुल २ गहवत रच ३ खावंद ४ सीता राघव ५
करता अमर नांम क्रम ताणौ ॥५॥ करतो अमर नाम
क्रम जस ताजा चिहुंवै देस जांणै। रावल चीतोड़
अनै वीकाणै तो जस सुणे मोसरां ताणै। सामंद
क्या हुंत अथ खाटै। दे मारी धर मैं नह दाटी।
पटो न समुख नकारा पाटी विहुवै करा भलो
खेच बांटी ॥४॥ सीता राघव तणी सुचाली। पदम
कंवर पालां प्रत पाली। विलंद चीत सुर तांण
माली। वेला कल जनमी बिर दाली ॥५॥ गीत

गीत:- दीवांण श्री भीम स्यघ जी रो आछा किसना रो कहीयो
गीत जात धुड़द गीत। चेत खेलंद पवार कैना
जोड़चो। पंडव कै सोसोद पह। आचारं माझल
अर सांणी। कैहो हूं अवतार कइ ॥१॥ पेत उजेण
काय मुजरो पत। पत गज पुर चीतोड़ पत। जुग
हावां मांझल भीमा जल। सुज हूं कैहो दाख सतीयां
दत लाख सवा किना हेम दाता॥ मोजण दब
कै चव मेहल। वेद नयां मांही मेवाड़ा। कुंण हुं
खावण रांम कुल ॥३॥ सुत वीक्रम देव सेस तणो
सुत। सुत भारा अरसीह सुत। सुदता चव ज्यांमे
अर सांमी। चव हूं कैहो अधर चीत ॥४॥ ई केवै

मन भ्रम दंड जेण रै। भौजन जेहो सरा भर। है
कंन भीम भीम काय हांमू। हेल हमीर हमीर हद्
गीत:- कुंपावत ईदर सीधो तणी गांम मलाना वडी रा ठाकुर
रो खान किसना रो कहीयो दुहो सोरठो॥ महपत
खरचे मांन। भड़ ईदु तीनै भलां। मेर गीरंद
अनमांन। तूं घर आडो जूंझ तण॥१॥ गीत॥ चमक
पाखरा तुरां। खग भूत भाला चसण। धरर घर त्रबालां
डंका धावै। जमावै धरा मजबूत ईदा जहीं। धरा
रजपूत जेमलां धावै॥१॥ पंचला कलल चीदुवला
तोडा चमक। कै जमां घम केहक चीदु कानै।
जूंझ उत जेम वसु मलो दावै जीकां। महपतो
तीकांनै चलां मांनै॥२॥ सलक लुक मानीयां वाडीयां
किलक सुण। धुबल लक तोखुबा वीचत्र धुजै॥
प्रथी पत तणी कर जतन राखै प्रथी। प्रथी पत
रतन हर न्याय पूजै। नीमरव दले समण समराट
नाहर जीयां। घट हुषा घाट लोर लाक परखै।
देवरा भूपतो सारखा ईदड़ा। खग भीमा कुंप कंन
भला खरखै॥४॥ गीत चोयनडी रा ठाकुर कुंपावत
गुलाब स्यघ विनै सोधो तरा रो किसना रो कहीयो
कवित:- बेद समै मजबूत। धरम साबूत धुरंधर। वीना
कुल रावरीयांम। धरा खज वाल मुर धर। (गाम तोय
नडी कटालो पारो भाय पर तणो वरीया) खोपण
समहर खडण। भीडे दोयण धर भंजण। सुज
धर वर साधाव। गांव खदलारां गंजण। खर
वरन पाल बीरदां बरन। ऊबै पंखा पद खावलां।
दरीयाव खीची वर चख दुं। गाढे राव गुलाबरा॥
गीत:- दीवांण श्री भीम स्यघ जी रो खान किसना रो
कहीयो। समत १८८२ रा वेसाख सुद १० बुध श्री
एक लींग रै म्यंदर धजा डंड केर नवो चड़ायो
जीणरो किसने कह्यो। दुहा॥ दसमी बुध दर वांण।
सुध वैसाख बीया सीयौ। रचे धजा डंड रांण।
सिव म्यंदर भीमेस धर॥१॥ नीज सिव धांम
नीसंक। धजा डंड धाढे सधर। रे भीमा जग

संक । जग सिर रहसी च्यार जुग ॥२॥ गीत समत
ब्यासी मै मास बैसाख दसमी सुकल । महा खेल
कुल कमल च्यार चीत मोद । खित्री गुर भीम प्र
साद पव मुखारै । सपा पन धजा उंड कीयो सीसो
हवन विध वल करै पोख दुज हजारां । पत्र भल
लाट सोव्रंन वीचित्र ओप । तण अरस नेज ईसर
ईस देवल तणै । रिपु अलंब जु तप ताचा रोप ॥२
अध पतो नेत बंध लखां द्रब उधमै । सखां सिस
भांण कर रांण अस्ता संक । हेल जात एक लींग
धांम जग पत हुवै । केत आचार जुल । चढै
नीकलंक ॥३॥ पुंन अखी करण निज नाथ वालो
प्रगर राम भल कीधो देवल सपर रेण तेण
सिव धाम धज उंड धारी पतां । भुयण जसवात
अखीयात भीमेण ॥४॥ गीत ॥ साहस पलाल जी रे सिं
रे कहीयो तिको जाहरां उंड का मारै ताखड़ो ।
चित खीलिंद सौ सीयो नाहरां चाल । करै कुंमा
पतां हथपलां भार कै । सवा मण मोतीया ढेर
सिव लाल ॥१॥ इस रे उधरा काज करवो हुलस
न्याय सुपै धरा उदै पुर नाथ ॥ हाथ सैर लीया
सीस नह हेलीयां आ हेलीया सीस भद्र जालीयां
हाथ ॥२॥ कैल पुर श्री हथां पका तिलक सिर कढो
मोतीयां तणां चाढै अखित मूल मांगणां तणी मुर
जाद किम मिटाड़ै । सीधुरां पछाड़ै जीसो सादुल ॥३
विरद व्रप भार भुज चरण समरथ बणै । चीत
उमंग धणै किव का सणै चीज ॥ सिवो नव हुयो
गज भंज सुसबद सुणै । नव हुयो सिवो अव जर
सुणै बोज ॥४॥ समत १८८३ रा असाढ सुद ३ प्रदो
गीत:- श्री दीवाण भीम स्यंघ जी रे धाढ किसना रो कहीय
जात खुडद गीत ॥ सांसण गज बाज दरब लख
सांमा । पेख कुरब पातां प्रमत । जाचण सुर करण

भीमा जल। चारण तन चारण चरत ॥१॥ जोड़
सुकर बोलण जीकारां। कोड़ वगत धमरी करण।
वरण चहूं प्रम नरलो वालां। ध्यावै सुकवी तन
चरण ॥२॥ होय भलंब बैठा गज होदां। देखै लो-
किन दखूं दरस नागां चढण नाग नाग चहा।
ईहण धणा वंदै धवस ॥३॥ धांकण वार हमीर धम
निभा। गुर भूदा गहलोत गुर। भीमे त्रलोक सदाई
भूरा। हापां भोक हमीर हर ॥४॥ गीत दीवाण श्री
भीम स्यघ जी रो मढ़ूं महा दान जी कहीयो-
गीत:- भालां भकोलै जेंगाला भांण गिर दांरा केस
भोलै। खंजरा कटारां बाढ चोलै खुरा सांण॥
रैवंता काढी धमीड़ जरदा चाढीयां रोलै। केण
माथै भीम सीघ उतोलै कैवांण ॥१॥ वज्र को लो
कबो गुड़ा केस कौ मोकबो वाण। सेर हाका
लीयो धाला रोक बोस रैस। भूको फिलंमां
प्रलै काल कोकबो भालो। पगां प्रथी नाथ वालौ
भौकबो पंडील हर रौ बीर हड़ुजा हाल राज मैं
जौणा रांणी। बोम गोम वढै मैघाणी बैराक पढै
पाठ बीरांणी चीतोड़ धान चढै पांणी। धर लाणी
हढै रौस उकढै हराक ॥३॥ लारै राव जाती नवड़ा
रैला बीन लगा। लारै वगां बीजा जगा चरा रै
सुवास। चेट दुला हींद वांण श्री राण भरोसे
चारै दुसैच्या श्री हुपां केण चू चंद हास ॥४॥ कला
सैंडा पणी हाक डाक हैबायणी पासै॥ धायणी
गीचाक रूद गलासैं धपास। पाना सीधू राग
खला डलासै बीजला घूटै। बीजला भलासैं
भूंसे कलासैं वांणास। पजो संगीद हाबो प्राण
दलेसां सुकरौ जाबो। घुणबो उकरो चवां धवां
भीम बाप। तणी नै हणबौ जणी भसभा भूख
रौ ताबो। दुबै कहौ रूकरौ मुणबौ हींदू नाथ ॥५॥
चाचरा धमुंभ साम खड़कै खपरा चड़ी। जोच
दुकै चड़कै धढंगी चाम जोब। दुलै चातु रंगी
फौजां कड़कै धढगी तोपां जंगी हाजा॥ धायणी

जडै जनेव ॥८॥ पनाली भालरा हराप लारै आतंक पैलां। खाला अजाल रा कौर मलारौ खुमांण। धोका फिर मालरा, लंकाल रान लारी धुजै। पाल रा नीर ज्यूं हलो सतारौ आपांण ॥७॥ पोर पत भीमेण तणी निज पारख दीसै आरव अंगा हुवै। दरगह फरै ढोलडै हुतो डल ॥१३॥ गीत धोये सामोर जात वेलीयो। चूंडावत अजीत स्यंघ जी रो आढा किसना रो कहीयो। कलम परे मैं कह्यो भाई कुच जी कहायो समत १८८२ रा चैत विद १ सु के कह्यो गीत ॥ धारे ध्रम सांम खीचारे कुल ध्रम। अह निस रचे उपाव अनेक। मह मेवाड़ ग्रहणो पर मुख। थांणौ अजे भुजा बल एक ॥१॥ आठ पहर अण खंडत ओधम जुध रिम गहर खगां झट झाड़ धण जूझै डवालो नृप धर मह धूंडै वालो मेवाड़ ॥२॥ रखवाल मल खवनाड़ अजावत खिच आखाड़ डंबीयै खोड़। पात लीयै सत चै सम ध्रपमी। आंणी खैल चै धर अवीह ॥३॥ बिजाल अकल भंज दावाली। लाखी मुख कीरत कथ लेण अरक सूर साखी अग जीतै। राखी भोम लगै धर रेण ॥४॥ गीत रावत दूलै स्यंघ जी रो आढा किसना रो कहीयो गीत ॥ पोर पत भीमेण निज पारख। दीसै आरव अंग हुवै। दरगह फर ढोलडा दूल्हो। हाकां वागां राव हुवै ॥१॥ महपत दूसा धूंड माल्हंतां धण सुध वर जोण घडै। कुलहण वण मकडो रह रंतां। खिवे चीना चौवडी वडी ॥२॥ सुत गुलाब दरबार सांम चै। धीरज संग गीरमेर चडै। रम रंतां सुण बाहर ढोलां ॥ खैंग हरोलां मोहर खडै ॥३॥ धम चक दूलह रंगी तै धारां। सारां धाव सरी सखै नर पत जाण परखीयो नांणौ। रांणो वागां हाथ रखै ॥४॥ दुहो गीत मुला साईया रा कहीया ईडर रा राज कलांण मल रा दुहा। मन तोनै मील वाडा आगै उभाणो करे। आडा ईडो थाई कंकल धणा रखीलाण मल ॥१॥ गीत - आखेवो भांण सं देत अमहीणो। ब्रज आया कैम वलीयैं ॥१॥ अनड

नदी को इहग आसनो ॥ दुकल नदी को दुरीयो । गंग
सनांन करण गाढा गुर । आवै जो ईडरीयो ॥२॥
रपण समो भ्रम सुजस अदैवा रैल जोधणी
अम्हांणो । गिर भेट वालमी गोवर धन । कहा जो हैं
कलाणो ॥३॥ गीत मधुरा दुरसाजी रो कहीयो

गीत:- आखर जोडन शिव राज अमोलख । वधो सवाई
वाडी ॥१॥ राव रांणा गुण कहे रीम वण । पाते कीन्ह
परीखा । भैला हुवा चारणां भायां शिवरा भेत
सरीखा ॥२॥ शिव जन कीया छत्र पती कारण । पमंग
गांम गज पाया । भांया जेम चारणां भायां ॥
उभय्या वर उपाय्या ॥३॥ दुहो ॥ भायां खांग पूरब
भलो । चारण गुर धर देस । सब राज वाडी शिव
पुरी नर लाभै गज नेस ॥१॥ गीत ॥ आबू री आढ
रोप जी रो कहीयो गीत:- वादल लूंबीया बोह
वालर वूठा । चीहूं दस वेला छायो । मेहा जल
आयां मत वालो । अरब दीय्यो मद आयो ॥१॥ बरसै
सिखर नीभरण वाजे । धाढे वादल गरज थीयो ।...

गीत:- चहुवांण दोलत अचल दलेल अचलोत गांम
पास खेड कांम आयो जी रो आढा किसना कह्यो ।
श्री दुरबार रा हुकम सुं । दुहा ॥ वेसे रीव केवाण ॥
ऐकै दोलै उकढे । पांच हजार पठांण । ~~पर~~ पर
ठांमे कियो हट ॥१॥ गीत ॥ जागडो गीत ॥ चोवल
लूकियां असहां दल चाले । हाले जूथ हलारो ।
रैण मझ चोग जौ रूप रहीयो । दोलत
सीध दलारो ॥१॥ लड जखूल बि जोध खलागै
कल हण आगै कहीयो । अद ज्या घरे चूडा
वागै । भागै किम संभरीयो ॥२॥ फोजा थाट
दलेल फिरंतां । जुध अठेल नग जूटो । दूजो
फतो वाढ जवनां दस तिला तिल तेगां तूटो ॥३
शिव निज पणी जागत सीस दन कर । चढीयो
दोल खलां दल वाढे । धाढे जल चहुवांण ॥४

गीत:- रावत हमीर अचलजी भदे सुर सुं चढे नै
मीणां सु झगडो कीय्यो नै श्री दीवांण भीम

स्यघ जीरी नजर मीणां रा मायां री लगड़ां भराय
नजर मेली जी खोढारो खाढा किसना री कहीयो गीत
प्रथम सीलह सभ हमीरै भडां पर फेरीया । सत
करे फेरीयां गीरां खोडै । घर त्रांबार फजराट पर
घेरीया । घेरीया जनेवां बढ खोडै ॥१॥ गोंग पाखर
भणण हजारी तड़ छोया । रोल मुज वड़ छीया
रयण राड़ । कर मद्दर थाड़ बीलो यग खेत झड़
छीया । थड़ छीया पुंड रज भुजा थाकै मरां भडा
तन दवा हू काढीया भेंडा रैण गाडीया औध
भालै वाढीया नेखादां मैर वालै ॥३॥ लावड़ा खलट
मेवा सीयां लरायत नाहरा भडो छीगे । रमै खग
भरायत तो रीझी हमीरा । भलां जो परायत पटा
चौगै ॥४॥ <u>छप्पै</u>:- रांणा सांगा रा छप्पै । डबा गोरीय
गुर गुजरात । सोधि खिल चीकत्र खिनव भर
मरी रैन थंभ । भोकि ढिल्ली जौ दिनव । जले
संभीर अजमेर । पोत नागोर वत कवर । रपह जोते
जालोर । उग्र जसवास सपत सर । भनि राय
राय मल्लह सुतन । ख्याल वक्र रैक रीव रत्नवय ॥
संग्राम रांन गढ चीतवर । यह मद मलवच्च कवय ॥१॥
बागुरी बल ऊढयव (बागर बंचे सो बल जोर) खेत
गागुरनि महा रैन (गढ गागु रण खेत्र) मांडौ पति
सीभ सैन । जोर आप उत बग्ग बन (सांम गाहे
रणां रा बाण रा बाजार) बाक्रै नर बद्दु । मांन (मांनु
बौध्यो) आज़ा री खिनव । सबर मुदै संग्राम लाढु
मेच्छ सिर दिनव । भनि सुकवि राय मल्लह सुतन
हेदू हा खवल वाहि रन । संग्राम रांन सिकार भिर
साहि बंध मिल्यव उसरन ॥२॥ समत १३५८ सावण सु
रैण थंभौर हमीर चवांण काम आयौ साको हु
तेरह सै पचास आठ सावन पचै सर । कवि कुमिव
हम्मीर । चढ्यो अल्लाव दीन कर । भनै राय खुमान
हाव पन्न हसौ दिन्नौ अढहतर कोलेग । हसै मंगल
गानि रलेस रलेय । संग्राम रांन रैन थंभ गढ

लगा हुदु हिंद बांन कीय ॥३॥ किम किम सुर
पति सुन्यव। किम जुपा याल भय वजस। यह
अपुब्ब गम नहींन। किमैं कवि करहिं कित्त
रस ॥ हनी वग खग्ग खुमांन ॥ येक हीर लीय
जब्बह। गालिक नवै हीर चंद। कब्बौ धर धर
फिर सब्बह। सौ पन्नग पुर। अंमर पुरह।
चल ईवतरा मल्ल सुव। संग्राम जु बंध्यौ
साह रैन। सुत तीन भुवन आंकप हुव ॥४॥
को मालव दल मप्पय। कोन मह मंद गहि
मिलय। को गुजरात रहिगाहि। साहि संमुख
गाहे हिलय। को लोदी लरय। कौन आगरै
प्रजा रय को बाबर कह हटकै। बहुरे पड
वाल गैला रय। भनि राय न्रपत मलह सुतन
तुव उर अंग तिलंगवै ॥ संग्राम रान तुम बिन
खवर। पते साह को अंगवै ॥५॥ गुजर ईम माल
ईम। दिल्लि कनवज्ज कुंउ खाने। ईवरा हीम
साकुलिल। सांमिध धन मकन मीर हाने। गंग
जमन ध्रत मिसह। फगाने ग्वालियर पुब्ब कर।
सत्तय कोलर लारि राधे उरा जस होम हर।
भने राय न्रपति मल्लह सुवन। च्यार साह
पाहुति कीरा। संग्राम रान रैन जग कर।
भसम ईस अगह चीरा ॥६॥ यक्कलीय जालो-
रमक भर हटै चंदे रीय। उरा धरा मुलतांन।
खान मांभो लागि फेरीय। दरीया सौ हद कीया।
उभारे कोउ करै न केदर। लेतो परवत माल।
मारि लीय बीच सिकंदर। भनि राय न्रपति
मलह सुतन। सरन साहि धर अंग वय। संग्राम
तपै गढ़ चीतवर। येक छत्र मही चक्क वय ॥७॥

१२८

जिहि मुख बर बल्लयउ। विरचि सौर मुह ग्रहउ। दस
अंगुरि मुख मिलिय। अनि पग परोत छुटउ।
पीठ कुलि मुकि पब। अदिन दिन परो
दुहिलब। रखत बखत अरु तखत। लुटि लेगर
गए मिलब। कंचन कचौरि तिहि कर मुगति।
तिन रूप निरूप कील दियौ संग्राम रान
कवि राय भानि। साह बंध दुरवेस कोप॥२॥
जुगाद अपोग सुर तान। जीति नहीं कच्यौ
अप बल। जुगद खेलचि महमुंद। जोरि जोरि
जुथ नालि नव। जीहि लिनव तिहि कर। खग्ग
पर उधन दिनव। भानि राय नृपति मल्लह
सुतन। रानि निसान नदोउ अपाउ हुव संग्राम
रान अजमेर गढ। धाय घेर मत इल ... १४॥
सेल संडासी कीरण। खग प्यन करीग रंग रस।
करे अप रीनि अपीर सीख। साहिर अरि करीग
मार बल। चौंक सद्ध नीसान। खांन सब कहि
सु किनब। सार गहत सुरतांन। सुलौं जीवत
धर लिनव। भानि राय नृपति मल्लह सुतन।
लीहाला कुंजर कहर। संग्राम रांन महमुंद दल।
आवरत्त वय कह पहर।१५। खांन मालिक उमराव।
साहि सम हर दल सभिग। तबल ढोल
नीसांन। सबद पंचौन कहांब जिग पर साहि
मुरतबा। चौंर ढीर छत्र अंडबर। है हीरा कर
जरित। तखत अंबर जर कंबर। यत गैंन सहित
कवि राय कहि। आय बसाहि लंन कहं। महमुंद
बिलानौ बुंद जिम आ संग्राम समुंद महं॥१॥ जो बा
मन तोहि कहु बल जु बाध्यो कपट करि॥
जो दत कंधर कहू। ईंद्र बध्यौत भाय चरि।
जो विक्रम तोही कहु। अरूनु बध्यो बाल पारौं।
जीव पीर कहु। साह बध्यो धर अपमैं।
भानि राय नृपति मल्लह सुतन कीय ...

पिथ थापें उथोप। तोहि थापे उथापे सोधिर कोप। ढाहि ढोहि गढ दुग। ढाहि ढह रान दुग्ग दोप। जो जग गोरं अनवज्ज ढाल दिल्ली धरण्यां जव। हिंदु तनिके तिसर छत्र तांनी इवरा दिम भंज्येन। भाने राय व्रपति मल्लह सुतेन। कंग खग मोक्ष। मल्लो यव॥ नन अदु रकीयो अरि है नकौ। सह बंधन सोगन लियव॥३॥
गीत:- बूंदी रा रा अरजन हाडा रो॥दुहो॥ बेढे गढवां माल गुढो जिम उडो सला। अाढो तै केरमालो। ऊंचौ चढ हाडा रजा॥१॥गीत॥ पह अचरज पयो प्रभु लोचन मुर। सुर पणौ बौह जोम सर उडो सला बादल जिम अरजन। अाढो खागत बीज कर॥१॥ सह जग अचंभ चित्रागढ तालो। अातस बाजो पांग ईम हुवे पथर आभा जिम हाडै। तेग अाढो दामणी तिम॥२॥ व्रपो अधंग चीतोड पलटता। मिले अराबां अनंत मुख। वहतां चाढ सघन जिम नर बद। रुक संभालो नडत रुख॥३॥ भव अवसांण चीत्र गढ भिलतां। सुरंग अपार वडे अवसांग। पड सर सघन चालोयो ऊपर। चमको बीज दुजड चहुवांण॥४॥ भ्रम भुरी भुयंग चोटी २ हरी दोनो सुवो नाक हरे सिंघ तो करि ३ हंस पंधो चाल ४ सोसे चंद सो मुख ५ इसी सत्रीयां। सो सह जनन कियो सो सबि राख होय।
कवित छपैं॥ चरित यक चर दिठ। इंद मुंदय नैनन मई॥ किंम। सुरं का सीर रात भ्रम सुं भय। सुर सोर जल रत रमूं। स्वेद कालेंदी नोर तेम। तुरचो नम गाह बहर। सव तास सुरज सांच्यो) वल्लभ उतावल धानई। मापा भरवा नै नंद केसर) कनक वरन कजलड(समणा रा मुख स्याह) स्यंघ स्थान सीदिया भई(नाहर जेस भड भाग स्पाल रुप) भाने राय रांन संग्राम सुव। उदय स्यंघ दुजन दवन। भ्रम१ भुयंगा २ हरी ३ हस ४ सोसे ५ पंच यक ब्रह्म रचन

तुरी तेज पर हरई। (तोड़ा लो थो लोथा रुधार
सुघोड़ न चाल माथा फाटां सोर कमल पाल्यो
कमल मकुलित भय उतरइ। गायन ईड़ उग चव)
(चन्द्रमा उग्यो) ईस विल सान चित मइ (माथा
फाचरा हुवा जीसुं इड़ माल न होय यो कारण) स्यंध
किमै दुमनइ (हाथी बोहत अवा सो काई खोसी) (सिंघ
भय चंचन मिलई (वेग तर सु तरे पोंचजो ताबै)
हिरन उग दुबलइ (हिरणां जाखो हाथी सारा
मुवा जद नाहरां मैं चख रख्या) काग कालियल
कर फुलई। कागला रै मांस कोई दिना तंई घणो
जीसुं राजी) भानै राय रांन संग्राम सुव ।।
उदय सिंघ पिख्खत नयन। चंदन सुचंद चकोर
तर। यक राय कारन कवन ।।२।। जुतै जुटिग खुमांन
सूर सामंत हानिग रीन। तिथर चाहिन नैचु
निंप रींग। ईस संग हिग सीस खीन। जबलें
गुंथिम माल चंद हर हर खीचे तमइ। अमी बुंद
भरव रीग। भरम उपज्यइ एक तरा। भानै राय रांन
संग्राम सुव। उदय स्यंघ अपीर सरवन। आरि
गंग गवीर खिडुरे पथल। हर विलावे कारन कवन।।३।।
गीत :- तो पुर रा घणी राजा अपजन गोड़ सै उजेण कांम
आयो जिण भाव रो कहीयो। गीत पड़ीयो नइ
चार नभ खीयो पंखीयां उपाड़े जालीयो आग।
अपजन गोड़ तणो सारो अंग। लड़ सांगयो लोहड़ा
लाग।।१।। खेत पड़ियो न पला चरां खाधो। पावक
राख कीयो न प्रजाल बोहल उत तणो तन
बहतां। तेज उंचो हर गयो रण लाल ।।२।।
गीरीयो चरा नव रंगे ग्रसीयो। दावानल नइ
पंचर दहीयो। पाल हरे अपसरा पाड़ तो रज रज
चारां विलग रह्यो ।।३।। पल पल चर सुर
मुख हर अपछर। जोवा तेहण वासते जग
वाय उडे अमरा पुर वसीयो। रवाधो घर में
कहै सग ।।४।। गीत दुजो ।। उचार मेवाड़ा कोई वात
उजेणी। आयो हूं दल आगा हवको कलइ दुवंत

हींदू भडीया कुण कुण भागा ॥१॥ कइ कासी
दंत मासा कोई । वासा वीच न वसीया । रण
चाला हुम कैरव ताला । लडीया कुण लसीयां
नम रासा जसवंत नीसरीया । ईम पंथी उचरीयां ॥२॥
अरजन ओड़ तणा रीस ऊपर । खागड नागा
खरीया ॥३॥ भजीयो कई वयड रामत । खेल
तज ओड़ न खड़ीयो । वीठल तणो अचल जुध
वारां पढ चारां रूप पडीयो ॥४॥ रेण वारबाण
करै जोवै रैव रीव रुंड माल संवारै । जोगा
हथ अपरा जोली अपछर लूंण उतारै ॥ ५॥
कमाल – श्री गुरु गण पतिए देवता न्योनम: । अथ कमाल
रुपग । दीवांण श्री भीम सींघजी रो आढा
कीसना रो कहीयो ॥ अथ कमाल ॥ श्री गणपत वरसौ
सुमत । उगत जुगत अण पार । गुण गाऊं गह
लोत गुर । रांण भीम रीझवार । रांण भीम
रीझवार । उजालण आहड़ां । पाणी रजवट तणौ ।
चढावण पाहड़ां । दालद दुख दुर कर दुवै
खीत तीरीझवौ । गुण पत गावण जैण सुमत
खीत हीरीझवौ ॥१॥ सक बंधी काया खीलै । आप
वगसी खोयै ॥१॥ सक बंधी काया खीलै । आप
जौम अनुप । दुजौ पराई जागयौ । समर तणो
सारुप । समर तणौ सारुप भूप बल भंजणौ ॥
गहेड़ गाडौ लाडो कीत अगं जणौ । लोह
लोढ रेण वार पार सौहड़ा लीयां । छत्र धर
चढै दह दीह । सीत सक बंधीया ॥२॥ खाग
वाहै खेतल खीसौ । है दता वार हमीर ॥ मोक
लण आपाण भर्म । सीध अवसांण सधीर । सीध
अवसांण सधीर । नीर कुल चाढणौ । बीजल दांन
सजोर । रौर रीम बाढणौ । अपहड़ अथ वा अरेहे
अगंज अनहणौ । खग वाहे सीसोद वड़ा बद
बहणौ ॥३॥ पोह कुंभो कांमत पढां । गढां गढां
सिर गल्ल । साहां पड़ गाहण समर । ढाहण
नेजा ढल्ल । ढाहण नेजा ढल्ल । खत्री गुर
खारतै । रीम दह वढ़ करे । अलटुं लारते ।

धोला ईंद सरूपा नरेंद्र अदे हुऔ । रजेण तालै
भल लार दीना उर जैहऔ ॥४॥ जेत खंभ अण
पाल जुध । पाल खेत्री वट भूव । ठा ल
हींदुवा धुर धमल । रायां माल सरूप । रांण
राय मल रूप । भूप ईल भल हलैं । लंगर
पोषण लाज । खेत्री वार खल हलैं । ~~हलै~~ दीयणा
भंज अडोल । दुजोयण मांण रोरैं भीमा जल
रांण । भांण हिंदुवांण रो ॥५॥ सांगा सो नर
नाह सुज जड़णो साह जंजीर । सुजस काज
पातां तुलस । राज दीयण रिण धीर ॥ राजं
दीयण रिण धीर । वजीर मैहसरो । पावन अद
अन पहां भरावन पैसरो । गुर गह लोत अांज
अंजेस कुल रतन हूं । तांमै हींदु सथान मोसरो
तेन हूं ॥६॥ उदल सारीसो अनड़ परखण भड़
अण पल्ल । रो अण उड अचल्ल । जुध मंड जोधणो
राडां खेवण हार पहाड़ा पोषणो । बींदु परबां अज
वाल । लखां अद लेवणो । हमला टला हजार खेत्री
गुर खेवणो ॥७॥ पातला जिम देसां प्रगट । रचण
दलेसां राड़ । खेत्र वट दखण खाटरो । मह रखण
मेवाड़ । मह रखण मेवाड़ । झाड़ खल खग झटां
टेलण खंदां धार । तोल गुर सांमद्रां राणो हैं
धर रोल । पद्धर नारा जीयां मूंढां गुर मैलक
सीधुवां जीयां । धम चक्र करने ढवण घरां
अभ राजसो अचल्ल । रखवण बाजी हिंद रो ।
मामो हेकल मल्ल । मामो हेकल मल्ल । भीम
भाराथ रो । खेवण हमला खत्री । उथमण आपरो
बैरा कां अवखल्ल गई घर वालणो अरक वंस
अवतंस वंस उजवालणो ॥८॥ गीत दुजो ॥ करने
सरीखो करन हर । चालग नीत सचाल । धजा
बंध साबत धरम । प्रजा तणो प्रत पाल । प्रजा
तणो प्रत पाल । लजा रज रलोपणां । भूपत
धाहर धीयम जाहर औपणां । अवन भागवत
रूपा । ~~[illegible]~~ भगत डर साइकों । राणो कुल वट

रीत सना तन राइणो ॥१०॥ कीयो भीम जग पत
करां । जग पत रखण हार । जगपत पोहरै
जागीयो । श्री जगपत अवतार । श्री जग पत
अवतार । उद कूं अपणो । वगसन कोड़ पसाव ।
कुरंद बादूणो सजड़ा करे सुपात कुरबा पाटबो ॥११॥
चूंप टणो साहा धरा सुज ध्यारा सुभाव । कमदां
जोस दय करण । ~~राजसु~~ राजड़ रांणो राव । राजड़
रांणो राव माल पुर मारणो । परण मांग पतसाह
चीगे ब्रद धारणो । रचणो राज समंद । उदयां
धारखो । सुज रांणो भीमा जल राजड़ सारखो ॥१२॥
अज वालण जैसो अमर । सांगो जग पत सूर ॥
पालल विरदां ओपणो । अडर धरम अंकूर । अडर
धरम अंकूर । नर रजवर नीलै । अंग पोरस
लख अराह पतंग जिम प्राजलै । पोरंग भम्र
तेन राव सधीर अचललणो । रायां गुर अण
रेह सत्रां डरललणो ॥१३॥ जग पत घर वाहर
जमीं जाहर जीध्यार । भारसो नाहर उपनो । धाहर
रखण हार । धाहर रखण हार । परखण रावतां ।
जेज लड़ रखे दुरंग । असर खड़ आवतां ।
ताव्ली घर आपाणो ~~बातमी~~ भुज बल धूधड़ । ताली
हेकण हाथ वजाड़ीता खड़ै ॥१४॥ अरसी घर
लीधो ईला अडर भीम अवतार । सांगा जगा
हमीर चा । भुज झलला जस भार । भुज
झललण जस भार । न आरन अरखणो चीतोड़ा
चीतोड़ खीरद्द चहोड़णो । रीझां समपण कोड़
अरोड़ा रोड़णो ॥१५॥ पोरस अस तैव साचां परख ।
साचां अरख पचक दीमा सुज घण नामी सर
~~जौह~~ जौय्या । नामी सइजां भीम ॥१८॥ नीलाला राज
से जुनो दारण जमीं । नृपत खाटण नवो । लोमी
खिर दास जस खेत्री वट लाग रै । मुज मंड
झमीयो कंत । भरो रौ भागरै ॥१६॥ अत खग दन
पाणी अणी तैं प्रथमांणी तीख । रांणी जायो
नह अवर । अरसांणी आटीख । अरसाणी आटीख

भूप नर भालीया । खग जगयत हमीर । धीर खग वाजीया । हाथी हलका सांसण वाल हजारीय्यां । राण सु काजी ईंद्र प्रवण पत वारीय्यां ॥१६॥ माया पारखै मोहणो सूंप सुदाबां सीम । भूप पखियां तै सची भली । भली उधमी भीम । भली उधमी भीम पारखै ईम ईंदरा हुंरा जीतो हूंल दिवाकर हिंदरा दाटी कुरंम नायक (खन न्नप राजा) के मुख दायरा खाटी वाटी भली खित्री गुर खाटरा ॥१८॥ कीधु गमायो भीज कन धायो काबुं बेण । जास दल पारखै खग विलकुल खेव पेव वसे खल उच्चरै । सुण सुदतारां बात हाथ मूंछा चरै ॥१९॥ साचो मुहणां वेहणो । काचां सुंहणां काढ । पारख भीम साही प्रगट । मांना सही वाढ । मानां साही वाढ । परख माहाराण री । है भुज ऊंडा जेण लाज हींदुवांण री । पमंगा सोहला पाल भीम पारखिया । कोका साही मोहर । दुनीय्यां दरिखया ॥२०॥ जीव देह सावत जितै । पोरस सावत पांण नमैं न नाकी वेह खंड । रह भीम रौह नांण । रह भीम रेह नांण । रांम कुल पारखा । पल खिरदां चरण । मरदां पारखा । वारै पढीयै सीस धाव रेवाण री । दीसै साहस ईसो भीम दीवांण री ॥२१॥ चूंगाळी नरव चार । ऊठ गलै लोज हींदुं वांण भुजां जगा हाम्बुं खिरदा भीम लीयां कुल भांण । भीम लीयां कुल भाणक पारख भीज दिन दिन रूला वधांत रूप सिसत दोजरा । पीलोड़ी पीलोड़ खिरधा चाढणो । बांण नाप पराये रुरदां वाढणो ॥२२॥ खेवण राड़ खाटरा खित्र, के भाड बीर । मेवाड़ा भरचां मरदे । चाड़ा भीम सधीर चाड़ा भीम सधीर । खलड़ां लदणा । चाड़ा जले

वर हिंदु वांणां ढालक। साल दले सरा ॥२३॥ दू
रत वल वागा व्रहक। खागां खल दल्ल खेर
भीम भरोसै अप्पणो लीधो कुंभल मेर। लीधो
कुंभल मेर। उर नाराजीयां। कीधो गरद फिकुर
बिरद भुज छाजियां। खेत्री निकंटक राज
कीयो खल खोदिया। सादूला वन राव काढ
सीसोदीया ॥२४॥ तै खेवे आपद धरम। उरस
भुजाडे तोल। धर लीधी दखणा धरा। नव
लख नेजा बोल। नव लख नेजा बोल। बहोडी
बंकडा। खुल पाया ध्रज सैंण मिटाया संकडा।
जे खल जाल मकना जाज पुर जोर हूं तै
लीधो भीमेण खेत्री वट ले रहूं ॥२५॥ रांणा
डुरडै रायपुर पाणा दृढ धर पाय। राज नगर
कुंभर दुरंग। तैं लीधा खल लाय। तै लीधा खल
लाय। अपगंजा गंजिया। भाड खांजम घेरक। बापू
भंजिया जे अहण गंजां गंज। अभंगा भगला।
भंजिया भीमेण त्रिहुं मंगल ॥२६॥ बाग नाथ
भला कीया भीम सतेज। मुलक जमावन
री बंदगी॥ सामी भीम सतेज। मुलक जमावन
मेलिया। हे हीव गण अंगरेज। ए हीव गण
मेलिया। महा हद मेलिया। तुरक दखणा ज्या
अंगरेज। महा हद मेलिया। तुरक दखणा ज्या
तोड। अठेलां हे लीध्या कासी पेंजर जडे। पठाया
पेसुना। हुप जोड तो अपौ रहै हाजर हुवा ॥२७॥
राज कीया भीमेण हे हैं कुंण जायण हार। जाणै
खोहिज जाजरो। कै जांणै करतार। कै जांणै करतार
टीम्ह अपर रूसटे। खो-कूंपो सो पंदन जांणै
दूसरो। माया भरमन खेत्र। जीता रूण रोगरी
सांम दले हर कुमार। येला छंद रणरां ॥२८॥ उजल
दील सूं उजालो। सूचां सूध सगरक। चतुरं हूंला
अप चतुर बांकां हुलां त्रंबक बांकां हुल त्रंबक
मंरम्म नरमियां ठा हुत ठज बाज। अनंमम
अनम्मियां। अठी अगन अनूप। रूप दरीयावे
रो। भुपण न पावै भेद। भीम सामा बरो ॥२९॥
अठा अगला कमाल रा दवालार पांना हुं अयार

धर हिंदु वांणां ढालक। साल दले सरा ॥२३॥ दु
रत बल वागा त्रहक। खागां खल दल खेर
भीम भरोसै अप्पणो लीध्यो कुंभल मेर। लीध्यो
कुंभल मेर। डर नाराजीयां। कीधो गरद फितूर
बिरद भुज धाजियां। खेत्री निकंटक राज
कीयो खल खोदियां। सादूला वन राव वाद
सीसोदीया ॥२४॥ तै खोवे आपद परम। उरस
भुजाड़ तौल। धर लीधी दरवणा धरा। नव
लख नेजा बोल। नव लख नेजा बोल। बहोली
बंकड़ा। सुख पाया अज सैंन मिटाया संकड़ा।
जे खल जाल मछना जाज धुर जोर हूं तै
लीध्यो भीमेण खेत्री वट ले रहूं ॥२५॥ रांणा
दुरडै रायपुर थाणा दढ धर पाय। राज नगर
कुंभर दुरंग। तैं लीध्या खल लाय॥ तै लीधा खल
लाय। अपनंजा गंजिया। भाड़ खांजम घेरक। बापू
भंजिया जे अपण गंजां गंज। अभंगा भगला।
भला कीया भीमेण हिंदु मंगल ॥२६॥ बाग नाथ
री बंदगी॥ ताम्हो भीम सतेज। मुलक जमावल
भेलिया। हे हिव गण अंगरेज। रह हिव गण
अंगरेज। महा दढ भेलिया। दुरक दवणा ज्यां
तोड़। अछेलां दै लीध्या कासी पेंजर जड़। पठाया
पेसुगा॥ हाथ जोड़ ले अवौ रहै हाजर हुवा ॥२७॥
राज कीया भीमेण री हैं कुण जायण हार। जाणै
खोहीज जाजरो। कै जांणै करतार॥ कै जांणै करतार
हीम्भ अपर रूसरो। खो-जूपो सो चंदन जांणै
दूसरो। माया महमन खैत्रा। जैता रुण रोपरो
सांम दले हर सुमार। येला छंद रणरो ॥२८॥ उजल
दील रहूं उजालो। रूपां रूप सणाक। चहुरं हुंला
अत चतुर बांकां हुलं त्रंबक बांकां हुल त्रंबक
नंरभ्भ नर भीयां ठगा हुत ठज बाज। अनंमम
अनभिमयां। अठी अगन अनरथ। रूप दरियाव
रे। भुपण न पावै भेद। भीम सामा वरे ॥२९॥
अठा अागला कमाल रा दवालार पानां हुं अग्यार

मैं पानैं लख्या छै सो देख लीज्यो पानैं म्यारा छै।
गीत:- श्री दीवांण भीम स्यंघ जी रो षाट किसनो रो खो
जात सुहणो सांणोर ।दुहा ।सोरठा। चैय रा का दय
वार। जुध भड़ खिय खिय लाभ जिम ठौ दीठ
सुद वार। भीम दुलास इम भांखवा ॥१॥ मगला दाता
मोह। खोल खनतो अनाद रो जग हेक चारण जोड़
भीमा जाल भिवहै भलो ॥२॥ सारा हेक सरीस। नड़
दाल मगला नहीं। पालसर रोप दीख नाग
ग्रहे पालै नोल ॥३॥ गीत जात सोहणो साणोर
छोटो। गीत में अन्यान धर्म मालोपमा अलंकार छै
अर्थ ईन्दादि दीठ सुमेर हरखै छै ज्युं दीवांण
भीम स्यंघ जीनै दीठां कवी हरखै छै। हरखबो
सारां रो धर्म एक छै जीसु अभिन धर्म मालोपमा
अलंकार छै। सरस मयोरां उपजै मोद मघ वांण
सूं रो हुलस भांण सु हुवै चकवां। तन मुदा
चकोरां चंद भीमेण तिम। सदा सुद नाद
हुलस सुकवां ॥१॥ हरख मन संत रघु वंश अव
तंस हूं। नीज हरख मही दय हंस नरखै। हणं
चीत हरख जीम राम जस गाव हूं। हरा जग
तेस हूं यात हरखै ॥२॥ वन चंनण चील खा गंजा
वीखीयां। अरक मुख ईखीयां कंज अलसै। उर
हुलसवै अवन दुवै पत उमा हू। हणं अम नीमा
पात हुलसै ॥३॥ अना दुनता सुकवां भड़ सोलख
वांण रो करन जस वांण परखो। भीम नीर धार
आधार किव भाग रो। सतूं सुद वार कर वार
सरखो ॥४॥ गीत पुतावत अजीत स्यंघ अरजुन
सींघोत रो वस हणो। षाट कसनै कहीयो गीत
गीत:- दुहा:- मिलै न रहै मोष दुरलभ अर नर
देवतां। साम धरम तर सींच। ईसो धाम
पावो अजो ॥१॥ गीत ॥ कदे न दोव्यो दूठ नीव
धणो कारज करण वरण धड़ः कनाट दुव
कानैंत। जनम लग साचीयो

तैल॥१॥ खोड भुज के अखल ग्रहो निर वहो लहो खर ध्रन पालण नीत। र्यैत वरत रहो देह भार खांवंद परण। धंत कंमार सीलरी अग जीत ॥२॥ कठण समरा मरण जुडे मरण करण का। जदै तन तजण गो लोक नर जायु। पोहते करग धुंड खाडो वालो पोरैपो। पावलो यसो जाडो परख पाय॥३॥ धरे रज मालरा कुल्लवटो लाम ध्रम। सर पढे सटो भव छोड रवैरण स्पोत। त्याग तन कालेका वास गंग तटी। जयै गुर केरे ध्रगो परम जोत ॥४॥

गीत:- माहाराज अभै स्यंघ जी रो चचवाजीया दुवार का दास जी रो कहीयो। गीत। पायो खेजायो दुरक सेर दीठो। जीसौ कैसौ पायौ। उसायौ दुरो दे पायौ रटै उभै राह। पाय्यौ भाय अपयौ लो दिली रौ जीतैं राज पाय्यौ। पाया रौ न पायौ भेद भोला पात साह ॥१॥ पांन पायौ अौरंग नांखे रात्रो जीको सौ पाय्यौ। साहि जादो रवैराय्यौ मचाय्यौ दला सोर। अायनैं ईलाय्यौ जीकौ अपुडो तखत नायौ। जौबौ जोधपुरै पायै दिखाय्यौ सजोर॥२॥ ~~सी~~ बीलू मालू लुटायौ खुसाय्यौ भोडुरंभ सानौ। जीकै पायै यरा परी दिखाय्यौ जलज। तराय्यौ अनैकां सोबां साहरा अजीत स्यंघ। अजमेरो धूरे के जमाय्यौ अमल्ल॥३॥ सनाय्यौ दिखाय्यौ पाय्यौ महा राज अभै सीव। नसाय्यौ बाजींद दरवां लुटाय्यौ नार नौर। सारा मिले नबाबां जेबाबां के समझाये सांरौ पायौ धंम कौ दुधनी जाय्यौ सौरै गाया तसा पढायौ ~~●~~ धुं कहायो खान दोरा पास। पाय्यौ ममा रखो लौनं बणाय्यौ पांभ। पात सारी दीरंगी कहावै तेरा पाया पांग। सारो सभा नै नूभां दीस आरो सरम॥५॥ जीत॥ माहा राज जसूंत स्यंघ जी रौ कहीयौ गीत॥ पात साह उभै संग सबल पकड़ी। ढोया दल बिहुवे

रज ढांण । राजा तीन पहर लग रहीयौ । रेहल
गीड है हीयौ थारांण ॥१॥ घातल चाय बाह नै दुजड
मारू साला वतो मुख । खग दांधा हर बीच रे हीयो
राजा हवल बाराह रूखा ॥२॥ हो करतो चलतो हाकलते
उचंडतो करतो खग साल रैर धँह जोधपुरै धेर
रहीयौ ~~चौ~~ तजा पीहर लगे रैण माल ॥३॥ गाजी
तणो जसौ हेकल गीड । सल उर नीठ कसे सुर तांण ।
बांक मनूका हुलतो वलनीयो । पाव दिखा लगायो
थापांन ॥४॥ गीत हर नाथ मोडणो तरो । मोती सर
प्रभु दांन जीलारो कहीयो गीत ॥ साहर पाकड
जंजीरां दीधा पापीय्या अनेक साहं । मडे जे कीध
खला का पीया आराध । प्रथी नाथ दलां नै जबां
साथ उपाडीया । हर नाथ एहडा नबाबां सीस हाथ ॥
मुदै जमां पती सौ हजारां सुधौ धरां माहे । सोम
कला बंधी मन मानै कोट सार । जोध वालै उ
धीरोद लाहीये चालो जका । प्रगो प्रत माली छती
उओ मौर पार ॥२॥ हे कंधे रोडा लौहां झाल दरीग
डुबे । चलै रग ताल खाल चू बोल चडाय । साद
कीधा वडो नाम जादी के अमीरां सुधो । गादि
माथै दीधो पंच हजारी गुडाय ॥३॥ उभो कदे
बांणास चलायो लोक सांचौ वालौ । गलायो दले
सांवालो मौण मोर गाह । डुरां बीद वजडे
मलायो चकै चाढ हाथो माथो डाढो सरे
रूलायो चोक माह ॥४॥ ~~गीत उदै पुर~~ खुद
वाद बिरोलै गैणा गतो ले बीर खत्री । धूक
वात रची जत्री चाढी पेस चाह । दलां खांडा
दोखी दाखी देत चणी हद । मोडणोत नोखी व
राखी थोभ माहि ॥५॥ गीत उदैपुर मैं मेवाती
री धाड़ो पडीयो समत १८८२ रा माह सुद ..... उ
सरहर बाहर चढ्या तो दूजै दिन गाम साथ
चोरां सु झगडो कीयो चोर २ मार्या चोर
बाच्या माल लाया

आढा किसना रो कहीयो / दुहो ॥ अथ सत इंद्रा उठ ॥
खेत लीध्यो मेवालीया ॥ पमंगा चढ ज्यां पूठ ॥
पोह अमरै पड़ बालीय्या ॥१॥ अधपत नाहर
अमरीयो / नाहर चढैव जाय / तेस कर जाहर
वोड़ जैं धार रस जका धाय ॥२॥ सेना
केना सामका / ज्यां दस अमरो जाय / हरख
सोक दीन हैक मैं दियैं जगत दर साय ॥३॥
कौ अच रज उमेद कुल / मड़ पत अमर मरद ॥
सांम धरम कज सिर दियो / वत्रहर कीया सद्द ॥४॥

गीत:- जात सुहास सांणोर छै ॥ गीत ॥ कलल वाजीयां धकां
पर छटी जागै कलहा तासा ओर हकीय्यां उकां
तासा / लार धजकां न्नपत अमर सा लागीय्यां /
उज वकां मालरी केसी आसा ॥१॥ कजर दीन
रात अथ ~~क~~ रातम अप राकां / दराकां खेत्रीवट
आव देहो / किय्यां वांता पुतन भीम साका डाकां /
कजा कां दरव रीहं सेहही ॥२॥ बहादर खूंण
कज भड़ा धर वीरीय्यां / करै अस चढ दपट
~~जोध~~ जिय्यां कांनै / दुवैं ओकायतां माल राह
मालो मालरी खुसाली नेहं मांनै ॥३॥ खेत छक
भीम खुजै सटै वधारां ॥ धुंवटै आप उज बिरद
धारैं तो सीसा वाहरु दुवैं राजा लडै / जडै धन
ध्याड़ वो केम जारै ॥४॥ गीतड़ जो मेवालां री वाहर
दोड्या ज्यां सिरदारां ६ मध्यै / बेदलै राव केसरी
स्यंघ जी १ धीधु दै कंवर लाल स्यंघ जी २ सोलंकी
राव माधो स्यंघ जी ला दुदै राठौड़ रूप स्यंघ
जी पंवार देव स्यंघजी सोलंकी मोखम जी श्री
दुरबार रो दौड्या यां ६ सरदारो रो गीत

गीत:- आढा किसना रो कह्यो / गीत जात पाल वनी-
साव भड़ो ॥ कौ धोरी अप कर रमैं तस्सकर /
ईडर रै भोलै उदिया पुर / कीय भीम हींदु
वांण दिनंकर / खेदा कीया रेल भड़-
वाहर ॥१॥ पत सेभर केहर पूचालो / कवरां
गुरला लोकल चालो / माधव रूप देव मद्द

रालौ। सोलंकी मोह रुमो रीपालौ ॥२॥ ताखा पढीया मीर त्रंबाला। वागा ढोल वीयावैं डाकां कैसां सोलर बीच रुनाला चोड़ै चेर कीया धम चाला। कर अंत बूंद मेर केर माले। वाढे कितां मोर बंध वाले। दुनीयां खित्र वर राह दिखाले। आया लूण सरीत उजाले ॥४॥ दुहा ॥ उदया पुर में आग मित लीधो मेवा तीया वाहर भीम दीवाण। भीर नाहर कीधा बिदा ॥१॥ किरर लालो मध करो। रूपो देव खरेह। सोलंकी मोह कोस पर। जुध रचाला भड़ जेह ॥२॥ चाडुवाणां आलो चुरस। चालर कंमध अचल्ल। पुर पंवार राठौड़ पह एकर जोध अपल्ल ॥३॥

गीत:- श्री दीवाण भीम स्यंघ जी रौ आढा किसना रौ कह्योयो गीत जात मिश्र वेलीया है। वेलीया री दुहरा चो-२ ने खुड़द भेला होय सो मिश्र वेलीयो गीत पढीयौ गुण सरब सार प्रथमीयो। पढीयो तिण मुख अवध प्रत। रांणो भीम तेण रीझायो। जीण रीझायो साहे जगत ॥१॥ भेद मिल रचीयो जीण भिन भिन रचीयौ सीता वर रसन। एक प्रसन कीधो स्वर सांभी। सौह नर पुर कीधो प्रसन ॥२॥ भाषा ग्यान सकल जीण भणीयो तिण भाखीयो सिंधुल तानक। पातल हरे कीधौ खुस अपरह। खुसलें कीधो सौह खलक ॥३॥ गुण भेर तार तणा मुख गावें। जे जग पावें चद अजार। रांणो भीम दुख रीझावें। ज्यांरी महिमा पावें मेर गीर ॥४॥ ज्यामें पैलो दुहो खुड़द रो। दुजोई दुहो खुड़द रो तीजाई दुहो खुड़द रो चौथाई दुहो खुड़द सामोर है।

नीसाणी:- मरतातिक के नारी कही ॥ साह फजर मुसाल बाके फौजू चढ़ी। मुंधू मूर मिंड दिंयू पुर रुची दढ़ी। बाग उठी फूं उड़ी यूं चख धूंनू मढ़ी। मारे मार वहार हरफूं मुह पढ़ी। आप भिड़दे अस पहान के बाग उकढी हाथ जबांन आढती हैं गरदन बढ़ी। तेग सेतनी सिपर जबाब अरवौ मुखढी। जाग रेत लीसे बूंगं सेवनी गन बढ़ी ॥१॥

गीत:- दीवांण श्री भीम स्यंघ जी रै चोड़ा नट रै नाच
दखारै खात सरुप भेला हुवा जद श्री दीवांण महा-
राज करोर स्यंघ जीनै बगस्यो जीरी प्राढ
किसना रो कहीयो ॥ दुहो ॥ तुरंद हट की भुज बाग
तन रपट की राग रचांवरो । अट नट की लैका अपर
पर नट की परमांण ॥१॥ भीम सजीला भूपरा । धरज
पंख नीला घाड़ प्रथमी प्राखा पेखणा । पांखां
लगा पहाड़ ॥२॥ गीत तरज बाज रुख सुघट
रंग सघट नेंग चेतर करर लैकां अपर हीटगई
काला । नट तणा चाड़ रुखवार भीमेण न्याया वात
नट तुरंग भीमण चाल ॥ ४ ॥ चाल पल दर ही
कोट खल गांजण । तड़ छूटल दर ऊ कोट तोड़
उपर चल दर चोड़ ॥३॥ हीदुवा तीलक वेधाड़
सांगा हरां । फाड़ चड़ उरर करराड़ पीला । तण
रपल घाड़ प्रारोह नीला तणा । नाग चुरा तणा
रपत घाड़ नीला ॥२॥ रुक रत नार रूण रूक भाजण
रीमां । निपट कस नार कली यार नांई । रैणरसवार
रंग जोड़ कायम रहो । तुरंग रुखवार जुग जोड़ लाई
॥४॥
गीत:- दीवांण श्री भीम स्यंघ जी रो प्राढ कीसनारो
कहीयो । गीत जात जागड़ो । दूहा ॥ दण करां दुहा ॥
पाणी (क) जुध (रण) सहजा (सुभाव) प्रगट दोय (बी)
कदम (क्रम) सम (सरीखो) देख । सं बोधन (भो)
संभव (ज) सरख ॥ करण सुभाव बीक्रम सरीखो-
भोज यो अर्थ है । प्रारख भीम उमेख ? करन ?
भोज यो अर्थ है । प्रारख भीम गण धनख मरख
बीक्रम २ भोज । जसो भीम गण धनख मरख
रुच प्रगर । सफर सुमन सिव सखा पांचा-
गुण सूरत मुरख (जैहो ढालरा फल सीव
भव पूत्र लाखो) एह भीम प्रारख ॥ ॥ जैरो ४
लाखो ५ रा पांचां जणा जसो गुण सुरत सुभाव
भीम स्यघ यो अर्थ है । दुहो ॥ सुधो बरस रोड़
भेला वसो । एह अनादू साट । चीगर वारण
भीम रचेत दिबै न लोलच दांट ॥३॥ गीत
गीत :- जागड़ो (तैं कोड़ा प्रगत काज चीयो तन ।

मुज ग्रध हमूं भलाय्या। कुंभ सनेह अभ नीमा कुंभा।
मन जाण मिदै न माय्या॥१॥ जग दाता स्वीय्यो भीमा
जलं। धण अंदना सेर बूंदा। तो चेत चित धड़ै
त्रप ताका। वडै न लालच बूंदां॥२॥ रचीयो तो दिल
अजल राघव। वल पीपा जुग वैरै सूचेत रूप वलण
अरु सांगी। पायो अद तन पैरै॥३॥ गंज बगस गैह-
लोत जगा हर। रेकप जाहर आगै। चौहद धड़ै
भीम चीतोड़ै। लालच छाटन लागै॥४॥ गीत॥ कोटा रा
माहा राव दुरजण साल रो भादा खुब राम रो कहीयो
गीत:- गंबरु बाज विकराल गैणा गोमंगा आवसां। खाग
दाबा यतां साब छूटी। लाग बूंदी तखत लोयंला
लगाइ आग जैपुर नगर जाग उठी॥१॥ दुबा मच्च
साय आकाय चन दुद रज जुड़ंता अराबा भाय
जागी। पाय बूंदी फतै संभरी प्रजाली। लाय
कुरम घरी माय लागी॥२॥ भीम ता टोम रजपूत
वट मह भड़। चूत कोटा तणो उपड़ी चाड़। जुम्म
बूंदी सम जवाल लोपा मड़ी। धड़ हुडी माल अकराल
दुचाड़॥३॥ उथापवां दलो उमेद धाये ईला। सवाड़ा
प्रवाड़ा भीम साधै। अगन बूंदी फतै करंतां उपड़ै
भुराड़ा मड़ै आंबेर माथै॥४॥ (ईण गीत माहे असंगत
अलंकार रो पहलो भेद है। कारज और ठोड़ हुवे
रज और ठोड़ है। गीत:- राव सुरताण रो आढा
किसना रो कहीयौ गीत॥ सुरताण दंताली खाग
खेला सैर प्रेम लीया पौंजर पहरेत। वल चर
पंखी आजे भरव पांमै। भमर आजो तीण वासै भम॥
राव सुरताण जाटै नमो रढ रामण। कलह हथा
मारीया कड़। भड़ चर भमर आजो जुध माहे। वास
बीलू चा आस वह॥२॥ कीस हूरी भूरी केर माले
तै सत्र उपर भांण तण। खली चल खली चल
वास अचूकत। गीधन छाडै नैण गहण॥३॥ मध कर
वासा लीनह मुकै। रढ नह जायै समल तजै।
राव देवड़ै कीधो। नैण चाचर। उभै वरग आडुडै
आजे॥४॥ कवित: बीका नेर रा राजा करन सींघ रो

कवीय्यां भवानी दास रो कहीयो ॥ पौरंग जेव अरक
खंभ चमू खिसतो रण । हींदु तुरक निवांण । सतु
जल लगो सोसण । जेठ तणा मध्यान । तेज करीले
हर तपंतै साहस जल सोखीयो । चितु चक्र तणो
चक्रतै । सूरज सुजाव सुर गुरु । ई खे जगत अंच-
वीयो । अन कंन राण जंगल धणी । धल मारे
जल धंभीयो ॥१॥ गीत पाटे अर खंध त्रकुण परगलां
अप वीया बेवै अतुल ॥ कुली यल मोडंस आप
तणो कुल । कंकण धग पैंतीस कुल ॥१॥ चढीयो जदन
जादवा चंवरी । जंगल पत दाखवै जग । मसतक
भलकै जोयो रीण मल । प्रथम अवर वंस
जके पग ॥२॥ मोटै आय तणै म्हाडे चां । कम धज
खिल कुल तै कमल । खैर खिव टाल फाबो नव
सहास ॥ जात अने दीयै जुंबल ॥३॥ केसर गढ परगते
कला वत । दुजा कंन ताहरा दत । खैर सेहरै
फाबीयां खिलखा । खैर खिल टाल फबै नवसहसां
उल उ खोट हैं । डौरै दुजा देस पत ॥४॥

गीत:- साहि पुरै रा राजा उमेद स्यघ जी रो । खडीय
बखता रो कहीयो गीत ॥ वगां आवर वय वन
माहा राज वरवतै वदन । सरो तर लेलतां
पांण अवसांण । नंगा पाते कुरमां नाप चलतां
नगां । खगां पत धयो अव छाड खुमाण ॥१॥ वाय
अर-अधक बीजोग जान वाजतां सिखर उड़
पड़े गज धजा सामेत । गीत राव सुरतांण
सीरोही रो-आढा दुरसा जी रो कहीयो गीत

गीत:- अवतार न ऊनड़ सल खन अरजण । भोज वजो
मह पाल नमांण । हूं तण वेला वड़ा तियागी ।
सुकवां थोभ थियो सुरतांण ॥१॥ लाहर (लाहनो
हील रजवूत) गेमर फूल न लाखो जवल वलू
जोगा ईत । अव पातां रण चीर कलो धर ।
पाल गराया राय प्रवीत ॥२॥ भिट पुड़ करण
हमीर नमो कल । हौं नग पूमौ चरु सुकवां
दातारा गुर भांण दुसरै । वारा थियां थियो

कला राय मलोतरो आसीया दूदा रो कहीयो गीत:-

रख पाल **गीत** // ऊभो एक अनड़ महा भड़ आडो। बीरत गुर सैत्र वाट वहै। पडीया मूझ पढै पालरती। कोट मकर उर कलो कहै॥१॥ राय मलोत कहै रढण मण। मिलो जकै घणा वाय मिलो। भुज साजै ताय कोटन मिलसी। भुज भाजै ताय कोट मीलो॥२॥ राव राणो मोहर राठोड़ दैण वर बांध भलो रहीयो। सिर साटै देवा सबीयांणो कलै पत पैहला कहीयो। घर वैह उड़ आप रो धाये। धाडी सेन धणो वटीयो। पहला कलो वढे रीण पडीयो। पढै अण कलो पल रीसो॥४॥

गीत:- ठाकुरां दुरसाजी रो कहीयो गीत:-

आखर जोड़णा सैत्र राज अमोलक। वधते सवाई वाड़ी॥१॥ राव राणा गुन कहे रीभ वण। पोते कीन्ह परीखा भेला हुवा चारणां भाटां सीव रा नेत सरीखा॥२॥ सिव जन कीया छत्र पती कारण। पमंग गांम गज पाया भाया जेम चारणां भाटां ऊभय्या वर उपाय्या॥३॥

दुहो:-

भाटां सांम सूरब भलो। चारण मुर धर देस॥
सब राज वाडी सीव फुटी। ना लाये गज नेस॥१॥

गीत:- आढ़ै आढा खीव जी रो कहीयो:-

बादल लूंबीया बोह पाल्हर सूण। त्रीहूं दस वेला छायो। मेहा जल आया मत वालो। अरब दीयो मद आयो॥१॥

समाप्त

—: गीत :—

= दुहा, सोरठा कवित्त आदि

—॥ अथ लुगाई आदमी ने लखे जो कागज ॥—

दुहा :— सोस्ति श्री सजन नगर ॥ पर खद हद गुण पूर ॥
हित अरजी मालम हुवै ॥ जीव होड़ हजूर ॥१॥
ओर कहा लग ओपमा ॥ आवै लेखण न एक ॥
केते गुण बरनन करूं ॥ कवी रसना एक ॥२॥
हेत चीतरा अगल वहो ॥ दिलरा दाई दार ॥
बालम थारा दरस बिन ॥ साले बिरह सुमार ॥३॥
चंदा एक चकोर है ॥ चंद अनेक चकोर ॥
दृग लगाय चाहत दरस ॥ वे उनही के ओर ॥४॥
गहर सबद मीर ऊंगरा ॥ मिल मिल बोलत मोर ॥
घन बरसन तो हाथ घन ॥ तेसैही दरसत लोर ॥५॥
चीत रंजन की चंद्रका ॥ जानत आनथ जोर ॥
सीतल मंद सुगंध सौ ॥ करत असह जुर कोर ॥६॥
छक छक जावत जीव चन ॥ दरसन पीय बिन दीन ॥
बीकल होत तन बेर बहु ॥ मानहु जल बिन मीन ॥७॥
जग हुला कारे जदीत ॥ राम फंद गज राज ॥
आदं बर नत जक उपबै ॥ राज देहु माहा राज ॥८॥
जान मोहि बीरहा जलो ॥ भयो भाकसी भोन ॥
चातक देत पचीता यहै ॥ लख दाधे पर लोन ॥९॥
रे चातक मत बावरै ॥ क्यु बोलत पिव कुर ॥
हेत जनाय फेर हो वहै ॥ बीज नस लहुबा कुर ॥१०॥
प्रीतम अरजी प्रीत की ॥ मो गरजी की मान ॥
पुर बिरह की लाय पर ॥ अब घन ~~बरसु~~ बरसइ आन ॥११॥

प्रीतम मुरजो प्रीत की ॥ अरजी परजी आप ॥
देहु पीव दुरलभ दरस ॥ तन को मेटहुं ताप ॥१२॥
छप्पै:- फुल थुल जीम फबत ॥ डुल जीम सबद
फुल होय ॥ कीयौ गमन अनुकुल ॥ तबाहे अत
दुल भूल # होय ॥ आरन सरब अकास ॥ कीयौ
बीरहा तन कारन ॥ हारन चीरन हरख ॥ मौद
मन ही मन मारन ॥ भूखत तमाम दुखन भर ॥
मित्र भये सब सत्रु सम ॥ सुन अरज
प्रांन बालम स्रवन ॥ मम हीत दीजहु दरस तुम ॥१३॥
सोरठा:- जौ नहीं दरसन जोग ॥ देहु मोहि संदेसो दसा ॥
बालम आप बीजोग ॥ नह चेहो सहीयैं जात नह ॥१४॥
अब प्रीतम भर भाव ॥ दुरलभ दरसन दीजीये ॥
जो बालम जीव जाव प्रीतम समर ज्यौं गमै ॥१५॥
पदमण भंवर प्रभाव सोन देत कछु लैत रस ॥
सो तीय जात सुभाव ॥ मरन हात रसे रीत मैं ॥१६॥
कर चर अरजी आन करो बे पीय मीलन की ॥
खाजियात बार जबान जीन सचे ३३ जाव सी ॥१७॥
लखियै आण हुलास ॥ महा हरख सुभ रो मती ॥
पहुचे साजन पास ॥ अरजी गरज बांन की ॥१८॥ संपूर्ण
अथ मरद लुगाइ कै नांम कागज लखैं जकरी ऑपमा
दुहा:- स्वस्थ श्री सजनी नगर ॥ पुर आनंद प्रमाण ॥
बसे जहें तन चिलमा ॥ प्यारी जीवन प्राण ॥१॥
चंच करी नासा चवल ॥ बोलत इम्रत बैन ॥
मीलिया बिरह मिरा वणां ॥ साचा दिल का सैन ॥२॥
गंगा जल री धार गत ॥ हिवडा ऊपर हार ॥
केहर भूखो गत कमर ॥ प्रीतम रे अंत पार ॥३॥
दपै कूर गंग खंज द्रग ॥ ~~प्रीतम~~ मंजन रे अंजन पार ॥
को प्रीतम बस करण का पढीयां मंत्र अपार ॥४॥
पाती मोहन भूप की ॥ बंचीयों भर पर बैन ॥
पर लख संगना प्रेम का ॥ नस चेहो दीय नैन ॥५॥
जद बीछडीयां जोय सूं ॥ गही नीद तज गैल ॥
आया सपनों हुल अत ॥ फिरैं बीरह रा फैल ॥६॥
कर सीना रायण करै ॥ मिलण रो दन मैल ॥

करै तमासा हसत कुच ॥ खासा खल वत खेल ॥ ७ ॥
प्यारी कुरद पीवसा ॥ अधरां रो मद अद्द ॥
जेण हुता ब्यपै जदन ॥ मन तन मै खुज मध ॥ ८ ॥
प्यारी करस्यां प्रीतरी ॥ बैठ पीलंग पर बात ॥
करां अरज जलदी करै ॥ राधा वर कुवा रात ॥ ९ ॥
मो तन बिरहा मार सू ॥ प्यारी छकीयै पूर ॥
गलबा सहांब जोगरा ॥ दोय तन जतरै दूर ॥ १० ॥

सोरठा :- अोल सोयां तर्स अंब ॥ प्यारी सुख आवै प्रगट ॥
वध तो करै बिलंब ॥ आकु बोजरु मुरुत अब ॥ ११ ॥
बैरण सकारां अक हेत वटै लाखियां हिये ॥
वणतो भ्रगुटी बंक ॥ रस मै ज्यां खटकत रहै ॥ १२ ॥
प्यारी रस अरग अण पार । लेतां अधर कपोल रो ॥
लागा अन रस लार हमै सरब दुसमण हुवा ॥ १३ ॥
प्यारी रस बिपरीत ॥ करता खेल वत केल मैं ॥
चीत नीज आयां चीत ॥ डूल जेम खटके हिये ॥ १४ ॥
प्यारी बीरहा पीर ॥ चीत मै लागी चालवी ॥
भर बाथां उर भीड ॥ मिलस्यां जद हौसी मजो ॥ १५ ॥
सल चढण नासाह ॥ चांद जद न आवै अबै ।
खत जावै खासाह उर मै बांध अन गता ॥ १६ ॥
कीधा कोल करार ॥ अल बत जीण पर आवस्यां ॥
सहस्यां जत रै सार ॥ खासा बाण खतंगरा ॥ १७ ॥
वैचण वाला अंग ॥ कद चुंबन खेडन करां ॥
रच रहस्या रत रंग रात दिवस दिल मैं रहै ॥ १८ ॥
मलसी जण दिन मेल वात चीत तन मन बिखा
वधतो चढसी वेल ॥ उण दिन भूप अनंद रो ॥ १९ ॥
आवै दिन औह ॥ संबत रीत लखियौ सुखद ॥
प्यारी दिग पुगैह ॥ यो खत हरख अनंद सो ॥ २० ॥
धुर कासीद मंध आगरो अंत भलो मावाद ॥
सो तुम हुम कूमे जोयै ॥ वार वार कर यंद ॥ २१ ॥

दुहा :- सारस बधक आलार करण गुलाला कोयणां ॥
पीधा भर प्यालार जनम कीधा जेडा ॥ १ ॥
बंका पण रस बोल हेक छाक दूणा हुवै ॥
चहरै छक चढ चोल ॥ अरक दुवारो आवीयां ॥ २ ॥

जो आसव गुन जाण ॥ रसीयां पीवै राजवी ॥
कै सरब दुर वांण ॥ और नसा ईण ऊपरैं ॥३॥
भैरव चंडी भोग ॥ यैं लागा लागै अवर ॥
जिण आस वरैं जोग ॥ रसीयां कोयक राजवी ॥४॥
चारैं गिरजा धुप ॥ तू जेसड़ा सांमद तण ॥
रैंम जल सरा रूप ॥ ऐक पदारथ कौयणां ॥५॥
ढोलियां आस वढाक ॥ आवैं रीझां उदर री ॥
वैब पदारथ आप ॥ बारुन पीयां बांरता ॥६॥
ज्यानैं रंग हजार ॥ बार यिवे भड़ बंकड़ा ॥
चवाली तर वार ॥ जोंवैं सरब जिहांन मैं ॥७॥
अलबत पीतां आवसी ॥ जद माचै रत जंग ॥
मंडण हरख हुगां मरा ॥ रंग है आस बरंग ॥८॥
तिका दारु दारु तणी ॥ आवैं पियां उमंग ॥
मौजां देणौ मारणौ ॥ है सांमद तण रंग ॥९॥
दुहा:- आसीस गाफ साहबरी किसना खाद कृत दुहा:-
दायक कवि हय गय उदक, बहु जस पाय वजीर ॥
अन मन माय वंजग जुरे साहिब गाफ सधीर ॥१॥
दवा वैत ॥ साम सेर बहादुर ॥ साहर का दरीयाव ॥ वखत का बिलंद ॥ रहम का सुभान ॥ सचूं सें पसंद ॥ कचूं सै यत राज ॥ धरम का निधान । करम जिहाज ॥ पर धरम का पालक ॥ अपनैं मजबूत ॥ कादर का निकलंक ॥ बाच का साबूत ॥ कबिंदू का पर वरस ॥ जस का तरफ दार ॥ मुकाल बूका जैत खंभ ॥ बहादुरूं का यार ॥ इलंम कारूं का जौहरी ॥ गीयानू का खजांना ॥ सलार का बिधाता ॥ दानूं (साहूर) सें दांनां ॥ हरी कूका अजरा ईल ॥ नीत का समाज ॥ तेर जोर तन राजूं के ताइ रस्ते चलाय बेका उस्ताज ॥ अनमूं का नांम रुबाईद का ढाल ॥ जेर दस्तूंक जिर दस्त जबर दस्तूं का साल ॥ निमरव का हलाल ॥ स्वामि धर्म का समंद ॥ दवा गोरू का पर वरदिगार दावा गौरूं का निकंद ॥ कहै यौ दवा सलांम किसन कवि राज ॥ कपतांन गाफ साहब बहादुर को उमरद राज
कवित:- दाता सर चा ...

को संगन कौ जोध बीरता को मुल नीर है॥ स्वामी
कौ सनाह जस जंपै दुव राह जाको कावै पवरसी
मो हित इम गीर हैं॥ कहत कविंद सुभ बुध कौ
समंद ऐसौ वखत गाफ साहब सधीर है। लागे
जो कु मारग चलावैं तिन्है मारग पे गरमी मिटाय करैं
नरमी सखत कै॥ चलत प्रताप के अदीठ चक्र आलम
पै निहचै सहायक निरंदन तखत के॥ नीत के निपुन
प्रत पालक कव्यंदन के गाफ सेर चीर ते विलंद
है नखत के॥ मीरन के पीर औ अमीरन के अवतार
मेरे जान दोऊ अंगरेज या वखत के॥२॥ कवित्त:-
कवित्त:- बुलाखी साहिब को॥ पैडे पाप नीत है चरत मीत
साच हूं को समर अभीत उर कीत अभिलाखी है॥
डाकू मार डारे औ मिवास सर कीर डारे केते गढ
तोरि डारे सुर चंद साखी है॥ कावे नीकौ दुकमी
भुजा है गाफ साहिब की चारन सधीर मजहब
रीत राखी है॥ नियमत हलाल कविराज प्रति पाल
जंग जीत अरि साल ऐसो साहिब बुलाखी है॥३॥
बीरोलै दिवांन भीम रंधद सौं मिवास नपैं कुमरु
करी है॥ काफ साहिब मीरंद पै॥ इंद्र लोय रूप
सोभ होयकै सवार जाय धेरे वंके धारे खग
खेरे अरि जंद पै॥ अन मन माय मील उड
का कर रसिर भोग भर कौनौ कर गरब निरंद पै॥
ऐ पिकै निसानै औ जमाय कै जवाल धानै फतै
कीर आयै काफ साखा सूर चंद पै॥४॥ कवित्त:-
कवित्त:- दुजो:- प्रीतम की आन प्यारी चंद की छटा नवारी
औ है सुकटा नवारी आन वारी नारी है॥ गज
गत चाल वारी नैंनन रसाल वारी मोतिन की
माल वारी अति द खिमारी है॥ साधैर कबौल वारी
कोकिल से बोल वारी बसन अमौल वारी कोयें
कजरारी है॥ बादर घटा न मैं री बीज की छटान
मैं री देखी मैं अटांन पैरी मद मत वारी है॥२॥

कवित्त

स	र	स	न	य	ना	स	स	म	र	म	ध	र	द	ल	ल	क	र	कु	न	भ	न	जा	जे	त	र	त	ह	न	कु	हैं
न	र	ना	त	प	त	र	र	ख	न	ख	द	न	द	ख	खं	ज	ल	जे	म ^	लं मं	ह	रु	क	ला	कु	कु	स	स	कु	हैं
क	दृ	क	क	ध	क	ढ	ढ	क	लं	क	त	ख	त	ठ	ठ	क	ट	कु	द	ल	द	ध्व	ध्व	न	कु	न	ना	प	कु	हैं
स	रन	स	त	स	त	म	मं	न	त	न	न	तं	न	न	न	गा	र	गा	द	व	द	बि	बि	न	गा	ना	न	गा	न	हैं

कवित्त एक तीसौं श्याद किसना रो / उलटो वंचे सर्व
विस्त पद को होय समस्त पद कौ न होय कवित
है कविता है जी सुं ॥ ——————

गीत:- सावझड़ो ॥— आढा किसना रो कहीयो ॥ गीत ॥ वाजै छै घर घर आणंद वधाई ॥ दीधो सीसोदंन मांग दिखाई ॥ बीजा जगा हमीर विजाई ॥ रीझ दियो पोतो रघु राई ॥१॥ निज खर कर पाल गर निरै ॥ दो रख उजल साल दिली को ॥ लणौ जवांन कंवर कुल लेको ॥ केसव दीयौ रूपा कर रोको ॥२॥ पूरण मुकव आस पूंचालै ॥ मल अंकुर घरम जग मालै सुत घर कुनो रीझ रसीपालै ॥ अनीयो हाथ हजारां वालै ॥३॥ पोर खर अंन मुख दवा पदावै ॥ जे पुन किया पहल किम जावै ॥ सुत हुवा आप मुत रूल पावै । खुमांणो पोत रा खीलावै ॥४॥ छपै नाट सलो:-

:~: जल उतपति तो मच्छ ॥ मच्छ नह कमल रमतो ॥ कमल रमै तो भ्रमर ॥ भ्रमर नह करंड वंस तो ॥ करंड तो भुयंग ॥ भुयंग नह रा उवि यारो ॥ रा उवि यारो कुरी ॥ कुरी नह सुवप सिंगारो ॥ सुवप सिंगारत आपड़ो ॥ अपड़ तै नूमम कहौं ॥ अब जांण सगुण परवीण नर ॥ जल उतपति जोये लहौं ॥१॥ मोती अर्थ ॥ सफल फल्यौ तो अंब ॥ अंबन अबह अंतर ॥ अंबह अंतर कमल ॥ कमल नन कमलह मोतर ॥ कमलह मोत भ्रमर । भ्रमर नन चमल सरीरह ॥ चमल सरीरह हंस ॥ हंसन न सागर तीरह ॥ नन सागर १ हंसव २ भ्रमर ३ चत ४ ॥ नन सुकमल ५ सर ६ अव ७ तर । कवित सुजाण वद राज कह ॥ सोहै सुंदरि अधर पर ॥४॥ अण रो अर्थ नथ रो मोती छै ॥ अन्य कवित:-

कवित:- भोजन तनक न भयो ॥ गयो पांमणो न भूखो ॥ चौपड़ हो नह भयो ॥ ग्रास मुख दयो न लूखो । घात न भई सिकार तांण सिंगण सर मुको ॥ मृग न चुको जांण ॥ बांण पारयो न चुको ॥ कहे क वच नार निस भुग रैय संगन कुयो आदि घर ॥ पिहि बोध विवेक जांणो नवल ॥ फूल्यो कमल परवाण घर ॥३॥ यो कवित सालस राम दान जी उदे पुर मांगयो थाका जदी लखाया छै ॥ अथ अठारे बरन रा नाय ॥ सवैयो आढा किसना

रो कहीयो सवैयो ॥ ब्रामण १ खत्री २ वईस ३ सुद्र ४
तुरक ५ सुनार ६ लुहार ७ मेनावत । माली ८ तमोली ९
मीनो ॥ पटवा १० रुपग नाई ११ चमार १२ रजक (~~धो~~ धोबी) १३
सुहावत ॥ तंतुवा (दरजी) १४ तेलक (तेली) १५ भील १६ ढोलक १७
भंगीय १८ लों गिनती गनि आवत ॥ पूछी किसन कहो जु
पुरांनिक रुई बरन अठार कहावत ॥१॥

कवित :– छप्पै श्री परमेस्वर को आद किसना रो कहीयो।
रख प्रहिलाद भक्ष उदर ॥ चीर चीर द्रोपदी वधारै॥
रख पांडा तल अनल ॥ पंड बालक मंजारै ॥ व्रत पालै
प्रहलाद ॥ ग्राह मारल गज रख्खे ॥ येक अंग ब्रज
अवाने ॥ जेण रखे जग सरख्खे ॥ अहा विपत टाल
करसी आणंद ॥ महा रोग खल मारसी ॥ रै किसन
किसन निस वास रख ॥ सारई काज सुधारसी ॥——

श्री कुंवर जवान स्यघ जी रा गीत अंलकार रा आद किसना
रा कह्या ज्यांरी याद :–

गीत १ सुपंख रो । पूर्णोपमा अंलकार है॥
गीत २ वेलीयो आर लुप्तोपमा रो है॥
गीत ३ सुपंख रो भिन अभिन्न धर्म मालोपमा रो है॥
गीत ४ वेलीयो अन्योन्य अन्या अंलकार रो है ॥
गीत ५ साव झडो मालोपमा अंलकार रो है॥
गीत ६ धाड़ उथल त्राटा अनुप्रास ~~अंलकार~~ रो है॥
गीत ७ सुद्द सांणोर ॥ कैतवा अपन्हुति रो है॥
गीत ८ वेलीयो उपमा नोपमेय अंलकार रो है॥
गीत ९ वेलीयो सार अंलकार रो है ॥
गीत १० सुपंख रो जै निवास महल रो जोश महै उदात है॥
गीत ११ सुपंखरो । जात सुभाव अंलकार रो है॥ नागां सारंगां
मोरबी राग सोर रो पालीयो नींद ॥—

: समाप्त :

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

रसालु कुंवर री बात :—

— एक चारण री कही

कवित्त :—
राज नीत पलता वीरु / कौन देस कोज काल
कौन मेरो बैरी स्याही कौन मेरो हीतु मोही
दीग तैन टारबो / कैनो आय पद कैलो
खरच कैलो रबल लीही उन मान मोही सुख तैनो
कारो बोल पती की स्याव नीको कौन मेरै सबो
रोय नाही कोऊ पावई हुँ जरूर दांव यारीबो ॥
राजन कु राज नीत दीन प्रती देवी दास प्यारी
चड़ी राती रहै ईतनो वीचारी वा ॥१॥ छोटे छोटे
गुलन कों लुरन कौ बारी करै पान पीया पानी
पोख कर पारी रो / फुलो फलवा दीन कै कुल
मोही लेखे परयने दरखत रेक ठोर ते उखारी बो।
नेने चो पायन तेटे रुदे दे उचे करै / उचे वढी
गये ते जरूर काटो डारीबो / राजन कु मालिन कु दीन
प्रती देवी दास प्यारो चड़ी राती रहै इतनो वीचारीबो
दुहा :— गोरे गोरे गात कौ गु मान कहा कीजीयै ॥
रंग तो पतंग कैसो रूलो हो ऊ उनो उगो ॥
चुनां कोसी चोर / उइकन ने स्यावे वरे ॥
नदी र कीनार रंख रब लगे रहेरे स्यगो ॥
पुल कोसी स्यागी को सुहा घड़ी इक रोय ॥
चोर न को माल कहा चाहर बीका रीगो ॥
मान मती तजी नीम डो चलो पाडवाचो ॥
जोबन गया मीस कुउ " रान सारीगो ॥२५

वा कजरो करो बावरें मोहे न दुलो कांना ग्रह
लॅन पनरी ॥ प्यारी कु देखा पलान उठायो । सुजानको
थान बही रलेखो पारी । गुलाब की पोकज भाल दरी ॥
अंगुरी करतो नक चीलत लगारी । काहा कह्यो कर सन
काहा कोह्यो दुतं का । दुत काना ग्रह मन पनारी ॥२॥
सुंदरी नारी अनो पत्री आकर मंजन अग तमे सची
पारी । कचे नख मन गन खरो । भानु जोबन सगो ॥
लोयेर सुनारी । सौब को रूप भरे मुली अंजु । दुटी
लुटोस कुच तै लपटारी । तब देखो रर पेलो साही
अकबर । संभु कु पजे मना गलो आई ॥३॥ दुंधार के
झरोखे गुमान क तखत बैठो । आलो न जै फोज दार
सो तो फौरत चहुं ओर है । नैन कबीली कबे जगत
होत आधीन । पाई त केनी बालो सोतो बाजै सायो
राहै । कहे कबी केसो दास कीया दाबी काहा कंद ॥
जोबन का जोर जीया पतो सांही तो राह ॥४॥ झीनो
पर ओढे प्यारी झानी कै झरोखै झांकी । झोकी कै
उटा को देख ढांको मारी खोर को बारा हो बरसे मांझ
सोला हो सोण गारो कीया । दांतन मै मेख मानी
बीजरी सी चीमको । बोलतो कोकला बैन । भोग कसे
नैन । जोबन को जोर महो का पुक संज र को । कहे
कबी दोय चंद कीया करत.................. छंद संपूर्ण
संपूर्ण......... गया/...... दीन असत हुवो । तीवार म रहत पड
रात गरी । तदी डुंगर उपरे आग बेलतो दीठी । तद
राजा उम रावा ने कहै डुगरे उपर आग बलेतो
री खबर ले आवो । तो रीजौ गोडा पावो । मोटा करूं
तदी उमरावो बीचार करे न कह्यो राजाजी सलाम
जु झल डारी करणो डुबतो मे जाना । पण बना मोत
कु मरणो पड़ मे तो कोई जावां नही । कांई जाणा
कुण छः जदी गुवाला आवि जेणो न बुलावे न
कह्यो कुं आग बलौ जेबो री खबर लावि तो मोटा
करूं । जदी बचन बचन सुणे न गवालो डुगरे च
देखे तो डुंगर उपर गोरख नाथ जी तपस्या कर

आसी तरे देखन आवे रहे । श्री गोरख नाथ जी सै ।
जदी गोरख नाथ जी सा मेले न राजी हुवा । जदी
गुवाले ने रीज दीयो । राजी कीयो । राजाजी सम
सत लोग थी पाला आथाना डुगर चढा आण देखे
तो गोरख नाथ जी बैठा सै जदी राजाजी एक
पग वीणो पोरा खुदी उभा रह्या । सेवा की । जदी
गोरख नाथ जी पल उघाड़ी । जदी देख तो राजा
उभा सै । जदी श्री गोरख नाथ जी बोल्या । राजा
मांग तन तुठा जो तु मांग सोई देवुं । जदी
राजा हाथ जोड़ न अरज कीवी ~~मस~~ म्हाराज आप
रा परसाद थी सारी बात री दौलत है । म्हाराज
आपर सणर वासे तो म्हारे पुत्र नही से जो पुत्र
दीजे । जदी श्री गोरख नाथ जी आपरा हाथ री छड़ी
१ गुलाब री थी सो दीयी । आंबारी करी १ पाडे जैसी
मारी रसाल र नाम थार पुत्र होसी जकोरे नाम
रसालु दीजे ॥ ~~आब~~ जदी राजा आबो री करी लेन
डुगर थी उतेर तल डेरे मे आया । राजा व रंग मे गया
पट राणी सम सात गुण सुंदरी तीर गया । आपणो
भाग जागो । श्री गोरख नाथ जी तुसर मान हुवा
रीझ फल आंबा री दीयो सो थे खावो । आपणे
पुत्र होसी । जदी राणी सात सलाम करी न कैरी
आ रोगी । जणी दीन थी राणी रे आसा बंध रीयो
नवे महीना साढा सात दीवस गीया । राणी रे बेटो
हुवो । श्री गोरख नाथ जी री क्रपा थी रसालु कुंवर
नाम दीयो । गर को प्रीत बोलो ॥ दुहा —
ढोल बय पंजाबी :- सदीली बार न मर परी बेका
श्री पुर नगर राव खे पुत्र नही जस क्रण सेवा सीरु
का पारखे ॥ सम सात गरे पुत्र जेम मीरपो ॥ दीयो
रसालु नाम बै ॥ बठो घरी सबद बधावणा ॥ गोरी
गाव मंगला चार बे ॥ वारता :— जोत की एक
पल देखने कयो । घर री प्रीत कहै । माहाराज
करडा नखत रां में जनम हुवा सो माता मुख
देखे तो माता मरे । पीता मुख देखे तो पीता
मरे ॥

जगो थी बरस 12 खुदो पुत्र रो मुख मती देखो
मैलां में राख जो । बार नीकलवा दो मती । जदी
कुंरजी रे पास पाछे मिली मूला भलपा पतरी करता
बरस 11 आयर नीकला । पतर राजा भोजरी बेटी रा
नाल रे आया । ~~दुजा~~ ॥ दुजा राजा मान री बेटी रा नाल
रे लाया । राजा परधान पीरोत कहो । आज बरस 1 थी
कलै जगो थो बारेठे नीकरो नीकल नहीं । जदी आय रा
उमरावां साथ पोला रा खड्ग मोकली परणे ले आवा । दीन
25 तथा 25 हुवा जलरे आणो आवो । जदी कुंवर जी राजा
भोजरी बेटी न कहो । थे थारे पीहर जावो मोने बेगा
आवसा । हाथरी मुंदरी देई । कड़ा रो खंजर दीयो । अर
केही लो थारा री बाड़ी मे एक खाबी अमरत फल
पे जगो । आवा री टेक तीर सु सात करी रो कुंवरो
पाड़ जदी माने आ अजोगे ल्यो । जदी राजा लोक
पोर गया जठे कंड कुंवर जी खास वान पास वान ने
कहो । सो माने मेला म राखे सबार नीकलबा दे
नही सो के वास्ते । जदी पासवान ने बोल्या श्री कुंवर
जी राज रो करड़ी नखत्रा म हुआ स्हे मोड जनम हुवो
जीन की था जणा बेला वले लने कहो । पिता माता
मुंडो देखो मती बार नीकलवा दो मती । इसी वात सौ
जदी कुंवर जी रसालु मेला में थो बार नीकलन देरी
खानी कीयो । राजा समल तलवार चलावे । अलराक
म्हे घर को प्रोत आदमी 25 धोरा वले आवे छ । जदी
कुंवर जी पुछो सो आवे सो कुण सै । जदी पासवान
बोला म्हाराजे आपरा घर रो प्रोत से । आपन बरस 12
मेला रा मेला म्हा राखा सो आव त । जदी प्रोत जी
आवता री पुजालो दरी खानो करने बेठा सो कुण
सै जदी पास वान बोला सो कुंवर जी स दरीखाने
की पारे । जदे प्रोत जी कुंवर न आवे न आत री बचन
दीयो जदी कुंवर जी प्रोत जी न कुम्हो सो माने
बारा बरस मुंडो मेलरो मेला राखा सो कुं । जदी
प्रोत जी कहो माहाराज कुंवर जी ने डरी राखा
आपरा क हुं गरड़ राखे । जदी कुंवर जी करे

माने तो थे राखा। वले प्रोतजी कहे माहाराज
मारी पुछ काई ली मे राखा। तो पण करलो मन
तो थे राखा। जदी प्रोतजी कर सो जीवी में
राखा न कदे राखा। अजु राखे कोतला मेरा। जदी
कुंवर न रीस चढी। राथमं सोना री गुरज थी
सो कमी री माथा म्हे देयी। जद पदे प्रोत
राजा तीर पकार कीयो। राजाजी कहे मारे पुत्र
सु काम न्ही। बार नीकलान दीन? हुवो नही।
घर रा प्रोत रहो थ उपाड़ता सो नारी घुरीर तो
पेटम मारणी है। जदी राजा कहा सो कुंवर ने
लीख दो। जदी तीन पान रे बीड़े कालो जोडो
कालो सैरपाव। चाकर र हाथ देने मोकलो। कुंवर न
देस नकालो दीयो। अा करी सो थे माजोगा नहीं।
जदी रसालु कुंवर जाणी ली मान राजा जी
सीख देई। तो पण कुणे न पुछो नहीं। एकला
आप असवारी होया सर महा वन खंड म्हे चालो
जाय स। डुंगर उपर आग वलती दीठी। चालो
थको कुंवर डुंगर चढो। जायन गोरख नाथ जी
रा भेटो। कुंवर पगे लगो। गोरखनाथ जी कहो
जास वचन ने तु लर मीन रया तु मांग सोदं।
जदी रसालु कुंवर कहो मा-प्रभु अापरा प्रताप री
सगली खातरी दौलत सैं। पण इक बात मांगु
सो दीजे। समन्दा पार जाय्या जीतरो बेटी परणु
सो दीजो। जदी गोरख नाथ जी अनल री लरी
पासा दीया। तु अणा पासा री खेल जे जाय वेची
तु जीत सी। जदी कुंवर रसालु फुला लाई अन
पासा तीन सलाम करन डेरा लीया। दुहा:—
दुहा:- ढाल बंधे पंजा बी। श्री गोरख नाथ जी री सेवा कीया।
दीया पासा राथ वै। जा ज्यो कुंवर रसालुवां
बेग चढे गरे आव वे॥ वारता॥ जदी रसालु जी
घोडे चढे न चाला। चाला चाला समदरा
पार गया। अा जाता थका राजा अगजीत रो
सहर आयो। आग देख तो सहर क गोखे [illegible]

BITS

भनखा रा माथा पगा पड़ा देखा। जदी माथा रसालु
कुंवर न देख न सगला ई हंसबा लागा। जदी रसालु
कुंवर कहे रे मुंडको थे कु हंसो सो। जदी माथा
सारा ई बोल्या। मारा माथा भेला थारो ही माथो आव
पड़सी। फेरे माथा के कांई घरसी।। दुहा।। कीरा कु चालो
राजवी। माहाण परबाण देसवै। आठे सर थारो कुटसी।
कुम्हा भेलो आवसी वै।। रसालु वायक।। मेरा जी म
राजवी। राबा उपला राव वे।। कलो सरदां सायबो
केसरला राजा रो वे।। अथ वारता।। अस्यो कहे न
रसालु कुंवर सहर म्हे गयो। जदी दरबार गया। नौबत
खाने जाय न नौबत डंको दीयो। बीजो बार आले
डंको दीयो। कई देणन री तलास म्हे रहो। जदी
राजा अगजी ते जाणा। आज पधी दोय तीन जणा
खेलवा आवे छ।। जदी कुरत काल उठ न राजा रसालु
कुंवर पे आयो। जदी ख्याल तमासो माण्ड्यो। पला
बाजी तो रसालु कुंवर गाड़ी हारे। दुजी बाजी कुंव
ई हार जीत करस्या। जदी रसालु कुंवर बोल्यो। सब
तो माथा री हार जीत करस्या। जदी राजा अग जीत
रा पासा पाछ पाड़्या। अर गोरख नाथ जीरा
पासा तैय्यार कीया खेलबा लागा। तीजी बाजी रसालु
कुंवर जीतो। राजा रो माथो जीतो। जदी माथो मांगो
राजा अग जीत करस माथो तो आरो सौ। एक बार
मो न राज लोक म्हे जावा दीजे। जदी रसालु कुंवर
कीओ तो आप राज लोगा में पधारजे। पाछा
पधार्ज्यो। अर रावला म्हे राण्यां बात सामली।।
राजा वायका।। ऊंचा महल आवास रै। गया हमारा छुटवै। सरे
हमारा जीत आं। आवां परखंड चीर खें।। राणी वायक
:—: कुण नख राजा हारीओ। कुण न दीया अनुप वे।।
मेथीने राजे_ड बर जीयो। मत खेलो थे भूप वे।।
राजा वायका:— हीक हार लोगणी नी मरैं।। लखे लखा छुटी
रावनैं। कुरे भलो म्हारो राणी करसी बीयाती
माइ बैं।। सम संत मत रीसालुवा। कुर नगर की रावबै

मे खेलत बाजी हारीया। जौ थारा मारा सबै॥ <u>राणी</u>
…यका:- राणी कहे सुण राजवी। थे करो न चीता राजवै।
सुफ लीणो जोडु असतरी। करु तुम्हारी काज वै॥
…रता:- राजा न राणी थावे न मनम बीचार कीयो। जदी
दासी न बोला वैन राणी करे। रसालु कुंवर न
जाय न कहज्यो। म्हाराजा कुंवर राज भला पधारा॥
मारा भाग जाग्या। एक म्हारी कन्या परणो। रसालु
कह सो मतो परणा नहीं। थणी ऊपर तो घणा पुरष
मुवा सो थणीर त्यारी ना मलो मतो। राजा थग
जीत रो माथो लेल्यो। जदी राणी कहो। माहाराज
सलामत माथो लीया कांई हाथ न आवसी। थर
थौगुनो म्हान बगस जे। दुजा कन्या परणो। रसालु
जी कह जु दुजी कन्यार वतो परण थातो परणा
नहीं। जदी राणी कहबा लागी सो दुजी कन्या तो
छ महीना री छ। जदी रसालु जी कहे सो वारी
जे पेरणीस्या। रसालु कंवर न परणायो। वणो थादीव
कीयो। परणा पछ दीन १० रह्या। न चालण रो मन सो
राखै। जदो रसालु जी कुंवर कह मारी राणी न
उजीणी करो। जदी राणी कहे सो बांदी ना नी से।
मोटी ही चीज दी अजीणो करने थाणा कराव देस्या
रसालु कुंवर तो मतो बे जाल्या। जदी राणी उजीणी
करा अने वारी मे थाणी कंराव दीया रसालु कुंवर
चाल्या जायसै। जदी राणी दासी न कहो सो
वारी न ले थावो सो कुछ पवां। पाछ दासी थाणे
कीयो वारी तो सासरै चाल्या॥ <u>राणी वायक</u>॥ जल जो
पासा खेलणा। जल जो खेलण हारवैं। मे रीछ म्हो
नारी कुंवरी ले गयो कुंवर रसालु वावै॥ थप
…रता:- थब रसालु कुंवर चाल्या जाय स। जा राणी न
भुख लाग जद हरणी न पकड़ न मुगाड़ हैं संतरी
करता बरस ५ हुवा। एक दीन कै समे चाल्या जायस॥
एक दीन क समार बखे। सो वन वन र पीक सुती
रो मन ने एकर हरणी भाड़ तल बेठो स॥
रसालु जी उणा हरणे हरणी ने पकडे न साथ राख।

वाले ने मोय कैस । मारग मे जाता इक सुवटो । बीजो मृगा अदम पकड ने साथ लीया । भगाव सैंख वाड खलो बसै । चारा री रा घणा जतन करसै । खतरी करता पका दीन व्हैरला रता चारका नगरी रव बे गया ॥ आग देख तो नगरी सुनो पडी । राखस माई न तो नगरी म जाव तो मनख मेल्या नही । खतर रसालु कुवर नगरी में गयो । नव खंड महला मे चढ । आप रो घोडो सुवटो मणा मृग जतना सुरा खरे । खतरी करता दीन आखा । अदेल्या राख सन आवतो जाणो न आप दरवाजे आगे न उभा रह्या । अमा उजल सैं । रात पोहोर दो गई स । राखस रो हाथ रे खड्ग खोड न कीमाड लो आवो । रसालु रा राखस र खड्ग री दीयो । वड माथा दूर कर्यो । रसालु जो आगा नाखो राजी हुवा । राणी न कर सो जणी गाम उजाड कीयो जणा मे मारी स । अब सहर में बसती कर स्या । असो बीचार कीयो । पण रसालु जो पोहोर एक दीन चढे ताल कोरे जास सैं सो पर १ दीन पाछलो रता आवे छ ॥ इबे इक दीन पाका जोग मह रसु लुरो मृग पातलो र उम वरां बाग मे चखा । जायर खतरी करतां दीन घणा हुवा । राणी बरस १२ री हुई सुवटा मेणा मृगरी उर घणी जाबता करसैं । रसालु दि मृग र ठंडल पाणो सारा बाग म चरबो जा खडी फजर रो जाय सो पोहोर १ दीन चढता पाछी आव तो बार रसालु कुवर सीकार चढे स । एक दीनर सम उमल पातस्या रा बाग री बागवान र मल पातस्या रा बाग रो बाग वान र मल पातस्या फल फुल लेन गयो । पातस्या फल फुल देखन बोल्यो । बागवान कहेस । असा फल फुल स्यु साथ कीस्या कारण । फल देखा पातस्या बागवान सीज बागवान कहे स । पातस्या सलामत आची रात बाग अली बलाय आवस सो बाग बगाड़ स ॥ रठमल

पातस्या बायका :- म्यारा केसर दा वरा फलो फरे अनार अन कोर अन बाग में पुछु उणी री सार वै

वारता:— पातसा कहे बागवान हम तारी साजे बाग मेले चाल जो। पातसाह कहे सलामत साजे बाग में पधारज्यो बागवान कह्यो। साज र बख पातसा बाग म पधारया। घोड़ी का अजे केन आप तीर खुबाब लेन बेठा। तब समे आधी रात गई। बाग वान घुघरी बाजंता साम ल्या। तदी पात साह न कहबा लागो। पातसा सलामत थारो चोर आवे स। चोर घणा दीना राजा पो पण आजे आनी से थे जागो जीका जो। माने तो घरा न सीख दो॥

बागवान वायक:— सुणो सुणो साह बहुत मला। आना तमारा चोर वै। मान तो गरा सीख दो। क जोरा राजेन्द्र जोर वै॥

वारता:— रठमल पात साह बाग वान न सीख दीवी। जतर घुघरी बाजतां बाग रे फाटक ने मृग म वडी। अब रठमल पात साह बोल्या घणा दीना राजाना थे पणा आजड़ा राजा आगो। असो सामेले ने मृग पाछे वेरे। पाछा ही पात सा रठमल दोड़ो जाय से सो वन मृग जागो आज मोने मारसी मार चला मेले न्ही। रठमल पतसाह मारसी। मृग पाछो जीव तो जाय स। जीव हाथे भरी फाड़ती दोड़े भागो जाय से। बस रठमल पात सार कह आज घोरी छीन लु। जदी मृग पाछो फरो। मारा रात रो घोरी छीर लु। जदी मृग पाछो फरो। मृग रात रो भूलो दीसा चुकर वे गयो। जदी रसालु रा मेला म रठ रो अन नीसर गीयो॥ रठमल वायक

:— जदे पेरे बाबे तल है। साहुकार के चोर वै॥ भाग भाग का राजा तुहै मुकुट र तु मोरो चोर वै। तेरो नाम है रठमला। अबे केरी मुझे सादवे॥

वारता:— मृग रठमल पात सारा ही असो कैन मृग पातसा रठमल न मेले न पाछे रसालु मला पाछे फेरे। जदी रठमल पात साह पाणी बहात पाछो फरो। मृग वालें न रसालु रा मेलरा आगे। रसालु जागी मृग आगो न्हीं। जदी लड़ा रन मोडो रोन लागी। जदी रसालु सहकार चढो। और दीन

हैन मृग सावा बगर सीकार चढे। पाछा धी मृग उलो
खुज तो थको रांणी न खे आयो। जदी रांणी मन
म वीचारी। आज तो मृग उर पणो लाग सै। सीकारो
कारण सै। नव खंड मैला चढी रांणी देखती रो रू
भर स्पवंत तेजवन्त चतुर बीच तर ऊभो दीठो। पात्र
कुबान तीरक लैन बाग राजा उठे फीरतो जोस सै
रठमल पात साह जाणी रठमल पात सान कारी करसै
रांणी वायक:— बाग मैला मानवी। साहुकार के चोरे बे दरखत
म छपतो थिरे ढोर ढोर कठोर बै। रठमल वायक:—
:—: रंग मला वायका कौल काफा बाफा मैली कौन
हदा दाख अनार बै॥ रांणी वायका॥ रसालु रदा
आवा आमली। रसालु सीच्या अनार बै। रसालु र दो
अहलरी रसालु र चढे बार बार बै॥ अथ वारता:- रांणी
रठमल पातसा धी खो जाव कीयो। रठमल पातसाह
कलो भार घोडे तरस्या रे। सो पांणी पला अबै। जदी
रांणी करवां लागी॥ रठमल वायका:- मेरा नाम रठमला
नवरा पई धी आर बै। मैरो पाग बतीसे पैठे। उपर
छोगा चार बै॥ रांणी वायका:- कुहा। कुर डीया तु रठमला
रही आतु मारा नाम बै। वरव की बलो ज्यो चलो सीर
धरे अदरे आवबै॥ रठमल वायका:- कु खीला रठमला
खीया हमारा नाम बै। इमरत बेली में चरा। जो सर
जाया अनीम वे॥ अथ वारता:- जदी रठमला चढे।
रठमला वायका॥ रीक खड चढ कुसलर नीजे खड आवबै
मो परदेसी कुपपो आ। घोडा ला जल पाव बे। वारता
:—: रांणी कुजी भर लार पाणी पावदे॥ रांणी वायका॥
करसी द भीड सागणा नीर। ढल ढल जाइबै॥
पधी नही नर रसालुवा। नणार रो ले भाखबै।
वारता:- अतरी बात करे न रठमल पात साह चंचल अतरी
देखी राजी हुवो। रांणी पण राजी हुई। मन मलो॥
जदो नव खंडा मला चढा। रांणी न रठमल चोपड
खेला। जदी रठमल पातसाह रसालु री खबर
रांणी न पूछी। तदी तमे सकार कदी जाव स। आव
कदी से। जदी रांणी कही स। पोहोर १ दीन चढता

जाखस। पोद्लो पोहटो पाइलो जदी आवे स ॥
जदी रंगमल पात साइ चौड़ चढी न चालो। जदी
रसालु कुंवर मेला चोको मथा इसो बोलो। भला
भाभीजी थे पश्या वालो ६ म्हीना रो पाले पासे
न मोरी कोथी थीन आजे आधी मोम देवी।
पण रसालु जी भाइजी न खाबा दो। भला बाना
करावस्यां। अतरी कही जद राणी न रीस चढी।
जदी पजरो उरालन मोण रो गलो मरोड़ेन
मारे नाखो। जदी सुवो उरपो। रव मेने पण मार
नाखे। जदी चकोर डाव करेन बोलो बाइजी
राज म्हान गरमी घणी होयरई। पंजरा थी बार
काडो। जदी सुवान बार काडी। जदी सुवो उडन
खाबा पर जाय बेठो। जतरे सीकार थी रसालु
कुंवर आयो। सुवो कांई कइस ॥ सुवा वायका॥ पांच
पंख दु लाल सुवटां। नव नीत रटेल मोरनै। राजा
रसालु र मालोय चोरी करगा चोर वै ॥ अथ वारता:-
जदी रसालु राणी न पुछो। सुवो कांई कहै स।
रसालु वायका:- कीण रीज लौयण लोरीया। कन कुण तोड़ा
हार वे ॥ कन रीजे सेज घम दली। कण रा लाल मोवावै
राणी वायका:- हमहो लोयण लोरीया। हमहो तोड़ा हारवे।
हम हो लजे रे मदली हम हे नाख्या ते बोलवै ॥
रसालु:- पलंग है चोये छंदो रो। ढोलो भरी खबदारो ॥
तार भाप घर मेले गये। कुकरे चाटी करवावे।
वारता:- जदी रसालु कोल्या भारी देखला नव संडा उदा
जौत बोलरा लो ते बात मानु। राणी पान चाबे
नत बोल नाखी लो पादो राणी रा माथा उपर
लागन पडी। जदी रसालु करसी में धारी जुण
जाणा। दुजे दीन रे बखत रसालु कुंवर सीकार गयो
सुवा न साथ ले गयो। मेला नीच छानो पको
आय न बेठो। रीलरास म्यार बखे रंगमल
पात सार आयो। मेला चढो। रसालु जी मेला म
चढवा दीयो। काम भोग करेन नीच उतरो।
जदी बादी जणा जमा रंग आयो। बलो
रसालु बार

१८२

र लीया। रहमल पातसा तु हमारा चोर स। घणा
दीना रो अठे था पण आपारा चल मेलु नहीं। जदी
रहमल पातसा कहे। तु थारो चोर मुं। पलो लीहो
तु कर। जदी रसालु कर कु लो पलो लीहो नहीं करु
जदी रहमल कहै। मारा हाथ रो लागसी जदी तु कणी
मार कहे करसी लो पण रसालु ना कैर। जदी रहमल
पातसाई नव रपी जोय चोडे चढे पको। सवा
मण रो भलको साथे न रसालु न मेलो। रसालु
असवार पको राल दीयो। फेर अरोजे भलके
रसालु बावीयो। रहमल पातसाह रो मायो न धड
अलगो कीयो। जदी रहमल पातसा रो कालजो फाड
लीयो चरबी रो तेल काढ लीयो। कालजो राणी
तीर ले आयो। राणी तेल दे दीयो। माल रांधे
खावो। सुवा बायक॥ पीव कचोले पीव बांट कै॥ पीव
दीवाले जलो अबे। पीव पटे मेल चर। अजुन
आवो सवाद वे। हाथ पीव मुख पीव जले। दोनो
भरे रहीयो दंपा रवे। जीव तणा जुग मांगीयो। सुवा
पोहे राणी खारवे॥ राणी बायक॥ ये दीस्यो मे जीमीयो
काई मृग हदा सवादवे जो जाणो मा पीव मारीयो
करलो थारा चाव वे॥ वारता:- जदी रसालु जाणो।
आ असतरी मोजो री नहीं। अतर प्रभात हुवो। जतर
टीक अतीत आवो रसालु रा मेला रह आगे उभो
रहो। मोटे साद करने रोवलो जदी रसालु जोग सु
देखन रसालु करसे। रसालु बायक॥ जोगीड़ा रस
भोगीड़ा तुंमर भरे नेणा रावने। जोया न रोवे
आपणो जे हमारो जो अबे॥ वारता॥ जोगी पर वरो वैह
जाणी री जोगो पुरी असतरी जोगीन छोड न अ
जोगी र गई। जणी बासत रोव से। जदी रसालु
बचारो। आ असतरी अणी जे जोगी न दीजे लो
भलो बात है। रसालु कायक॥ दुरो। आवलेज्यो
पान मे। इहोर रो जरा बणाव वे। मारी परणी
असतरी चोर तमारा चालवे॥ अथ वारता॥ जदी जो
पर राजी हुवो। जोगो पर न हाथ पाणी गालो। असत

दो। जदो पद्ध रसालु असवार हुआ। साथ सुवान लीयो। अर पाछा पो। राणी मला मधी नीची उतरी। जोगी सरन कर मो साथ आवो। जद जोगी पर साथ हुवो। राणी चाली चाली र6 मल पातला गाडो जठ गरी॥ राणी बायका। रही आ समत बोडजा॥ तो बनर धण बीरा अबै तेज पराक्रम ना हीरो। अबै कण कुलाखा अबै काला मुंह राकन बे ऊड़ ऊड़ पराग्गा अबै। मारा पीव री पासे ली। रम देखता पात खाअबै॥रही आरा ज्यो बालमा जु खाडी फाला गवै॥ अप वारता॥ अतरो राणी कौ नयगा अरणा कीयां। पद्ध जोगी सरन करी वन म पी लाकड़ा लावो। रह6 मला न दागदो। जदो जोगी लाकड़ा लावो। रह6 मला न दाग दो। जदो जोगी लाकड़ा बासतो लायो। लाकडा री चोटी चुणी। राणी में बेठी। लाकड़ा लगाया र6मल पातसा र साथ सत कीयो। जदो जोग वर जो लाग तारा। अबै रसालु जी फतरा दोनो राजा मान र पामणा हुवा। तलाब बेठा कपड़ा चोबाड़ सौ पाग बाधौ बालगा। अतरा कसम्या म्हे। राजा मान री बेटी पणीहारे साथे तालाब पाणी आई। रसालु कुंवर न देखन नख सुघड़ी भूखा लागी। अर रसालु सामु जोवदै। पण रसालु न देखन बोल नही आव पनै नहीं। कुंवरी बायका॥ खबर कपडा चोरीया। सुधणी अगी पागबै। नख लु घड़ली मैं भरो अजुन बोलो बंगवै॥ रसालु वायका॥ देख बडाणी मो अपार की हु राजा री चोरी बै। तुम्ह कारण मुझे मारजै। तो मुणे छोडा वन जोवबै॥ कुंवरी वायका॥ पदण फटा उसलर चु। फर फर लागु आगनै। तुम्ह कारण तुम्ह मारसी। दोनु बसाव रंग बौ अप कुम्ह कारण तुम्ह मारसी। होलो कर कुंवरी घर गई। जदो

वारता:- अतरी सम्या रे बखै। होलो कर कुंवरी घर गई। जदो रसालु जी नगरी म्हे आवा। बेरे ले लोक करो। राजा मान रे जमाई आवा जदो मेला मंडेरी वायो पणी मन वार आगता पावना कौ। रात्रै भोजन अरोगन कुंवर जी मेल्हा पोढ्या। पोली होल बैलै है। कमा ऊजा ऊदोया सै। जदो राणी आगे नहली पाड़ी।

कुंवर जी कुमांड उगाड़ा नहीं। जदी राणी दुही कही।
कड़ कड़ नारु का करा। बीजली हीरदा कुमावै॥
रपै मुना कमारी रपा। के आपी आपरी मीर बै॥ कुंवर
जी बायका:- नामे मुना नेम मी हीया। ना भोपीया अमार बै॥
सरवर बोला बोलड़ा। बेरी पण हमीलै बै॥
राणी बायका:- रपबड़ा धैला बोलो सारी रण बरा रपै॥
सवा करोड़ रो मुदड़ो भाज्यो बजर कुमा उबै।
वारता॥—— रीस्या कर न राणी पाछी परी गई। जदी
रसालु जाणो। आ इसतरी पण भरता होसी तो
राज लोक मैं जासी। भीत कपोत कागी जाली।
मोण बरस दै। रसालु पण हाथ में ढाल तरवार
लेने रारी साथे लाषणी गयो। राणी तो सुनार र
गई। सु भाड़ सुहा जदी सुनार रा बेटा न कई हई है॥
दुहा:- अठे अठे कबर सुनार का। भीजै राज कुमार बै॥
राजा रोगा मेले। नीलर घोड़ा सारू बै॥
वारता: जदी सुनार कुमाड़ उघाड़ो। सुनार सुतो उठे
न पगोरी पावड़ी रो दी। रसालु जी बायला मेली।
कुंवर कहो आज राजा रा जमाई आया रै। जणी न
सुवाग न आई सु॥ चार पौरी र रात्र दुही कही।
प्रभात हुवो। कुंवरी बायका॥ अठे अठे बंध कर
रपागला। कोई क बंध बतास बै॥ गली आरां नारी
नर परै। दुकस मेल घरे जायबै॥ मंत्री बायका॥
पहरे हमारी पावड़ी। बधे घरे तरवार बै॥
लाखों लाखों भीख भरै॥ कुण कसी तजनार बै॥
वारता:- राणी पावड़ी परे न तरवार ले चाली। रसालु
री चोकी मे आई। रसालु बायका। पावड़ी ली परकी
लीया। कण तरल ला केण बै। हे मेंरी ही तु गोरड़ी।
तो न मुई गल कायाब सबै॥ राणी बायका॥ मोल
नव भुल रे बारला। नेणा रै आहार बै। रात करही
जरन घरे। ज्यांका पाणना हार बै। रसालु बायका॥
रात करता नऊ चोर। दीहा न तोरा होय बै॥—
वारता:- रपत रसालु कुंवर कहो। जदी राणी जाणीयो रसालुजी
होसी तो कुरी बणसी। मेला सलाव गई। रसालु

राणी चली गयो। राणी देखतो आवने तो कुंवर
सुतो से। जदी कुंवरी जाणो कोई दुजो होसी।
रसालु असो नहीं। मालो स। जदी राणी पग दाबबा
लागी। रसालु जो जाग राजी हुवा लाख पसाव
सोग राणी री होकम हुवो। सुरज उदे हुवो।
दातण करे अमल पाणी कीया। दरो खानो कीयो।
पाहुरा न कहे ने सुनार ने बोलायो। सुनार जाणो
सो राजाजी र हमारा आवा रसो गणो पड़तव सो।
जदी सुनार कुंवर हुजुर आयो। जदी रसालु जो
अगोधो कर दे। जदो राणी का हाथ मैं स। पाणी
की थोर से॥ ईतर सुनार आयो। राणी री नजर सुनार
पी लागी॥ रसालु वायक॥ तीर तोसा लोरणा। थोर
चंगी नयणी सबै प्यार बोध्यो चरतो गरी। कीरी
नर पछीसो नयणाबवै॥ अथ वारता॥ राणी वायका।
होणी होणी कन अभावना। अण होनी करणा चबै।
हीवड़ टार उलेज होयो। खुले जाया नेवाय बै॥
वारता:- जदी रसालु जो सुनार ने कहो। हाथ माडे लो ने
आ असतरी दां। या रहतरी मा जोगी नही। जदी
सुनार हाथ माडो। जदी रसालु जी हाथ याणी
चालो। इसत्रो सुनार न दी। जदी राजा राणी
बात सा मेला कुंवर न पोलमो दीयो॥ रसालु वायक॥
रतन कचोली ई घड़ी। जी लग पथर कुट बै।
जण जण आगल होइयो। केसर बोरी कंग बै॥
तेलं गुहल उपर लीलड़े। नीर उस्यारी हो
सासु वायका:- अबै। टक पीवो रसालुवा। नर मले नार न कोय बै॥
होय चोड़ी काचली देहरा घाडा देव बै॥
रसालु वायका:- रसालुवा रे रस कलाईय। ईस लाड़ली जल जाय बै॥
परणी होऊ असतरी घाडी ज्यो तो लख लोग
करी जाय बै हम हात रायका पुगड़। रसालु
मेरा नाव वै। परणी ही उपर गरकु कर राखे साथे बै।
वारता:- थलटी बात करे न रसालु जी कलवार हुवा
रसालु न सुसरो सासु बोल्या। सो दुजी कन्या
परणो। रसालु जी कहो मे तो परणा नही। अस्या

ईज लखणा री होसी । असौ कहने पहर चाला । चाला चाल्या आग राजा भोज र पामणा हुवा । अण देख तो ~~रा~~ राजा भोज रो बेटो काका उसे । उजीणी नगरी री च पावली । ढोल दमामा की नोपत बस सौ बजे है। राजा रसालु ने पुछस । पण कोई रसालु कह नहीं । जदी लोका न रसालु पदै स॥ दुहा॥ घरर उजीणी र गोरम । कामडी धुना चक रोल बै । कागरी लोगा चोगी बाजे जंगी ढोल बै ॥ लोक वायका॥ राजो भोज होडी करी । रसालु वाली धर नाखै आयो नही रसालुवो काठो जोड़ कुमाड़ बै ॥ वारता:- रसालु राणी न कह से। रसालु सुवली कर । सोना सु कद बोलाय बै ॥ रसालु रदा नाम छोडदै ॥ जोहु हमारो रो रखबै ॥

कुवरी वायका:- आ भर तारा धुडा । धरणी अपुठी होयावै॥ लोरि नवी हाथ अपणो । जो कुल दुजो होयवै॥

वारता:- रसालु जी राणी री बात सामेली राजी हुवा । ई अलतरी भुक लोगी है । जदी कहे सोवु तो सम लत राजा रो बेरो हु । मारो नाम रसालु कुवार सै। जदी इक वचन बोला । सात कोरी रो भुंबको । इक तीर सुपाडो । जदी सगली बात साची होसी। सरबे लोक देखता इक तीर सु सात केरी रो झुबको पाडे । राजा परजा सबे लोक राजी हुवा। राजा भोज न खबर हुई जमाई आया ॥ दुहा॥—

दुहा:- लोक कर बधावणा । घर घर मगला चार बै। हर बेली कमली उकेरे । आया कुवर रसालु बै॥ नगर चोबट नीकल. सबही नमाव सीस बै। नर नारी असीस दे । जीवो कोड़ बरस बै।

वारता:- जदी रसालु जी ने मेला मे डेरा दीराया । आरोगी ने घोड़ा ऊतरे राणी आई ॥ रसालु वायका॥ सरव पाल पखालता । मेरी पायल होरे बील जाई बो। हु तन पुछु गोरडी तो कत रग बंदा रवै।

राणी वायका:- सरवर पाय पखालता मेरी पायल खुल ले जाय बै । आबर तारा गण ता पका । कु ~~मेरी~~

~~पायल खुलतो जाय बै~~

सू मेरी र घणा वौहाय बै॥

रता:— रसालु मन में घणो राजी हुवो। राणी र गेणा घड़ायो। सासु सुसरो घणा राजी हुवा। बधाई बांटी। घणा दीना बासर रया॥ इक दिन र वखे रसालु जी राजा थका सीख मागी। जदी राजा भोज मो रथ दीखायो भली भी रथ बो इचलो साथ कटक दोलड़ा अपचो दैन चलाया। भली तर थी पुचाना। चाला थका धारावती नगरी र बखे गया। नगर बला प्यो। बरस पहरत। राणी र इक बेटो हुवो। रतन सी नाम धरो। उठा ऊं चाला श्री पुर नगर आया। जदी उमरावा ने खबर लगाई। राजा जी सालामत है। अली रसालु कुंवर आवो है। जदी मा न पता सीमा आईवा। धवल मंगल मंड्य धाया। माती थाल भू बधाया। नर नारी मील मंगला चार गाया। सबे लौक मे भाया। ढोल धमामा भला बजाया। राणी पाच भली परणी आया। घणा पो दाव भी पचाता राव राणी बहु सुख पाया॥

दुहा:—
राजा रसालु हुंदी बातड़ी। कुई कथी अप सोजबै॥
गाव चारण नर बदी। रसेलो पाव मोजबै।

समाप्त

·X· ——— ·X· ——— ·X·

२६०

|| श्री गणेशाय नमः ||

चांद कुंवर री बात :—

श्री गणेशाय नम॥ अथ चांद कुंवर री पोथी लीखते॥ समर सरसती मात मनाईय। गण पती गुर के लागु पाय। प्रताप सी घर सं कीनो कोज। ओनंध पौरसी करै राज॥ —

दुहा :—

प्रताप सी सखु माग ने हुकम कीयो कवि राय॥
हंसी कवी खु अस्यो कहे॥ अपुरब बात सुणाय॥१॥
रसीक लोक सुहावणो॥ रचौ जोग अकार॥
मुरख ही को मन हरै॥ सबर सको रस सारै॥ ३
पनरे से चालो समे॥ पोस मास तीथ त्रीयोदसी
गुणे कीनो गुण सार॥ नगर नाम अमरावती॥ ४
पंच कोसले बाय॥ अमर सेन राजा तीहा॥
राजा करे ते राम॥ चंद कुमार ताको भयो॥
मानु काम अवतार॥५॥

चंद्रायना :- एक दीन चंद कुमार असई उदे लीयो। राजा जी को साथ सब संग चलीयो। हलीयो ई बाराह वताल नरल गीयो। पहीडा कुंवर जी लागो पुठे सुर गीयो॥६॥ साथ कुंवर को छुटक भुलो वटो। बन खंड हेव वाने कतर वर चडो। को सब तीसां उपर सुर मारीयो। परीहा साथ न आयो कोयर कीरै कोर हरीयो॥६॥

दुहा :- पंडीयो कुंवर उजाड मे। साथ भोयो जाहा भांग॥
नपसी बैठो तपर। जीहा आयो [illegible] मे॥७॥

मुनी वर बायक॥ चौपाई॥ मुनी वर पूछे सुण सुजानै। कु
आयो मेर उहां थाने। कै तु भुलो पंथी सकारे
कु छोड़ा ते पराधीन परीवार॥१०॥ कुंवर जी बायक॥
दुहा:- कुन कल्यो सोकार कु। बारह देखी मन फुल॥
लीग बाग पीछे रह्यो। गयो तो चन मे भूल॥११॥
सोरठा:- पीये सीतल नीर। धानो कहो मुनी वर लगो॥
हुवो सुख सरीर। सुच तो बेठ दुच तो भयो॥१२॥
कच रे पंथ कुमार। मारग मोहे बताइये॥
यो जंगल वेवाने। बसती कहा न पाइये॥१३॥
आगे सहर गया रे। सुणे कुवर मुनी वर कहे।
राजा अजो केते भुपाल। नगर नामन बावली॥१४॥
मुनी वर पंथ बताईयो। चलो कुंवर सीस नमाय॥
बन छोड़ो बसती लही। नदी पडुलो आय॥१५॥
चौपाई:- कौर मर बसे मे कै नदीयो पुर है। आज काजलो
तीज कै सारो चन दुर है। आजो ने असराल कराड़ा
तीज क सारो चन दुर है। आजो ने असराल कराड़ा
बोहेरी। परीहा डलरे चेले पार कैलगे डाहेरी॥१६॥
देखें चले पाइक गाव गोरीयां। खेले तीज आयार
सहेली गोरीयां। सुंदर कर सीनगार धो दोली
देत है। परीहा पहीर जेरी चीर पाव राग धुनी
लेत है॥१७॥ पग पायल कौने कर के नहड बाजणो।
ठमक चाले चाल सबे दुख भजणो कीजे खलल
केते मोल मोल मुनी म मोहीयो। परीहा ऊपरे
कचु हार माहा छबीलो सोहीयो॥१८॥ ~~क~~ गात देखे
कुवर माहा मन रजोयो। जेथे में कुवर जी आये
के चाल्यो हरखीयो। देखे सगली नारी भमर
हे आवतो। परीहा पुडुलो चेले पारक दुरी उंकावले
॥१९॥
सापण बायक दुहा:- को गत देखे भाई सब सेफा लगो जुफार॥
कुवर उ लखीयो सही। खो छे राज कुवर॥२०॥
केण देसा का राजवी। आवे आव केण काजहुं
तुजे पुछु पंथीया। तु कवण मेलो आज॥२१॥
कुवर जी बायक दुहा॥ सोरठ देश राजवी। राज करे अभरेस॥
पंथ सकारे भुलीया। कु आया आईण देस॥२२॥
चंद्रायणा:- चालो सगली नार के चंगी गोरीया। मद

गयदां चाल खबर ले पी रोया। बीछरी सगली नार गई सब भामनी। परीहा कुवरजी केहीयो खबु के कामनी ॥२३॥ कामणी बायक दुहा॥ देस बीराणो पर भाम पीछ राज कुवार। इण घर बासो लीजीये। कुण कर ले सार ॥ बारता॥ इतना माहे कुवर जी नगरी माहे गया। चौवट उतरा। इण समारे वसे उणी नगर कै सेठ पर देस गयो। वर लेखो राहुवा पण आयो नहीं। उणरी त्रीया काम दग्ध हुई बोहोत बीरह सतावा लागो। वदी सखी सु कही। दुहा॥ सखी सजने नी आया नहीं बीरह लगाई लार। मो पर देशी बीसर जो। रहे द मालो द्वार।२५॥ पंड्रणा सुखी आज कै र नदी न सुख आइयो बीरह नीहे वहोल कंत को हा पाइयो। सेज नर भधो देल पे मैं सुनो पीयो। परीहा ईया हो दीन चार को रंग रस साबना लीयो ॥२६॥ सखी बायक दुहा॥ सुण सुंदर सखी कहे। आज दीया तोहु दान॥ तो तेरो साचो सुखी। ल्याउ भमर सुजान ॥२७॥ पंड्रायणा:- दुती कर सीणगार महल थी संचरी। आई नगर मंझार चौ पुर हे खडी। देखी कुवर को रुप भंवर चीत मोहीयो। परीहा आही कुले जाउ मेर मन सोही भायो ॥२८॥ दुहा॥ मगर पचीसी कुवर है। घनो सोल परमाण ईही रुपल रुप है। वेही रुप नी खान ॥२९॥ पंड्रयणा:- आये खडी हो पालके पुछे खनीया। कोण तुमारो देस कहो कुण रजीया। दीसनो दीलो देसोते लीयो मे पारखो। परीहा ने नेव ने उनीहार के काम देव सारीखो। कुवर जो बायक दुहा॥ पुछो माहरो बात कीहो कुण कारणे आई खडी अध रात। मरम के मारग हु दु राज कुमार के भुलो वटडी परीह। मदी रे छोडी एवाल बसाई हटडो ॥३०॥ दुती बायक॥ अदी से उणी ए वात के मदीर मालीया। खावद उ लंका लेठ दीसावर हलीया। ज्यारी नारी सरुप से नारी मद नेमे। परीहा हमे ले जाउ तुम पधारो सह मे॥ कुवर जो बायक॥ पर देसी सु प्रीत कसे कुण कीजीय। जीव बीछणा जो पछो ती कुन दीजीये मेद्य पंथ सकार

के पगडे हलस्या। परीहा पोरो आटो परभात सवेर है ओ सलया॥३३॥ दुलो बायक "दुहा" घोडे बाधो पीराणा दुर करो लगाम नार लुचाणी माणो ज्यो दीन रस करो मुकाम॥३४॥ जेहवो फुल गुलाब है। ईहु वोरे समरंग। दान चमे के पदमनी। जासु कीजे संग॥३५॥ चंद्रायणा। चंपा वरणो अंग रंग हेला सकौ हसे चलण सुभाव ~~बसाणु~~ तस कौ। खंजन जेहवा नने नबे न जाणे कोकला परीहु ज्याने दीजे ~~*~~ सुख रजे रंग मोकला। ३६॥ कुवर वायक पीचे देस वीदेस पराई गोरीया। मेह हां राज कुवार करा नही चोरीया। ताकौ संग कीया कदु नहीं बलको। परीहा वेरी आच्या बार के भाग न पाखडी॥३७॥ दुली बायक॥ पान फुल मेल जोय जलना कर रेख सु॥ तातो न लेग बंध कुंको नही भाखसु॥ पदी भोम पंचायण राज करे कुण मा मेलो परीहा। सीहा कस्यो विदेश कुवर जी साभलो॥३८॥ कुवर जी वाइक दुहा॥ प्रीत करे न बोहु दुख हो काय पराया। बार न दुख दुवे देहे ने। ईण कारण कुण हो जाय॥३९॥

चंद्रायणा:- जीव पे रज जाल सुको री सखीया। परदेस पराये राज करा नहीं चोरीया। उगे नही सुर सबेरे हलसा। परीहा काचो तुटे नेह लगे जब पखीया॥४०॥ दुहा॥ प्रीत कीया दुख उपजे। प्रीत कीयो मतो कोई॥ सो दील जणे सुख पीये। सो नर वार सोय॥४१॥ मुल मुल भमरो। सबही कु सुख देहे॥ बहु नायक यु कर भयो। सो बांध कुण सुन हे॥४२॥ दुली बायक "दुहा" फुल फुल भमरो करे। चंपे भमरो न जाये। भमरा चाह केतको। बीच कमल सु पाय॥ चंद्रायणा॥ बाधे कमल सु साय के प्रीत के कारणे। पीयो पमे रस रंग ने है के कारणे। पायो प्रीत लगाव कमल रस ले गयो पीरीहा भमरो येर सुजाण करंत सुख मागीयो॥४४॥

कुवर जी वाइक॥ भागा होय दुवार के बंधन केन सहे। या देहे जीव को सुप के पंजर कुण रहे। ज्यारी सुंदरी नार के आंधी गाहीया। परीहा पर जीया

१२२

कु कुवर लव चेरीया ॥४५॥ दुहो बायका ॥ सखी छोई
कुल है पासी करो दुध हाद ही। कमल केरीया स
हमारी साथ ही। सुणज्यो चतुर सुजाण हमारी बलई
परीहो कामणी माणो राजे आज की लरीया ॥४६॥ दुह
गुण गाहा सुव लडे। कुवर जी माने बाते ॥
दुहो लाई सेज करे। मेहला म अध रात ॥४
चंद्रायणा:- कुवर जी महला माह के आगा पधारीया। नाजो
कपड़ा हेडी के दुर कराया ईया। बोल चरी जाम
दोनो के आगे डोयर। परीहा पहरे जरो सर पाव
कुवर जी सुख पाय के।४९॥ चोडे बाचो ठाण के
दरखत भीड़ियो। चरी उजीण उतार चारो नीयो।
रात बंदीयो मोण चकेला करी ही चके। परीहा
रहे बोध बाचो नेह पराया जी चके।५०॥ रंग
महल म जाय रबिधोमा बधीया कसरा सेझ कला
र ढोल्यो ढालीयो। दीवल बेल दद्धल मेण की बलीय
परीही दीयो आगर महे काचे भयो सुध पतीया
वारता:- दुहो कुवर जी ने मेहल मे मेल्या। सरब बंसत की
त्यारी करे। कुवर जी मेला माहा बेठाणो। रजा बंद के
न मोल कुवर जी लेरे आई कहोबा लागी वो उठो
सोले सीणगार सझाई करो ॥५१॥ सरलोका आदो मंज
चीरख चीर तलम नेत्रा जंन कुडल। माली मुकुली कल
स्पर्ष धवल अकार मानो पर। अंग चंदन
कचुक मणी दु दावली घटीका। तबोल कर कढण।
चतुरता अंगारका खोड़सा ॥५२॥ इसो जीव लाही नु
पायो। घणी बात कांई कहुं। कुंवर जी ने देखवा ने
आय आवा लागी। बोहोत हरख करती हुई सखी साथ
है। कुवर जी ने देखेत प्रमाण। सखी ने दलासा दीय
रीझ कीच्यो। बोहोत खुशी होई ॥५३॥ चंद्रायणा॥ आ
खडी है खार के पुठे कामणी। सोले सजी सणगार
सेज्यां लंब पदमणी। जोया नणी खवा हर के पुढ
मोह कु परीहा सेझ रमण की हौत सी खांड कु
कु ॥५४॥ देदे घुघर कीर ने नसर सच्चीयो। बंदन
ऊंचा हीये रो नेन सर बाहीयो। दुहा॥ गाया

गीत राग रस बजोये परीरा नव रंगी कुनेर की
आजु दीजीये। दुहा॥ अभी रही सनाने कर। मुखक सब
ही बनाय। अलता सु पग मडीया। रंग न जान्यो जाये॥५६॥
कंचन को धुर खरण है। चलती हंस गती चाल
कुम लाग्यो जीनी करी। और चंपा की माल॥५७॥ लगो
बनो करार को। अवल कसु मल चीरे। कुच बीच कां
चुखुच रहो। इरे बंदे बनो सरीर॥५८॥ अजन मंजे-
न सब करे बांधो सब सरीर मानु रे संग करे आब
चढीयो नीर॥५९॥ सवैयो लहरो दार सारी सोर जरी
को नारी जामे लगा कसुमल रंग। अंगीया बीच
माल है। सीम तढे मोती हार वेसरी को छब
अपार त्रीना करण बीचो सोहे बेदा भाल है। कोकीला
से बेन नेन मुखे कले। केहरी सी कटी गत हंस
कु को गज के सी चाल है। सावनो सर सती ज
सेलत सहेली बीच अपछर सी आली हीये सीली
ना कोल लहे॥६०॥ चंद्रायणा॥ बंसरी बनी अपार माग
सीर हीयो बदी कुई रसाल कमल मन मोहीयो।
नेणा काजल रेख बनी रे छोया। परीरा कल के
घुघर मारी मानु जल मढीया॥६१॥ केसरी कुमकु कढाये
कम हेल छ्वसीयो। कुचो बोहोत सुगन्ध के सुको
चम चाहीये। बंग चरी हेख बनायबो होत कुच
अगसी। परीरा लाल चीयार पालक कुकुली नागी॥६२॥
दुहा:- कर कुकर गही पलीया। मालव दीसे लोले॥
पर नारी सु खेले सागे हां। प्रेम सु डरे पासे॥६३॥
चंद्रायणा:- हरीयो उढणो चीर के करऽ कर धुये। उर सुरंग
गार सब गहणो उतारीया। चीया गही जब बार
मुबत ने कुछ कहे। परीरा दु दु चाकर सेज सुख
मानच चहे॥६४॥ नाना अचर नारी कुवर से सहेलीय
सुण ज्यो चतुर सुजाणे हमारी बतीयां। सेजा
माणो पराई गोरीया। परीरा लगो प्रेम लतहे
बंधो बीदु प्रीतीया॥६५॥ तुर हार सीण गार केहूटी
लरीया। कमल बदन ~~पखमल~~ पखायल टंके लरीया
मे बदो माहाराजा के सबे रस पामीया। परीरा

दुहा:- राजा मंतो उपाय करो। लोयो बोल परधान॥
कोन सेठ घरो रजोया। जाय करो पहीचान॥८९॥
वारता॥ राजाजी रो परधान खजान के रुप घरे न चंद
कुंवर जी न देखवा आयो। सेठ की पोल आयो।
उभो रह्यो। इके दुत माहां देखवां ने मोकल्यो। तीनर
हाथे खसी करी। सादे सावरो कपड़ो आया है।
दातो जाय कहो। तदो कपडो सांभले न कुंवर
पोल माय आय उभो रह्यो। राम राम कीधा।
तदो प्रधान रो बेटो दीसे है॥९०॥ परधान वायक
दुहा:- गाम गढ घर राजा कीये। कुण मात कुण तात॥
कीण संग पेठ २पठ आइया। केहो आपकी बात॥९१
कुंवर जी वायक॥ अमसने घर जनमीया चंद कुंवर है नाम॥
मे साता घर आइया। लेण उधारा दाम॥९२॥
वारता:- इतरी बात कही। ईण राजाजी रा परधाने छा।
राज हेलवा सारु आई है। जदे परधान रे साथे
कुंवर जी दरबार न आइया। राजाजी सु मिल्या।
बोहोत खुसी होया। राजाजी कुंवर जीने आछी
गादी देन बेठाया। घणा सनेह प्यार कुवा। बोडो-
देन घरा न सीख दीन्ही। राजा जी परधान कु कहे है
दुहा:- साता घरे मोकला वेज्यो। हथ के दे करी साथ॥
कुवारी हमारी परणे ज्यो। पांनी ग्रहे ने ने हाथ॥९३
वारता:- ~~राजा~~ राजा जी प्रोत न बुलाय न कही। कई सावो
नेभो दीखायो। बोहोत उछव करवा लागाव। चवरी र
बखे हथ लेवे बोहोत द्रव दीयो। बोहोत खुसी होया
यौर नगर को लोण हरख करवा लागो॥९४॥ दुहा
:-: राजा अज देत की कुवरी। परनी चंद कुवार॥९५
कुवर जी वायका:- माहे हसे न सीख दीयो मैं जाना
मातारे देस करो सजाई पालन तनी।
परण्या वालो वेस॥९६॥ करो सम्काई पालन
तनी। घर कु चंद कुवार। सावत साथ ले
लीया। ईक सहस असवार॥९७॥ चंद्रायण॥ गज
देत तनी सुत पाल महेल मे आनी है।
सजी आभरन सनगार चलाई रानीया। राजा

जो सु करे जुहार कुवरजी चालीया। परीग्रा।
उजड करे वे वाने सेठ का मालीया॥ देच्या रपायो
देस मे जायके सेल सुखे माणीयो। दुन्या
कुटुं मे हेक सद हीदु नरीच। परीग्रा। वेठा
करे बीलास माहा सुख रंजीया॥१००॥ दुहाः-

दुहाः—

घर घर हुवा बधामणा। तोरण बंधीया बार।
परणे लायो पदमणी। रंजीयो चंद कुंवार॥१०१॥

चंद्रायणा:—

पीता तणे पग लाग महल मे मायके। वहेने
करे बधाव भयो सुख चाय कु। कुल हनी को
मुख नीरखे केस वहो साथ के कीनरी झीया॥१०२॥

वारता:—

कुवर जी घरे पधारया। सगला न सुख हुवो।
सेठ री इसत्री सु घणो सनेह बांध्यो॥१०३॥

दुहा:—

मेरे मन प्यारी उही। तनन सुख पायो मन॥
पीव पतरी का जीव हो। पाई हमारे तन॥
प्रताप ही घरे मन बसी। कवि जन सदा सुहाय
जुग जुग जीवो चंद कुवार कही बात कवि राय॥

॥ इति श्री चंद कुवार की चोपाई॥
॥सम्पूर्ण॥
॥ लखत गाम लुणारी बडो म: लीखी।
॥ समत १९ ३१ माह सुदी ११।

समाप्त

॥श्री गणेशाय नमः॥

॥कवित तथा छंद॥

— चारण माहा दान जी रा कह्या
— चारण जीव जी रा कह्या

छंद दोमलीया चारण माहा दानजी रा कह्याः—
माता जी श्री चालक नेची राजी छ॥दुहा॥चाले राय री
चाल री।काली सबली कंध।बलीयो दन ढलीया
विचन।चांगण लीयो खंध॥१॥ छंद दोम लीयो॥सब
भा इक दोढ संभाल करे वग।काल कंबाल करो
सभजो। वकराल क सीह चढे वर दायक।पतेर
पालक चग्गर खेड़े॥ चख नख सरूप रचे चरता
लक दाणवां गालक सब दियो।प्रत पालक
बालक रो प्रजालक।जोगण चालक जेच जयो॥१॥
रण तालक भोर सत्रा दसरा लक।केमरी पालर
सेव करे।चमरा लक सीस ढोला लक चमर।
तेज नु नालक भांण तरे।खंक रा लक धार
धरा लस रोपत।धार परा लस चाण थयो॥२॥
प्रत पालक॥ बजड़ा कत्र भाकच माक बले वल
हाक चढी छवड़ा कह मै।पड डाक वेरां क घना
कंप जावन नाग सुरा असुरांक नमे।दद छाक
ए राक चोया कई मै सायों लै वकरा कच ढाक
लीयो॥ प्रत पालक बालक॥३॥ धम धम नचे धम
धम नचे चाने वरये भंम भंम नदा।नम नम
भवा नीय चोसट नाचत होड मरुड मम मद्दां।
ठम ठम चाकुखग चंग ठण कत भाग उदे रोम
तमे भयो। प्रत पालक॥४॥ झणणट उडे डमता
चंग जाभर।बबंड कागणणट बजे।खयं रा सणणट
होवे मन खेलण चोलत ता चगणट चडै नचता

ठणणट पगा बजे नेवर। छत्र छटां चणण चयो॥
प्रत पालक०॥५॥ चंड मेंड धमंड बहेड बेहंड
कचा मंड। नौ खंड डड मुंडड नमे पर चंड
तुडंड डडंड प्रचंडत। तंड डोरंड बीरड़ रमे॥ झुंड
जोगण चंड खेलत जटो जट। खंड खंड खंड
खयो। प्रत पालक॥६॥ भर लक त्रसुल बको छंग
भुखण कोर जरी परलक करे। नचत खलल क
पगां बजे नेवर। ते जरवो भरलक तरे। मुलक
पोहोप कमल झडे मख। हार लडी खलल कहीयो।
प्रत पालक बालक रोग प्रजालक। जोगण पालक
नेच जीयो॥७॥ पाल राय सवाय चाय ह चारण।
गाय उभाय रीझाय गुणं। सुर राय चनो माहा
माहा भाय सक तोय। चाय खला खपवां चगां
गढ गोम दिरां चढाय कंजा परे छाय भवानी
ससारे छच्यो। प्रत पालक बालक रोज प्रजालक
जोगण चालक नेच जीयो। जोय जोगण चाल
कने चंजोयो॥८॥ अथ श्री गणेशाय प्रशादातु जी श्री
सारस्वते नमः॥श्री गुरुभ्यो नमः। अथ पुस्तक ख्यात
की लीखते। रजपुता रा गोत। तथा ठीकणा तथा
पु पाड लीखते॥ अथ प्रथम जुदा जुदा साखरा
कवित:- दसुभ्या सीसोद। पीया मांगल मग रूपा। छजब रीया
डडड। कैलवा ●ड छु रुपा। भीमल चौरण दूल
हदगो दागण हला। नज प्राइड़ता दौड़ वै सास मयें
अवतरो। मुदोत पाल कुचौ लगमा। चौ बीस साख
गैलो तरो। अथ चहुवांण री साख॥ कवित॥ चवां
खीची चहुवाण हाडा वाले चासो नग हवा मादे
चा मा लेन। गर हर दाता बीह लगव। वागडे चासी
चौर वड़ हवां करवा वेच। बाल सरवा बे बदन।
भला जु जुवा भंमेरचा। बालोत वरड छरू देवडा पावी
चंदणा पाण री। खेपटा पाला चीची बा चहो। चोबीस
साख चहुवाण री॥२॥ अथ राठौड़ री साख॥ कवित:
:–: चाचल सीचल चूहड। पोखरां बाढल सु बढणी

सेड़े चावड़ रखण। चवां चा चत्र चांदे लण। बेडजे या दल चंम। कोटे चाक मंदका देवे। कोटड़ीया कुल करन। देया खरीया सर दहोये वेर वाराह मेह सवद मुणे टेक सारौ मुलक। हरी यंद खंद नर दर लण। तेरे साख कुल तलक ॥३॥ अथ भाटया री साखरा
कवीत:- भाटी जादव भला। जको जुग सारो जाणे माडे चा वडे जु मन पोवे कु पुज पाणे। जोड़े ची जाडे चा जादव। सज खरीया दल सामा। बोदा बारस कलेह। जुध कीजे कामा। लवा लोड़च खुजस लहै। चन मौरा ऊंचो चरै। भाड़े चा खाज खरीया भंजण, सात साख जादवे सरै ॥४॥ अथ पुवार री साख री
कवीत:- प्रथम सोड़ा पुवार। साखला पुवार सवाई। चावड़ा वडे जुचत। खेरी खरया दल खाई। वड़ साकर खेर। पाणी सामल पड़ कोरा भाएल भीमल भला मुण ढुमड बोहो मोरा। काला पुवार कीबा काहा। कार मुवा डेड कोडक कही। उमर चीडु समुर यत रेवड जुग कीरता रही ॥५॥ कादल दाता करन। ईस सोरीया वाडेण। पेरी देबा पुवार। भला दाता देबा भण। बेहका बल हर बोड़। जड़ लड़ा खरीय्या गाहे। जोया पुसरे जको दाहा खरीया दल दाहे। दास मुण्डा टीक गेण खवद। बल बेख टीक बार हो। सुडा फेटक बारह सही। पेंतीस साख पुवार की ॥५॥ बालणो तरा कवीत:- बेहला बाल-बोत। टेहल देयणा नर लीजे। कटबा टडका दल बेट। पुडा भण खट रच बीजे। मडीआ खाल मेच-खोडे। चले राउ हणे तबड कीया महल गोत खरबा को लसो खगे। वड सुडाम सुडा भण गोत ठंद राण का मुंण हरा हर हता दलो वड़बा ने भडा। अथ जुदी जुदी साख रा कवीत:- कुनणे चोड रा एक। दोहे मो टेकज दारवा। मोरी मोहला एका। एक चोपल भड खबा। पे गोरी कज पाट। कछवा वो एकजा कहोयै। बलो भलो भला कहार का गोरबो थक जग होयै। बागडीयो रे(?)

न कुप यहै । दरवा साख न कौ हुई । खबर वडसा
कहीये खत्री । जपा साख जुई जुई ॥१०॥ अथ गौड़ माला
री साख से कवीत - गौड़ वडा गज खंभ । दोउ
अरीया सर दहीजे । जे हडा भड़ पाज जकौ स सबर
जुग लीजै । सलो यल सो सारा सरै कुवर उाह जेयत
बीजै । बोउणो वड़ दे देत । गौड़ खर साख गणीजे ।
मरु बाण राण प्रथी मही । हे पोख वह देवा दुमल ।
सर सावण प्रथी मुही । हे पोखल देवाइ मल ।
खर साणोड़ कही खरी । दोय साख माला दुजल ॥१॥
कवीत - वड गुजर सकुनाल । बेतु * नड़ अर वंदी जे ।
ईदा अर पड़ी यार चमल वड़ मुजस चरीजै ।
जोह वाली चनर काण । रु डमे मर आखा । जेड़या बी
यरु । खत्रीयां भुलां दाखा । वा लागे हर वाले ।
जोइया बले । चडा रे गौहल काला पणा । सर वरीय
टामेर माल सरस । गणी सा जुई जुई गणा ॥१॥
अथ सुर्यवंस बरनन ॥ अवतार चरीत्रे वालका हे गोमा
चाके च्यते । आद श्री भवंत सेस सज्या पुंज जरु
पर पोढा प्रलय को जल बढो । जदे भगवंत श्री न
भी कुंप मे से सुकमल प्रगट हुवो जीकु मसु
ब्रह्मा उपना भयो अर ब्रह्मा ने बीसमय हुवो मे
कुण हु मारे माता पीता कुण है या नार नीलम पेठ
प्रत पार नही आयो । कल पत रेव दीत भया जद
ताई पद्द बाहीर आयो । पद्द गरभ गयाज उतपन हु
पद्द ने भवाणी वे बीह भ कह्यो । दुहा मुलवंत चरि
सोउ सम इक बीसम वीय आनो । साय दुपा पजंत
न सु । बीहमु कह्यो नम वाव ॥१॥ पद्द ब्रम्माजी
तप कीयो कल प्रयंत ॥ छंद पधरी । सोइ जान सं
मन वच समेत हरि दयो दरस तप उग्र
देव । तीरेहै छिपदे देह गति रतीसी अनंत
कर पास कर्यो तब रमा रुप । चेतना सती भइ
बदन चारि । नीज रुप सगुन नयन नीहार अनन्द
अंसु रोमांच अंग । उर उपज भाव सांतुक
अभंग । देवा ये देव वीविध भये पुजा याते

चित्त बीचार। उत पन तेज भोरगौ अंधार। नव द्रव्य
बीज उतपति नाम। तहा भये चराचर जीवताम्रो
महि बात गगन जल तेज मेल। खै भूमि सलील
चर चीरत खेली। धरी काल मूल अपारे
जीव धात बीस्तार अब्धे बेदन बीख्यात। चतु
खान चुत भव असी चार। बस करम भोग
दुख सुख विचार बीस्तार बीख माया बियाप।
अर रहत सवन तो दूर आप। कल उर्ध
पार पद ब्रह्म लोक सब बस्त ब्रंम भय सुर
असीक। ब चव बदन बेद वाणी सुचार।
कृत करम लोक उधार कार। उपजे मरीची रीषि
उदर आय सुत भये तास कस्यप सुभाय। कस्यप प्रजा
पउर सान फुल। बिव स्वान भये मनु धर्म मूल।
मनु बैव बस्त भये मही पाल। बिस्तार बंसति
नतै बिसाल। इक्ष्वाक भये आखंड लेस। सुतति ब
कुख उपजे विसेस। उपजे ककुस्थ। अति बल अमीत
पुनि भये अनेना पृथु पुनीत भये बीस्व गंध
सुत चंद्र बीर। जुव नास्व धर्म साबस्त
धीर। बृह दस्व कुवलया स्वरु बिनीत। उपजे
प्रढ स्व। तिहि सुत अमीत। हरी जस
भये सुत पुन्य हेत। माहे भये नीकुंभ
दल बल समेत। बर बीर भये नृप बरहनास्व।
सम धरम करम राजा कृसास्व। सेन जीत भये
जुवना सुर प्रिये समान। धाता सपुर पुर कुस
पुत्र गयद स्यु पाय। अनि रंण्य ग्रेर हरीज स्व
धारे। अरणहि न बंधन पुत्र नाम। सति ब्रत
नृपति त्रिसंक ताम चव बेद ~~सत~~ सहाय कह
ही-रुचं-द। अवला सत्य अवनीस ईंद। सो होत
नरेस भये हरित राज। चंपक सुदेव छत्र भ्राज।
पुनि बिजय रुरुक भये वक धीर बाहुक
सुधरम जुत। सगर धीर। असमंज से राजा
असमान। प्रगटे दलीप भुवपती प्रमान। क्रम
नृपति भगीरथ उग्र कीन। युह भीसु आनि

ंगा प्रवीन । सुत भये नाम पुनी दीलु दीय ।
अय ताव प्रगर पुर न्रप पीप । रीपर्ण भये-
मही खरब काम तहा भये सुदास स्यो दास
नाम । असमंक पुनि मुल दीय वेस्वे सह भये।
खडाग वीर । भये दीर्घ बाहु रघु । अज सधीर
दसरथ दुतीय भये विस्व देव सब सेव सुर
सर करत सेव । राजा धिराज सुत रामचंद्र । अव
तरे कवर पदुमो सु इंद्र ॥ श्री गुणेशाय नमः ॥ अथ
ग्रंथ उमेद कुल प्रकास लीख्ते । चारण जीव जी रो
कह्यो । दुहा ॥ सुरसती उगती समय । जुगती अरथ
सुजांण । मह माया पाये नमु । देसणोक दीवाण ॥१॥
वाखाणो सारण वंस भुपर सुकुल भांण । चत्र
धर नप उमेद सी । हे थापो हो दीवाण ॥२॥ करन
भोज बीक्रम केहा भाखां नव रस भेद । सर रहे
चत्र धारीया वायो जुर रे उमेद ॥३॥ छंद भुजंगी
:— जनं वंस लाखा जसा भुप जोये । अजो रावता
सीस हर ताज थोपै । जनै वंस सारंग सीसोद
सोभा । जने रेल पत साहु भुज राज सोभा ।
जने वंस जोगा जसा भुप जानो । रसा बीच
गादी करी कीत रानां । जने वंसन्न वद कुल
सुर नेता । चगो भाण जग नाथ सु भलो जे
सेता । बने मान म्हा सीग मुगट बीराजै ।
सारं अनी अंग कीत छाजै । प्रथी नाथ पीथल
कानो रयती । जने काच बाच लछमन जती । जनै
वंस जगतेस जालम ज्वालं । अने देस रे सचो
पे उजाल । अजी तेज ने वंस उमेद सा भुप
थापा धरा धम छाये जे कुलं ग्रच छाया । जनै
करन भोज भजे भीम जैसो । अने वंस उमेद
सा भुप थापा धरा धम छाये जे कुल ग्रच
छाया । जाने वंस नाहर कुंवार सौ जगै । जनै
वंद रो लछमी थाय थौ । ग्रहो कमो चार
कानौर कासी कहाया । वने पुंन प्रभाव रे कुंवर
पायो । असो भाग उधोत कारो सौ सगो । जसो

जां नद सरूप के राम जगै ॥१॥ दुहा ॥ प्रगट पुनी-
प्रताप पुनी । उमेद नंद अपार । दुवी कुनर उमेर
कै । कना अपल हन कुवार ॥१॥ दुहा ॥ लरवन रान के
पुत्र वेहो । वडो चुड अपज माल ॥ कोच्यु रान होद
वान । धरा चत्र गढ दाल ॥२॥ जंग करण
नोरंग जेब । आयो चीतोड सु सोय जेपुर अर
जोधाण के भड सोहन मोया भूप ॥२॥ छंद त्रोटक
जद साहस फोज करे जबरे । मनु अंब्र धरा
सु चढे समरं ॥ सज चलिय सेन मेवार दिसा ।
रंण जंग करन चितोड़ रसा । नव रंग चढे
खग तोल नव । जनु जोध सु खेले पराप जव ।
अपज माल सु जोध भाराथ अरे भर भूप गेलोत
अजीत भरे । करड़ पर झार सु खाग करां । त्रोभवर
अजीत जीगो भारथ जान जो रीझि दम वर जान
दवेर । रढ होद खुरी दगजे धकरे । लख जान
तुरंग नसीस जुटे । भड भूप पेड कोहो सुर भड़े ।
लखतह टकित सर धाय लडे । मभके ही सूर
भडे । लख तुट टकित सर धाय लडे । भभकंत
सु श्रीन सुरंग भरे । अद पंत दंतु सपल धाय
अरे करी हाथी न होद सुखा गन के । घर घर
रमे जेर फागन कै । नव रंग भगे दलि धान
नव । सीसोद अजंन के बल सीव ॥ दुहा अब
भगे नवरंग यह । धरक गयो दलि धान । भेद
पार फेर हमरद । जुधना करे जुवान ॥१॥ मोर
दीन पत साह मील । सज आयो घन सेन ॥
लसु दल साथे लीया । लूर मेवार घार लेन ॥२॥
छंद भुजंगी प्रीयात ॥ यहां काय मोर दीन साहा सज
आयो । नरंद सबे साहा पीवान मायो । सटी
संभ साहस मेवार आये । जीन पर धरा लेन
सुतनं जोये । करी फोज अडंवर कलिम केते ।
जिते धार चानंके कर नाल जेते । रकिते ग्रहे
वदूक चले अग्र सुर । हरख साथ क्रोध पहरखे
दुर । खग झार बाजे अरी होय खंड । भरे भुप

मुरे बजे के बिसंड । तुटे रुंड मुंड कटे हस्ती सुंड ।
मनो जान तरु कुंज तुरंत मुंड । खरे के झरे के लरे
के सगाट । भरे के धरे के लरे के मुजांट । अजे सुप
गेलोत कीनो उबार । मुरे मोर दीन दल कट मार ।
धर काज आयो भगो छोड़ धारा । मुगल पठान
परे के कमंध । झरे सुर खाग परे के कजुध । अजे
कीन अखीयात राड़ अखंड । मनो जान भारथ जे
दुध मंड ॥ दुहा ॥ अजा राड़ जीत्या अभंग । मोर दीन
जुध मंड । कुल नायक गेलोत के । खगां अरी
दल खंड ॥१॥ लखन रै जैसो लरन । भूप अजो कुल
भान । पाड़ सरब खागां प्रसब । मोर दीन तज मान ॥१॥
कवित्त :- मे मद खान सु पीय । मना जुटो मद म पीय
फगट धरनि धर परह । पुनह आयो चीतोड़ पर
गुज गाहक गेलोत कुलो धर खाग गही पर । ~~सुम~~
~~गाहक गेलोत क~~ अड़ पात भूप रांन अगे । उठत
खाग लगी अमर । कुल भाण राण ओका कहु ।
दमदल फौज मेली उमर ॥१॥ छंद पधरी ॥ बज खाग
रे । कट के कसुभट जुटंत केक । उड़ बीर खाग झाट
अनेक । चल बीचल सुचल सेस नाग सोय । हेक पती
म भुव लीक होया लड़ पड़ त के झड़ पड़ंत लोक ।
झड़ पवत सुर जंग तुरंग झोक । खर भरत केक
कायर सु कौन धरका जमन सु अरज सु दीन । मेमंद
खान मारे सुमीर । अच पतीय अजो जीतयो अमीर ॥१॥
छप्पय :- एक बखज प्रसरप । पातसा आया घर नयै । अजो
जुध कन उठ । लाख दलुट लर नयै । करवकडी के
वान भूप हौद वांन ने माहा भर । अजो जुट अन
भंग । जोध खागा बजे झर । असु रान दला वग
आछटे । बीर माहा भड़ बजीयो । अड़ पात भूप जुटो
अजो । सम हरू असरप साजीयो दल छंड । मेद पटना
वे भरद मिलै फौज कर मंड ॥१॥ दुहा ॥ रण लखन
के पुत्र वहे । बडो पुंड अजमाल ॥ कीधू भाण हौद वाग के
धरा छत्र गढ़ ढाल ॥१॥ नरिंद जोध पुर नाथ री । पुत्री

रेक स्वरूप ॥ सनथ कंमथ बीधा रीयो । भलो धुंड कज
भूप ॥२॥ छंद पधरी ॥ कमधांण चढे सन बंध काज ।
बोहो दब नाले रखे गजन्द बाज । अधपत चीतोड़
नृप कमथ आय पोह कुवर धुंड के लगे पाय । वहां
कुवर देख कीनो उछाव । बाजंत्र बाज गायन सु
गाय । रंग राग सुन्यो लख सुरान । भाखीया न
बंदे उगत भान । कुवरै गुल सु नई धुंड कान ।
राजधिराज तुम परव रान । कम धान जोधा नर गये
कोण सह करउ सग पन जाय और कर धुंडा अजमल
सुनई कान । नजे लखत ये हेकर दीनो दान ॥
भाणेज मोह नृप होय भुवार । करोप लीखत दीनो
कुवार । धुंडे कर अजमल लखत सार । कर सामे
ठाकुर तो कुवार । यहे रानी के रहो ग्रभ आस
मोकली सी जनम नवे मास । हमयो देव सोक
पथ मे मुर बार । कर दीयो बासव कुर कपाल ।
धुंडे अर अजमल कर बीचार । बोहा रहे रान
गादी बेसार । थप दयो कमध रड मल सधीर
बाई से कह्यो कम धान बीर । धुंगो अर अजमल
रहे चीतोड़ तो करहे कब जधर लेही तीर । रखो
कहे अजमल धुंड राज । अब छोड चलो चीतोड
आज । धुंडो जद अज कहे सुर । पोह रखउ जतन
मोकल से पुर । निकसीया भूप कुल बंस नूर । कर
साम धरम भुजलज करूर । मांडु गट सधीर । बिच
रख्यो धुंडा बीरद बीर । पतसाह तठे लगा अजो-
पाय चाल्या बीर अरु चमर काले सीवाये ॥
सुणीयो काम सब पातसाह । अज मल सुतेज
कधीयो अपार । अतनै गंजनी चढ साह आय
पोह नृपत भूप हवल जे पाय । सजीयो मांडव
गढ पत साय । अब के सजा कद कीजे उपाय ॥
दुहा :- गजनी साह अगा जोयो । सजे फोज बम सान ॥
आयो मांडु गढ सुणीयो । भुज ~~क्रम~~ अज मल के थाने ॥१॥
कहे अजेर पत सीह कु । मन राखो मजबूत ॥
हाती सारे जादो हुण । तो जखो रज पूत ॥२॥

छंद भुजंगी:- जुध मार अजे ग्रहे सार भल्लं। हुये बीर हल्ल का हल लकार हल। परे सार जादा तगी फौज अगं जुडे जोध खागा जुटे बीजंग। अभंग ग्रहे तेग गैलोत अज। घन घुर बड बान लजेम गजं। भु जांट खगार हीये वाग भूर। लीयो चौसठी कुंमर अग्र लुर। पर रूपठान परे रैन पाती। खुले रंध के तरूले चर ने जाती। हुये हाक भुं बजे डाक बीर। नृप भू अजमाल कुल चाढ नीर। आवे तुरंग नृप बाग भेलां। मुदे सार जादा उर सांग मेल। छत्री पावद कुसल देर चढी। कटे होट रोदव डजे मरूडे। परे सार जादल रे फौज पूरं। हुके अपछरा रथ वर पाय हुरे। बरे सूर हूर चढे के बेबान। रथ वर पाय हुई। बरे सूर हरे भुजा रोक रथ रहे देख भान॥ खगा भार खुर रखे हल खेल। छत्र लुट चाहां मुगलं बज मेल॥ कीतै गज बाज हय गेनो सान। कीत आप दा मार लुटे कीबान। मना मार छल लीये लुट मार॥ जगो माल सांग लुटे रेज बार। लुटे सस्त्र अस्त्र लीये के अपार। छत्र यासो कनक लुटे अपार। चव चामर कन लीने लुटके। लीये सु सुपरी बाज बाजे जुटके॥ अजो राड जीते मांडू गढ आयो। बाजा बाजतं सार मोल्यां बधीयो॥ दुहा॥ अजमलीयो अल गेह। लागो लाखन सीस रत। छतु सल पग देह अबा डोहणीयो असुर॥ चोपई॥ अजमल जीत मांडू गढ आयो परो मही मुरा तब पायो। ईडर गढ अजम घर रावत पदमी कर चाये। अजे रावव दीयो आथ काई। पीत रावत पदनी नृप चाई॥ दुहा॥ करी अरज पत सार कु। भुजो तेड सताब। आत बधारो सार मड। नीज तुम बचन नु भाव ॥१॥ तेडन के भुजो तुरत समय परो पत सार। वगसे अवर मुराद की। वदे सार तुम टीबा।
सोरठो:- सोह के बेस हे सार। रोन भांग हीद वाग रो। भुज मांडु गढ भार। राज भुजा अज माल रे ॥१॥ चोपई:-
अब नृप कमध खुदगो उपायो। छके मद अथ छोरे

उर छायो। पुकर मोकम संभारो। तब नृप परह मल पाट तुमारो॥ राणी पुत कहे जुव आने। पर राणी कहां तु आई पायन॥ पुत्र मास है भाई तुम पोरे। क्यु तुम बेठ रहे मुख कोरे॥ यह सुन राणी बचन उचारा। पुत्र रहे जीम करो बीचारा चोरो बाच। अब तुम राणी कोरह एसो। जनु पत्री लख रख मन जेसो॥ अज मल चुंड बेगना आवे। पोर मोकल मृतु को फल पावे॥ अब तम सारे करो नृप ए अबही। नहीं तो जावे मेद पाट गर जबही॥ मोड गढ कागद मेल्यों। जोये अज माल चुंड कर केल्यो। बचे नृप कागद उण वार। तो ते यु दीनु तर वार। चढीयो अजो चुंड कल चुरं। तरख बीर बावन रख हर। जोग न पोगग पुल सकुंड। माहा भारथ अज माल सुंडं॥ होय असवार तुरंग सब साती। सार सेन अब दीने साथी॥ अजो चुंड चीतोड नृप आयो। सब परजा उर आनंद छायो। आता खाग उठी कड एसो। जनु भारथ उरजन कुन जेसो। आयो अजो कम दला उपर। बाजे राग बजे रन नुपर॥ छंद भुजगी॥ बजे राग बीराद। बीरां बजार। तरछ तुरंग गजे दुदु रार। रुके सुर सुरं बजे तेग तेगा। करे सीस के पेरे चरनो बेगा। ढरके ढरके धरके ढरके। परे गज बाज खु कथं डरके। धरा काज अजो लरे सुर च्यार। परके खगार जनु ब्रज पार। तुटे रुंड मुंड छुटे केक प्रान। बरे अच्छ सुरं जुलेवे बेवान। मरे के परेके लरेके भुजांर। खेर के तुरंग जुर के खगार। क्रमंद रो लोप जुटे करारा। छुटे जान हाथो सु जरे सरारा। करे खंड खंड धर धर न्यारे। बीकर बलो बाह पटंह कारे। सु समंन तुड तुटे केक भुप। रटे रुड मुड सुरर बुज रुप। जुध भार अजे प्रातेसार कल॥ मनो भारथ भीम जे दुध मल। करे सुर के तेपीय सडं काली। नचे जोग माया दीये बीर ताली। मनो माल रुड करे लेर मुंड। मेले चोसटी खपर अग्र

मुंड़ । पड़े तुट असव गज माल बीर पग पाग टी धाउ नृप होय पाड़े ॥ दुहा ॥ कटे तुंरग गज माल रे । बीये पक्का चढ बीर ॥ अब मौके दल उपरे । नज परख पाहण नीर ॥४॥ छंद मोतीदाम ॥ नृप गज माल चढे कुल नुर । छत्रौ कम धज दौ कर सुर । हचेर हुई कारन सुरउ कार । बरो बरा जुटत भुप बीकार । कटे सुर येप तुटे नर तेग । छुटे हुत खाग पर सीर बेग । लडे कम धान सीसोद भखान । बराबर बाचत चढि बखान । घम केत सी लच मंक कटार । मनो दमकंत दामनी बादल धार । होये लथ बथन सुर हजार । मनो चल आमख जुट मन सुर हजार । मनो पल आमख जुटम नार । भगो कम धान तज रन खेत । जुथ गज माल करे रन जेत । मारू धर लीध मडोवर भार धये रन धाम रखे सीर धार । मन घर आये चढे गज माल । धरा पत्र कोट रखी होय ढाल ॥ चोपई ॥ गजमल आय माडु गढ ढुलो । रेके कमधं दोड़ा पलध भुर । राज रान हुवे धर राखी । सुर चंद नृप कीने साखी ॥

दुहा:- मन घर रणमल मारीयो । भागो जो दस भूप ॥ चोहो नासे जुये प्रगट । राज जोध दल रूप ॥

छंद भुजंग प्रयात ॥ पडे दंड माल एक चीतोड़ पासे । पुने भुप जोदो सो भागे वहासे । उहां जाय जोधु सु जुटे धकाते । कटे लुट मे चाउ खावे बिलासे । लुटे गाम दाम कर तेग झाले । हुत जान दीन कोरीये सुलतो । छत्रौ इडर मान जोधो सुलप । दलं स्यार मौगा मयो दील मंथ । कीयो काचल भुप जुटे सुकंथ हटे जोग माया कीयो जान हुल बजे बीर बीर कटे तीर सीर । गरजे मनो गंग जुटे गहीर ॥ छुटे ओण जेम सर स्वती धारा । कटे के कबीर कटे ओन धारा जुटे सुर बीर भरे कैक भीर उठे के जुटे कैक टेके सरीर । पिंदोले मचाले इ चीले सथुर । यरे काचल जुन्ध के सुर धर । अरे इडरो मान जीते अरु चाले मनो जीत: जोधो सु देवे हमल । यते सु गज माल गेलोत आये । चंड इडर क हुत अश उडाये

अजो सुर भुप गहे तेग उठी। मनो भादवे जेम धरखा
सु कुठी। कटे अंग अंग भुजंग कतार। भसुंड नतु उन
कटे भरार। कटे हस्ती दंत सल सुंड कैसे। उडे पौन
के जोक तरु डार जैसे। भरे भान जुटे लार केक भुप
धरा खंभ तेग उडंटे अनुपं कटक धकेत कुटे केत
सुरं। हट केत रुद्र पर पाथ हरं। यहा इन्द्रं भान
किवान ले उठे। कटे भान प्रान सु छुटे सरीर। वजार
जीठे तेग अजमाल वीर। न्रप काचल भात कौवे
रलीनो। अजै उदर भात धर वार कीनो। उलट
नट जो मचणो पे आये। खगाट वल जोव अज
माल खार। जोट सुर पुर जुउडे उताके। भरे भागीयो
जोध पेले भराके। यह कोर अजमाल धीरे उतार।
जने कोर जोयो सुभगे न जार। भर आमेर भुप
मंडोवर पे। जन क्षावनं भार उटे जखे। खग बोउलो
बाढ एसो खनंके। जीनो धोर वन घोर मध उलके।
असी रीत मंडो वर लीन अजे। लोय खाग त्याग
भुज भार लजे। धवे रान धान मंडोवर मझे
धन जेम वडबा नल तेम वजे। करे जीत अजमाल
आयो कोधांर। जने नीत भाराथ भीमे जोधार॥
दुहा:- के आयो फते कुशल राज मालम अज माल।
मंडोवर लुटे महो राल कन धान उचाल ॥१॥ धरा
मंडोवर लुटे महो राल कन धान उचाल ॥१॥ धरा
लज राखो धज राय धोयो रंग सधान मंडोवर
अजमल मरद। कर झाले कोवान ॥२॥ दुहा:- अज
लरे सारा असो। जोद खाग रन जीत॥
धरा रान राठो बे भड़ जुड लाड़ भमीत॥
दुहा:- एक दली धर उपरा आयो सो ब्यापार॥
कीयो सार सारग कु। समंहर कैलो सार ॥१॥
मे मेल दल मोकलो पगता मंगल सवार॥
रेबो सो वन्हे कढीयो। खास दली धर खाद ॥२॥
दली हुत सारग कुम्हल। मानोठो गौ मर॥
सोवो वो धत सार रे समरर जुवे तेर ॥१॥
छंद हनुफाल:- नृप भुप कस सारंग॥ आकास लागी उत बंग।
कस सस्त्र अस्त्र करुर। नज राव मुख चढ

तुर कस सुभट भूप करोध। जनु भीम भारत जोध
अति रोध प्रसुज प्रभंग। जुध करन उसरन जंग।
पो जाय मची जस सब। पुनि भखीह मज जुधु
प्रताब। उत राव स जाधम साम। अर सुभट जुट
अरान। मनु पाराप अदुगं गेव। दल दोउ बले बस
देव होत लंकाल। अरा दल रान उचाल खग
भाट बए ओरे खंभ। जनु सर परत लोहत जु रबं।
बजी सुभाट बेरुर खरो सीस तुरत खोराट॥
गजउ नर तब जतेग बर परत सीस च्यर बेग हर
हार पुरन होय। सुभ पाय रंभ बर सोय। भग तुरक
खेत प्रभाग। निज राव मुज नभ लाग पत साह
एज प्रमान। हे छत्र तुही नवान। कर जोड सारंग
कोन। मुज करो मेहे रन विन। मेद पठव नांरव
माफ नव महोर कर दो श्राप पत साह हुकम
प्रमान। रसा खरन छुवे परान। नव महोर सारंग
ओन। जीत काजन जरस कोन। मन रान खती
पुर मान। दोबे उड लाख दीवान। पटोले हुकम
भुज पान। हेतु जु लाभ होद बान॥ दुहा॥ राज सारं
रान जग। भर उमरोब सुभान। मरद पाट धन मेदरे
हे लज तुज होद बान॥१॥ साह कीयो सारंग कु॥
माड बीसहा म्हे राण॥ सम पडोलो चीतोड़ सू।
फेरे भेलो धुर माण॥२॥ छप्पय:- सुनतु राव सारंग
कहे माडवी साह कर। पुत्री रख घर नाय। धरा चीतो
राण घर॥ कवी हेके गहे लोत। देवू मो लोतम मु
ते मेद पाट चीतोड। तीर राज देउत भर। सांर
भूप खोन्यो लिय खाग हथ उग्रे लरन। पत साह
हुंत सारंग पुने॥ अजो खंभ उठयो खरन॥१॥
दुहा:- करी साह डोला कजे। हुम होयो सुन काउ।
राख घर घर रान के। जका नर ये जाग॥
छंद भुजंगी प्रीयंम:- करे क्रोध सांरग उठे करूर। राहे
हथ हलं भगे केकु ~~क्रोध सारंग उठे करूर~~।
भूर। उठे बीर सांरग चीतोड़ साथो। प्रत प्रतम
सल खज बयासो। दुगो पातसाम्हा इबी मान

हीन मन ख्यास छोरी हुए हीन दीन। कदम एक
पत साह चोरे नकद। जुरे ना मेर वार फिर साह जुधो
दूहा:- कुल नायक सारंग करी। एसो करे न दूजो कोय॥
दूजो साहा न परखीयो। खत कलम खम सोय॥१॥
कवित:- रवत भमर पत साह। जुट लीनो सुरताण भर॥
कीतावत सब कूट। उठ भागे चुचहु खण॥ जेठे
करोय मदत सारंग। जाय वरनीर सुपतो। गढ
जीतन खग जीत। पोर वरण थंभ पीहतो। कीतावत
तानणो साहे छु करे। भवन त्रुन जस भाखीयो
सारंग साह झाले समर। रण तम मर पग राखीयो॥१॥
दुहा:- कुंभ रान खागल करा। सारंग नृप सरदार॥
जुध जीतण खाग जुडण। भुज राखण भ्रद भार॥१॥
हमान पताहत ना गीने। काटे गाय करूर॥
भवन कथन सारंग सुन। कीनो कोपे सूर॥२॥
कीनो स्परज कुंभेन कुं। सारंग भड कुल सूर॥
मुगाण गाया खवस। रण मे छावर हूर॥३॥
दीयो दुख राणे दुमल। भड सारंग में भीड॥
काटे आणा स्याप कर। जुध जीतो खग जीत॥४॥
छंद भुजंगी:- चढे सूर सारंग झले के बांन। सन सुर सपताले
चढे समान। हकाले तुरीयां पांच से सुर हके। धज
सांग सेल लीये बीरचक। भुजाल बिसाल उजाल
सुभाल। घर चार कूटे मनु गज ढाल। प्रहार त्रस
हथीन के लेत प्रान। खबारी बीचे ज्वान लेब उते
करे मूंड हस्तीन के मुंड केते। रसिर भावत भुंड लटे
समेटे। धरे सुलह स्तान के श्रोण धार। बढे कुहरा
केफरा न्हाक वार। छुटे श्रोन धार सर स्वली समान।
पी. सुर केते- वरे रंभ प्रान। हने काढ सारंग लेते-
गरथ मनो जान दीन चले पाय मघ। गढ
गज काढ सुपाने महीर बिराट कलो तोडनो
गौर बीर। उतारे किति गायलो नो कुरंक। बराबर
खगा उडी मार बंक। करी साहे सारंग गाय करारी
गज साहे- को नीजलो चक चारी। भूंज गन
तोले सजे फोज सने। धजा बध सारंग

तारी सुचेन । धनो देरन ता खाग हथ धारी । वंदो
जान सीसु पाल जुटो बीहारी । हूदम जान रुखमणी
न को साहे कीनो । ऐसो लरे सुर सांगो पसु
लोनो लरो खंग खंग तुटे रुड मुंड । खरंग झारे
बीरसा रंग खंड । दई रानसा बासु देखत सूर । ऐसी
हर बर पाय संरंग सुर । गढ तोर नागोर मगाल
गरारर । सारंग करे काम चेन जु सारे । दुहा:- पत
धर सारंग प्रथी । पाडे मुगल पठाण ॥
उगारी गाया उमंग धने रंग दे कुंभो राण ॥
दुहा:- कुंवर राण राय मल के । पुना उडणो प्रथी राज ॥
छोटे कुंवर संग्राम सी । मणा हिंदु कुल माज ॥
चापिल पुछे वीप्र कूं । हम राज जोग सो होय ॥
पछे जनम पाती बंचके । करम छत्र नह नह कोय ॥
चोपई:- यह सुन करके भेम उठो धर । धुव मोहि मार
लोहे सागो धर । क हेमत सारंग नृप सुर ॥
पुन मोहे राजन देव पूरं । यह वीचार मन में
अत आनी । जबर चीपल मन प्रीत सुजानी ।
पुने यह चलहु माता के पास । स्यानी न्याव
जु करे सुलास । स्यानी पास चारहु मीली आए ।
पुनो चंजी के लागे पाये । कहे सगत प्रत न्याव
सु कीजे । देस चीतोड कनर तुम दीजे । स्यानी
मात कहे तुम चारु । बद बद बेठह धान बीचारु
घर बेठे नृप अप अप धान । पुन स्यानी कहे वचन
प्रमान । चीपल तुमे बेठे चढ पाट । धरगा दे सांगो
नृप पाट । पुन सांग गादी दब पांस । नेरे
सुरज मल बेठे नीवास । कहे स्यानी न्याव तुम
कीनो देस चीतोड संग्राम कु दीनो । अधर चीपल
बेठो उड़ जासी । धर गादी सांगो नृप धासी ।
न सांरग धार रेह धारे । भरे देस सुरज मल
भारे । यह सुन बचन चीपक अकु लाय ।
यह वह मारन करु उपाए । सांग सुर सांगो
धर बंक कार चढु धर करु नीकटंक खारा
सुरज मल नीकारु । मोहथ जाय संग्राम कमा दू ।

यह जुध पीथल रच्यो प्रकारो । वहै देख पंडवाजेन वारो ॥ दुहा ॥ सारंग सुरज मल है । जंगल रत कर जोर ॥ प्रथी राज भारी प्रबल । अप्प पत रखुन थोर ॥११॥
छंद पधरी :- कुल मान भुप प्रथी राज कोय । अप्प पत मयंद जनु भीम सोय ॥ सारंग दुल नृप के सधीर ! वेदु सुभट सुद्धेक्षो देख बीर । सुरज मल सम्रो कहत सोय । काको का जाया जाय । प्रथी राज आय मत करु पेच । खागा बल देला धरा खेच ॥ सारंग सुरज मल करव सेल । यह दीवस नीक लीया देदु अकेल । पठेयो जह लादो एक वाल कुल नायक लीनो कर कृपाल कहे सुरज मल कहा नाम कीन । दुम्रल सारंग खर वर सुदीन । यह बालक तीर्दे खर वधाय । उपर कुछ साखा सुतर आय । ग्रह लीयो बाल सारंग गोद । अप्रय तोरखो खरवर सु सोद ! अड पायत खर वर भयो अग । जुद जीतो सारंग अंगे जंग यह दीनस सारंग आनर सु आय । पीत कुवर रो भतीयो सीवाय । प्रात समे करत सारंग पुज । चमो नृप करत दल ध्यान सगती खट क्रम पुज । यह समे कुवर प्रथी राज आय । कुव पुजा सवाय । यह समे कुवर प्रथी राज आय । कुव पुजा सवाय । यह समे कुवर प्रथी राज आय । कुव पिछ्छ आय वाहे के वाम । भड़ भभक उठ सारंग मान वर कुवर दुख कीनो वीचार । धार घाव करुक सबद प्रहार । हे कुवर देव तुम मुझ हाथ । खग जडी धंभ पाखान खात । कर वीकर धंभ नीकसी के वान । परी जान बीज मानहु प्रमान । यह देख कुवर खग धरक धंग । कुल तेग समरन हो करु जंग । प्रथी राज कहे सारंग पुरु । नर मल सु आय जल गंग नीर । आप कुमे मारन का उपाया । सारंग कहो तुम मुझ साया । यह साम ध्रम की सुनर वात । भाजी कैतक दन रही अरुयात । धन कहल कुवर तुम साम ध्रम । बन काज हम कीनो वीकरम आय सु दुजनह धरहु आज । पीछु लीयो समर पन कुवर वाज । आय सु कर जोध जुध आरव । तीन हो तीन वेला तलाक । वहा इत सुरज

मल पास आय । वहो कुव नृपत लीनो बचाय । प्रथी
राज काज करो सान पान । वहो रानी जे हर कीनो ।
वीधान । नेज प्रथी राज मारन मैदान । पंते
काज लेवु तुम कुवर प्रान वहे धार करे भजे
सुवार । यह केर बडा रनजी उपार । देख धार
वड के रण दीन । नर मल सुधाल सुरज मल लीनं ।
कुवर तुम धाल मत जीम काय । हरे जाने पन
भजो हर होय । देख धाल स्वान कुदीयो उर ।
बरका होय गंडक पडयो बार । हे कंप कुवर
जब जीव होय । कर हेन समर नृप हुक्म कोप
तुम साम ध्रम नर मल सरीर । पच्च पतीय
सुर मल तुम धमीर । आप मु करू नर जुध आज ।
रख द गोचरन तलीक राज । कहे सुरज मल
प्रथी राज कुमार । आठोर घेर हम जाय स्पोर ।
चालीयो वरा मेवाड़ छंड । पच्च पतीन दपावे
जेन आउ । के तान वीप्र पर दान कीन । त्यक
नुप दुजो चरा लीन ॥४॥ दुहा ॥ सारंग सुत जोगो
सुघर गढ तोड़ण गहे लीत ॥ कुल नायक चढतो
कला । जागो सुरज न जीत ॥५॥ सोरठा ॥ रावत जोग कर
टार । वीर दायक लीनो वहां मीणो देवो मार । वीक
राज जास रव वह ॥५॥ छंद त्रोटक ॥ भड़ खाग ग्रहे
यह आय भड़ । पच्च पत सारंग जु आय रड़ । लख
ब्रदलीया वजाय लड़ । वह गमन पेखण आट वडे ।
किधु सुरज को जन जोत कढे । उलटे सुलटे कुलटे
जवहां । जर खाग पलट बजावे जहां । भमक ज्यु
भीन को चार भर । कुल नायक खाग सु नुड कर
बढ खाग किन नर आय बढे । कुन भान किते उग
राध कढे । लड़ जाय पड़े जु भड़ जलखां । सर ध

खाग वजी वजरी। अउ्या पत सांग री पजरी। कोटै मी धाड़ सजीले करी। पौह देख हरवत दैव पुरी। लड़ भड़ सांग सुजीत लीयौ। भात लछ् सै सुराज कीयै लख मुख सो बाग सांग लियौ॥ दुहा॥ च्यार वरस जोगै सुरद। मोण लोना मार। घामे गालै धर घपै सांग भालै सार॥१॥ मारै दैवो मोण कौ। नगर देव ल्यो नाम कीनो साख रंग जाल कर। नव खंड उपर नाम॥२॥ यह पायो मेवाड़ पेल लगे लसकर लेर। पद पत जोगो उठीयो। सांग फौजां सेर॥३॥

द भुजगी:- उठे जोग राजं ग्रहे खाग हथ। चल्यो जान पाचव नरसो मथं कर साग फठो वढ कोर। लरे भुप जोगो कुल चोड़ मीर॥ लला दौर भुप जांग लख। पैरु जान बतीस कुलेनभख वजे सार सेल परे के कमीर। पडो खंभ जुग राज जुटे पमीर॥ करे पै कंद तुतल मुंड करी। मंभे मुख चंडी दीये पत्र भरी। वहे वीर वेतालां नचे वीसालं। उडे खाग पाग मनो की मसालां करे गल बाज धारनी झार। दब मंदर कर लूवो लडार। धरे सेल कुंभ सु लंबीर जंग। मनो दुरु गीर जान कर लाल रंग। खगार वजे भार हाथ खनके। जनो भालरं मंद्र घर भनके। भयो भुप तीजा परे जुध मारी। ऊठाये मनो जोग साग उभारी। रनो होड़ लुतके सांग हथ। खेले साथ जीव गयो दुर संप। भगार मनो जोग सो भोज भुप। सेरे स्वात को कीन दुलन रुप। करै जीत जोगा भर धाय काम। नर तीन लोक वचे राख नाम॥१॥ दुहा॥ जोगो भड़ जय पोयो जुठे। पाड़े ल लोप गम। जुटो भड़ रोड़े जढे। बीजा पद पत कर स्या थान॥१॥ जोगे भड़ कीनो जसो वीला। पदपत उरो पमीर। चन धर ललो पद्दो जीयो। मरद खाग भड़ मीर॥२॥ कहे रान लोलेर कु। दीयो रंग मंड दोय। करो राव जोगे कहर। असौ करे न दुजो कोय॥३॥ चतो जैमल राठौड़ पोह।

२०८

साई दास न्रप साथ। पुन कड़ पग चीपड़े। दुऊ जुड़े खाये हाथ॥४॥ जुड़े भीम भाराथ ज्यूं रंग बागा जोग राज। थडे तुरक दल उपरा बढे चोतोड़ सुबाज॥५॥

छंद सावला:- जोग राग जुटे मनी रहा ऊठे। खागा खा खारे। परे जु पाहारो सुर सीस छुटे। मनो तर बुज तुटे। ग्रहे सीस हसे फूट उर बध। घर धर नीसके। जोता हुर सेवे। परे बेव खंड। तुटे हस्तो तुंडा करो जग क्रूर। जोगो राज सुर। परे धानो थान। बरे हुर प्रान॥ दुहा॥ परे सुजोग राज न्रप। सारंग बीर सुजान सरलगे के लासमै। बर थपच्छर प्रान॥२३॥ दुहा॥ जोगीर सुत होय जद। पुत्र हुवा पर मान। बडो राय सीग बीर बर। छोटो नर बद सुजाण॥१॥ राय ~~सीग~~ सीग कज राण रे भूप गयो सज भाण। पाछे जोगो न्रपत पड़ गयो देव लोक दीवाण॥२॥ चुगल खोई खाई चुगल। राय रसीग कोपे राय। वहां पार बेठे न्रबद। जुद ~~क~~ वहे जार॥३॥ छंद पधरी:- तहां कोपे राव राये सिंग तद भानु गजेन्द्र थाये सुमद। रक्क तुरंग चढे थायो उठाय। जार की न्रबद पर तेग जाय। थाडो सुद सुदी नाराण थाय। कर दोरन तेग भेलो सुजाय। बर दायेक भारे घनी बंचाय। थाडो तड़ भारत बोच थाय कहे न्रबद भूप तुम कहा कोन। राये सीग कहे गुल सुनो नवीन। सुने जान्यो न्रबद वह बेठ पार। धर बेठ राज सब करहे धार। यह जान साग जो को खजान। बन चगलो कोय कीनो बयान। यह जाब भ्रात मे चल्यो थाय। बीन काज तुज सीर खग वजाय तुमे साम खम भुज सरम सुर। मज तुज मुख नर बद सु नूर। तुमे करदु राज सावाद तुज। मेरो जसम ओराज मुज। यु कहे सुर नीकस्यो बार। तोले भुजरा र सीग रवार। घर थन पानो पीवो न खम। तद चलत लोक चले सुजन। गोया करन क्षाद नीकस्यो गहीर। थले मोलम सारंग भड़ थमीर। ~~पर~~ देव गाम चढु बंने पान। मजा घर न्रप कोनो हद

मकान। मनरख जहाँ केतेक सेर मार। यह ठोर केतेक दन कर उजार। पुनी कुछ करत परजा पपार। लारख कुण गावे सेर लार। सारंग सुनी यह कुछ दुख कुल भान खाग लीनो सु कुच। वह ठोर रोस चढे पपार। पर बल मनु हनमत जे पार। दुहो सारंग भुज गहे लार। हल कर होय ललकार बाग। मनू बोल-भद्र मद्र सोइ जोग। हहुकार जहां ललकार होय। कलकार करंत मंडोय कोय। यह बाग गाज गरजत पकास। रमोयो जहां सारंग खगां रास। हरका नाहर का न्रपत कोन। उरना भड़ बट का उर दोन। रावल गल सुनोय परबत राड़। पग च्यर न्रप नाहर लीयो पछाड़। कुल भान भूप सारंग कोय। हरक कीयो रानी कवन होय। बुलाय लीयो रानी दबार। नीज बचन पुछी हरको सुनार। भूप कहा हेल कनके भानेज। मोहर दुसरब वेतात लेज। मेर हत मेद पायन सुभाय। कुल वंस भुज सारंग कहाय। चहुवान लगो भाणेज सोय हस कीयो रानी मुमा मी होय। दुजं राज पाट सु पूंत। मम पुत्र नहीं देखय बखत। पुजोयो भहां सारंग जाय। नर चलो केक रपने भी न माय। पत सार पाव लीया जाय पुर करवाय पये नव मोर कुर। भानेज राज दीनो भुवार। कम रतो भट दीनो नोकार। पर देस राइग न्रप फते पाय सारंग के रह लोग भयो बाय। लख च्यार पर धरा पये लोन। कुल भान च्यार जगन कीन॥ दुहा॥ परदेस राइग प्रगार। भूप हुवो कुल भांग देव गाम जयो दुरस। राज कियो न्रप राग॥

खुरासाण जुध॥ दुहा॥ खुरासाणं मिलान येखेरी नर बदं लाग॥ प्रबल जन प्रहार पर। उठो वासुन आग॥१॥

छंद मोतीय दाम॥ उठो जनु वासन आग अपोन। दुटे रन पार लये जनु द्रोन। उठे खग भार सु मेद्ध धपंड। परे मनद्ध वत सोमयेये पड लटे मनु भावत गज की लार। परे मन श्रग उथल पहार। कटे खुर सान भगे तुरकान। उतो भाल मुख रखे होद भाल।

नर बदलेस सोये चढ नुर। हता झल मुख रखे
होद वान ॥ होये मनु रुद्र राजीव जुर ॥ दुहा ॥ खुरा
सान कारे खुर कंता लो तुरक पुकार। नर वदडु कौ
नव। आखे जगत उचार ॥१॥ रुड पाये तने लो रुडे।
रुकबर तुत रुभंग। पग तोलो पनंग पर आब लगे
उत बंग ॥२॥ छंद भुजंगी ॥ जुटे साम के काम नेत
सधीर। मनो राम के काम हनुमंत बीर। उडे मनो
कग लेखग उठ। मनो राम रावन पे जान रूठ।
प्रहारे दल में छये खग पान जने हुडे जगनाथ की
फुट जनं। करे तीर मारे कबा नक दुर। परे श्रोन
धार मचे कीच पुर। नचे जोग माया बजे बीर
हूर। छवे खेत्र पाल वजावत डंक। जने नेत सौं
चपे खग झारी। मनो फुल हंत उलाहल मारी। ग्राहे
सेल हंत उचारत मेघ। मनो नर पलट करे खेल
पेच। किदो गह कटार पर उर चंपे। जनो नाग
खुलो वारी न झपे। हकारे दल पातसा रुश्व हके
भरे मंद रुलो उचारत मेघ। जुरे नेत सौम चजो
जुध करे जान कीठो नये भीम क्रोध। तुटे रुं
मुंड परे तेग रुंग। जुग जाननमे जके होम जं
कटे सुंड हस्ती नके कीच कारी। मनो जन मार
उत्र चारी। मुगल पठान करे भीम मान। जने गुर
होमे जुग नाग जान। जुरे खेत रुसुरान के वार
जचै। मनो जान जल हीन मुच्छी तरछे। पो खेत
पत वरे दुर पुंज सर गंग रा वेड वेवा उठ सुरं।
कवित्त :- परे तुरी सत च्यार। परे मद झर प्रेलो पर। प
मुगल पठाण। सेक सेद लुटे चर। परे कैते भ
खेत। करे चहु के जब टारं। चाहूर पड चालो
च्यार उमराव सारा। पत साह खी सावे आप प
मन चारी नाको मलो। नेत सो खेत अडला नृप
दुगम उहर भागो दलो ॥ दुहा ॥ नेत खेत जीतो
पाड रुसुर दले दुर। पगां राण लागा प्रगट। भज
चाढे नुर ॥१॥ सीग खलु वरसो ॥ दुहा ॥ नर वंद
के नेत नृप। भड पोरे कुल भूप ॥ रुक बरसे उ

अभंग । राण धरा चौरुध ॥ छप्पय ॥ कहत नेत सुन राव । पाव लबे ना पसारहु । राण कहत सुन राव । सिंग धरलीनो सारहु । दीयो हुकम दीवाण । नेत खेलह पढन डर । भर भगे होत हो भूप । आपजे सोनह सडर । सारंग से नउ वरस जदु रपल पर कोत उबारीयो ॥ कै सीस सारंग केरने तह नृप बोलीय मगपण मोसन वंध । जे नख जके सेमे लीये । रान कहे सुन राव । लवनता सीर नभा नो । जैसे क्रन अरजुन । के भेरे भारत तुम जाणो । खग तोल जुये खत्री । सर बरा न सेना सजे । सलु वर सींग करवा समर । व्रज नेत वाजा वजे ॥

छंद भुजंगी :- जोड़े कज उठीयो नेत जुयं । करे जान दंतो नये भीम क्रोध । अबे आय क्रम थान जोडो आय अंग । वसाल भुजा नत असमान वंग । नृप हैवरायो भजा पान नेत । रसा छोड़ रोन कियो लडे खाग खेत । सुने वचन बोल्यो सलुवरा सोग । धरा काज जुटे तेग चीग । अह बोल कमंधज तेग उठाई । चखं चंद मंद उटे आग छाई कमध चढे खेत आयो कठव । जुटे सेन नेत खुबाजे कटव । धरा काज सुरा भड़े फुल धार । कटे दंत पटे के पहार । हले के मलेके खुले वीरखां । झलेके कुलेके दोये पाव अनंग । हलेके मलके पटे सीग क्रम थान गोरा पटे जुटे सीस मदो जुवा वेत रोद्ध । सलु वर नाप पेर त्याग खेत । नृप सुर सारंग कर जीत नेत । जने जीत ली मेवल खंग जोर । अदपती जने चपन लीन अोर सलुवर लीनो जने जीत हुर । रखी रान रेना पावे वृद पुरं ॥१॥ छप्पय ॥ कर सलुवर कमध । सीध पाड खग मार । चप नलो इधर सरब । मरद मेवल नग मार । जीत सलुवर जबर आप अब से अपनह । जीत खगार न जंग सारंग जस रान सुनाइ । नेत खेते समर जोद्धयो नृपत बहु बहु जग वजीयो । सेवा सरंग रानो नवे । धन जोम सारंग गजीयो भयो । आयो दलो अटेल ॥

दुहा :- भानु कुल जनके सोते सको । जोध वलु खग रमेल ॥ कुंवर सारंग न

राम कुंवर पत साह रे । पीइ नृप होय मलाय॥
पक्ष खास दुजा अदत । पद पत होय अपलाय ॥२॥
करे लोई राका कीता । जासु बढे नरा को वार॥
कुवर परज नृप साह कर । तोलौ भुज तर वार ॥३॥
कीयो बलु नृप हुक्म कर । आउ मे हठ करूर॥
परे सोमत जोधार नये । तो निज कुल चाढु नूर ॥४॥
विकल नृप उबो बलु । तद कर ग्रहे तर वार॥
प्रायो भेद का उपरे जोद कर खग झाल ॥५॥
करयो नम हेका सीस कर । रतो न बीरा रस॥
तग बेरीया बलु तणी । फेरे साहा केहे फस ॥६॥
कहे भानु पत साह कु । हुवे हुक्म पन हाल ॥
दोनो बीड़ो साह तद । जुटे कर खग झाल ॥७॥
किस्पो हुक्म पत साह कर । मेसां संमुख भार॥
सांरा जुद भाणो चल्यौ । धीजे वड्डे सार ॥८॥
छंद भुजंगी :- कीट फेर बंदी जु भानु जोधार जुटे भारत
भीम कोपे सु जोधार । पुने पारवत रुप पाडे पहा
बले सात सींग सो प्राय बीहार । खत्री कुन दुजो
सजे तेग सार । दुझले मेसो उलयो पाय दार
रक मास खाग झले चाल राव । तनेकु हुख मन
खाय ताव । छुटे तेग मेसा तणेरी संसार । परे
टूट गीर मेर उके पहार । खरी सीस सींग
चरनो खान के । जनो झालर जेम खाग झन
प्रथी उपेरे भुप सेसा सपायो । लखे पात सा
फाते लखाइ । कीयो मान अरको । प्रस्यो कर
नृप कोइ । हलो खात बलु तणो पस होइ । कियो
पातसा मान सांग सुर । दुने झाल बंद भुज
लाज भुरं ॥१॥ दुहा॥ उठे हल रावत अभंग । करे सीस
मे कान॥ तुरछ खाये पड़ीयो तुरत प्रगट रुद्र
चल पान ॥१॥ कीनो भरको मान कर । प्रस्यो दुजो
करे न कोय पाडो सरना भ्यो पटक । जान टुक
जोय ॥२॥ कौरे फते इद राव कर । पाइ फते मे
लख फरो दोनो लहर । खत्री जीवे घर सार ॥३॥
बीर खेड़ा पर भद का भाण अनुज कर मीर॥

बिर दायक खागा बहण । भज राघव कुल और ॥१॥
छप्पय॥- भाण राघव लघु भ्रात । यह जुवाणां भुज अंबर ।
बीर खेड़े राठौर । सुर आयो भर समर । पर तड़ेक
भड़ पुर । वरत केहर बिमान । कर तड़ेक राठौर । परे
रन केक प्रमान । अध पत खाग वाजी असी । बजरे
खाग राठौड़ बढ । राघव खाग जीत्यो सुरन । भुप
सुभर जुटे भार ॥१॥ दुहा ॥ जह राठौड़ पड़ खाग भड़ ।
भड़ जुटे अण भांत । राघव काम अधो सुरन । खत्री
वरन रेम खात ॥१॥ भाण सुत जगनाथ भड़ । पर्ना नृपत
कुल पुर ॥ धार विराज बिरद पत । जुये अद रंग रीत
जुर ॥ भाण सुत जगनाथ भय । भड़ सारंग अण भंग ॥
आयो दोले दल उपरां जीत खाग रण जंग ॥३॥ छंद
पधरी:- राजान राज जगनाथ राय । सारंग भुजा पजे
सहाय । करत बहुत बिक्रम जान क्रन बाखान कै
चहु दसा बन । सारण गजा तुरंगा समाय । अद पत
सुजस नृप लीयो आय कितने सुविप्र धर्म नेम
किन । दुलीया किता गज ग्राम दिन ॥ जरां गोर
फोजा मेवाड़ आय । पत भुप सबे पावत लगाय ।
ले हुकम राण जगनाथ उठ । रावन पर मनु हनु मान
रुठ ॥ भीक्रम यराध मनु जुट भूप । राया न राय
जगनाथ रूप ॥३३ सग नीर ठेके पर अनेक ॥
बढ बाज गजेन्द नर कोबि भेख । बर हुर सुर
चढ के विमान । भय तखत तमासो देखा भान ।
नट जेम पलट कै कुलट नेक । कै उलट पुलट
जुटत अनेक । केक रत सीस पलटंत केक । घत
मसल कुमट जेर इधार । सारंग जगनाथ जुटंत
सार । भड़ लड़त पड़त कै पड़त जौद । हड बड़त
हुसती कै कटत होद । वडवानल गज जिम भड़
बीर । दुटत क्रोध रंगे सरीर ॥ कर पडत कमल कै
कलम होय । अद सोरठ जगनाथ कोप । कर मरट
गरर रंकत केक । तुटत सीस वाचंत तेक ।
ग्रथ नीच नीच ठेला टहक । दोय मेल रत
बाजत उठ ॥ यह धान बोसटी कर अखार ॥

देख जंग रुद्र पीखाड़ कार ॥ केधरा कर जंबुका खु कुट। रट तुरंग टुट खावे डलुट ॥ पोसंड माल ईशेव रुद्र पर। इस नृपत केक चर पायो दुर। कुल भान युध जगनाथ कैटे धर परे जंग राजा धराज सबदे रंग ॥ पेतिस पड़े रज प्रत पास। दुय स्त्रग लोक रंभ सब हुलास। वह परी पतीय सुन सतीय बात। कानी उते नीकसी जलन सात। दु सती चढ़ यश्व सुर। पट केरे दान पृथवी सपुर। जगन नाथ पत संग बलन जाय। वन राग रंग रिझन सुगाय। च- तुरंग सती चली खु साथ। इब ग्राह पीत जग नाथ हात। कितने रोने उब दान कीन। लच पीत पाग सती गोच लीन। हर हर कर ज्वाला उठीय होम। धर धरक धरक धंग उठीय धोम। ज्वाल बडीय जोम। दु पजान बजीय सग तीन होम ॥ वय कुंठ गये जग नाथ बीर। नरीयंद का नोड़ नृप चाड़ नीर ॥ दुहा ॥ पोरयो भूप जगनाथ नृप। सती जाली जे साथ ॥ कुल नायक कानी उरी। बरदायक कीरत ॥ जाकर के जीव राज नेवेदक कीया बखाण। सांढे करो साते सती। जे चंडी गन जान ॥२॥ कीनी प्रगट मोर खग खल मुंडी पाचो बागो नीब सब रुका रड़ वड़ रूड ॥३॥ छंद रसावला ॥ जगनाथ जुटे। ममो साह उटे। खाग खेग झारे। परे जो पहारे। सुर सीस छुटे। ममो तरबुज तुटे। ग्रहे सेस हल। कंठ उर चप। धर धार निसेवे। जिते हर लेवे। पौं बे बिखंड तुटे हस्ती तुंड। करोज कररर। जग नाथ सूर। परे धरनि धान। करे दुर प्रान ॥ दुहा ॥ परे सुर जगनाथ नृप। सांगा बीर सुजान घर लेगो के लास मैं। करे धपदर प्राण ॥१॥ धजुडे भीम राय ज्युं। जस कारन जगनाथ। पड़े पत साहा पटर। हद सुदे रुध्या धाहात पतो जैमल राठोड़ पोह। सुरं यद का चल साथ। पुनी भड़ खग चीलाड़ये। हद जुडु गया हाथ ॥३॥ रावत मान सीगजी ॥ दुहा:- एक दीवस लोको धयो। जुध खग बल जोर ॥

भुमंडल सब भागवा । अद पत हींदू और ॥११॥
दलो दुत आयो दुरस । जद खागां अर भाल ॥
हुकम दीयो पत साह हत । धरहीलो गज ढाल ॥१२॥
छंद पधरी :- दलो दुत असुर आयो दुगम । कहै माल
बारेस करै काम । लीना के जुड़ना असुर लोक ।
भेरवा पग ये ताम्बु भू लोक । असुरान प्रबल दल ।
चढै आय । पण घर फैल गीया न्रपत पाय ॥ कुद्रब
लुट कुट के लीया उड ॥ अध पतो यवेक कीना
अखंड कांटल पर जुय कलम काय । बादुत दैव
त्यै नका आय खरणी कज उकीया बांट खाग । अध
पग्या तेग मख अडै आग ॥ दीनो नह खरणी न्रपत
दुठ । ले गयो चमौतर अयन पत्र लख के पठाय ।
आप वन मान न्रप कुंज आज । लख मुख सुजस भज
तुज लाज । अहे सुनत मान चढीयो अभंग । जावद
पर पुगो करन जंग । आडुडै असुर के भड़ अबार । लख
कर सांग के बहोर लार । भड़ अड़ यम चक्र सांग
भुप । वह दे कप कत रहै भानु रूप । केतेक सुर
लड़ भड़ करंत मारत मीर केते मरंत । कुल भान भूप
जोधे न काज लख ग्रद सांग भूज चीरव लाज ।
कसन जु बार गज राज कीन अन बदह जौदड बाहा
लीन ॥ दुहा ॥ करी कसन गज राज की । लल भर सुन
कै टेर ॥ वह पत्र सारंग बचै । बड़हत कारी न बैर ॥१॥
जगा है जौधो लयो । भड़ीये अंग जरद ॥ भर
धर रावत मान है । बंदो चोड़ बरद ॥२॥ दखी
यर भड़ खायो बरद । खग भांरा बज खेत । करी
साय जौधन की । हेकच मौतर हेत ॥३॥ सल
पकडै लेगौ खतम । मीरंद मौतर नाथ । मान
धौडाय लीनो मरद । भड़ मग कीन भाराथ ॥४॥
मेवल मे टक मीग की । सब मीलो सरदार । जीत्यो
खागा केक जगा । भड़कै खागा भार ॥५॥ सौरठो ॥
नेक चरुदे कीनास मोगौ कीयो परणाव मी ।
पुत्री तुम्ह प्रमाण ॥ अरज मान सेह कु होत जोर
राह साह । पुत्री मोगौ पाण लै । भुप होत सांरग

आह ॥३॥ एक साह के पुत्री यहां । चत्र वीद देव सरूप ॥ मीठे कीयो परणाय मो । था कन्या सो अनूप ॥४॥ कीयो मीन न्रप साह कु । ऐसौ करहु उपाय ॥ माडो रचे बुलाय मन बहु मीणा अब आय ॥५॥ बुलाय मीणा बहुत । माडो रच्यो सुमन ॥ जीमण वार कै कीन जहां । आये खावण अन्न ॥६॥ दीनो खबर सारंग कु । साह जु दैड़ बुलाव ॥ आया मीणा सरब यहां । उठहु न्रपत उताव ॥७॥ चढ़ न्रपत चढीयो अबै । ले दल भारी लार ॥ पुणा धर सारंग समर पै । बड़ हत लागा वार ॥८॥
छंद पधरी:- बेठी उगार बनाय । जगत मीन जानय । मलक जान मानय । कर रही केवी नय धरे सुमील उपर । धजार बाज धुपर । खन केक खपर । लुटंत केले पर । नचत जोग मायन । खत्रो सुमील खायन जहां बजत जम्झर । रमे खुर भरजंर । बजार लाग बाजरी । म्रगुट केक भाजरे । मीनो केतान मारले ॥ दीये हजार डार दे । खगार भुज बेलय । जुध सारंग मलय । वहां सु सकी बेलय । चमंक दुसे लय । इंत केह वेलय । कटे सु सीस केलय । खगाय जीते सेतय । तर फंत तुंडय । रर वर तनु उंघ । मरे के सीस टेपस । न्हौ सुनार उपल कलेज सीस इथय । मीना कीना रंभथय । चलंत ले रस गय । धचक जोस अंगय । बधाव केक जानय । न्रपत थान आनय ॥१॥ दुहा ॥ मार कैक हजार सुमीणा कु । जीत्यो भड़ रन जंग खरे रोपाय चौवटे । रावत पायो रंग ॥१॥
दुहा:- मान सीगजी ॥ कग सीरी चाल भागी । सतारा सै सो कात ॥ कीधु मेली दाण कनै । वह निपजी उतपात ॥१॥ मीणे लुटी लीनो मरद । पडी हाक पुकार ॥ श्रवण जु राणे सुणी । कीनो फर उण वार ॥२॥ मान माल लीनो मरद ॥ छंद भुजंगी ॥ यहां मान बीडो जु लीनो उठायै छत्री भूप सारंग खाग जु लायै । कियु कुगसी पाल लूटे करार । सारंग न्रप खाग झालै सार । चढ़े जे तुरंग भर भूप साजै । बजै तूर

बाजं निसानं सु बाजै गन जौम वीरवान लदीब गाजै।
उपारैं मनौ बाग सांरंग पाज। बजै खग झाट खगार
सुबीर। नर मूख सांरंग चाढै सुनीर॥ उठाये तुरंग
मनौ खेल फाग। बल भप रूपौ जु सांरंग बाज। पलेटे
पलेटे कुलेटे अनेक। कलैट मनौ सूर खावंत कैक।
झरै सूर सूर खगांर सुजेत। कल्लर पल्लर नर
खाय कैत। भरै सूर खगार सुमाज। बीरार मनो
रूप खागार बाज। किधु कुगसो मार लीनी कसर।
सरंग मनौ मान झालै सरार। अब लूट सो ठाट
लीनी सुसाथ। हटै आवध लीन मान सुहाथ। लुटे
कुग सोपाल ढोल सुलीन। कलू बीच आरव्यात सांरंग
कीन। परै मीन कावीक लुटै अपार। सुर मनौ भीम
मभाल सार। यहै जीत मानल है सूर आयौ। सुनै
राग गाम सु दीनै सवायौ॥१॥ दुहा॥ मान नृपत जीत्यौ
मरद। भऊ सांरंग कुल भूप। करे लीनो कुगसो।
रावत छत्रौ न रूप॥१॥ कुटो पाल जु कुगसो। मरद
सांरंग जु मान। खे बासी दीनो भीख। राजो जु होयगौ
रान॥२॥ छत्री भीष करवा सरद। मन चारे मान सीग॥
सारंग दे चढीयो समऊ। रज वट राखण रंग॥१॥ छंद
पंन राजः- चढे समान संगायं। कु जडे सोभी जंगयं। छुटे
हजीर तीरयं। मनो लछ्छण वीरयं। फुटे सु अश्वह अंगरु।
मजोठ धट मंगरु। दुकेर वत वाजयं। पखार पंख गाजये
उडत खग सीस पे। दंडी उडंत दीसपै। कर अंग फारके।
छुटत हत सारके। रुटे सोमेर मेनरु। छीहका रसे
मरु। जुद समान झेलयं। सु एक लोग वेलीय परे
सुपाये मील रे। जुध मले चना जुरे। रूये सो सेल
मानयं। पर कपाल थानयं॥१॥ दुहा॥ वर छत्री रोपी
मान वडु। परक रहे मिल पान। पाल मारे गाजे
पनडु। अरे न बालक आन॥१॥ दुहा॥ वर छत्री
रोपी मान वडु। परक रहे मिल पान। पाल मारे गाजे
पनडु। अरे न बालक आन॥१॥ बारे वरस रो पी वख्य।
हातन दीयो हे बान। सो वन ले ~~पाछो~~ पाछो सुंपे।
महा तेज नृप मान॥१॥ पाल सरद कीनी प्रगट॥

मार खाग खल मुउ। भाचो वागो मोण अब। जोरी रुशा रउ वउ रुउ ॥२॥ कवित्त॥ प्रगट सेठ माल पूर। भजर रहे तो कोडीध्य। विन पासे हेक वीप्र। काम करतो मु सरब कज। उनके लडकी एक। तनर ब्यावन कर ब्यारो। तबयो विप्र लेवन तुर। वह माया धन वोर जोयो। मंगन सोच करम लखीयो बदन। सारंग के धन सर जोयो॥१॥ चत चारे वीप्र सुचाल। यह सारंग पह आयो। आयक राय अरज। नृपत पह सीस नमायो। चीठी कर सारंग। आयक राय अरज। नृपत पह सीस नमायो। चीठी कर सारंग आय विप्रन कु धयो। धारो धन कुल थंभ। धरु पतीयो वह धपी। रे वान देख सारंग हरख्यो। दोय सेरख रोक वीप्रन दोयो। कर जोर वीप्र अरजो करै। कुम चीठी लखके दीयो॥ दुहा॥ कर सारंग चीठी करी। पाच हजार खयुर॥ वीप्र जाय लीजे वरा। जोधन माय जरूर॥१॥ पुजो वीप्र सुमाल पुर। जे धन लीनो जोय॥ पांच हजार सुलीन पुन। चीठो उरी सोय॥२॥ मेलो चीठो द्रब महु थैलो बाध सुठार। सांरग नृप मान सीग री। जेचो मुख जे कार॥३॥ कवित्त:- कसन गढ दोय कुचरी। वडो पात साहन ब्याही मात बेन अक भ्रात। वाहां मिलने कु आई। बाई करे सुनं बेन बेई जीमण कु बेठा। हम हींदू तुम तुरक। आप अरकु नहो रेठा। कर रो सच लोदली कुवोर। पाठ सार न परणाय दु। उपाव करे बाई अबर जीध दालिद खजाव दु॥ दुहा॥ गई बाई दलीस घर पात साह सुमल पुर। करी अरज पतसाह खु। हेक बन मुअ दुर॥१॥ साहा कागद लख कसन गढ। पुगो नो परणाव न। सादी काज सामन सब। वह नृ हले उपाव॥

छंद पधरी:- वह बाई कह्यो करु को उपाय। छोौ कोय करे मोर सहाय। कर पत्र आरव का सोद कौन। दुल हो लख राग काज दीन। राजा धीराज तुम छत्री राज। म्हा धरम मान हीदु वान मांझ। रघुव सीत लख के कुल बंस रूप। सुपाल आप कर पाल भुप। गउबी प्रपाल गुन केग मीर। रघ्य पतीय रान सुज लज समीर। परण वा काज वगा पधीर। आप बीन मुझ कुण करे

उचार । आवे नह राण परब अन । यह देह भांग करतु

अकाज । नृप होदु खाल भुज तुम लाज । श्री राज राजऊ

भगवत समाज । राज सुणे पत्र आवे न राग । भलके

मु नृपत खद्द भाण भाग सुण कागद्द राणो चढ राजेस

दस दखन धरक परत वन देस । सोले बतीस नृप

चढीय साथ । हय चढ मान ग्रह सेल हाथ । लसकर

नोऊ नृप लीय लार । भुज उड उड खत्र वार भार । हर

वल्ल राव नृप मान होय । जीन भान देख रह्यो चकत

जोय । काहा तो रान सब नृप कहाय । लसा सुकाज

साभात जाय । जद कह्यो रान मे परन जाऊ । वह सरन

काज मोह हाथ आऊ । सामान राव लीनो मगाय ।

बगत रहे पद सतान बाय । दसन गढ गयो रानो

करूर । नज दुलहन पर चढ चढ्यो नुर । देव राव

रान क्रम चान काज । यह तुम्ह पुत्री परणाय आज ।

परणाइ पुत्री कुल सपुर । हरखे जद नारद बीर हुर ।

देव लख भर चार न सुदीन । लख मुख सुजस सोभाग

लीन । भयो केर मल रानो अभंग । रस भय श्रंगार

बने सुरंग । चानणी पर बेठो नृप सुरंद । केर रीझ

दीन कोट कुरंद । यह भाल पुरो नृप नजर आज ।

श्री रान त्रीय न पुढो सवाय । राठोर अरज कीनो

सुरान । जह वतसा चालो गाम जान । देखे हुन

ग्रह ध मुद्ध डार । बणी याणी देखे कीयो वीचार । भर

हात मुद्ध देखे सुभार । यह बार माल पुरक रही

चार । अधपतो रोस देखे अपार । कर कागद लखीयो

बाप काज । मुव माल परो जाय फजर आज । दब

माल सरब देदु कोर उर । सब । रान लेही संभार । पत्र

बंच साह पुत्री प्रमान । जद कीयो होकाने माल जान ।

सब चढ्यो रान बीदु फजर आय । वेसा हल गब रच्यो

राय अधपती माल पुर जुटे आय । सांगा रो बचीयो

बल सवाय । वह तुरक कमर बधे सुआय । पर वीर नाम

कीनो सलाम । कलमा पढ आया सज कलाम पला

पला कत मुख उचार । धदार टेकी ग्रह चके आप ।

धुंटत तीर जो समान । उर फटे लगे असमान

थान। जा जुलीय मान मुगल सुजान। खाग बल जुरा
बीर खान। वहा नृपत तुरंग दीने उठाय। अगवान
राव मानेस आय। बज तोप गजर धन घोर बीर।
दुटतं प्रान तुटे सरीर। बज हाक बीर रण ताल बाग
यह भचक उड़े पग जड़े आग॥ मानरा हात दुटे मरद
जह येप बगतर कट जरद। तुरगांन केक तुटेत तुंड। बानु
जान मती राखेर मुंड। जोगी अजान जुटे जमात। हद
के देख नान सांग हाथ। भर जान पाप जुटे भारथ। हु
कार बीर ललकार होय। कीनो सांगा जेम करे न कोय
माल पुर नग्र मारे सुमथ। हद देखे रान मानव
सुरथ। भड़ जुट लुट लीनो भारथ। यह द्रोन हनु
लीनो उठाय। माल पुर नग्र सांगा माय। भुज बल
जुध कीनो अभुत। रन जीत समर पारथ पुत।
मनु लंक राम लीनो सु लुट। कीनी असी सांगा
असुर कुट। कर फते मान उभी कोधार। जानीके
भीम भारथ जुधार। कर लुट कुटम कान कीन। दख
हवेला बार दीन। जहा मान हवेली उतर जाय। सं
दख लीन सवाय। यह चोकी नृपत के हाथ आय
वह काम दार पासे बचाय। रक्त बांच अरज की
सु खच। पुनी दीये बीस हजार पंच। वह चोकी
अपने हाथ। आप पोह पेर नृपती केसर बणाय
सुने राण बात अचरज सु आय। खतेस मान लीने
बुलाय पुछी सुरान अब प्रबात पुर। नृप मान कह
सुने राण सुर। राजड़ सु कह्यो धन भाग राज। अ
कुन भीमे सुधन आज। माल पुर मार अब लेटे माल
सम सेर काऊ पत साहा साल। यह कुक सुनी पत
साह अग। जुद जंदे समर बावीस जंग। अपेल
देउ मेवाड थान। राजा धराज सिसोद थान॥ राज
धराज सीसोद थान। यह रानी पदन उदो यान था
परजा सब रान के लगे पाय। पत साह प्रबल द
चडे पर। हांसत नारद हर केत हुर। धोरंग सा
चढीयो असुर धरत मसक कमठ फने उठोय चोम
हद जान कर न जनमे जु रोम। उदो यान नग्र

पर फोज आय वीराद वीरखा गाव जाय। बलु भड़ जुटे महा वीर। पर परीय लगे भड़ कट सरीर। ओर रुसाह मन फेर आन। भड़ पड़त लड़त मेगल सुजान। दुटत ओन कटर सरीर। पायावत जुटे ग्रहे सार। भुज भार सारखाणा उदार। बड़ बड़क खड़ग भुड़ केक बाज। इन पार तोब दुटे अवाज। उबा रीठ को जड़े दीन। पाणा पर उड़े भार थान। उड़े सग भारा भड़ अमीर। गज ओन वेत सरस्वती नीर। सारंग उड़े भड़ ग्रहे सार। हर जाय केक कायर सुटार। वीराद वीर खागा वजाय। यह सीस दुट धर परत आय। लड़ धड़त केक भड़ पड़त लाख। सारग गैलोत उजवाल साख। पड़ आप खेत कैहो प्रसन्न पाउ। रण जीत सुभट सांगा राउ॥ कवित्त:-

प्रगट उ करन परे रण गड़े बाटे नृपत खर। परे मुगल पठान। सीस सीव गयो ले सुर। बज गजेंद्र के बड़े। पनह लोटत धरनी पर। कीयो सार गज चकसे। नाम राख्यो सरला नर। है कंठ बु पहुवीसो रंग हुव। पाधो दलो पधारीयो सारंग के भगडो सरंद। छत्री मरन सदा रीयो॥ माहा सीग जी रा दुहा:-

मान पार महा सीग। कुल नायक बेटो कहा॥
धर खागा बल धीग। राण तणे धर राखहो॥१॥

:- जे सारार जे सीग। भूप बेठे कुल भानरे। मुगल खोर कर मुगल। राज अम्र भार सुरा नर। सुत सुनता जे सीग। प्रगट तन रोस अप्रबल। अबो मारो अमरेस। कुवर नरख पाहा कुल सुण वचन अमर भगो सुपह। कुवर गमो वक नेह। बाठ रेउ सरेते आय बंदे। माह वरा व राखो मने॥ कवित्त॥

लै माह व नृप लार कुवर अमरेस करारो। चहीयो गढ चीतोड़ धजा बंद रूप धरारो। सुनो बात जो सीग जोर फोजां ले जुटे। कुवर माहा बल पकड़त दन चीतोड़ न दुटे। गर गोयो राज उदीयान गर। जास आग भाला लगोय। महा सीघ डाल नायो अमर। बंदे रोस अमराव गीय॥ छंद पधरी॥

:-: चढ चले कुंवर निकसो अभेस। साथे नृप माहव चढ
दनेस। बुंदी नृप पुगो जेण वार। बाहा लीयो
असरमा मेव च्यार। भाणेज जाण किनिस मोर। वर
दायक हत जे महावीर। आज पर माड़ लगड़ सुजाय
माहा सीघ फोजली निम लाय। कर फोज उबर
उदीया न काज। उदीया न नृग दस चलेउ आज।
चाले घर हाडे अर सुर नज माहव चाड्यो कुंवर
नुर। सुन रान फोज भागो गीयो जे सीग चाण
भूप उदीयान अमर आयो अनूप॥ दुहा॥ मोटो मूं
माहवा। मोट न चढे प्रमाण। आबा फेरे अमरेस
री रावत कैदे राण॥१॥ दुजा दीदा दनो सोल
मेवाड़ साथ। राण जतन कर राख्यो। गाडे गीयो ना
चौपई॥- मह पत राण बुलाये माहव जे सीग रान आह
तुम जाहव। आय पाट बेठहु तुम आवह। पुत्र अ
हल गेहे तोपा वह। यह वंच पत्री का रान उदो
दत्तो वचन दे दे सरदार। केसरी सीग माहा हे
कहावे। तो उदीयान नग्र हम आवे। राण वचन दी
देहो राव। एक सीग थान नृप आव। लायक
दोउ नृप लाये। यह अमर कुंवर पर पाये। माह
चुडे मेल करायो। पांव खोल चरणा मूल पाये
कुव पोता दोउ एकस कीना। लायक हा मच्य
भुज लीना। ले उदीयान जे सीग नृप लाये। प
बेठाव लगे अब पाये। असडो माहव करी अखी
आत। जायन वात च्यार जुग जात॥ दुहा॥ कुल ना
माहव करो। करे न असडो कोय॥ कुंवर पता एक
कीया। अमर बचायो सोय॥ छंद पधरी॥ एक अ
बीच नृप उठ अरुर। गाम चनवद बिचह गा
जौन कित कदब लुटे सुजाय। एक दीवस नग्र
आय। लघु त्रीया आरत लीनो लगाय। जब यहां
में सुजाय। आंगन किने कौन कुना को आय
चढ गयो रात एक दोन सकार। लग गा
भोमीयो राण लार। तब फार चोरे कीनी सुत
रंग पलंगा नीच जागे सुरान। सरे सोव कुं

गो सरब। दुह रान जागे बोले सुमन। प्रन रान कहेत
हेत्रे सुपुर। बोले बहीस सब सुनह सुर। प्रथमाद
मारो सदुण बहस भरहे करने उपाय। इन किनह कीन
हेरात थाय। यह अमर हुकम दीनो सुसंग। दोनो यार
आहा माहा सींग दुह। वहां सांरग बीरो उडाय पण
थार रान के लगो पाय उपाय करे सांरग अनेक।
वह माल न्रपत हिने विमेक। एक दीवस भूमीयो नग्र
आय जरु लगो अपार घर जोया जाय। सर पाव कडा
दे पास रब। नर मोलो माल पेरे सुजब। पोह थीरीयो
राण रो वह अपार। वह पेर लखु कर अब उदाव।
दुगी घण न्रप माहब फरे ढोल। सब खग आया
बजे रोल जोवे न आज प्रसण सुजोर। अद पतो
मल्यो सांरग खोर। खागा बल काटे बीर खेत।
सर पाव सीस लीनो समेत। कुल भाण राण कै
भजर कीन। देर बोह अब पाव परो सुदीन। गुडलो
कुरा बड अवर गाम। दीये रान महर कर अतर्ई
नाम नर इक्र सारंग न्रप राख नाम। किने
अने क भुज प्रबल काम। पण धर सारंग न्रप
फते पाव। अड पायत जीते समर आय।।१।। कवित्त:-
: लखु चणाद कर लेर। उरड खागा ग्रह उठे। उदीया
पुर न्रप आय लाख दब साहा छुटे। दीयो हुकम
दीवाण प्रगट भोमीयो पछाडो। सोले अबर
बट बतो समार खागा केइ काडो। माहा सींग
सलाम कीदी मरद। अद पत बीडो उठा लीयो।
कर ग्रहे खाग माहब कीधु। पण पर भोमी पछाडीयो।
ा:- माहब भोम्यो मारीयो। भ्रार खागा रण भ्राड़। सरलो
लीनो गेणा सेहत। पण धर सुभट पछाड।।१।।
बेत:- एक दीवस अब दुल वेग। तहो सेना सजा
आयै। माहब कु समरेस। पान बीरो धु पठायो। उतरी
फोज अजमेर। आप दुरेड चव जावौ। खाग बल
रण खेत। वहे तरवार बजावौ। धुर भुप गयो
माहब चढे। वहां सबल दल वाढीयो। कुल भांण
माहबु अखीयात करे। किधु अबदुल सका दीयौ।।१।।

२२

दुहा:- कुवर सांरग ने सभर कर । भड़ जुथै रण भार ॥
लाड पुरै तुरकां लजो । आटो मेच करार ॥१॥
छंद भुजगी:- कहै रान अमरेस जुथै करोरी । धरा बंद
सांरग भाजी धरारो । सुण बचन सांरग टेल
काल । बजे खाग भार भलके सुभाल । कुवार
तुर कान भार सु कढे । बगी लाक पुरे भाय
असुरान बढे । कै जीत सांरग आयो कुवार । गढ
रान जुहार कीनो जोधार ॥१॥ दुहा॥ भग चर
लाड पुर भातीया । केतु र कान के वान । जुथै सारं
सम जरा । भड़े कुंवर सुभान ॥१॥ कवित॥ फोत कुवै
साह फकर । तरत बाह दर साह लये । पतलो पत
साह । जगत रण बाज खां जयै । कि अरज साह
परु चर कालो थोडी । केता यहो खाग करूर
साहा कहै पहरे चुडी । रण बाक खान बीते लोह
मेद पाटले बण मले । अमरेस भाग हीद वाण अत
छत्री रान बेरा छतै॥ छप्पय॥ तडक आय तुरकान ।
मद पाट धरम पे बाजण जंग रण बाज । सेन लख
लायो साथे । बजत घोर त्रंबाल । तोप सत दोय
तपत । किते कबान कबान । तुर रोये लाज चखत
सेख सईद मुगल पठान सब । इक राह कर बादु
लोय । मेवाड़ देसलेवा मुगल । सेना चीत चोरे ।
चलोय । सुनीय बात संग्राम । धाये तुरकान सु
उपर । वाद चढे परन बाज धम-धम लेन इदे
चर । रान कोप बज राग । कयो जद हुकम करार
चल हासोर वलो सचरम नह जाये धरारो । सज
सोल गोल बतीस सेव । सरब सेन साथे चलीय
कस कमर सजे मेहेलो रिपु मन हम धमा ला
कीय ॥ छंद भुजगी:- सजे सेन चलीय मेलो सधी
अध पती सरब साथे अमीर । ताहा अग्र कीध
तोया तोयार । लीनी भार सो कउ लारे । डेरा सु
रहे जाय दोना । लखु दल तोया संग लीन
दुहा:- सोले अर बतीस अब । सज आय चन सेन
अस खर ताला तो अगन । उडता रज नीम छाई

छप्पय:- कितक देख दल तुरक। भुपत कंप श्रब भय॥
मरे ताके ऐ कौरे मिखल। पडा रन वाज खा आगमन॥ ११
कर पत्र लखी नृप रान कज। माहा सींग नृप मे
लीये। तुरका न जंग जीता सदी। जुध खाग हथ
झेलीये॥१॥ दुहा॥ मोहलो कागद मोखले। दल गत
वाच दीवाण। माहब आवे मानरो। तद भाजे
तुरकान॥१॥ पत्र बाचं राण प्रगट। दीनो हुकम
दीवाण। माहब जुटे मानरा करजे लेहै वाण॥१॥
करे जुध सो के वन। वड खागा कुन वजो। समर
जीत कुल सुर। गनह जीम कवन सुगजे। साय
वना कुण आमगे। प्रबल तुरक दल सुर। भुजा
लाज मेवाड री। नज कुल चाढन नुर॥ कर
जोड़ माहब कहे। दीजे हुकम दीवाण। जुट
तुरड़ जायन। मरु दल मे धाण॥२॥ छप्पय॥ देहु
हुकम दीवाण। हुकमे धकर राहु। देह हुकम
दीवाण पला बीच कीत उबारु। रन बाज खान
मारे सुरन एव मेल वन उजाल हु॥१॥ दुहा॥ सजे
सेन माहाब चढे। नभ भुज लगे न रार। सांरग
दल सांरग चले। जोध देयण खग झार॥१॥
छप्पय:- चढीय सुर मही सीग। धरा धर धरन धस
कीय। पुनर ढोर दध पाज। कमठ पीठान कर
कीय। सेस सीस चल चलीय। भोमड़ लहलो
कीय। सुलीय वेमान
माहा बर। मडलनी भर जम लीय। खुलीय वेमान
तुर खर। तुर कान पडे आतंग तन। भुवन गहु न
देख खल भलीय। माहा सीध भुप आयो मरद।
जोरे हाक बाग खागा हलीय॥१५॥ छंद मोती दाम॥
:-: वजे माहा सींग रुपने रन वाज। जुटे मनु सींग
करी न पे गाल। मरे दल मे धरगु कुल भुप।
झेर मनु सुरज हार अनुप। जुटेर नथ बंदो भर
जोर। रटे त्रपरा सरपे सीव रुद। होवे दल हाक
बजे रन दुह। अर बीर भड दख पर ऊं। जुटे रन
जोद अर खग जार। मनु पटकंत खंद जुव
जप हार। कटे खल दल रटे मनु रीस॥

छुटे हत तेग तुटे धर सीस । करो चर वाहत
खाग कोचार । जुटे मनु भारथ भीम जोधार । धरे
महा सीग भुजा धसमान । जने रुठे केर आस पै
रावन राम । भभकंत भोम छुटे सीर भुर । छत्री
तुर कान लरे हे धसुर । उठे खग जार तोमे छ
धकार । जठे घीर जोगनो रुद्र उकार खर खर खाग
झर झर खेमं । धर कज जुट धभे मन दोन । उठे
हत वहे सो भुप धरोर । कटे रन हल सो भेध
करोर । तुटे माहा सीग के अश्व जु रुड । खरो
टरी धोदन कोम डटेक ॥ दुहा ॥ रुक वलाइ नो तोर के
फेर चंदे वर हास । मानो कदम ख मनये । रुठे
खग गर रास ॥१॥ छंद भुजंगी प्रीयात ॥ चडे दुज धस्व
महा सांग सुर कन कन ज्यु खाग वहे जु करूर ।
धरजन मनो कन के खाग उडो । गरू जान दीनी मनो
जान तुडो होय लथ बथ सोसे नह कुरै । वरा वर
सुर खु उडे वकारे । रुरे चत्र धारि परे भोम भारी
मनो जोगनो रुद्र पोके उकारो । करे खेत्र पाले
खु नारद खेले । जुटे धार सीस चेर वेग झेले
हर हार हुर वर पाय हथ । करो धार माइ सीग
नृप राख कप वजो खग झट धखंड धपखारे छत्री
खाग सीसोद साथ सारे । उरे सेल उर वहे धार
पार । छुटे हत सेले फेरे । रुद्र वारे ॥
मनो सके सीसपे गंग धार । कटारी वरीख
लगे सुर धंग । मनो धोन छुटे सुर सी
तुरंग । मनो सीस उड घरती वीचार । मनो
मानो जाने तारा यन तुट कर । फरसी
मनो सीस हस्ती नके तुट फोरे । मनो
गन पाते जाने रमा वत गोरे । छुटे

सुनुं । जटे जोगनी बाटी थनारी । जटे जोगनी बावन जान ३३ । बेर-हुर सुरन देखे वकारे । हर चुन लेवे ज्यो रंमाह कारे ॥ करे खंड खंड सोह रत्ती करार । परे भावत धरनी पे मत वार । थही जान बेवान सुची नरखो । परे जान खु सुर लेवे परखे । परे सीस धरनी पे रुद्र भीत । जनो जानम जीर केर गदी ने । उठा वत से लंभ नो चार थंग उलटो जु गंगा जोन अंग । फटे उर सुर उडे लोही थंब । जने जोर परवाल घोर मुख । खरे सग सीस अपाकास में बाज हाका । गेहे थपहरी हात फेलत भुंड । कने जान भारथ मे दोन कोय । हजार भरे में छव छ त्री हंकारे । जनो खग जो द्रथ उजन जारे । खेदो कन्ह सखो धरा जुर काका उडे सीस थपाकास मे बाज हाका । हठे लोल कंठ परावत भुंड । डुडी जाट माहे सीग रन बाज तेग उठे हात सांकल परे मेघ वेग । जुट कान रो पक्के सीस तुटे । मनो जान मजीर के कुंभ फुटे । परे धरनी गज बाज सेना पुकारे । पुने जुम्क माही सीग में छव धारे । हत्ती सहथ पटे कंठ डारे वर अपछरालेर वैकुंठ वगी । लीये जान सुर पीठ ढाल लगी ॥२॥ छंद रोम कंद ॥ कस थप्रत्र सुसत्र सारंग सुकमर । उंबर केह थपदीते दीये । जुड टोप सु थोपह सीस कम्क मल तेज भल भल भाण तये । चड भुपतु तेगह त्रेध दुल गह भीड सु थंगह फाब भडे । जुड्वा वज जंगह उलस थगह राग सिंध तन ढोड़ रहे । भड़ खाग उधार सु सार गहया भुज । लाख दली माहर सीरु लड़े । जोध लाख । हस वीर हड़ हड़ खाग वजो भड । तुंद तुसल पाव चडे । वज भार वड वड मुंड रुड वड सुंड तड फड लोथ चढे । वजते गवे राम नगीय उकनभ कोय कारी

जाय भडे। खग बाट खन कीयं। सीस सन
कीय पाप संर धर थान धरे। खग बाट
खन कीय। सीस सन कीय पाय संधर थान
धरे। रुज हाड कुआ पल। मुआ मन कीय
तात तन कीय साबु तरे। रंग रे लन राज
तुरा जुर नं कीया। बाग साग कैय डाड बडे।
भड़ खाग नट जेम उल दल कलटनखा नर॥
पीठ पलटन धाय पो झर ऐमन उलटन वग
खगा भड। खग खंट खेर धाय खेरे। लट
मंजार जु मुप मुजा लड़ धामस वाज सपट रपड़े।
भड खाग वज भार वलो वल वीर बाहदर।
केकनम सुर भालं करे। सीध्य धायरव भखण
तेग सोगल। सुरा लीड ल लेठ सेरे रुक
ईस सीसन काज लटे जु अगरीय। जठे पाय
गजेन्द नसो सापडे। खग भाड वर साय रसांन
जुहर। वजो वल सीस भल मल लार तरे।
भले के सीव धड ललार। भलो भला गेवर
भाल खुडा लगरे। नर देख अपछर चल वल
कल। खेच वे मान रुकास जडे। भड खागा चल
सेलं धमक वजे धन जुधार। धाग होरी जु
झमक करे। फटे रंग वगर चहरर जुकात।
कीदु दमगे रुप दंक कोे। नमता जमग वजे
पग नुपर ~~है~~ डठ चीजी ~~नेमले~~ नमे रुसमान खडे।
भजे खग॥

BIRLA COLLEGE LIBRARY
19740
PILANI

10.12.47

~~समाप्त~~
॥ समाप्त ॥